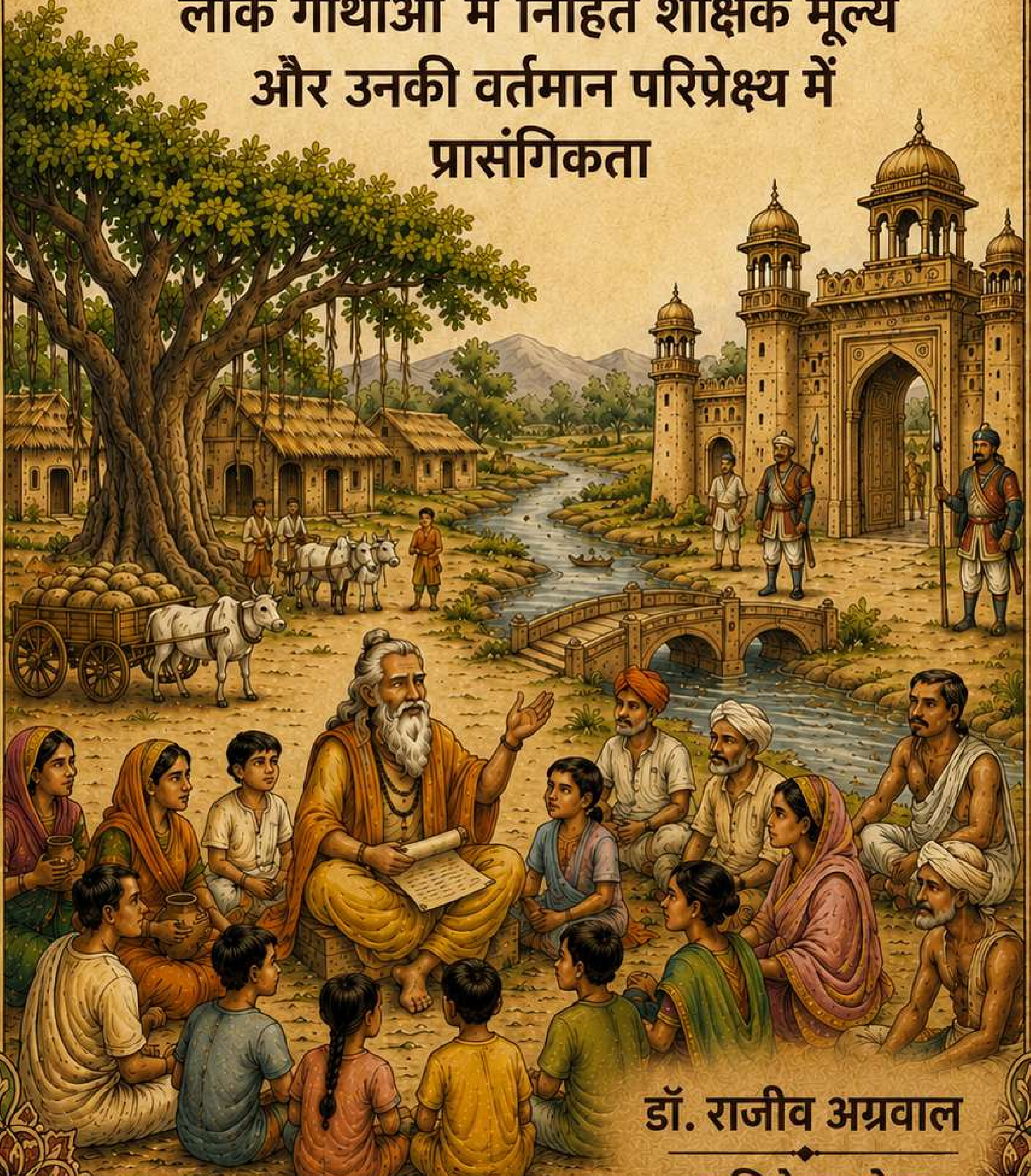
रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी':

लोक गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य और उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता



डॉ. राजीव अग्रवाल

अभिषेक ओझा

रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी': लोक गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य और उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ. राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

अभिषेक ओझा

M.A. (English), M.Ed.

रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी': लोक गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य और उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ. राजीव अग्रवाल
अभिषेक ओझा

E-Book: संस्करण: जुलाई, 2026

मूल्य: ₹ 249

ISBN: 978-93-5937-084-2

प्रकाशक:

अभिषेक ओझा
फलगो चौरिहा का पुरवा, अतर्रा ग्रामीण,
बाँदा- 210201
(उत्तर प्रदेश)

मो. – 6306627341
E-mail: mr.abhiojha@gmail.com

प्राक्कथन

लोक-संस्कृति और लोक-साहित्य किसी भी समाज की चेतना के जीवंत दस्तावेज़ होते हैं। वे केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए व्यावहारिक जीवन, संकट प्रबंधन और सामाजिक संतुलन बनाए रखने की अनौपचारिक नियमावली भी हैं। बुंदेलखंड की पावन और ऐतिहासिक माटी जहाँ एक ओर शौर्य और अध्यात्म की भूमि रही है, वहीं दूसरी ओर यह लोक-मेधा, वाक्-चातुर्य और हास्य-व्यंग्य के अनूठे प्रतिमानों से भी समृद्ध रही है। इसी वाचिक परंपरा में चित्रकूट जनपद के ऐतिहासिक ग्राम रसिन के विलक्षण लोक-चरित्र 'अवसेरी' की गाथाएँ समाहित हैं, जो अपने समय में व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और लोक-न्याय का अद्भुत उदाहरण थीं। प्रस्तुत पुस्तक इसी उपेक्षित पड़े ज्ञान-भंडार को अकादमिक मुख्यधारा में स्थापित करने का एक विनम्र प्रयास है।

वर्तमान समय में जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली अत्यधिक परीक्षा-केंद्रित, रटंत विद्या पर आधारित और यांत्रिक हो चुकी है, तब विद्यार्थियों में जीवन कौशलों (Life Skills) और तात्कालिक बुद्धिमत्ता (Fluid Intelligence) का अभाव साफ़ दिखाई देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) इसी खाई को पाटने के लिए 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' और 'स्थानीय ज्ञान-परंपराओं' को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर विशेष बल देती है। यह पुस्तक इसी राष्ट्रीय उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अवसेरी की 12 ऐतिहासिक गाथाओं का शैक्षिक, सामाजिक और भाषाई दृष्टिकोण से अन्वेषण करता है।

पुस्तक की संरचना को वैज्ञानिक और तार्किक ढंग से कुल **छह अध्यायों (Six Chapters)** में विभाजित किया गया है, जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है:

- **Chapter 1 (अध्ययन परिचय):** यह पुस्तक के सैद्धांतिक और वैचारिक ढांचे को निर्मित करता है। इसके अंतर्गत प्रस्तावना, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन की आवश्यकता और औचित्य को रेखांकित करते हुए शोध के मुख्य उद्देश्यों, परिकल्पनाओं, सीमाओं तथा इसकी सार्थकता को स्पष्ट किया गया है।
- **Chapter 2 (संबंधित साहित्य की समीक्षा):** इस खंड में बुंदेली लोक-साहित्य के सांस्कृतिक इतिहास, लोक-कथाओं के नैतिक मूल्यों, सामाजिक प्रतिरोध के समाजशास्त्रीय अध्ययनों, एनईपी 2020 और संकट प्रबंधन पर पूर्व में किए गए वैश्विक व राष्ट्रीय शोध कार्यों का व्यापक मूल्यांकन किया गया है ताकि वर्तमान अध्ययन के 'रिसर्च गैप' को प्रमाणित किया जा सके।
- **Chapter 3 :** यह पुस्तक पद्धतिगत रीढ़ है। इसमें गुणात्मक अनुसंधान के प्रारूप, समष्टि, प्रतिदर्श चयन (Sampling Methods), आंकड़ों के प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों तथा क्षेत्र-कार्य (Fieldwork) के दौरान उपयोग में लाए गए उपकरणों और विश्लेषण प्रविधियों का तार्किक विवरण प्रस्तुत किया गया है।
- **Chapter 4 (अवसेरी की गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता):** यह इस पुस्तक का सबसे मौलिक और व्यावहारिक अध्याय है। इसमें रसिन क्षेत्र से संकलित अवसेरी की सभी 12 विशिष्ट लोकगाथाओं का गहन विश्लेषण करके उनमें छिपे शैक्षिक मूल्यों और चतुर जीवन-प्रबंधन को उजागर किया गया है।

- **Chapter 5 (अवसेरी की गाथाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता):** यह अध्याय सैद्धांतिक निष्कर्षों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों से जोड़ता है। यहाँ आधुनिक परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की तुलना अवसेरी के व्यावहारिक दृष्टिकोण से करते हुए इन कहानियों को प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर 'शैक्षणिक उपकरण' (कॉमिक्स, चित्र-कथाओं, रोल-प्ले) के रूप में ढालने का एक व्यावहारिक 'पाठ्यक्रम मॉडल' सुझाया गया है।
- **Chapter 6 (निष्कर्ष एवं सुझाव):** शोध के अंतिम सोपान के रूप में यह अध्याय सभी आख्यानों से प्राप्त निष्कर्षों का सारांश और परिणामों की विवेचना प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही इसमें परिकल्पनाओं का कड़ाई से परीक्षण व प्रमाणीकरण किया गया है तथा कक्षा-कक्ष अनुप्रयोग के लिए नीति-निर्माताओं को ठोस व्यावहारिक सुझाव देते हुए आगामी शोधार्थियों के लिए भावी अनुसंधान की दिशाएँ अनुशंसित की गई हैं।

यह पुस्तक केवल बुंदेलखंड के एक लुप्तप्राय मौखिक इतिहास का दस्तावेज़ीकरण नहीं है, बल्कि शिक्षा को आनंददायक (Joyful Learning) और अपनी जड़ों से जुड़ी हुई बनाने का एक सशक्त रोडमैप है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अध्ययन लोक-साहित्य, बाल-मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र और संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले आगामी शोधार्थियों, शिक्षकों और पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ साबित होगा।

दिनांक - 16/06/2026 **अभिषेक ओझा**

स्थान- अतर्रा (बाँदा)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य की समीक्षा

अध्याय चतुर्थ- अवसेरी की गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

पंचम अध्याय

अवसेरी की गाथाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता

षष्ठ अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

परिशिष्ट

प्रथम अध्याय
अध्ययन परिचय

➺प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

रसिन (चित्रकूट) के 'बीरबल' अवसेरी की लोकगाथाओं का शैक्षणिक अध्ययन करने के लिए इसे स्थापित शिक्षाशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के धरातल पर समझना अनिवार्य है। इस शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को निम्नलिखित 4 मुख्य वैचारिक स्तंभों के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है:

1. अनौपचारिक शिक्षा और लोक-परंपरा का सिद्धांत

प्राचीन काल से ही शिक्षा की दो धाराएं समानांतर रूप से प्रवाहित होती रही हैं—औपचारिक (Formal) और अनौपचारिक (Informal)। प्रसिद्ध शिक्षाविद् जॉन डीवी (John Dewey) का मानना था कि "शिक्षा समाज की सामाजिक चेतना में व्यक्ति के निरंतर भाग लेने की प्रक्रिया है।" औपचारिक विद्यालयों के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, मानव समाज ने अपनी भावी पीढ़ी के समाजीकरण (Socialization) के लिए लोकसाहित्य, लोकगाथाओं और मिथकों को 'अनौपचारिक पाठशाला' के रूप में विकसित किया था।

जर्मन दार्शनिक जोहान गॉटफ्रीड वॉन हरडर (Johann Gottfried von Herder) ने प्रतिपादित किया था कि किसी भी राष्ट्र या अंचल की वास्तविक चेतना और बुद्धिमत्ता उसकी लोक-परंपराओं (Volkspoesie) में निवास करती है। रसिन के अवसेरी की लोकगाथाएं इसी अनौपचारिक शिक्षा सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये गाथाएं बुंदेली समाज के 'कलेक्टिव अनकॉन्शियस' (Collective Unconscious या सामूहिक अचेतन) से उपजी हैं, जो शिक्षार्थियों को खेल-खेल में और बिना किसी मानसिक दबाव के समाज के नियमों, मर्यादाओं और नैतिक व्यवहारों की शिक्षा देती हैं।

2. अनुभवजन्य अधिगम एवं व्यावहारिक बुद्धिमत्ता

शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह शोध रॉबर्ट स्टर्नबर्ग (Robert Sternberg) के '**बुद्धि के त्रिचापीय सिद्धांत**' **(Triarchic Theory of Intelligence)** पर आधारित है। स्टर्नबर्ग ने बुद्धि के तीन प्रकार बताए हैं:

- विश्लेषणात्मक (Analytical)
- सृजनात्मक (Creative)
- व्यावहारिक (Practical Contextual)

स्टर्नबर्ग के अनुसार, व्यावहारिक बुद्धि वह है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वास्तविक जीवन के परिवेश में सफल होता है और समस्याओं का समाधान ढूंढता है, जिसे हम आम बोलचाल में 'सड़क-चतुराई' या 'कॉमन सेंस' (Street Smarts/Common Sense) कहते हैं।

रसिन के अवसेरी का पूरा चरित्र इसी 'व्यावहारिक बुद्धिमत्ता' का मूर्त रूप है। उनकी गाथाओं में किताबी ज्ञान की जगह 'अनुभवजन्य ज्ञान' (Contextual Wisdom) को सर्वोपरि माना गया है। जब हम इन गाथाओं का अध्ययन करते हैं, तो यह जॉन डीवी के 'लर्निंग बाई डूइंग' (Learning by Doing) और व्यावहारिक समस्याओं के समाधान खोजने की प्रवृत्ति को सुदृढ़ करती हैं।

3. सामाजिक-सांस्कृतिक संज्ञानात्मक विकास

मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्स्की (Lev Vygotsky) का **सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत** यह स्पष्ट करता है कि बच्चों का संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) उनके समाज और संस्कृति के अंतर्संबंधों के बीच होता है। वाइगोत्स्की ने 'एमकेओ' (More Knowledgeable Other यानी अधिक ज्ञानवान अन्य) की अवधारणा दी थी।

रसिन के अवसेरी की लोकगाथाओं में 'अवसेरी' का चरित्र बुंदेली समाज के लिए उसी 'एमकेओ' (MKO) की तरह काम करता है। जब कक्षा में या समाज में इन गाथाओं को सुनाया जाता है, तो ये शिक्षार्थी के 'समीपस्थ विकास के क्षेत्र' (Zone of Proximal Development - ZPD) को उत्प्रेरित करती हैं। छात्र अवसेरी की तार्किक युक्तियों को देखकर अपनी खुद की 'आलोचनात्मक सोच' (Critical Thinking) और 'समस्या समाधान क्षमता' (Problem-Solving Skill) का विस्तार करना सीखते हैं।

4. चरित्र निर्माण और मूल्यपरक शिक्षा का सामाजिक आधार

महान शिक्षाशास्त्री जे. कृष्णमूर्ति और महात्मा गांधी दोनों ने इस बात पर बल दिया था कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य एक 'सच्चे और संवेदनशील मनुष्य' का निर्माण करना है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यपरक शिक्षा (Value Education) इसलिए असफल हो रही है क्योंकि वह केवल उपदेशात्मक (Preaching) है। इसके विपरीत, अल्बर्ट बांडुरा (Albert Bandura) का **सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Social Learning Theory)** बताता है कि मनुष्य व्यवहारों को देखकर और उनका अनुकरण (Modeling) करके सीखता है।

रसिन के 'बीरबल' अवसेरी की लोकगाथाएं शिक्षार्थियों के सामने 'न्यायप्रियता', 'निष्पक्षता', 'धैर्य', और 'अहिंसक संवाद' के जीवंत मॉडल प्रस्तुत करती हैं। चित्रकूट की इस पावन और सांस्कृतिक भूमि पर, जहाँ मर्यादा और न्याय के गहरे संस्कार हैं, वहाँ अवसेरी की गाथाएं नैतिक मूल्यों को शुष्क नियमों के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की सरस कहानियों के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि का मुख्य निष्कर्ष:

संक्षेप में, इस शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि '**लोक-संस्कृति के समाजशास्त्र**' को '**शिक्षा के बाल-केंद्रित और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों**' के साथ जोड़ती है। यह सिद्ध करती है कि रसिन के अवसेरी के किस्से केवल प्राचीन अतीत की गूंज नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक 'रचनात्मक शिक्षा शास्त्र' (Constructivist Pedagogy) के व्यावहारिक उपकरण हैं, जो २१वीं सदी के शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान कर सकते हैं।

1.1.2 'बीरबल' अवसेरी का लोक-स्वरूप और ऐतिहासिकता

अवसेरी का जन्म उत्तर प्रदेश स्थित चित्रकूट जनपद के **रसिन** ग्राम के **सोरहिया (ब्राह्मण) परिवार** में आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व हुआ था। इनका विवाह उतरवा (पौहार) ग्राम में हुआ था। उनका सबसे विस्मयकारी पक्ष यह था कि वे औपचारिक रूप से **साक्षर नहीं थे**, किंतु उनकी जिह्वा पर सरस्वती का वास था। वे अत्यंत विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। किसी भी परिस्थिति पर सटीक एवं जीवन्त, व्यंग्यात्मक प्रस्तुतिकरण करने की उनकी क्षमता अत्यंत विलक्षण थी।

बुंदेली लोक-मानस में 'अवसेरी' एक ऐसी कालजयी और ऐतिहासिक चरित्र हैं, जिन्हें 'बुंदेलखंड का बीरबल' कहा जाता है। जिस प्रकार मुगल दरबार में बीरबल और विजयनगर साम्राज्य में तेनालीराम अपनी हाजिरजवाबी, चतुर युक्तियों और कठिन से कठिन समस्याओं के सरल समाधान के लिए जाने जाते हैं, ठीक उसी प्रकार बुंदेली लोक-कहानियों में अवसेरी का व्यक्तित्व निखर कर आता है। रसिन और उसके आस-पास के अंचल में प्रचलित लोकगाथाओं में अवसेरी कोई काल्पनिक पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक संकटों को अपनी तार्किक क्षमता से सुलझाने वाले एक जीवंत मार्गदर्शक हैं।

लोकोक्तिपरक संदर्भ: अवसेरी की गाथाओं में अमीर-गरीब, पारिवारिक एवं ग्रामीण परिवेश के ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जहाँ सामाजिक जटिलताओं को बिना किसी हिंसा या द्वेष के, केवल 'वाक्-चातुर्य' (Wit) और 'बुद्धिमत्ता' (Wisdom) से सुलझाया गया है। वे बुंदेली समाज की व्यावहारिक न्यायधीश हैं।

साहित्यिक शैली: अवसेरी जी की लोकगाथाओं में बुंदेली लोक-जीवन की सोंधी महक मिलती है। उनकी शैली मुख्यतः 'व्यंग्य' और 'हास्य' पर आधारित थी, लेकिन उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शन करना था।

1.1.3 लोकगाथाओं का शैक्षणिक दृष्टिकोण

आधुनिक शिक्षा शास्त्र (Pedagogy) के अनुसार, शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास (Holistic Development) करना है। शिक्षाविद् जॉन डीवी (John Dewey) के 'अनुभवजन्य अधिगम' (Experiential Learning) के सिद्धांत के आलोक में यदि देखा जाए, तो अवसेरी की लोकगाथाएं वास्तविक जीवन की समस्याओं (Real-life problem-solving) पर आधारित हैं।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

इन गाथाओं का शैक्षिक वर्गीकरण निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है:

- **संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development):** ये गाथाएं बच्चों में तर्क शक्ति, कल्पनाशीलता और कूटनीतिक सोच को बढ़ावा देती हैं।
- **भावात्मक विकास (Affective Development):** कहानियों के माध्यम से सहानुभूति (Empathy), न्यायप्रियता, और धैर्य जैसे मानवीय मूल्यों का बीजारोपण होता है।
- **मनोवैज्ञानिक कौशल (Psychomotor/Life Skills):** संकट के समय मानसिक संतुलन कैसे बनाए रखना है (Crisis Management), यह इन लोकगाथाओं का मुख्य संदेश होता है।

1.2.1 वैश्विक और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नैतिक ह्रास

वर्तमान 21वीं सदी विज्ञान, तकनीकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के अभूतपूर्व विकास की गवाह है। किंतु इस भौतिक प्रगति के समानांतर मानव समाज में नैतिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का तीव्र गति से ह्रास हुआ है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली सूचनाओं और व्यावसायिक कौशलों को प्रदान करने में तो सफल रही है, लेकिन वह शिक्षार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता विकसित करने में पिछड़ रही है। इसी कारणवश आज के युवाओं में अवसाद, एकाकीपन और जीवन की वास्तविक समस्याओं से भागने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। शिक्षाविदों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती ऐसी 'मूल्यपरक शिक्षा' (Value-based Education) की है जो व्यावहारिक और रुचिपूर्ण हो।

1.2.2 लोकसाहित्य की उपेक्षा और संक्रमण काल

ऐतिहासिक रूप से, भारत की स्वदेशी ज्ञान परंपरा (Indigenous Knowledge System) मौखिक कहानियों, पंचतंत्र, हितोपदेश और क्षेत्रीय लोकगाथाओं के माध्यम से नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा देती रही है। परंतु, वैश्वीकरण (Globalization) और डिजिटल मीडिया के अति-प्रसार के कारण आज की युवा पीढ़ी अपनी जड़ों और स्थानीय लोकसाहित्य से पूरी तरह कट चुकी है। बुंदेलखंड जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्र की मौखिक विधाएं, जो कभी चरित्र निर्माण की अनौपचारिक पाठशालाएं हुआ करती थीं, आज लुप्त होने के कगार पर हैं। 'बीरबल' अवसेरी जैसे कालजयी और व्यावहारिक चरित्र केवल बुजुर्गों की स्मृतियों तक सिमट कर रह गए हैं।

1.2.3 अकादमिक शून्यता

इस समस्या का एक और गंभीर पहलू यह है कि बुंदेली लोकसाहित्य पर जो भी थोड़े-बहुत शोध हुए हैं, वे मुख्य रूप से भाषाई, साहित्यिक (Literary) या ऐतिहासिक दृष्टिकोण तक ही सीमित रहे हैं। 'बीरबल' अवसेरी की लोकगाथाओं को आज तक केवल 'मनोरंजन' या 'समय काटने के साधन' (Folk Entertainment) के रूप में देखा गया है। इन गाथाओं के भीतर छिपे:

- संकट प्रबंधन (Crisis Management)
- तार्किक क्षमता (Critical Thinking)

- न्यायप्रियता और मध्यस्थता (Conflict Resolution)
- और लैंगिक समानता व सामाजिक समरसता

जैसे गंभीर **शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक तत्वों (Pedagogical Elements)** का कोई व्यवस्थित, वैज्ञानिक और संहिताबद्ध (Codified) अध्ययन उपलब्ध नहीं है। शिक्षा शास्त्र (Education Study) के क्षेत्र में यह एक बहुत बड़ी अकादमिक शून्यता (Research Gap) है।

1.2.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्थानीय लोकगाथाओं का अंतर्संबंध

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षा को प्रासंगिक बनाने के लिए स्थानीय भाषाओं, कलाओं और लोकगाथाओं का पाठ्यक्रम में समावेश (Integration) अनिवार्य है। समस्या यह है कि जब तक हमारे पास क्षेत्रीय स्तर पर ऐसा प्रामाणिक शोध डेटा उपलब्ध नहीं होगा जो इन लोकगाथाओं के शैक्षिक मूल्यों को सिद्ध कर सके, तब तक इन्हें स्कूली पाठ्यक्रमों या शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training) कार्यक्रमों में शामिल करना असंभव है।

1.2.5 समस्या का मुख्य निष्कर्ष

संक्षेप में, इस शोध की मुख्य समस्या यह है कि:

"बुंदेलखंड की अत्यंत समृद्ध 'बीरबल' अवसेरी लोकगाथाएं, जो अपने भीतर आधुनिक जीवन कौशल (Life Skills) और मूल्यपरक शिक्षा का अनमोल खजाना समेटे हुए हैं, वे दस्तावेजीकरण (Documentation) के अभाव में विलुप्त हो रही हैं। साथ ही, आधुनिक शिक्षा शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार उनका व्यावहारिक मूल्यांकन न होने के कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली उनके लाभों से वंचित है।"

अतः इस समस्या के समाधान हेतु इन गाथाओं का शैक्षणिक विश्लेषण करना, उनके मूल्यों को श्रेणीबद्ध करना और वर्तमान स्कूली शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता को सिद्ध करना अत्यंत आवश्यक और सामयिक है।

1.3 अध्ययन की आवश्यकता

इस शोध कार्य की आवश्यकता वर्तमान वैश्विक, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय परिस्थितियों के आलोक में निम्नलिखित कारणों से अत्यंत अपरिहार्य हो जाती है:

- **1. मूल्यपरक शिक्षा की व्यावहारिक कमी को दूर करने हेतु:** आधुनिक स्कूली शिक्षा मुख्य रूप से अंक-केंद्रित और व्यावसायिक हो चुकी है। यद्यपि पाठ्यक्रमों में 'नैतिक शिक्षा' का एक कालखंड (Period) होता है, परंतु वह केवल किताबी और सैद्धांतिक होकर रह गया है। बच्चों को ऐसी कहानियों और दृष्टांतों की आवश्यकता है जो उनके स्थानीय परिवेश से जुड़े हों और जिन्हें वे आसानी से आत्मसात कर सकें। बुंदेलखंड के 'बीरबल' अवसेरी की गाथाएं इस व्यावहारिक कमी को पूरा करने का सबसे सशक्त माध्यम हैं।

- **2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के क्रियान्वयन हेतु:** नई शिक्षा नीति स्पष्ट रूप से स्थानीय ज्ञान प्रणालियों (Indigenous Knowledge Systems) और क्षेत्रीय लोक-संस्कृति को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर जोर देती है। बुंदेलखंड अंचल के स्कूलों में स्थानीय स्तर पर ऐसी पाठ्य-सामग्री का अभाव है जो इस मानक को पूरा कर सके। यह अध्ययन अवसेरी की गाथाओं का शैक्षणिक विश्लेषण कर ऐसी सामग्री उपलब्ध कराएगा, जिससे नीति के जमीनी क्रियान्वयन में मदद मिलेगी।
- **3. मौखिक परंपरा के विलोपन को रोकने (Documentation) हेतु:** अवसेरी की लोकगाथाएं मुख्य रूप से 'वाचिक' या मौखिक (Oral Tradition) हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के बुजुर्ग और लोक-कलाकार इसके एकमात्र संरक्षक हैं। तकनीकी युग और पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण यह पीढ़ी धीरे-धीरे समाप्त हो रही है और उनके साथ ही यह अमूल्य ज्ञान भी नष्ट हो रहा है। इस ज्ञान संपदा को लिखित रूप में संकलित और प्रलेखित (Document) करना समय की सबसे बड़ी मांग है।
- **4. आधुनिक जीवन कौशलों (Life Skills) के विकास हेतु:** विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा अनुशंसित 10 कोर जीवन कौशलों में 'समस्या समाधान' (Problem Solving), 'आलोचनात्मक सोच' (Critical Thinking) और 'तनाव प्रबंधन' (Coping with Stress) प्रमुख हैं। अवसेरी की कहानियों में इन कौशलों के जीवंत उदाहरण मिलते हैं, जहाँ बिना किसी हथियार या हिंसा के, केवल दिमागी सूझबूझ से जटिल से जटिल सामाजिक समस्याओं का समाधान निकाला जाता है। विद्यार्थियों को इन कौशलों से परिचित कराने के लिए यह अध्ययन आवश्यक है।

1.4 समस्या कथन

समसामयिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन की आवश्यकता के आलोक में शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित लघु शोध-प्रबन्ध हेतु निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया-

"रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी': लोकगाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य और उनकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता।"

1.5 समस्या में निहित शब्दों का परिभाषीकरण

1.5.1 चित्रकूट

चित्रकूट- दो शब्दों के मेल से बना है। संस्कृत में **चित्र का अर्थ है अशोक एवं कूट का अर्थ है शिखर या चोटी।** इस वन क्षेत्र में कभी अशोक के वृक्ष बहुतायत मिलते थे। चित्रकूट, **"अनेक आश्चर्यों की पहाड़ियां"** वास्तव में प्रकृति और देवताओं द्वारा प्रदत्त एक अद्वितीय उपहार है, जो उत्तर प्रदेश में पयस्वनी/मन्दाकिनी नदी के किनारे विन्ध्य के उत्तरार्द्ध में स्थित एक शांत भूमि है।

ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से चित्रकूट महत्वपूर्ण जनपद है। 6 मई 1997 को U.P. में एक नया ज़िला बनाया गया, जिसका नाम 'छत्रपति शाहूजी महाराज नगर' रखा गया था। इसमें कर्वी और मऊ तहसीलें शामिल थीं, और इसे बांदा ज़िले से अलग करके बनाया गया था। कुछ समय बाद,

4 सितंबर 1998 को इस ज़िले का नाम बदलकर 'चित्रकूट' कर दिया गया। यह उत्तरी विंध्य पर्वतमाला में स्थित है, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में फैली हुई है। इसका ज़्यादातर हिस्सा U.P. के चित्रकूट ज़िले और मध्य प्रदेश के सतना ज़िले में आता है। यहाँ 'चित्रकूट' शब्द का इस्तेमाल इस पूरे बड़े इलाके को दर्शाने के लिए किया गया है, और यह इस इलाके के अलग-अलग स्थानों और जगहों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विरासत का प्रतीक है। हर अमावस्या को लाखों लोग इन जगहों पर इकट्ठा होते हैं। सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरद पूर्णिमा, मकर संक्रांति और राम नवमी ऐसे जमावड़ों और उत्सवों के लिए खास मौके होते हैं।



1.5.2 रसिन

रासिन उत्तर प्रदेश राज्य के चित्रकूट जिले के करवी ब्लॉक में स्थित एक गाँव है। यह चित्रकूट मंडल के अंतर्गत आता है। यह जिला मुख्यालय चित्रकूट धाम से पश्चिम दिशा में 29 किलोमीटर और राज्य की राजधानी लखनऊ से 210 किलोमीटर दूर स्थित है।

रासिन का पिन कोड 210201 है और इसका डाकघर पीजी कॉलेज, अतर्रा है।

रासिन के दक्षिण में चित्रकूट धाम ब्लॉक, पूर्व में मानिकपुर ब्लॉक, पहाड़ी ब्लॉक और पश्चिम में बिसंदा ब्लॉक स्थित हैं।

चित्रकूट, बांदा, सतना और फतेहपुर रासिन के निकटवर्ती शहर हैं।

रसिन गांव का इतिहास बहुत प्राचीन है और यह बुंदेलखंड की शौर्य गाथाओं से जुड़ा है। रसिन के अन्दर ही बारौधा नरेश की राजधानी थी | यही पर उनका किला, गढ़ी इत्यादि सब बनी थीं| उस समय रसिन का नाम **राजवंशी** था|

- **प्राचीन टीले और किले:** गांव के पास स्थित ऊंचे टीलों पर एक प्राचीन किले के अवशेष मिलते हैं। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, यह क्षेत्र मध्यकाल में बुंदेला शासकों और स्थानीय जागीरदारों की गतिविधियों का केंद्र था।
- **सांस्कृतिक जड़ें:** यह गांव पारंपरिक बुंदेली संस्कृति का संरक्षक रहा है। यहाँ के लोकगीत, कहावतें और रीति-रिवाज आज भी शुद्ध बुंदेली शैली में जीवित हैं।

रसिन बांध: आधुनिक चित्रकूट की जीवनरेखा

वर्तमान में रसिन की सबसे बड़ी पहचान यहाँ का '**रसिन बांध**' **(Rasin Dam)** है।

- **परियोजना का इतिहास:** इस बांध की नींव लगभग 2003-2004 में रखी गई थी और लंबे अंतराल के बाद वर्ष **2021** में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा इसका विधिवत लोकार्पण किया गया।
- **सिंचाई और पेयजल:** यह बांध ओहन (Ohan) नदी के पानी को रोककर बनाया गया है। इससे चित्रकूट के सूखे ग्रस्त इलाकों (लगभग 2290 हेक्टेयर भूमि) को सिंचाई की सुविधा मिलती है।
- **पर्यटन स्थल:** बांध बनने के बाद यह स्थान एक खूबसूरत पिकनिक स्पॉट बन गया है। पहाड़ियों के बीच विशाल जलराशि और शांत वातावरण पर्यटकों को आकर्षित करता है।

भौगोलिक स्थिति

- **स्थान:** यह चित्रकूट जिले के **कर्वी (Karwi)** तहसील के अंतर्गत आता है। यह चित्रकूट-बांदा सीमा के करीब स्थित है।
- **प्राकृतिक छटा:** यह गांव विंध्य पर्वतमाला की तलहटी में बसा है, जिससे यहाँ की भौगोलिक बनावट पथरीली और हरियाली से युक्त है।

सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

- **कृषि:** यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। बांध के निर्माण से पहले यहाँ खेती पूरी तरह मानसून पर निर्भर थी, लेकिन अब सिंचाई सुविधाओं में सुधार हुआ है।
- **चुनौतियां:** जहाँ बांध ने खुशहाली दी है, वहीं कुछ स्थानीय किसानों के विस्थापन और मुआवजे से जुड़ी समस्याएँ भी समय-समय पर चर्चा में रही हैं।



रसिन (चित्रकूट) - भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ

इस शोध में 'रसिन' का तात्पर्य केवल एक प्रशासनिक या भौगोलिक भूभाग (ग्राम) मात्र से नहीं है। क्रियात्मक रूप से (Operationally), रसिन से तात्पर्य चित्रकूट जनपद के अंतर्गत आने वाले उस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र से है, जो अपनी विशिष्ट पारंपरिक न्याय व्यवस्था, चौपाल संस्कृति और मौखिक बौद्धिक विरासत के लिए जाना जाता है। इस शोध के अंतर्गत 'रसिन' को उस उद्गम स्थल (Universe of Study) के रूप में परिभाषित किया गया है जहाँ से 'अवसेरी' की गाथाएं जनमानस के व्यवहार में शामिल होकर आस-पास के बुंदेली अंचल में फैलीं।

1.5.3 'बीरबल' अवसेरी

सामान्यतः बीरबल एक ऐतिहासिक चरित्र हैं जो सम्राट अकबर के नवरत्नों में से एक थे। परंतु इस शोध के परिप्रेक्ष्य में 'बीरबल अवसेरी' एक **उपाधिपरक और प्रतीक सूचक शब्द (Symbolic Term)** है।

- **अवसेरी (अबसेरी):** इसका प्रचालनात्मक अर्थ बुंदेलखंड (विशेषकर रसिन क्षेत्र) के उस विशिष्ट लोक-नायक/चरित्र से है, जो अपनी हाजिरजवाबी, चतुर युक्तियों और लोक-न्याय के लिए विख्यात हैं।
- **'बीरबल' विशेषण:** यहाँ 'बीरबल' शब्द का प्रयोग अवसेरी की कुशाग्र बुद्धि, संकट प्रबंधन और कूटनीतिक समस्या-समाधान की क्षमताओं को रेखांकित करने के लिए एक 'रूपक' (Metaphor) के रूप में किया गया है।

1.5.4 लोकगाथाएँ

शिक्षा शास्त्र और इस शोध के दृष्टिकोण से 'लोकगाथाओं' का अर्थ केवल मनोरंजन या काल्पनिक लोक-कथाएं (Fairy Tales) नहीं है। यहाँ लोकगाथाओं से तात्पर्य रसिन अंचल में मौखिक रूप से जीवित उन '**अनुभवजन्य वृत्तांतों**' **(Empirical Narratives)** और ऐतिहासिक/अर्ध-ऐतिहासिक प्रसंगों से है, जिनमें सामाजिक संघर्षों, पारिवारिक विवादों और नैतिक संकटों को सुलझाने की वास्तविक घटनाएं वर्णित हैं। ये गाथाएं बुंदेली समाज की अनौपचारिक आचार-संहिता (Ethical Code) की तरह काम करती हैं।

1.5.5 शैक्षिक मूल्य

इस शोध में 'शैक्षिक मूल्य' शब्द को बहुत व्यापक और व्यावहारिक अर्थ में लिया गया है। इसका तात्पर्य केवल किताबी नैतिकता (Moral Preaching) से नहीं है, बल्कि इसके अंतर्गत निम्नलिखित तत्वों को क्रियात्मक रूप से परिभाषित किया गया है:

- **संज्ञानात्मक मूल्य (Cognitive Values):** तार्किक क्षमता, आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) और मानसिक चपलता।
- **व्यावहारिक मूल्य (Functional Values):** संकट के समय त्वरित निर्णय लेना (Decision Making), संसाधनहीनता में भी मार्ग खोजना।

- **सामाजिक-भावनात्मक मूल्य (Socio-Emotional Values):** मध्यस्थता (Conflict Resolution), सामाजिक समरसता, लैंगिक संवेदनशीलता और बिना हिंसा के न्याय की स्थापना।

1.5.6 वर्तमान परिप्रेक्ष्य

शीर्षक में प्रयुक्त 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य' का क्रियात्मक अर्थ **21वीं सदी की आधुनिक जीवनशैली और समकालीन शैक्षिक परिदृश्य** से है। इसमें मुख्य रूप से दो बिंदु शामिल हैं:

- **शिक्षार्थियों का मानसिक परिदृश्य:** आज के विद्यार्थियों में बढ़ता अवसाद, एकाकीपन, गैजेट्स (मोबाइल/इंटरनेट) की निर्भरता और व्यावहारिक बुद्धि (Common Sense) की कमी।
- **नीतिगत परिदृश्य:** वर्तमान समय में लागू **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** की वे आकांक्षाएं, जो स्कूली शिक्षा को स्थानीय संस्कृति, मातृभाषा और स्वदेशी ज्ञान परंपरा से जोड़ने की मांग करती हैं।

1.5.7 प्रासंगिकता

इस शोध में 'प्रासंगिकता' का प्रचालनात्मक अर्थ '**उपयोगिता और अनुप्रयोग**' **(Applicability)** से है। इसका तात्पर्य यह जांचना है कि क्या अतीत की ये मौखिक गाथाएं आज के डिजिटल युग के बच्चों के चरित्र निर्माण, बाल-मनोविज्ञान को समझने और कक्षाओं को अधिक जीवंत व सरस (Joyful Learning) बनाने में एक प्रभावी 'शिक्षण उपकरण' या 'शिक्षण सहायक सामग्री' (Pedagogical Tool) के रूप में काम आ सकती हैं या नहीं।

1.6 अध्ययन का औचित्य

1.6.1 मौखिक लोक-परंपरा का संरक्षण

बुंदेलखंड का अधिकांश लोक-साहित्य लिखित न होकर **श्रुति-परंपरा (मौखिक रूप)** में जीवित है। अवसेरी के किस्से आज भी रसिन और उसके आस-पास के गाँवों की चौपालों तक ही सीमित हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ और डिजिटल मनोरंजन (सोशल मीडिया, ओटीटी) के कारण नई पीढ़ी इन चौपालों से दूर हो रही है। यदि समय रहते इन गाथाओं का प्रामाणिक दस्तावेज़ीकरण (Documentation) नहीं किया गया, तो वृद्ध पीढ़ी के अवसान के साथ ही यह अनमोल लोक-धरोहर हमेशा के लिए लुप्त हो जाएगी। अतः इस सांस्कृतिक शून्यता को भरने के लिए यह अध्ययन अत्यंत न्यायसंगत है।

1.6.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के लक्ष्यों की पूर्ति

वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति (NEP 2020) इस बात पर विशेष ज़ोर देती है कि शिक्षा को '**स्थानीयता से वैश्विकता**' **(Local to Global)** की ओर बढ़ना चाहिए। नीति के अनुसार, बच्चों को उनकी मातृभाषा और स्थानीय लोक-संस्कृति के माध्यम से सिखाया जाना चाहिए।

- अवसेरी की कहानियाँ बुंदेली भाषा, मुहावरों और ग्रामीण परिवेश का जीवंत उदाहरण हैं।
- इस अध्ययन के माध्यम से यह सिद्ध होगा कि कैसे इन कहानियों को प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करके पंचतंत्र या ईसप की कहानियों की तरह स्थानीय स्तर पर भाषाई और सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

1.6.3 किताबी ज्ञान बनाम व्यावहारिक बुद्धिमत्ता

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से रटने, परीक्षाओं और अंक प्राप्त करने पर केंद्रित हो गई है, जिससे बच्चों में 'व्यावहारिक बुद्धि' (Street Smartness) की कमी देखी जा रही है। अवसेरी का चरित्र किताबी तौर पर शिक्षित न होते हुए भी '**प्रॉब्लम सॉल्विंग**' **(समस्या समाधान)** और '**क्रिटिकल थिंकिंग**' **(आलोचनात्मक सोच)** का प्रतीक है।

- विपरीत परिस्थितियों में तुरंत अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कैसे करना है (जैसे ज़मींदार को उसकी ही दलील से हराना या दूध दुहते पकड़े जाने पर लाज दिलाना), यह वास्तविक जीवन का प्रबंधन सिखाता है।
- यह अध्ययन आज की शिक्षा प्रणाली को यह सोचने पर मजबूर करेगा कि चातुर्य और व्यावहारिक सूझबूझ को शिक्षा का हिस्सा कैसे बनाया जाए।

1.6.4 लोक-न्याय और सामंतवाद के विरुद्ध प्रतिरोध का अध्ययन

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बुंदेलखंड का ग्रामीण समाज ज़मींदारी प्रथा और वर्ग-भेद से पीड़ित रहा है। ऐसे दमनकारी माहौल में अवसेरी जैसा एक सामान्य निर्धन व्यक्ति अपनी बुद्धि के बल पर ताकतवर ज़मींदारों का अहंकार तोड़ता है।

- अवसेरी का यह प्रतिरोध हिंसक नहीं, बल्कि बौद्धिक और हास्यास्पद है।
- समाजशास्त्र और इतिहास के नजरिए से यह अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि कैसे लोक-साहित्य शोषित वर्ग के लिए एक 'सुरक्षा वॉल्व' (Safety Valve) और 'अनौपचारिक न्याय' का माध्यम बनता था।

1.6.5 मानसिक स्वास्थ्य और बुंदेली हास्य की प्रासंगिकता

आज का मानव जीवन अत्यधिक तनाव, अवसाद और एकाकीपन से घिरा हुआ है। अवसेरी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता उनका **उत्कृष्ट हास्य और व्यंग्य** है। अवसेरी खुद संकट में फँसने पर भी घबराते नहीं हैं, बल्कि हँसते-हँसाते रास्ता निकाल लेते हैं (जैसे घी-माटी वाले किस्से में महफिल लूटकर भागना)। इस अध्ययन का औचित्य यह भी है कि यह स्थापित करे कि लोक-कथाओं का यह अनूठा हास्य आधुनिक समाज के मानसिक तनाव को कम करने और विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में एक बेहतरीन 'थैरेपी' का काम कर सकता है।

1.6.6 क्षेत्रीय अस्मिता और पर्यटन/सांस्कृतिक विकास

जिस प्रकार राजस्थान ने अपने लोक-नायकों को और गुजरात ने अपनी लोक-कथाओं को वैश्विक पटल पर रखकर अपने पर्यटन और संस्कृति को बढ़ावा दिया है, बुंदेलखंड (विशेषकर चित्रकूट क्षेत्र) इस मामले में पीछे छूट गया है। रसिन के अवसेरी पर यह शोध न केवल शैक्षणिक जगत में चित्रकूट का नाम आगे बढ़ाएगा, बल्कि यह बुंदेली संस्कृति, कला और लोक-रंग को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान देने का आधार बनेगा।

निष्कर्ष रूप में औचित्य:

यह शोध केवल अतीत की कुछ हँसाने वाली कहानियों का संग्रह नहीं है; बल्कि यह **अतीत के व्यावहारिक ज्ञान को भविष्य की शिक्षा प्रणाली से जोड़ने वाला एक सेतु** है। यह अध्ययन यह साबित करेगा कि 'बुद्धिमत्ता' किसी डिग्री की मोहत्ताज नहीं होती और रसिन के अवसेरी के पास आज के कॉर्पोरेट मैनेजमेंट और लाइफ-स्किल्स (Life Skills) के लिए भी बहुत कुछ सिखाने को है।

1.7 अध्ययन के मुख्य उद्देश्य

1.7.1 मौखिक लोक-साहित्य का संकलन और डिजिटल प्रलेखन

- **क्षेत्रीय अन्वेषण:** चित्रकूट जनपद के रसिन गाँव और उसके आस-पास के क्षेत्रों (जैसे सहजाजपुर, रंडी पुरवा आदि) का दौरा करके वहाँ के वृद्धों, लोक-कलाकारों और कथावाचकों के माध्यम से अवसेरी के अनछुए व अप्रकाशित किस्सों को संकलित करना।
- **भाषा का संरक्षण:** बुंदेली बोली के ठेठ और मौलिक शब्दों, मुहावरों और अभिव्यक्तियों को उनके मूल रूप में सहेजना, ताकि अनुवाद के दौरान लोक-कथाओं का सोंधापन नष्ट न हो।
- **डिजिटल आर्काइव:** इन मौखिक आख्यानों को ऑडियो, वीडियो और लिखित रूप में डिजिटल तौर पर सुरक्षित करना ताकि आने वाले शोधार्थियों के लिए यह एक प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ बन सके।

1.7.2 अवसेरी गाथाओं में निहित 'शैक्षिक मूल्यों' का वर्गीकरण

इस शोध का एक मुख्य उद्देश्य कहानियों का शैक्षणिक विश्लेषण करना है, जिसके तहत मूल्यों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जाएगा:

- **नैतिक मूल्य (Moral Values):** यह जांचना कि कहानियाँ बच्चों को ईमानदारी, चालाकी के विरुद्ध सही तर्क और सामाजिक संतुलन का क्या पाठ पढ़ाती हैं।
- **व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (Practical & Fluid Intelligence):** अवसेरी के संकट प्रबंधन (Crisis Management) के तरीकों का अध्ययन करना, जो यह सिखाते हैं कि बिना औपचारिक डिग्री के भी विषम परिस्थितियों में त्वरित और सटीक निर्णय (Apt Decision Making) कैसे लिया जाता है।

- **मनोवैज्ञानिक मूल्य (Psychological Values):** यह समझना कि अवसेरी का 'बुंदेली हास्य' किस प्रकार विपरीत स्थितियों में मानसिक तनाव और अवसाद को कम करने में सहायक है।

1.7.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में उपयोगिता का मूल्यांकन

- **मातृभाषा आधारित शिक्षण:** यह अध्ययन करना कि अवसेरी की कहानियाँ प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए बुंदेली और हिंदी भाषा के विकास में कितनी सहायक सिद्ध हो सकती हैं।
- **अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning):** वर्तमान शिक्षा नीति रटने के बजाय 'करके सीखने' और व्यावहारिक ज्ञान पर ज़ोर देती है। शोध का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि अवसेरी की 'स्ट्रीट स्मार्टनेस' को आधुनिक लाइफ-स्किल्स (Life Skills) के पाठ्यक्रम का हिस्सा कैसे बनाया जा सकता है।

1.7.4 सामाजिक-सांस्कृतिक और प्रतिरोध के स्वर का विश्लेषण (Socio-Cultural Analysis)

- **सामंतवाद का विरोध:** अवसेरी की कहानियों के माध्यम से तत्कालीन बुंदेलखंड की सामाजिक संरचना, ज़मींदारी प्रथा और वर्ग-भेद का अध्ययन करना।
- **लोक-न्याय (Folk Justice):** यह देखना कि कैसे अवसेरी अपनी बुद्धि के बल पर बिना हिंसा के, केवल हास्य और चतुर दलीलों के माध्यम से समाज के ताकतवर लोगों को झुकाते हैं और शोषित वर्ग को एक मानसिक संबल या अनौपचारिक न्याय प्रदान करते हैं।

1.7.5 समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता और 'प्रबंधन सूत्रों' की खोज

- **न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम परिणाम (Resource Optimization):** अवसेरी के पास खुद का कोई मवेशी नहीं था, फिर भी वे पूरे गाँव के दूध-घी का आनंद लेते थे। शोध का उद्देश्य उनके इस गुण को आज के 'रिसोर्स मैनेजमेंट' और 'जुगाड़ तकनीक' (Frugal Innovation) के सिद्धांतों से जोड़कर देखना है।
- **व्यक्तित्व विकास:** यह खोजना कि कैसे आज की युवा पीढ़ी, जो बहुत जल्दी तनाव और अवसाद का शिकार हो जाती है, अवसेरी के 'हाज़िरजवाबी' और 'मस्तमौला' अंदाज़ से जीवन जीने का संतुलन सीख सकती है।

1.7.6 शैक्षणिक उपकरणों के रूप में रूपांतरण

- **चित्र-कथाओं का निर्माण:** अवसेरी की कहानियों को कॉमिक्स, एनसीईआरटी (NCERT) स्टाइल की चित्र-कथाओं और डिजिटल एनिमेशन में बदलने की संभावनाओं को तलाशना ताकि बच्चों के लिए इन्हें रुचिकर बनाया जा सके।
- **पाठ्य-सामग्री का प्रस्ताव:** इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा बोर्डों (जैसे UP Board, CBSE) के समक्ष अवसेरी की चुनिंदा कहानियों को सप्लीमेंट्री रीडर (पूरक पठन) के रूप में शामिल करने का एक ठोस प्रस्ताव तैयार करना।

संक्षेप में उद्देश्य का निष्कर्ष:

इस अध्ययन का अंतिम ध्येय रसिन के अवसेरी को केवल बुंदेलखंड के इतिहास के पन्नों तक सीमित न रखकर, उन्हें **एक आधुनिक व्यावहारिक शिक्षक और लोक-दार्शनिक के रूप में स्थापित करना** है, जिनकी सीख आज के समय में भी उतनी ही जीवंत और उपयोगी है।

1.8 अध्ययन की मुख्य परिकल्पनाएं

H1. लोक-संस्कृति और मौखिक इतिहास का संरक्षण

यह परिकल्पना की जाती है कि रसिन (चित्रकूट) के अवसेरी की लोकगाथाएं वर्तमान में पूरी तरह से मौखिक परंपरा (Oral Tradition) पर निर्भर हैं। यदि इनका समय रहते प्रामाणिक दस्तावेज़ीकरण (Documentation) और डिजिटल संरक्षण नहीं किया गया, तो आधुनिक डिजिटल मीडिया के प्रभाव और पीढ़ियों के अंतराल (Generation Gap) के कारण यह अनमोल लोक-धरोहर अगले कुछ दशकों में पूरी तरह विलुप्त हो जाएगी।

H2. व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और लाइफ-स्किल्स का विकास

इस अध्ययन की यह सुदृढ़ परिकल्पना है कि अवसेरी की कहानियां केवल मनोरंजन या हास्य का साधन नहीं हैं, बल्कि वे 'फ्लुइड इंटेलिजेंस' (Fluid Intelligence) और संकट प्रबंधन (Crisis Management) के व्यावहारिक पाठ हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन्हें शामिल करने से विद्यार्थियों में किताबी ज्ञान से परे जाकर वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझाने (Problem-Solving Skills) की क्षमता का विकास होगा।

H3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के लक्ष्यों के साथ अनुकूलता

यह परिकल्पना की जाती है कि अवसेरी की कहानियों में प्रयुक्त ठेठ बुंदेली बोली, मुहावरे और ग्रामीण संदर्भ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' और 'स्थानीय कला-संस्कृति के गौरव' के उद्देश्यों को पूरा करने में एक सशक्त और प्रभावी शैक्षणिक उपकरण (Pedagogical Tool) सिद्ध हो सकते हैं।

H4. सामाजिक न्याय और अनौपचारिक प्रतिरोध का माध्यम

यह अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि अवसेरी का चरित्र तत्कालीन सामंतवादी व्यवस्था, ज़मींदारी शोषण और वर्ग-भेद के विरुद्ध लोक-मानस के 'बौद्धिक और अहिंसक प्रतिरोध' का प्रतीक है। अवसेरी की चतुर दलीलें और हास्य, शोषित समाज के लिए एक प्रकार के 'लोक-न्याय' (Folk Justice) का कार्य करते थे, जिसने सामाजिक संतुलन बनाए रखने में मदद की।

H5. मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन में प्रासंगिकता

यह परिकल्पना की जाती है कि अवसेरी की कहानियों में निहित 'बुंदेली हास्य और व्यंग्य' आज के अत्यधिक तनावपूर्ण, प्रतिस्पर्धी और अवसादग्रस्त आधुनिक जीवन में एक 'साइकोलॉजिकल थेरेपी' (Psychological Therapy) की तरह काम कर सकता है। विपरीत परिस्थितियों में भी घबराने के बजाय मुस्कुराते हुए रास्ता निकालना (जैसे घी-माटी वाले किस्से में अवसेरी का अंदाज़) युवाओं को मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाने में सहायक है।

H6. संसाधनों के कुशल प्रबंधन का लोक-सिद्धांत

इस शोध की यह भी एक परिकल्पना है कि बिना किसी निजी संसाधन (जैसे गाय-भैंस) के भी सामाजिक ताने-बाने के बीच अपना हक और हिस्सा तय कर लेना (जैसे "तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी" का दर्शन) आज के आधुनिक 'रिसोर्स ऑप्टिमाइज़ेशन' (Resource Optimization) और 'मितव्ययी नवाचार' (Frugal Innovation / जुगाड़ तकनीक) के शुरुआती लोक-सिद्धांतों को प्रमाणित करता है।

1.9 अध्ययन की मुख्य पूर्व धारणाएं

1.9.1 लोक-कथाओं की ऐतिहासिकता और सत्यता

यह अध्ययन इस बुनियादी धारणा पर आधारित है कि 'अवसेरी' कोई काल्पनिक या मनगढ़ंत चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे चित्रकूट के रसिन गाँव के एक वास्तविक ऐतिहासिक लोक-नायक थे। उनके जीवन से जुड़े ये किस्से सदियों के अनुभव और वास्तविक सामाजिक घटनाओं की नींव पर टिके हैं, जिन्हें केवल मनोरंजन की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता।

1.9.2 मौखिक स्मृतियों की प्रामाणिकता

शोध की यह पूर्व धारणा है कि रसिन और उसके आस-पास के ग्रामीण अंचलों में जो बुजुर्ग, लोक-कलाकार या किस्सागो (कथावाचक) मौजूद हैं, उनकी स्मृतियों में अवसेरी की कहानियां काफी हद तक अपने मूल रूप में सुरक्षित हैं। भले ही इनमें थोड़ा बहुत स्थानीय पुट (अतिशयोक्ति) शामिल हो गया हो, लेकिन कहानी का मुख्य संदेश और सामाजिक सरोकार आज भी प्रामाणिक है।

1.9.3 लोक-साहित्य का अनौपचारिक शैक्षणिक महत्व

यह मानकर चला जा रहा है कि प्राचीन काल से ही लोक-साहित्य (जैसे पंचतंत्र या लोकगाथाएं) समाज में शिक्षा और नैतिक आचरण सिखाने का सबसे बड़ा माध्यम रहा है। इसी क्रम में, अवसेरी की कहानियां भी केवल हँसाने के लिए नहीं रची गईं, बल्कि उनके भीतर ग्रामीण समाज को जागरूक करने और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता सिखाने का एक अनौपचारिक शैक्षणिक ढांचा हमेशा से मौजूद था।

1.9.4 वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता

यह अध्ययन इस धारणा को स्वीकार करता है कि आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली अत्यधिक किताबी और परीक्षा-केंद्रित हो चुकी है, जिससे बच्चों में व्यावहारिक समझ और संकट-प्रबंधन (Crisis Management) की कमी हो रही है। अतः, इस कमी को पूरा करने के लिए अवसेरी जैसी लोक-गाथाओं के व्यावहारिक दृष्टिकोण की आज सख्त जरूरत है।

1.9.5 समाज के भाषाई और सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना

यह पूर्व धारणा है कि यदि नई पीढ़ी को उनकी मातृभाषा (बुंदेली) और स्थानीय नायकों (जैसे अवसेरी) के माध्यम से शिक्षित किया जाए, तो उनके भीतर अपनी जड़ों के प्रति हीनभावना समाप्त होगी। यह जुड़ाव उनके भाषाई विकास और सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित करने में सकारात्मक भूमिका निभाएगा।

1.9.6 प्रतिरोध और सामाजिक संतुलन का अस्तित्व

यह अध्ययन मानकर चलता है कि तत्कालीन बुंदेली समाज में ज़मींदारी और सामंतशाही का गहरा प्रभाव था। उस दौर में अवसेरी की चतुर दलीलें और हास्यपरक व्यवहार (जैसे बिना मवेशी के दूध-घी पर हक जताना) शोषित समाज के असंतोष को गरिमापूर्ण तरीके से व्यक्त करने और सामाजिक संतुलन बनाए रखने का एक सशक्त जरिया था।

1.10 अध्ययन का परिसीमन

1.10.1 भौगोलिक परिसीमन

यह शोध मुख्य रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र के अंतर्गत **उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद** तक ही सीमित रहेगा। विशेष रूप से डेटा (आंकड़े) और लोक-कथाओं का संकलन अवसेरी के मूल निवास स्थान **'रसिन' गाँव** और उसके आस-पास के चुनिंदा पुरवों (जैसे सहजाजपुर, रंडी पुरवा आदि) से ही किया जाएगा। बुंदेलखंड के अन्य जिलों (जैसे झाँसी, बांदा, महोबा) की लोक-कथाओं को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।

1.10.2 विषय वस्तु का परिसीमन

यह अध्ययन केवल और केवल लोक-नायक **'अवसेरी' की विशिष्ट लोकगाथाओं, चतुर किस्सों और हाज़िरजवाबी के प्रसंगों** पर केंद्रित रहेगा। बुंदेलखंड के अन्य प्रसिद्ध लोक-चरित्रों या लोकगाथाओं (जैसे आल्हा-ऊदल, ईसुरी की फागें, या हरदौल की वीरता) को इस शोध के दायरे से बाहर रखा गया है, ताकि अवसेरी के चरित्र का गहन विश्लेषण किया जा सके।

1.10.3 शैक्षिक और प्रासंगिक परिसीमन

इस शोध के अंतर्गत अवसेरी की कहानियों का विश्लेषण केवल उनके **शैक्षणिक मूल्यों (Educational Values)**, व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (Practical Intelligence), लाइफ-स्किल्स (Life Skills) और वर्तमान शिक्षा नीति (NEP 2020) में उनकी प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से ही किया जाएगा। कहानियों के विशुद्ध साहित्यिक रस, छंद या भाषाई व्याकरण के तकनीकी विश्लेषण को इस शोध का मुख्य हिस्सा नहीं बनाया जाएगा।

1.10.4 लक्षित समूह का परिसीमन

साक्षात्कार (Interviews) और प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए केवल रसिन और आस-पास के गाँवों के **बुजुर्गों (60 वर्ष से अधिक आयु), स्थानीय लोक-कलाकारों, किस्सागो (कथावाचकों) और बुंदेली संस्कृति के जानकारों** को ही चुना जाएगा। सामान्य ग्रामीण आबादी या आधुनिक युवा पीढ़ी को प्राथमिक स्रोत के रूप में शामिल नहीं किया जाएगा, क्योंकि लोक-कथाओं की मूल समझ वरिष्ठ नागरिकों के पास अधिक प्रामाणिक है।

1.10.5 भाषाई परिसीमन

यह शोध मुख्य रूप से **ठेठ बुंदेली बोली** में उपलब्ध मौखिक साक्ष्यों पर आधारित होगा। हालांकि, शैक्षणिक विश्लेषण और शोध ग्रंथ की प्रस्तुति **हिंदी भाषा** में की जाएगी (जहाँ आवश्यकता होगी वहाँ संदर्भ के लिए बुंदेली का हिंदी-अंग्रेज़ी रूपांतरण दिया जाएगा)। बुंदेलखंड की अन्य उप-बोलियों (जैसे बनाफरी, लोधांती या पवारी) के भाषाई प्रभाव को इस अध्ययन से अलग रखा गया है।

1.10.6 विधागत परिसीमन

यह अध्ययन केवल अवसेरी से जुड़ी **मौखिक कहानियों, कहावतों, व्यंग्य और लोक-कथाओं (Folktales)** तक सीमित रहेगा। यदि अवसेरी के नाम पर कोई काल्पनिक लिखित नाटक या आधुनिक समकालीन कविताएं बाद में रची गई हैं, तो उन्हें इस शोध की मूल सामग्री का हिस्सा नहीं माना जाएगा।

1.11 अध्ययन की सार्थकता एवं महत्व

1.11.1 बुंदेली लोक-संस्कृति और मौखिक इतिहास का पुनरुद्धार

यह शोध चित्रकूट के रसिन गाँव की उस लुप्तप्राय मौखिक ज्ञान-परंपरा को लिखित और डिजिटल रूप में सहेजने का कार्य करेगा जो अब तक केवल बुजुर्गों की स्मृतियों में बची है। अवसेरी की कहानियों का यह दस्तावेज़ीकरण बुंदेली भाषा के संरक्षण के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रामाणिक 'सांस्कृतिक कोश' (Cultural Archive) का काम करेगा। यह क्षेत्रीय पहचान और अस्मिता को बचाए रखने के दृष्टिकोण से अत्यंत सार्थक है।

1.11.2 आधुनिक शिक्षा प्रणाली को 'व्यावहारिक लाइफ-स्किल्स' का विकल्प देना

आज की कॉर्पोरेट और शैक्षणिक दुनिया में 'स्ट्रीट स्मार्टनेस', 'क्राइसिस मैनेजमेंट' (संकट प्रबंधन) और 'प्रॉब्लम सॉल्विंग' (समस्या समाधान) जैसी क्षमताओं पर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है। अवसेरी का चरित्र किताबी ज्ञान से दूर रहकर भी इन सभी गुणों का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह अध्ययन यह साबित करेगा कि कैसे प्राचीन लोक-कथाओं के माध्यम से बच्चों को खेल-खेल में और हँसते-हँसाते व्यावहारिक जीवन की कठिन चुनौतियाँ पार करना सिखाया जा सकता है।

1.11.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के क्रियान्वयन में सहायक

नई शिक्षा नीति 2020 स्थानीय भाषाओं, मातृभाषा और क्षेत्रीय लोक-नायकों को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विशेष बल देती है। यह शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को धरातल पर उतारने में एक सेतु का कार्य करेगा। शोध के निष्कर्षों का उपयोग करके प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए ऐसी पूरक पाठ्य-पुस्तकें (Supplementary Readers) का निर्माण किया जा सकता है जो बच्चों को अपनी मिट्टी से जोड़ें।

1.11.4 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण: अहिंसक प्रतिरोध और सामाजिक न्याय का पाठ

बुंदेलखंड के इतिहास में ज़मींदारी शोषण और सामंतशाही का गहरा प्रभाव रहा है। ऐसे दमनकारी माहौल में अवसेरी द्वारा बिना किसी हिंसा या हथियार के, केवल अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और हास्य के बल पर शक्तिशाली लोगों का अहंकार तोड़ना एक बहुत बड़ा सामाजिक संदेश है। यह अध्ययन समाजशास्त्र के शोधार्थियों को यह समझने में मदद करेगा कि कैसे लोक-साहित्य शोषितों के लिए 'मानसिक संबल' और 'अहिंसक प्रतिरोध' का सबसे सशक्त हथियार बनता था।

1.11.5 मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मकता के लिए 'बुंदेली हास्य' की उपयोगिता

आज की आधुनिक जीवनशैली में युवा और बच्चे बहुत जल्दी अवसाद (Depression) और मानसिक तनाव का शिकार हो रहे हैं। अवसेरी की कहानियों की सबसे बड़ी सार्थकता उनका 'मस्तमौला अंदाज़' और 'चुलबुला हास्य' है। बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी घबराने के बजाय अपनी हाज़िरजवाबी से रास्ता निकाल लेना आज के समाज के लिए एक 'मनोवैज्ञानिक थेरेपी' (Psychological Therapy) की तरह है। यह शोध तनाव प्रबंधन में लोक-हास्य के महत्व को रेखांकित करेगा।

1.11.6 भावी शोधकर्ताओं और नीति निर्धारकों के लिए संदर्भ ग्रंथ

बुंदेलखंड के बीरबल 'अवसेरी' पर अब तक कोई व्यापक अकादमिक या वैज्ञानिक शोध नहीं हुआ है। इस दृष्टि से यह अध्ययन इस विषय पर पहला प्रामाणिक और व्यवस्थित शोध कार्य होगा। यह भविष्य में लोक-साहित्य, क्षेत्रीय इतिहास, शिक्षाशास्त्र और बाल-मनोविज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले आगामी शोधार्थियों, लेखकों और पाठ्यक्रम निर्माताओं (Curriculum Designers) के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा।

द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य की समीक्षा

- **2.1** बुंदेली लोक-साहित्य और सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित साहित्य
- **2.2** लोक-कथाओं का शैक्षणिक एवं नैतिक मूल्य
- **2.3** लोक-न्याय और सामाजिक प्रतिरोध का समाजशास्त्रीय अध्ययन
- **2.4** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और स्थानीय ज्ञान-परंपरा
- **2.5** व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और संकट प्रबंधन
- **2.6** अध्ययन से संबंधित कतिपय पूर्ववर्ती शोध कार्य
- **2.7** साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य की समीक्षा

2.1 बुंदेली लोक-साहित्य और सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित साहित्य

- **समीक्षा:** डॉ. कृष्णानंद गुप्त (बुंदेली लोक-साहित्य के मूर्धन्य विद्वान) तथा अन्य क्षेत्रीय इतिहासकारों ने अपने लेखों में बुंदेलखंड की वाचिक (मौखिक) परंपरा का विस्तृत वर्णन किया है। उनके अनुसार, बुंदेली लोक-कथाओं में 'चतुराई और हाज़िरजवाबी' की एक बहुत लंबी श्रृंखला है।
- **शोध अंतराल (Research Gap):** इन साहित्यों में ईसुरी की फागें, आल्हा-ऊदल की वीरता और लोक-देवताओं पर तो प्रचुर मात्रा में लिखा गया है, परंतु चित्रकूट (रसिन) के स्थानीय लोक-नायक 'अवसेरी' के विशिष्ट चरित्र और उनकी हास्य-व्यंग्य विधा को केवल फुटकर (छिटपुट) कहानियों के रूप में ही स्थान मिला है, कोई व्यवस्थित संकलन नहीं हुआ है।

2.2 लोक-कथाओं का शैक्षणिक एवं नैतिक मूल्य

- **समीक्षा:** राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए विभिन्न शोध (जैसे जीन पियाजे के बाल-विकास सिद्धांत और पंचतंत्र की कहानियों पर हुए अध्ययन) यह प्रमाणित करते हैं कि कहानियाँ बच्चों के संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। लोक-कथाएँ अनौपचारिक रूप से समाज के स्वीकृत नियमों और नैतिक मूल्यों को बच्चों के मानस पटल पर अंकित कर देती हैं।
- **शोध अंतराल (Research Gap):** पूर्व के अधिकांश शोध पंचतंत्र, जातक कथाओं या अकबर-बीरबल तक ही सीमित रहे हैं। बुंदेलखंड की स्थानीय आंचलिक कथाओं (विशेषकर अवसेरी की युक्तियों) का बाल-मनोविज्ञान और आधुनिक शिक्षण विधियों के चश्मे से मूल्यांकन अभी तक अछूता रहा है।

2.3 लोक-न्याय और सामाजिक प्रतिरोध का समाजशास्त्रीय अध्ययन

- **समीक्षा:** समाजशास्त्रियों (जैसे जेम्स सी. स्कॉट की पुस्तक *'वेपन्स ऑफ द वीक'*) का मानना है कि शोषित या कमजोर समाज शक्तिशाली वर्ग के खिलाफ हमेशा हिंसक विद्रोह नहीं करता; वह 'दैनिक प्रतिरोध' (Everyday Resistance) के रूप में हास्य, व्यंग्य, चुटकुलों और कहानियों का सहारा लेता है।
- **शोध अंतराल (Research Gap):** अवसेरी के किस्से (जैसे बिना मवेशी के दूध-घी पर अपना दबंग हक जताना) इसी दैनिक प्रतिरोध और लोक-न्याय (Folk Justice) का सटीक उदाहरण हैं। बुंदेली समाज के संदर्भ में सामंतशाही के विरुद्ध अवसेरी के इस 'बौद्धिक और अहिंसक प्रतिरोध' का कोई समाजशास्त्रीय या ऐतिहासिक विश्लेषण उपलब्ध नहीं है।

2.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और स्थानीय ज्ञान-परंपरा

- **समीक्षा:** समकालीन शैक्षिक शोधों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद 'स्थानीय से वैश्विक' (Local to Global) और मातृभाषा आधारित प्राथमिक शिक्षा पर बहुत काम हो रहा है। शोधकर्ता इस बात की आवश्यकता जता रहे हैं कि बच्चों को उनकी अपनी मिट्टी के नायकों से परिचित कराया जाए।
- **शोध अंतराल (Research Gap):** नीतिगत स्तर पर स्थानीयता की बात तो की जा रही है, परंतु धरातल पर कौन-से क्षेत्रीय नायक (जैसे रसिन के अवसेरी) इस मापदंड पर खरे उतरते हैं और उनके पास क्या विशिष्ट 'लाइफ-स्किल्स' (Life Skills) हैं, इसे पाठ्यक्रम निर्माताओं के सामने लाने वाला कोई व्यावहारिक शोध ढांचा अभी तक प्रस्तुत नहीं किया गया है।

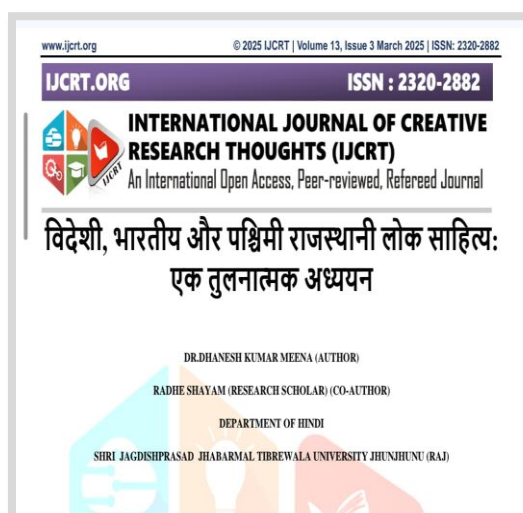
2.5 व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और संकट प्रबंधन

- **समीक्षा:** आधुनिक प्रबंधन (Management) और मनोविज्ञान के क्षेत्र में रॉबर्ट स्टर्नबर्ग का 'ट्रायरकिक थ्योरी ऑफ इंटेलिजेंस' (Triarchic Theory of Intelligence) विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जो किताबी ज्ञान से अलग 'कांन्टेक्स्टुअल' या 'व्यावहारिक बुद्धि' (Street Smartness) की बात करता है।
- **शोध अंतराल (Research Gap):** अवसेरी की सूझबूझ इसी व्यावहारिक बुद्धि का सर्वोत्तम उदाहरण है। लेकिन कॉर्पोरेट या आधुनिक लाइफ-कोचिंग के सिद्धांतों को इस देसी 'जुगाड़' या 'बुंदेली सूझबूझ' के साथ जोड़कर देखने का कोई प्रयास पूर्व के साहित्यों में नहीं मिलता है।

2.6 अध्ययन से संबंधित कतिपय पूर्ववर्ती शोध कार्य

2.6.1 DHANESH KUMAR MEENA (2025) ने "विदेशी, भारतीय और पश्चिमी राजस्थानी लोक-साहित्य: एक तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

- हमारी सांस्कृतिक विरासत सजीव और प्रासंगिक हैं ।
- इस शोध ने लोक साहित्य के विभिन्य पहलुओं को उजागर किया है, किन्तु लोक साहित्य का अध्ययन एक अंतहीन यात्रा है ।
- आधुनिक युग में, लोक साहित्य के संरक्षण के लिए शैक्षणक अनुसंधान,डिजिटल माध्यमों, सरकारी योजनाओां और जनसहभागिता की आवश्यकता है ।


www.ijcrt.org © 2025 IJCRT | Volume 13, Issue 3 March 2025 | ISSN: 2320-2882

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विदेशी, भारतीय और पश्चिमी राजस्थानी लोक साहित्य: एक तुलनात्मक अध्ययन

DR.DHANESH KUMAR MEENA (AUTHOR)

RADHE SHAYAM (RESEARCH SCHOLAR) (CO-AUTHOR)

DEPARTMENT OF HINDI

SHRI JAGDISHPRASAD JHABARMAL TIBREWALA UNIVERSITY JHUNJHUNU (RAJ)

- लोक साहित्य को पुनर्जीवित करने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए अनुवाद डिजिटल संग्रहण और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी प्रस्तुति आवश्यक है।
- लोक साहित्य अपने समाज की परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक मूल्यों और ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव दस्तावेज है।
- लोक साहित्य किसी भी समाज की पहचान और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।
- विदेशी, भारतीय और पश्चिमी राजस्थानी लोक साहित्य की विविधता और तुलनात्मक अध्ययन है।

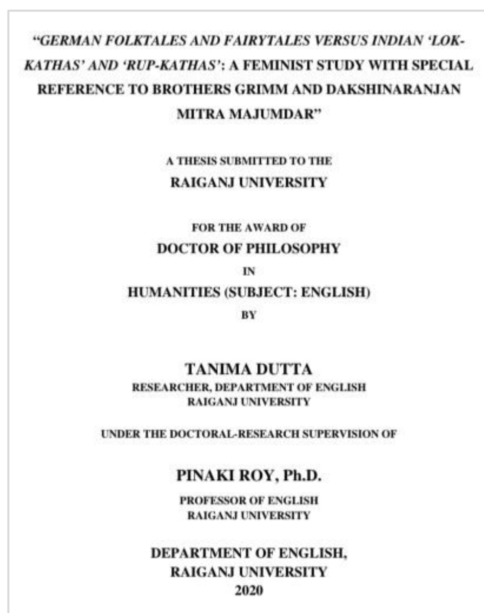
2.6.2 देवेन्द्र कुमार यादव (2021) ने "प्रमुख संस्कृत रूपकों में विदूषक: एक परिशीलन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-


प्रमुख संस्कृत रूपकों में विदूषक :
एक परिशीलन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
की
पी-एच०डी० (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध
विभागाध्यक्ष
प्रो0 उमेश प्रसाद सिंह
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी
शोध निर्देशक
प्रो0 उमेश प्रसाद सिंह
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी
शोधच्छात्र
देवेन्द्र कुमार यादव
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-221005
विश्वविद्यालय नामांकन संख्या : 362201
शोध पंजीयन संख्या : FA/Sans.//Res./Sept.2013/268
वर्ष : 2021

- नर्मसचिव और सहायक: विदूषक केवल एक हास्य पात्र नहीं है, बल्कि वह नायक का 'नर्मसचिव' (विश्वासपात्र मित्र) और सुख-दुःख का साथी होता है। वह नायक के प्रेम-प्रसंगों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- शृंगार रस में अपरिहार्यता: संस्कृत के शृंगार प्रधान रूपकों (नाटकों) में विदूषक का होना अनिवार्य माना गया है। वह नायक-नायिका के मिलन की योजना बनाता है और विरह के समय नायक का मनोरंजन कर उसे अवसाद से बचाता है।
- हास्य का स्रोत: विदूषक अपनी वेशभूषा, बातचीत (वाक्चातुर्य), चेष्टाओं और शारीरिक विकृतियों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन करता है। वह हास्य रस का मुख्य आधार होता है।
- विभिन्न नाटकों में नाम: शोध में विभिन्न विदूषकों का उल्लेख है, जैसे भास के नाटकों में वसन्तक और मैत्रेय, कालिदास के नाटकों में गौतम, माणवक एवं माढव्य, और श्रीहर्ष के नाटकों में आत्रेय।
- विदूषक के गुण और दोष: विदूषक को अक्सर भोजन प्रेमी (मोदकप्रिय), थोड़ा वाचाल (अधिक बोलने वाला) और कभी-कभी मंदबुद्धि दिखाया जाता है, लेकिन वह संकट के समय अपनी बुद्धिमानी और युक्तियों से नायक की रक्षा भी करता है।

- करुण और वीर रस में अभाव: उपसंहार के अनुसार, करुण, वीर और बीभत्स रसों में विदूषक का स्थान नहीं होता। यही कारण है कि महाकवि भवभूति ने अपने नाटकों (जैसे उत्तररामचरितम्) में विदूषक की योजना नहीं की है।
- सामाजिक व्यंग्य: विदूषक केवल मनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि वह तत्कालीन सामाजिक व्यवस्थाओं और कुरीतियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य (Satire) भी करता है। वह राजा और महारानियों तक को कटु वचन कहने का साहस रखता है।
- भाषा का प्रयोग: अधिकांश नाटकों में विदूषक प्राकृत भाषा का प्रयोग करता है, लेकिन राजशेखर जैसे कवियों के नाटकों में वह प्राकृत के साथ-साथ संस्कृत बोलने में भी कुशल दिखाई देता है।
- नैतिक और मानसिक सहारा: विदूषक नायक को राजाओं की कुदृष्टि से बचाने, रानियों के कोप से बचाने और कठिन परिस्थितियों में उचित परामर्श देने का कार्य करता है।
- आधुनिक प्रासंगिकता: विदूषक की परंपरा आज भी आधुनिक फिल्मों, नुक्कड़ नाटकों और क्षेत्रीय उत्सवों में किसी न किसी रूप में जीवित है, जो इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है।

2.6.3 Dutta, Tanima(2020) ने "German Folktales and fairytales Versus Indian Lok Kathas and Rup Kathas a Feminist study with Special Reference to Brothers Grimm and Dakshinaranjan Mitra Majumdar" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-



"*GERMAN FOLKTALES AND FAIRYTALES VERSUS INDIAN 'LOK-KATHAS' AND 'RUP-KATHAS'*: A FEMINIST STUDY WITH SPECIAL REFERENCE TO BROTHERS GRIMM AND DAKSHINARANJAN MITRA MAJUMDAR"

A THESIS SUBMITTED TO THE
RAIGANJ UNIVERSITY

FOR THE AWARD OF
DOCTOR OF PHILOSOPHY
IN
HUMANITIES (SUBJECT: ENGLISH)
BY

TANIMA DUTTA
RESEARCHER, DEPARTMENT OF ENGLISH
RAIGANJ UNIVERSITY

UNDER THE DOCTORAL-RESEARCH SUPERVISION OF

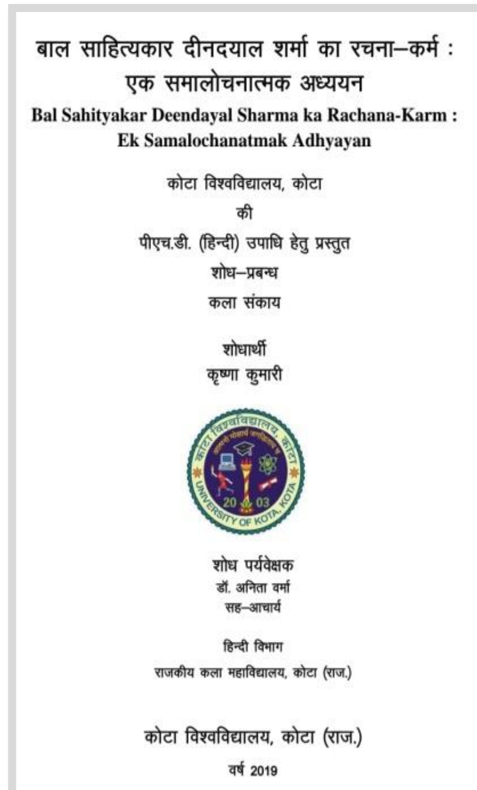
PINAKI ROY, Ph.D.
PROFESSOR OF ENGLISH
RAIGANJ UNIVERSITY

DEPARTMENT OF ENGLISH,
RAIGANJ UNIVERSITY
2020

- The tales of Grimm brothers and Majumdar from feminist points of view by not only putting forth a challenge to question the gender- stereotypes and male-hegemonic discourse, but also to look for the female subjectivity, agency, voice, autonomy and power from the texts written at a time when the idea of feminism was not that much predominant.
- The occident and the orient, rather the tales across different cultures are often dissolved into a unanimous pattern and also remain distinct at the same time.
- the tales from the West (Germany) and the East (India-Bengal) may apparently seem to be placed at the centre.
- The regional as well as temporal differences of the tales do not only reinforce the binaries of the self and the other.

- the ideas of Romantic cultural past, love for indigenous materials and German National Consciousness that determine the Grimm brothers' position as folk/fairy tale collectors in the early nineteenth century Germany.

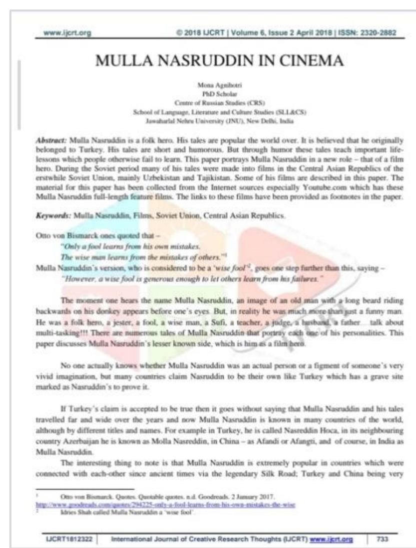
2.6.4 कृष्णा कुमारी (2019) ने "बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना-कर्म : एक समालोचनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-


बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना–कर्म :
एक समालोचनात्मक अध्ययन
Bal Sahityakar Deendayal Sharma ka Rachana-Karm :
Ek Samalochanatmak Adhyayan
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
की
पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
कला संकाय
शोधार्थी
कृष्णा कुमारी
शोध पर्यवेक्षक
डॉ. अनिता वर्मा
सह–आचार्य
हिन्दी विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)
वर्ष 2019

- कल्पना लोक का सृजन: दीनदयाल शर्मा का बाल साहित्य कल्पना के 'कैनवास' पर बुना गया है। वे बच्चों के लिए ऐसी अनोखी कल्पनाएँ करते हैं जो यथार्थ से परे होती हैं, जैसे नानी की तुलना मीठे जल की झारी से करना या चूहे का कार से बाजार जाना। तकनीक और आधुनिकता: इक्कीसवीं सदी की संचार क्रांति को ध्यान में रखते हुए, शर्मा जी ने अपने साहित्य में मोबाइल, कंप्यूटर, घड़ी और कार जैसे आधुनिक उपकरणों का बहुत ही सरस और आकर्षक तरीके से प्रयोग किया है।
- पशु-पक्षी और पर्यावरण: उनके साहित्य में पशु-पक्षियों और वन्य जीवों का प्रमुख स्थान है। उन्होंने चिड़िया, बंदर, हाथी, शेर और लोमड़ी जैसे अनेक जानवरों पर आधारित मनभावन कविताएँ और कहानियाँ लिखी हैं।
- सरल और बाल-उपयोगी भाषा: शर्मा जी ने बालकों के लिए अत्यंत सरल, मधुर, प्रवाहशील और चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है, ताकि बच्चे उसे आसानी से समझ सकें और आनंद ले सकें।
- ध्वन्यात्मकता का प्रयोग: उनकी रचनाओं में 'कड़-कड़', 'चट-पट', 'अगड़म-बगड़म' जैसे ध्वन्यात्मक शब्दों का सुंदर प्रयोग मिलता है, जो बच्चों को लय और संगीत का अनुभव कराते हैं।
- शब्द-चित्रों का निर्माण: लेखक शब्दों के माध्यम से जीवंत चित्र खींचने में माहिर हैं। चाहे बारिश का वर्णन हो या भालू का नाच, उनके शब्द-चित्र पाठकों की आँखों के सामने दृश्य उपस्थित कर देते हैं।

- विभिन्न शैलियों का समावेश: उन्होंने अपने लेखन में वर्णनात्मक, काव्यात्मक, मनोवैज्ञानिक, संवादात्मक और हास्यात्मक जैसी कई शैलियों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया है।
- मुहावरे और लोकोक्तियाँ: बाल साहित्य में कठिन माने जाने वाले मुहावरों और लोकोक्तियों को उन्होंने बहुत ही सहजता से पिरोया है, जिससे भाषा में 'गागर में सागर' जैसा प्रभाव पैदा होता है।
- शब्द भंडार की विविधता: उनके साहित्य में तत्सम, तद्भव, देशज के साथ-साथ अंग्रेजी, अरबी और फारसी के प्रचलित शब्दों (जैसे- टीवी, फोन, आजादी, खुशी) का समावेश है, जो इसे आधुनिक और व्यावहारिक बनाता है।
- सामाजिक सरोकार: शर्मा जी का मानना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उनका साहित्य बच्चों को समाज, सभ्यता, संस्कृति, भाईचारा और जीवन मूल्यों से जोड़ने का प्रयास करता है।

2.6.5 Mona Agnihotri (2018) ने “Mulla Nasruddin In Cinema” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-



www.ijcrt.org © 2018 IJCRT | Volume 6, Issue 2 April 2018 | ISSN: 2320-2882

MULLA NASRUDDIN IN CINEMA

Mona Agnihotri
PhD Scholar
Centre of Russian Studies (CRS)
School of Language, Literature and Culture Studies (SLL&CS)
Jawaharlal Nehru University (JNU), New Delhi, India

Abstract: Mulla Nasruddin is a folk hero. His tales are popular the world over. It is believed that he originally belonged to Turkey. His tales are short and humorous. But through humor these tales teach important life-lessons which people otherwise fail to learn. This paper portrays Mulla Nasruddin in a new role – that of a film hero. During the Soviet period many of his tales were made into films in the Central Asian Republics of the erstwhile Soviet Union, mainly Uzbekistan and Tajikistan. Some of his films are described in this paper. The material for this paper has been collected from the Internet sources especially Youtube.com which has these Mulla Nasruddin full-length feature films. The links to these films have been provided as footnotes in the paper.

Keywords: Mulla Nasruddin, Films, Soviet Union, Central Asian Republics.

Otto von Bismarck ones quoted that –
"Only a fool learns from his own mistakes.
The wise man learns from the mistakes of others."[1]
Mulla Nasruddin's version, who is considered to be a '*wise fool*'[2], goes one step further than this, saying –
"However, a wise fool is generous enough to let others learn from his failures."

The moment one hears the name Mulla Nasruddin, an image of an old man with a long beard riding backwards on his donkey appears before one's eyes. But, in reality he was much more than just a funny man. He was a folk hero, a jester, a fool, a wise man, a Sufi, a teacher, a judge, a husband, a father ... talk about multi-tasking!!! There are numerous tales of Mulla Nasruddin that portray each one of his personalities. This paper discusses Mulla Nasruddin's lesser known side, which is him as a film hero.

No one actually knows whether Mulla Nasruddin was an actual person or a figment of someone's very vivid imagination, but many countries claim Nasruddin to be their own like Turkey which has a grave site marked as Nasruddin's to prove it.

If Turkey's claim is accepted to be true then it goes without saying that Mulla Nasruddin and his tales travelled far and wide over the years and now Mulla Nasruddin is known in many countries of the world, although by different titles and names. For example in Turkey, he is called Nasreddin Hoca, in its neighbouring country Azerbaijan he is known as Molla Nasreddin, in China – as Afandi or Afangti, and of course, in India as Mulla Nasruddin.

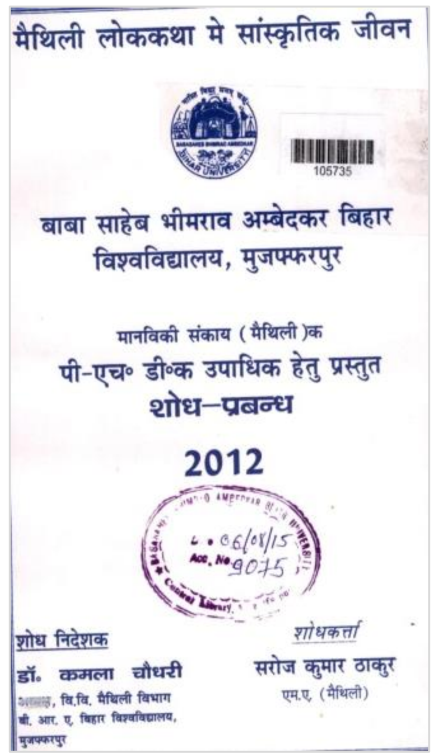
The interesting thing to note is that Mulla Nasruddin is extremely popular in countries which were connected with each-other since ancient times via the legendary Silk Road; Turkey and China being very

[1] Otto von Bismarck. Quotes. Quotable quotes. n.d. Goodreads. 2 January 2017. http://www.goodreads.com/quotes/294225-only-a-fool-learns-from-his-own-mistakes-the-wise
[2] Idries Shah called Mulla Nasruddin a 'wise fool'.

IJCRT1812322 | International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT) www.ijcrt.org | 733

- India has previously introduced the character of Mulla Nasruddin through a television serial in the 1980s, in which Raghuvir Yadav portrayed the role effectively.
- Despite the popularity and cultural significance of Mulla Nasruddin, India has not yet produced a full-length feature film based on his tales.
- Mulla Nasruddin stories continue to remain relevant in the modern world, adapting themselves to contemporary contexts and ideas.
- His tales use humor as a powerful tool to reflect on human nature and everyday life, often revealing truths that are otherwise overlooked.
- The character serves both as a source of entertainment and moral insight, making him an important figure in folk literature.
- Therefore, Mulla Nasruddin can be regarded as a true “hero,” whether as a folk hero or a potential cinematic hero.
- It is strongly suggested that Indian cinema should explore and develop a full-length feature film on Mulla Nasruddin to preserve and popularize his legacy.

2.6.6 SAROJ KUMAR THAKUR (2015) ने "Methili lok katha men sanskrit jevan" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-


मैथिली लोककथा मे सांस्कृतिक जीवन

105735

बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार
विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

मानविकी संकाय (मैथिली)क
पी-एच॰ डी॰क उपाधिक हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

2012

शोध निदेशक
डॉ॰ कमला चौधरी
वि.वि. मैथिली विभाग
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर

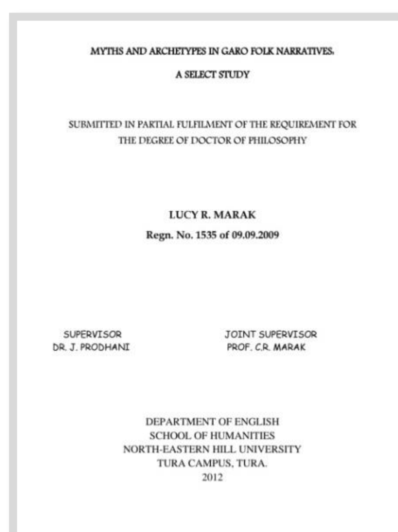
शोधकर्त्ता
सरोज कुमार ठाकुर
एम.ए. (मैथिली)

- **सांस्कृतिक उत्कर्ष और वातावरण:** शोध के अनुसार, सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए एक स्वस्थ राजनीतिक और सामाजिक वातावरण का होना अनिवार्य है। राजनीतिक शिथिलता के कारण समाज में जड़ता और अंधविश्वास व्याप्त हो जाता है।
- **मिथिला की गरिमा:** 19वीं शताब्दी के मध्य में मिथिला अपनी पुरानी गरिमा से कुछ विमुख हुई थी, लेकिन सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भावना ने इसे नई दिशा दी।
- **शिक्षा और राजाओं का योगदान:** मिथिला में शिक्षा का वातावरण हमेशा से प्रबल रहा है। यहाँ के राजा स्वयं भी संस्कृत के विद्वान होते थे (जैसे महेश ठाकुर) और विद्वानों को ग्रामदान या आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करते थे।
- **पाठशाला परंपरा:** मिथिला में प्राचीन काल से ही 'टोल' या 'चतुष्पाठी' की परंपरा रही है, जहाँ पंडित अपने शिष्यों को निःशुल्क विद्या दान देते थे। ग्रामीण लोग भी इन छात्रों के भोजन और रहने की व्यवस्था में सहयोग करते थे।
- **संस्कृत के प्रति श्रद्धा:** यद्यपि समय के साथ संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में कमी आई, लेकिन इसके प्रति श्रद्धा और अनुराग कभी कम नहीं हुआ। मैथिली समाज के आचार-विचार और धर्म-सांस्कृतिक नियम आज भी संस्कृत ग्रंथों पर आधारित हैं।
- **संगीत और जन-जीवन:** मिथिला का जन-जीवन पूरी तरह से संगीतमय रहा है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, प्रत्येक उत्सव और पर्व के लिए यहाँ विशिष्ट गीतों की व्यवस्था है।
- **महिलाओं का योगदान:** मैथिली लोकगीतों और संस्कृति को संरक्षित रखने में महिलाओं का विशेष योगदान है। वे कोमल और मधुर गीतों के गायन में अत्यधिक कुशल मानी जाती हैं।
- **लोककथाओं की व्यापकता:** लोककथाएँ समाज में सामाजिकता की भावना जगाती हैं। ये सुख-दुःख के समय मनुष्य के हृदय का दर्पण बनती हैं और व्यक्ति को एकांत के अवसाद से बचाती हैं।

- **आदिम प्रवृत्ति का कोष:** लोक साहित्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय दृष्टि से मानव की आदिम प्रवृत्तियों का एक विशाल कोष है।
- ज्ञान का प्रसार: लोककथाओं के माध्यम से भूगोल, खगोल, नीति-अनीति और समाज के विभिन्न अंगों का ज्ञान सहज रूप में प्रसारित होता है।
- **विराट वृक्ष के समान लोक साहित्य:** भारतीय संस्कृति को समझने के लिए आंचलिक संस्कृतियों और लोक साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। मैथिली लोक साहित्य एक विराट वृक्ष के समान है जिसकी शाखाएँ मानव जीवन के हर पक्ष को छूती हैं।
- **मौखिक परंपरा:** मैथिली लोककथाओं का अक्षय भंडार सदियों से मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। यह 'कोकिल कंठी' रमणियों से लेकर वृद्धों के कंठ में जीवित है।
- **हास्य और विनोद:** लोककथाओं का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन और मन को बहलाना है। इसमें हास्य-विनोद की ऐसी फुहार होती है जो श्रोताओं के मन को आनंदित कर देती है (जैसे 'पौरख' या 'मूर्ख' प्रवृत्तियों की कथाएँ)।
- **शुद्ध मैथिली भाषा:** इन लोककथाओं में 'ठेठ मैथिली' का प्रयोग किया गया है। यद्यपि ये कथाएँ मौखिक हैं, फिर भी इनकी भाषा अत्यंत परिमार्जित और पांडित्यपूर्ण प्रतीत होती है।
- **लोक मंगल की भावना:** मैथिली लोककथाओं के वर्गीकरण और अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनके मूल में जन-कल्याण, मंगल कामना और उच्च सांस्कृतिक आदर्श सन्निहित हैं।

2.6.7 LUCY R. MARAK (2012) ने "MYTHS AND ARCHETYPES IN GARO FOLK NARRATIVES A SELECT STUDY" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

- Disciplines are challenged from time to time to accommodate new knowledge, new ideas and new theories for new needs and even new functions of the discipline and to discard what had become obsolete and irrelevant.
- Television, writes Gary Alan Fine, has apparently changed the temporal boundaries of entertainment, possibly more than it has altered the content of the stories(Fine, Gary Alan, 1985:8)
- Folklore and tradition have always implied change and continuity.


MYTHS AND ARCHETYPES IN GARO FOLK NARRATIVES.
A SELECT STUDY

SUBMITTED IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

LUCY R. MARAK
Regn. No. 1535 of 09.09.2009

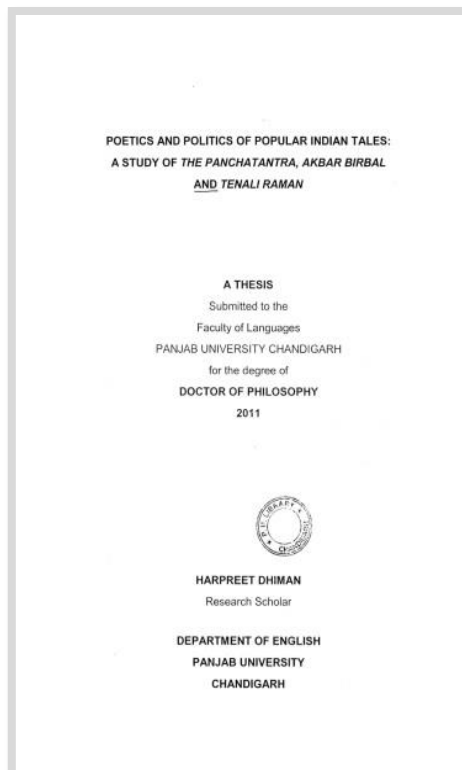
SUPERVISOR
DR. J. PRODHANI

JOINT SUPERVISOR
PROF. C.R. MARAK

DEPARTMENT OF ENGLISH
SCHOOL OF HUMANITIES
NORTH-EASTERN HILL UNIVERSITY
TURA CAMPUS, TURA.
2012

- The modernization of the societies led many scholars to believe that folklore was dying or would die out very soon.
- Folklore is a dynamic component of culture which functions adaptively in situations of rapid cultural change.
- The mass entertainment industry did not become a one way communication, but broadened the horizons of folklore and oral tradition in the modern times.
- Technological innovations have radically changed our lives and it could be looked upon as a gift to mankind from god or at least as divine.
- Indian folklorists have traditionally been searching for folk elements in modern cultural expressions like literature, painting, and art for instance.

2.6.8 HARPREET DHIMAN (2011) ने “POETICS AND POLITICS OF POPULAR INDIAN TALES: A STUDY OF THE PANCHATANTRA, AKBAR BIRBAL AND TENALI RAMAN” शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-


POETICS AND POLITICS OF POPULAR INDIAN TALES:
A STUDY OF *THE PANCHATANTRA, AKBAR BIRBAL*
AND *TENALI RAMAN*

A THESIS
Submitted to the
Faculty of Languages
PANJAB UNIVERSITY CHANDIGARH
for the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY
2011

HARPREET DHIMAN
Research Scholar

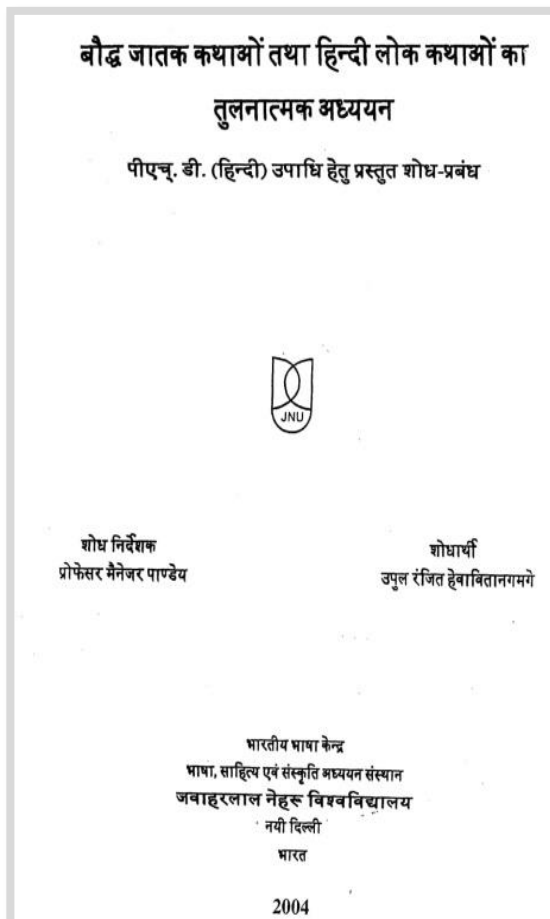
DEPARTMENT OF ENGLISH
PANJAB UNIVERSITY
CHANDIGARH

- The tales of The Panchatantra, Akbar Birbal and Tenali Raman are among the most famous tales of India and they give us a holistic picture of the society and culture of the times when they came into being.
- Visnusarman aimed at nothing more than teaching worldly wisdom to the princes so that they acquire intelligence in securing personal safety, learning and a wide circle of friends.
- Critics agree that these tales have been a source of instruction over the ages, as they do not educate through rote method but practical learning. Visnusarman elucidates that it is not enough to know the scriptures by heart.
- One has to act according to them as merely knowing the name of the medicine will not be a panacea for all ills.
- The instructions imparted in The Panchatantra, Akbar Birbal and Tenali Raman are interactive, dynamic, reflective and open.
- Kautilyan theories, which are discussed in The Panchatcmtra, Akbar Birba! and Tenali Raman, are instilled within the poetics or structure ofthese tales.

- These tales expound the sound principles of philosophy, psychology, politics and human relationship, they are not dyed-in-the-wool sermons but a chain of interesting tales which keep the readers spellbound.
- The Panchatantra, Akbar Birbal and Tenali Raman tales imbibes politics within its narrative.
- Akbar Birbal and Tenali Raman stories when the apple-cart of power lies topsy-turvy. The weak overpowers the strong (The Panchatantra theme) with the help of Birbal and Tenali.
- The Panchatantra seems cruel and bitter in their portrayal while Akbar Birbal and Tenali Raman tales depict them good as well as bad. The women characters in the anecdotes ofBirbal and Tenali exhibit both vices and virtues

2.6.9 Hevavitanagmage,Upul Ranjit (2004) ने "Baudh jatak katho tatha hindi lok katha ka tulnatmak adhyayn" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

- इस शोध का मुख्य उद्देश्य जातक कथाओं और हिंदी लोक कथाओं के मध्य विषयवस्तु, संदेश और संरचनात्मक तत्वों की तुलना करना है।
- 'जातक' शब्द की व्यापकता: जातक शब्द केवल बुद्ध के पूर्वजन्मों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ऐसी कथाओं का संकलन भी है जो प्राचीन काल की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित रहीं।
- बौद्ध धर्म की धाराओं का प्रभाव: जातक कथाओं के विकास में हीनयान और महायान दोनों संप्रदायों का विशेष योगदान है। हीनयान परंपरा श्रीलंका में अधिक सशक्त रही, जबकि महायान ने जातकों को एक विशेष धार्मिक स्थान दिया।


बौद्ध जातक कथाओं तथा हिन्दी लोक कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन

पीएच्. डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध निर्देशक
प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय

शोधार्थी
उपुल रंजित हेवावितानगमगे

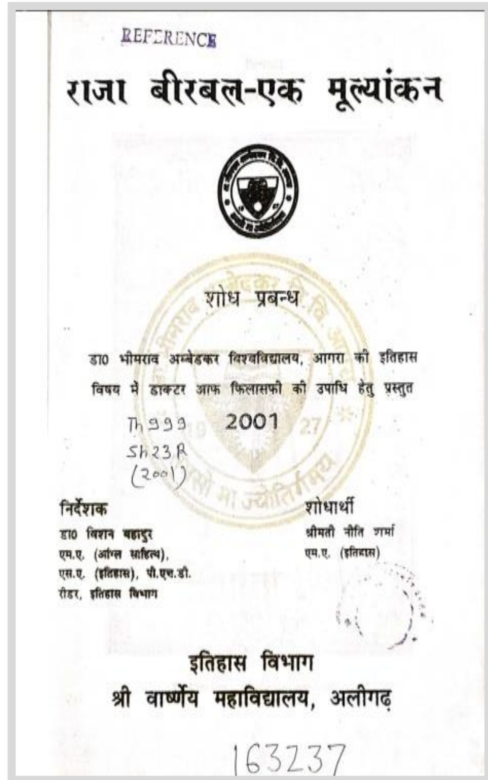
भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नयी दिल्ली
भारत

2004

- हिंदी लोक कथाओं का क्षेत्र: हिंदी लोक कथा परंपरा के अंतर्गत हिंदी प्रदेश की 18 बोलियों की लोक कथाओं को सम्मिलित किया गया है, जो इसकी भौगोलिक और भाषाई विविधता को दर्शाता है।
- उद्भव का प्राचीन स्रोत: अधिकांश भारतीय विद्वान लोक कथाओं का मूल वेदों में ढूंढते हैं, लेकिन यह शोध मानता है कि लोक कथा परंपरा वैदिक संस्कृति से भी पुरानी है और इसका संबंध साधारण जनमानस (श्रमण संस्कृति) से रहा है।
- विविध भाषाओं में विस्तार: लोक कथाओं का विकास संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश जैसी विभिन्न भाषाओं के माध्यम से हुआ है।
- साहित्यिक योगदान: जातक कथाओं ने न केवल भारतीय साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि विश्व साहित्य (जैसे ईसप की कहानियाँ) पर भी गहरा प्रभाव डाला है।
- समानताएं और भिन्नताएं: दोनों कथा परंपराओं में मौलिक समानताएं पाई जाती हैं, लेकिन क्षेत्रीय परिवेश, धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक परिस्थितियों के कारण उनमें भिन्नताएं भी दिखाई देती हैं।
- कथाओं का वर्गीकरण: विद्वानों ने लोक कथाओं को 'आर्य-पूर्व की कथा' और 'आर्योत्तर काल की कथा' जैसे दो मुख्य भागों में विभाजित किया है।
- संरचनात्मक विश्लेषण: कथाओं के पात्रों और घटनाओं का विश्लेषण करने के लिए रूसी विद्वान व्लादिमीर प्रॉप (Vladimir Prop) के सिद्धांतों का सहारा लिया गया है।
- नैतिकता और दंड का विधान: जातक कथाओं में बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण अक्सर खलनायक (जैसे बोधिसत्व के विरोधी) को दंड नहीं दिया जाता, जबकि हिंदी लोक कथाओं में न्याय और दंड की प्रक्रिया अधिक सहज रूप में दिखाई देती है।
- मानवीयता का संदेश: इन कथाओं का मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य को उसकी 'मानवीयता' की याद दिलाना और नैतिक मूल्यों का प्रसार करना रहा है।
- सांस्कृतिक निरंतरता: लोक कथाएँ भारतीय समाज में एक अनवरत बहने वाली धारा की तरह हैं, जो प्राचीन ब्राह्मण, बौद्ध और जैन साहित्यों को एक सूत्र में पिरोती हैं।
- आधुनिक काल में दस्तावेजीकरण: आधुनिक काल में विद्वानों और संस्थाओं ने मौखिक रूप से प्रचलित इन लोक कथाओं को लिपिबद्ध (लिखने) करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।
- एक ही मूल की दो शाखाएं: अंततः, जातक और लोक कथाएं एक ही मूल संस्कृति की दो शाखाएं प्रतीत होती हैं, जो अपने-अपने परिवेश के अनुसार अलग-अलग स्वरूपों में विकसित हुईं।

2.6.10 नीति शर्मा (2001) ने 'राजा बीरबल – एक मूल्यांकन' नामक' शीर्षक पर शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

- एक चतुर राजनायक तथा कूटनीतिज्ञ के रुप में बीरबल ने अकबर की राजपूत नीति को सफल बनाया तथा हिन्दू राजाओं के हितैषी माने गये।
- बीरबल सम्राट के नजदीकी दरबारियों में से एक थे। वह उनका एक प्रियतम मित्रों तथा सदा साथ रहने वाला साथी थे और सम्राट ने उन्हें कवि राय तथा बीरबर की उपाधि से सम्मानित किया।
- बीरबल एक कुशल सेनापति के रुप में उन्होंने पंजाब, गुजरात तथा बिहार के साथ युद्धों में भाग लिया।
- युसूफजाई अभियान में अपनों द्वारा धोखा दिये जाने पर शहीद हो गये।तो सम्राट ने दो दिन तथा दो रात तक भोजन को नहीं छुआ।


REFERENCE

राजा बीरबल-एक मूल्यांकन

शोध प्रबन्ध

डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा की इतिहास विषय में डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

Th 999 Sh23R (2001)

2001

निर्देशक
डा0 विशन बहादुर
एम.ए. (आंग्ल साहित्य),
एम.ए. (इतिहास), पी.एच.डी.
रीडर, इतिहास विभाग

शोधार्थी
श्रीमती नीति शर्मा
एम.ए. (इतिहास)

इतिहास विभाग
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़

163237

2.7 साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

उपर्युक्त साहित्यों की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर लोक-साहित्य, शिक्षा और समाजशास्त्र पर अलग-अलग बहुत से काम हुए हैं, वहीं दूसरी ओर **रसिन (चित्रकूट) के अवसेरी के चरित्र, उनकी लोकगाथाओं में निहित विशिष्ट शैक्षिक मूल्यों और उनकी आधुनिक प्रासंगिकता को एक सूत्र में पिरोने वाला कोई भी अकादमिक शोध उपलब्ध नहीं है।** यही इस शोध कार्य का सबसे बड़ा '**रिसर्च गैप**' **(Research Gap)** है, जिसे यह अध्ययन पूरी प्रामाणिकता के साथ भरने का प्रयास करेगा।

अध्याय तृतीय
शोध विधि

3.1 शोध का प्रारूप

3.2 समष्टि और प्रतिदर्श

3.3 आंकड़ों के स्रोत

3.4 शोध के उपकरण

3.5 आंकड़ों का संकलन

3.6 आंकड़ों का विश्लेषण

अध्याय तृतीय

शोध विधि

3.1 शोध का प्रारूप

यह शोध मुख्य रूप से **वर्णनात्मक** **(Descriptive)**, **विश्लेषणात्मक** **(Analytical)** और **नृवंशविज्ञान** **(Ethnographic)** प्रारूप पर आधारित है। इसके अंतर्गत लोक-नायक अवसेरी की गाथाओं का न केवल विवरण तैयार किया है, बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक पहलुओं का गहराई से विश्लेषण किया है, ताकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता खोजी जा सके।

3.2 समष्टि और प्रतिदर्श

- **समष्टि (Population):** चित्रकूट जनपद (उत्तर प्रदेश) के अंतर्गत आने वाले रसिन गाँव और उसके आस-पास के वे सभी ग्रामीण अंचल जहाँ अवसेरी के किस्से मौखिक रूप से प्रचलित हैं।
- **प्रतिदर्श (Sampling):** शोध के लिए '**उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन**' **(Purposive Sampling)** विधि का उपयोग किया गया है। इसके तहत रसिन और निकटवर्ती क्षेत्रों से ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों का चयन किया है जो लोक-संस्कृति के जानकार, वरिष्ठ नागरिक (60 वर्ष से अधिक), लोक-कलाकार और पारंपरिक किस्सागो (कथावाचक) हैं।
- प्रतिदर्ष के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों का चयन किया गया – **(परिशिष्ट-अ)**

प्रतिदर्ष में चयनित व्यक्ति

क्रम सं.	पद / व्यवसाय	मोबाइल नंबर	निवास स्थान
श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र	Headmaster, Ratannath Dube Montessori College	9125638057	रसिन, अतर्रा, बाँदा
श्री रूद्र प्रताप त्रिपाठी	Ex-Principal, Junior High School, Kolauha	9125364894	रसिन, अतर्रा, बाँदा
श्री लखन लाल शुक्ला	किसान (Farmer)	7880912731	रसिन, अतर्रा, बाँदा
श्री संतोष मिश्र	किसान (Farmer)	9120179430	रसिन, अतर्रा, बाँदा
श्री माहेश्वरी	किसान (Farmer)	9779322787	रसिन, अतर्रा, बाँदा
डॉ. चुन्नी लाल उपाध्याय	Associate Professor, Govt. Ayurvedic College & Hospital	7007051317	बडौसा रोड, अतर्रा, बाँदा
डॉ. अजय पाल सिंह	ठेकेदार	9450167593	बडौसा रोड, शारदा माता गली, बाँदा
श्रीमती कुमुद पांडे	Principal, Composite Gargan Purwa	8081648240	शास्त्री नगर रोड, अतर्रा, बाँदा
श्री राजेश कुमार शुक्ला	Lecturer, HIC, Atarra	9450229534	विद्यालय परिसर आवास, हिंदू इंटर कॉलेज, अतर्रा

3.3 आंकड़ों के स्रोत

शोध की प्रामाणिकता के लिए आंकड़ों को दो भागों में विभाजित किया है:

- **प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):** रसिन गाँव में किए जाने वाले क्षेत्र-कार्य (Fieldwork) के दौरान वरिष्ठ नागरिकों और लोक-कलाकारों से सीधे बातचीत, रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कार (Interviews) और उनके द्वारा सुनाई गई मूल लोक-कथाएँ।
- **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):** बुंदेली लोक-साहित्य से संबंधित उपलब्ध पुस्तकें, शोध-पत्र, अकादमिक पत्रिकाएँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के दस्तावेज़ और पूर्व में प्रकाशित बुंदेली संस्कृति से जुड़े प्रामाणिक लेख।

3.4 शोध के उपकरण

मौखिक इतिहास (Oral History) को सहेजने और उसका मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित उपकरणों का निर्माण और प्रयोग किया है:

- **अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची (Semi-structured Interview Schedule):** इसके माध्यम से बुजुर्गों और जानकारों से अवसेरी के जीवन, उनके समय और उनकी विधाओं पर नियंत्रित लेकिन विस्तृत बातचीत की गयी।
- **केंद्रित समूह चर्चा (Focus Group Discussion - FGD):** रसिन गाँव की चौपालों पर 5-6 जानकारों को एक साथ बिठाकर चर्चा आयोजित की गयी ताकि कहानियों के अलग-अलग संस्करणों (Versions) की सत्यता जांची जा सके।
- **दृश्य-श्रव्य रिकॉर्डिंग यंत्र (Audio-Video Recording Devices):** कहानियों के मूल बुंदेली उच्चारण, लोक-मुहावरों और भाव-भंगिमाओं को डिजिटल रूप में सुरक्षित करने के लिए।

3.5 आंकड़ों का संकलन

- **प्रथम चरण (क्षेत्रीय दौरा):** शोधार्थी ने दिनांक **05/04/2026** को रसिन (चित्रकूट) में जाकर स्थानीय स्तर पर संपर्क स्थापित किया और प्रतिदर्श (साक्षात्कार दाताओं) की पहचान की।
- **द्वितीय चरण (दस्तावेज़ीकरण):** पहचान किए गए लोक-कलाकारों और बुजुर्गों के साक्षात्कार लेकर उनकी सुनाई कहानियों को ऑडियो/वीडियो में रिकॉर्ड किया तथा अंतिम रूप से कुल 12 कहानियों का संग्रह हुआ।
- **तृतीय चरण (लिप्यंतरण - Transcription):** रिकॉर्ड की गई ठेठ बुंदेली लोकगाथाओं को लिखित रूप (Text) में बदला गया।

1. काफी पुरानी बात है रसिन में एक अवसेरी नाम के वेक्ति रहते थे और वे पति पत्नी रहते थे उनके बच्चे थे नहीं और ऐसी सिथ्ती में पुरे गाव में शादी विवाह फंक्शन जो भी होते थे निमंत्रण में जाते थे और खाते थे सब जगह क्युकी गाव में यही पद्दति होती है तो लोगो ने एक दिन कहा की भाई अवसेरी की तुम सब जगह खाना खाते हो की एक दिन तुम भी तो निमंत्रण करो तो उसने कहा ठीक है भैया करुगा तो ठीक है भैया फला दिन आप सब का

निमंत्रण है तो जैसी गाव में पद्दति रहती है की जिस भी घर में जिस दिन में खाना पीना रहता है भोजन इत्त्यादी की वेवस्था तो वहा फिर वहां गाव भर से समान बर्तन भाड़े समाग्री जो भी नहीं रहती है इत्यादी उसको मागवा ली जाती है तो लोग सब जगह से लेकर के पहुचाते है और सब सहयोग करके खाना बनाते है खाते है और मौज मस्ती करते है तो बढ़िया कार्यक्रम हुवा और लोगो ने खूब खाया तो लोगो ने कहा की अवसेरी तुमने तो बहुत अच्छा भोजन वेवस्था कराया है सब तुम्हारे आए उसके बाद जब वो लाव्ताने गया तो तो जिसके यहाँ से लाया था उसके बड़े बर्तन के साथ एक छोटा बर्तन लगाकर सबको दे दिया भैया ये क्या है हमने ये दिया था ये नही दिया थे तो बोलो की ये उसका बच्चा है वो बोले बहुत बढ़िया फिर इस तरह करते हुवे कुछ आठ दश साल गुजर गये फिर लोगो ने कहा अवसेरी बहुत दिन हो गये यार फिर एक बार कुछ करो तुम सबहिन को निमंत्रण दो तो उसने कहा ठीक है भैया फला दिन आ जाए तो तबै गाव की ऐसी बेवस्था रहती थी की गाव अपने आप में एक सम्पूर्ण यूनिट रहता था की जाना नही पड़ता था तो हमारे एक भोद्रू क्लार था उसके यहाँ से साड़ी समाग्री आ जाती थी आटा भाटा जो भी लगता था तेल घी नून मिर्चा और गाव से चारपाई बिचौना बर्तन कपडे लत्ते जो भी कढाई वगैरा था आ जाता था सब जगह से मागवा लिया उन्होंने और मग्वाने के बाद जो है सबको भोजन करवाया अब भोजन जब सब लोगो ने कर लिया और लोगो को आशा जगी की अब हमारा बर्तन आएगा उसके सतत एक छोटा बर्तन भी आएगा उसका बच्चा बन करके तो लोग इंतज़ार करते रहे हफ्ते पंद्रह दिन महीने दो महीने तीन महीने बीत गये उसने लौटाया ही नहीं तो लोग मागने गये की भैया हमारे बर्तन तो लवटा दो पिछले बार तो साथ में एक बच्चा देकर आये थे इस बार तो तुम हमारा मूल बर्तन ही नहीं लौटा रहे हो तो उसने कहा की भैया वो सब तुम्हाए पंचन के पेट में चला गया अब अगर तुम पंचन का बर्तन चहिये तो भोद्रू क्लार के यह चले जाओ वहा से ले आओ तो लोग बोले यार ये तो हमारे बर्तन ही बेच करके हमे खिला दिया तो उसने बोला इस बार ऐसा रोग आया है महतारी बच्चा दोनों चल बसे है ,तो इस प्रकार लोगो ने अपने अपने बर्तन छुडवाये और फिर दुबारा जीवन में किसी ने नहीं कहा की हमे निमंत्रण कराओ

2. एक अवसेरी नाम के व्यक्ति थे जो विलक्षण प्रतिभा के धनि और प्रेतिउत्पन्यवती जिनके पास होना चाहिए ऐसा तो उस जमाने में आवा गमन के लिए साधन सवारी के लिए रखते थे घोडा घोड़ी ,तो वो एक देसी घोड़ी रखते थे जिसको ग्वेद कहते है गाव में लोग वो द्रूउब घाष निकाल रहे थे तो एक स्त्री पुरुष निकले पुरुष आगे था महिला पीछे थी उसके गोद में बच्चा था और उन्होंने ने कहा की सुनो फलानिया यहाँ तो लोग कहते है ली रसिन गाव के लोग तो बहत मजाकिया है यहाँ तो किसी ने मुझसे मजाक ही नहीं किया है मै गाव निकल करके चला आया तो वो बात कही से अवसेरी के कान में पड गयी तो उसने कहा ठीक अच्छा चलो चल करके देखते है उसने घाष छिलना बंद किया और दौड़े दौड़े भोद्रू कलार के यहाँ से बतासा ले आये पाँव भर और उनके पिच्छे पीछे चल दिए बच्चा कंधे में था उसका मुह भी पीछे की ओर था तो एक बतासा उसको दे देते वो खा लेता तो फिर द्रूसरा पकड़ा देते ऐसा करते करते तीन किलोमीटर तक चले गये तीन किलोमीटर बाद एक गाव पड़ता है सुदिनपुर रोड के किनारे वहा वो आगे होकर चिल्लाना शुरू किया की भैया देखो देखो मेरी मेहरिया को ये भगा लिए जा रहा है तो वहा गाव जम गया की ऐसा कैसे कर सकते हो यार तुमउसने बोला अरे नहीं साहब अरे ये मेरी पत्नी है ये झूठ बोल रहा है मेरी पत्नी से पुछ लो उससे पूछा गया तुम किसकी पत्नी हो उसने बोला मै इनकी पत्नी हु इनके साथ हु उसने कहा अरे ये प्रेम करती है झूठ बोल रही है और ये मेरी पत्नी है अंत में ये हुवा की अब ये साफ़ साफ़ पता कैसे चले तो पांचो ने कहा की भाई देखो व्यक्ति झूठ बोल सकता है लेकिन बच्चा नहीं झूठ बोल सकता है तो बालक के ऊपर निर्दय छोड़ देते है तो एक तरफ उस सज्जन को बैठा दिया जिसका बच्चा था द्रूसरी दिशा के तरफ अवसेरी फिर बचे को बिच में छोड़ दिया गया और फिर कहा गया की जिसका बच्चा होगा उसी के पास चला जायेगा फिर अवसेरी ने धीरे से बतासा दिखा दिया तो वो झट से दौड़ कर अवसेरी के पास गया लिपट गया और तय हो गया की किसका बच्चा है अब वो पति पत्नी गोहर मारे की भैया ये क्या अनर्थ हो रहा है तो उसने कहा की ठीक है अब जाओ दुबारा ये मत कहना की रसिन गाव में मजाक नहीं होता है ले जाओ अपना लाल

3. एक बार क्या हुवा की आप सबसे मजाक करते है मुझसे कभी मजाक नहीं करते है तो उसने कहा चलो ठीक है फिर कभी देखेगे फिर कुछ कलांतर वर्ष बाद उसके भाई उसको लेने के लिए उसको आये तो तब तक पत्नी को

उनके भूल गयी मजाक वाली बात तो उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुवा जैसा होता है एक भाई का बहन के यह सत्कार और भोजन वोजन कराकर सब मस्त थे और अवसेरी लिवा गये उनको लिटाने के लिए तो अवसेरी ने उन्हें अपने बीएड पर लेटा दिया था ,और कहा की आप सो जाओ और खुद उसके बाद उस बेड की निचे छुप गये और जैसा गाव में सिस्टम है सबको खिलाने के बाद खुद खाकर चौका बर्तन सब साफ़ करके आई चुकी कल उसको जाना था मायके तो बाकी सारे काम धाम निपटा करके आई तब तक उसक भाई सो गया चद्दर ओढ़ करके तब वो आई और जैसी संस्कृति है पति के पैर दबाई सेवा की और लेट गयी जैसे ही लेटी तभी अवसेरी वहा निचे से निकल खड़ा हुवा और जोर जोर चिल्लाने लगा घोर कलयुग है मै बर्बाद हो गया बहन भाई के साथ लेटी है तभी दोनों ने चद्दर खोला अवाग रह गए ऐसा कैसे हो गया तो उसकी पत्नी की अंतरात्मा इतनी दुखी हुई की बाहर निकली और कुवे में धम्म से कूद करके खुदखुशी कर ली

4. रसिन एक रजवाड़ी गाँव था एक स्टेट थी पुरानी तो एक बार वहाँ के ज़मीनदार साहब के यहाँ कोई फंक्शन हुआ उसमें नृत्य का आयोजन हुआ तो रचिन के पास एक गाँव पड़ता है छोटा सा पुरवा है फैजाबादपुर वहाँ से वैश्याओं को बुलाया गया नृत्य के लिए वैश्याएं रात को महफ़िल सजी नृत्य उनका शुरू हुआ और गाँव के सब लोग वहाँ देखने के लिए उपस्थित हुए उसी में से अवशरी नाम के एक व्यक्ति हैं वो भी नृत्य देखने के लिए आए और उन्होंने अपना मैला कुचैला कपड़ा और गंदा-थंदा स्वरूप बनाकर के बैठ गए तो सामान्यता होता ऐसा है गाँव में होता रहा है कि जब कोई नृत्य का दृश्य लोगों को बहुत अच्छा लगता है तो लोग उसको इनाम स्वरूप कुछ राशि रुपये के रूप में देते तो वो रुपये ऊपर उठाते हैं तो नर्तकना उसको देखती है देखकर के उसके पास आती है और थोड़ा सा वहीं पर नृत्य का अभिनय करते हुए वो रुपये ले के चली जाती है तो अवशरी ने भी रकम उठाई ऊपर को लेकिन उसका मैला कुचैला स्वरूप देख करके गंदे-शंदे कपड़े देख कर वैश्या ने उसको इग्नोर कर दिया नजरअंदाज कर दिया उसके पास नहीं गई नहीं गई तो उसको ये बात बहुत बुरी लगी और उस समय कोई मोटर गाड़ी के साधन नहीं हुआ करते थे और आने-जाने के लिए हाथी, घोड़ा और ऊँट का उपयोग किया जाता था तो वैश्याएं कूद से आती थी आईं थी तो अवशरी को सुलभ समझ में आया कि अब इसको कुछ ऐसा कंड दिया जाए जिससे इसको अपनी गलती का एहसास हो जाए तो उन्होंने वहाँ से धीरे-धीरे शफर लिए और उठने के बाद निकले और एकाद लोगों को बुलाया और उस समय धान की फसल कट चुकी थी, पूआल बड़े हुए गट्ठर खजानों में रखे हुए थे तो उन्हें दो-तीन आदमी लगा करके और एक गाँव के बाहर एक मंदिर था, मंदिर की छत थी तो इन्होंने क्या किया कि वो गट्ठे इकट्ठा करके और उसको सीढ़ी घुमा की गट्ठा कर दिया, रैम्प बना दिया और इसके बाद गए तो उनके ऊँट को खोला जहाँ पर रहा था तो रैंप के माध्यम से मंदिर की छत पर उसको चढ़ा दिया उपर खाना-खाना डाल दिया तो ऊँट चढ़ गया इसके बाद जब ऊँट चढ़ गया तो सारे पूवाल के गट्ठर वहाँ से हटवा दिए जहाँ का तहाँ रखवा दिया अब इसके बाद नृत्य साफ सबेरे प्रातः काल तक नृत्य हुआ और जैसे नृत्य समाप्त हुआ तो सब लोग अपने-अपने घरों को जाने लगे तो वह तांगनाई भी अपने घर को जाने के लिए उद्यत हुई तो उन्होंने अपने साथी से कहा कि भाई लाओ हमारा ऊँट चला जाए तो उसने देखा तो ऊँट वहाँ था ही नहीं तो उसने कहा ऊँट तो है नहीं वहाँ पर तो यह बोला कि कहाँ चला गया, कौन ले गया, चोरी हो गया कैसे हुआ, क्या हुआ उसका ढूँढना शुरू हुआ तो जब उसको ढूँढते-ढांढते लोग पहुंचे गाँव के बाहर तो मंदिर के ऊपर छत में ऊँट खड़ा था और चिल्ला रहा था तो लोगों ने कहा कि ऊँट तो यहाँ चढ़ा हुआ है तो पूरा गाँव मजमा लग गया कि यह ऊँट यहाँ कैसे चढ़ गया अब बड़ा ताज्जुब लगा कि यह ऊँट चढ़ा तो चढ़ा कैसे, इसको कैसे उतारा जाए ये तो बड़ा मुश्किल काज है तो किसी वहाँ बुजुर्ग आदमी ने कहा कि भाई ये फुराफात अवशेरिंग ही लगती है और अवशेरिंग कल आया तो नहीं था सबाब पर तो लोगों ने कहा आया था तो फिर तांगन ने बताया कि मुझे पैसे लेने के लिए बुलाया था मैं नहीं गई तो कामवास तो उसी का काम है उनने नराज हो गया तो भैया कैसे है वही उसी को बुलाइए वही रास्ता निकालेगा तो उसको बुलाया गया तो तांगनाव ने उसे क्षमा याचना किया माफ़ी मांई गलती मानी और गलती मानने के बाद उससे कहा कि हमारा ऊँट हमको वापस करवा दीजिए हमको घर जाना है तो उन्होंने कहा कि ठीक है तो उसने कहा कह ये चढ़ाया था तो उन्होंने कहा कि जाओ कुवाल के गट्ठर लेकर आओ

अपुआल के गट्ठर लगाकर रहें मना के उसको उतरवा दिया और बलिया वो वैश्य अपने घर चली गईं इस प्रकार के विलक्षण प्रतिभा के विलक्षण बुद्धि के धनी थे और अवसेरी

5. एक बार की बात है कि हमारे रछिन गाँव में वहाँ के जो ज़मींदार थे उनकी बेटी का विवाह था तो गाँव में एक परंपरा होती है पद्धति होती है कि जिस दिन विवाह होता है उस दिन पूरे गाँव का निमंत्रण दिया जाता है तो जो निमंत्रण का पत्र लिखा जाता है उसको तदगरा कहते हैं और तदगरा में पूरे गाँव भर के नाम लिखे जाते हैं और फिर अन्य जगहों पर तो नाई जाकर के निमंत्रण देता है उनका पाताता है लेकिन हमारे गाँव में परंपरा आज भी है क्योंकि रजवाड़ा गाँव था तो पंडित ही उस निमंत्रण को जाकर के और घर-घर जाकर लोगों को आमंत्रित करता है लिस्ट में नाम लिखाता है और टिक करके आगे बढ़ता है तब वो फिर शाम को भोजन करने लोग जाते हैं तो उसमें सबके नाम लिखे गए किसी को रफ़ाती ने लिखवाया था तो उसने उसी का नाम छोड़ दिया उसका नहीं लिखा तो जिसका नाम नहीं लिखा था उसको निमंत्रण नहीं दिया गया बाकी सबको दे दिया गया अब वह उसैदी सोचता कि इस ज़मींदार का दिमाग़ खराब हो गया मेरा निमंत्रण काट दिया नवता काट दिया तो कुछ करना चाहिए इसको सबक सिखाना चाहिए तो उन्होंने क्या किया कि एक जो है घोड़ी में बैठे घोड़ी उस समय सब लोग इस्तेमाल करते थे और घोड़ी में बैठे और गए और जाकर के गाँव के बाहर एक नदी है बाननंगा नाम की तो बाननंगा नदी के पास जो है किनारे में जाकर के शाम को जब बरात के आने का टाइम होता है तो वहाँ बाननंगा नदी के किनारे वो धूड़ गाछ छोड़ने लगे एक जानवरों का चारा होता है तो उसको छोड़ने लगे और अपना अपने काम में लगे रहे प्रायः ये देखा जाता था उस ज़माने में कि जब बरात आती तो बैलगाड़ी से आती थी तो लोग धूल धूसरित हो जाते थे तो गाँव के बाहर कोई तालाब कोई नदी कोई जलाशय रहता था वहाँ बरात रुकती थी लोग अपना हाथ-पैर मुँह धोते थे और उसके बाद कपड़े बदलते थे और फिर उसके बाद वो आगे जब माता के लिए जाते थे तो वही स्थिति वहाँ पर हुई बरात दरजाई थी बघेलावारी साइड से और वहीं बांगलन की सारा की बरात का पड़ाव हो गया सब लोग नहाने-धोने लगे तब मातम धोने लगे कपड़े बदलने लगे तो बुड्ढा अपना खोंखो दाद खिसल रहा था तो किसी ने पूछा कि भैया कहाँ जा रहे हो तो लोगों ने कहा कि हम बरात में जा रहे हैं बरात की शान कुछ अलग ही होती है तो उन्होंने कहा किसके यहाँ जा रहे हो फिर फनारे लम्बेदार के यहाँ हमारे लड़के की शादी है हम वहाँ जा रहे हैं तो उनका अच्छा ठीक-ठीक-ठीक समझ गया समझ गया उनके यहाँ जा रहे हैं अच्छा वही धिया की शादी है अगर जो लोगों ने कि पेट है तो लोगों ने कहा क्या बोले हां हो-हो ठीक है-ठीक अरे भैया गलती हो गई क्या बताएं जबान ऐसे निकल गई मेरी ठीक है भैया जाइए जाइए जाइए अब वह चर्चा का विषय बन गया कि उसको पेट है पेट है पेट है पेट मीन्स प्रेग्नेंसी तो गुदर-गुदर हुआ और आपस में तै हो गया लोगों ने कहा भैया अभी कुछ बिगड़ा नहीं है शादी नहीं हुई चलो वापस चलते हैं तो वापस चल दिए अब जब वापस चल दिए तो गाँव के चौकीदार क्योंकि वहाँ पे आया करता है जलासे तक तो उसने लोगों से कहा कि भैया क्यों जा रहे हो कोई कुछ बताए नहीं बैलगाड़ी अपनी-अपनी उन्होंने स्टार्ट किया चले गए तो दौड़ के गया जमींदार को बताया कि भैया वो बरात तो लौट गई बोले हैं क्यों लौट गई भैया ये पता नहीं तो गाँव के चार-छः दस लोग जो बुजुर्ग वार बुजुर्ग लोग थे और जो समझदार टाइप के लोग थे दौड़े अपने वाहनों से हाथी घोड़ा बैठकर के और वो गाँव से तीन किलोमीटर दूर एक बघेलावारी गाँव वहाँ पर बरात मिल गई सबको रोका भैया रुको रुको रुको बताओ तो आप कहाँ जा रहे हो क्यों जा रहे हो क्यों लौटे जा रहे हो क्या बिगड़ गया क्या गलती हो गई हमसे कौन सी चुटि हो गई हमको किस बात की सजा दे रहे हो आप ऐसा करके क्यों जा रहे हो हमारी बेटी की शादी कहाँ होगा तो उन्होंने कहा कि भैया कुछ नहीं कुछ नहीं कोई बताए नहीं काफी देर तक लोग बैठे रहे पंचायत चलती रही अंत में फिर एक शहर आदमी ने कहा कि भैया और कोई बात नहीं है हम लोग तो बरात लेके आए ही थे और बान गंगा किनारे हम लोग तैयारी कर रहे थे तैयार होके जनवाते जाने की तो वहाँ एक बुढ़ा जो है घास छील रहा था घोड़ी बांधे तो उसने कहा कि कहाँ जा रहे हो तो हमने कहा कि फलां लंबेदार के यहाँ जा रहे हैं वहाँ डिबलिया के शादी है हमारे लड़के की शादी होनी है तो शादी विवाह में जा रहे हैं तो उन्होंने कहा कि अच्छा वही लड़की है क्या जिसको पेट है तो हमने क्या कहा अरे वो गलती हो गई भैया मैं क्या ओना हूँ उड़ा दी दाना जवान लिखकर गई और ऐसा वैसा करके और उसने घास-फांस घोड़े में रखा देख चला गया फिर उसने बताया नहीं तो आपको भैया

ऐसी लड़की से शादी नहीं करना जिसको शादी के पहले ही पेट है तो लोगों ने कहा है तो और लोग शांत रह गए यार ये क्या हुआ यार रुकिए भैया उस आदमी को हम बुलाते हैं अब कहगा लंबा दार से बताया है कि भैया इस रिश्ते किसी ने कहा है जब तजगरा देखिए कहीं कहीं औषधि की खराबात तो नहीं है तो तजगरा निकाला गया देखा गया तो औषधि का उसमें नाम छूट गया तो नहीं लिखा था अरे भैया तुमने बरबाद कर दिया उसी ने सब गड़बड़ किया है अब उसको बुलाया गया उससे कहा गया क्या तुमने क्या कहा अरे भैया मैंने कुछ नहीं किया मैं वहाँ आई नहीं तो उन्होंने कहा तुम नहीं थे तो कोई बात नहीं है अब जाओ तुमको जाना पड़ेगा बिना तुम्हारे गए ये बरात लौटेगी नहीं वापस तो उसने कहा तो भैया मेरे पास कपड़ा नहीं है मैं कैसे जाऊं तो कहे ठीक है लंबा दार कपड़ा जो दिलवाइए इनको तो घनुकलार के यहाँ से तो बढ़िया नया धोती नया कुर्ता मंगवाया गया उसको स्नान करने की व्यवस्था की गई साबुन तेल से नहलाया गया और कपड़े नए पहनाए गए उधर लगवाए गए उसी घोड़ी को धोला गया साफ किया गया साबुन से उसको पूरा से नहलाया गया इसके बाद वो बुढ़ा आदमी हाथ बांधकर घोड़ी बैठ के गया तो वही पता तो वहाँ गया तो क्या है भैया ट्रेन भैया देख लीजिए तुम्हारे पेट न्याय कर दीजिए बोले क्या है बोले ये बरात लौट रही है बोले क्यों लौट रही है उन्होंने कहा ये कह रहे हैं कि लड़की के पेट हैं शादी नहीं करेंगे तो वो ने कहा बस इतनी सी बात हो गया गाजशाम ने अपने पेट में हाथ रखकर को देखो बताओ किसके पेट नहीं है है कोई ऐसा पेट ना हो तो लोगों ने कहा, कहा है तुम्हें शर्म नहीं आती? पेट है तो सबके तो पेट है, उसके पेट नहीं होगा तो कैसे होगा? तो उन्होंने कहा, हाँ ऐसी बात है, बोले हाँ भाई कैसी बात है? फिर भैया गलती हो गई माफ करिए चलते हैं वापस, तो वापस आए और बरात हुई शादी हुई गहसड़ी करी, मंतन हुआ इसी तरह के थे हमारे और सेठ जी। एक

6. एक बार गाँव में कहा गया, "तीरथन होई, तीरथन होई।" आई योह निकला, कहे तो बोला कि कुछ नहीं है। रोहन चला, ठीक है। मोसा से चला। पहले यहाँ से निकला तो रौली मां इतना करा कि मोहे गाँव निकाल दिया। बचा चाहिए मोहे खटोली में लयके तो कहे यही करा। रौली गाँव में धारिया है। रौली वाले भरत कोप अधा रहा है। इनता करत करत वही खटोली खटोली केदारनाथ लय गए। वह है खटोली मां। इसके लिए यह उपाय अपना देते कि चार चणिकल जाता रहा है। अब खटोलियों पर अपना लेवा जाता रहा है और यह कह दिया तो रहा है, "आप सही नहीं कि मोटाबित खराब ही।"आधार बनाता था कि मोटाबित खराब ही भगवान मुझे सपना दे ही नहीं किता मुर्दर्शन करें हम और अगर तुम परेशान हो या खत्म हो बद्रिनाथ छाने नहीं चाहिए केदारनाथ मज़ा किया बहुत रहा है तो जंसे वो बद्रिनाथ पंद्रह दिनों परा रहा भगवान से कह रहे दर्शन नहीं दे गए मोही भगवान ये सिखाएगा कुछ बताएं तो कहा दे उसरी कि तुम्हारे भगवान घंटे से या मूंझा रहे तो कहा दे उसी तोड़ने का पॉट करें हम मणिश्वरा सोरट है साइकल चोरी कर लयगा है थहतो ने को नहीं फड़क हमेर चमारिन दलिनं मुकाबला नहीं हो रहा था तो तो ते महिदर्शन नहीं देते पराहों में है देखो तो कब तक दर्शन नहीं देते तौ ये पंद्रह बीस एकेचिन गरीब पड़ा रहा वहाँ पर पड़ा रहने के बाद जो है भगवान पुजारी को सपना आया कि उनको लाओ ब्रह्म हत्या हो रही है वो बहूजिती है बिना दर्शन के नहीं जाएगा जब तुम पूजा करने जाओ जब मेरी पूजा हो जाए पट बंद हो जाए तो उसको बुला लो फला जगह फला स्थान पर फिर वही लेवा के लाए वे नहाओ धोओ आए कपड़ा लत्ता पैनाएं दर्शन कराएं साक्षात दर्शन के हिस अब वही तांवर खटौलन खटौलन वापस आ गए एक एक गाँव एक एक गाँव करके फिर साधू साहब सब दिन कहे चले यार गाँव में ताँजुल पूजा कर ले एक आधा गरीब हूँ मूंह बोड़ मत आ रही है और ये बहु बड़ा गाँव में न कर पाई हूँ

7. एक औच्वाला गाव मा पीढ़िया रहत ही तौ उनका अच्छा कतैठ भैशा रहे अवसेरी कहिस उनसे दादू मोय गाय बछेड़ू निहाय मुहि पड़वा आपन दई दया मै राखे रहियो और जब मोल हुई जई तय तुम्हरा का दैदेहू लई गा बिहान भरे बेच लिहिस २० आना का तौ पन्दरह बीस दिन बाद पीढ़िया गा कहिस ओ अवसेरी दादू पड़वा मजे मा है हट्टा खट्टा है ना तौ कहत है घंटा ठीक है मुसलमान लए गे खा लिहिन हग डारिन ससुर का तुम्हार रूपया पैसा लाये लया पूछिस केत्ते का बेचे कहिस बीस आना का और कहिस बिहान भर बेच दीन्हो पोवाट धानाये आये रहे सारे का कौन भरोषा रहे की केत्ती दयार मर जाए तो मै कहो या भोसडाये करब ठीक निहाय तो मै बेच दीन्हो

ल्या दस आना पैसा पकड़ा आपन तो कहत है यार कहे एके रात के तो कहिस दयाख्या हमार तुम्हार करार भा है बटाई के बात भे है तौ आधा आधा हुई गा इन ताए का रहा अवसेरी

8. एक बैल आवा रहे गाव मा तौ वा बहुत नीक सुन्दर रहे तो जवने गाव मा लये के जाय वहे गाव के पूछे भैया केत्ते का लावा है तो वा कहिस भैया एक सो दस का लावा हू वा आव वहो पूछिस केत्ते का लावा है वहो का बता दीन्हो मै 110 का लावा हो इन्ताये से कम से कम दस आदमी पूछीं सबसे बतात चला गा जो कवनो देखे आवे तो in ताए चलत रहा एक दिन हनुमान जी के लगे कुवा मा कूद गा तो जब सब जने सुनिन की अवसेरी कुवा माँ कूद गा कूद गा कहिन नीक आदमी रहा है चला सब जने चली कुवा के लगे पहले कुवा मा जंजीर पड़ी रहा करे अवसेरी वहे का पकडे लटका रहा मडई पूछीं कहे अवसेरी कूद गये कुवा मा का भा तो पूछिस सब जने आगे हौ की अबे बचे है कहिन सब आगे है तो कहिस मै एक सो दस का आये लावा हो और रोज जवने नही वहे पूछत है तो मै कहो एक साथ सबहिन का बता दो आज इन ताए का रहा हमार अवसेरी

9. हमारे ठाए के बात आये हमाये बाबा के मामा हन के द्वि चार दिन भैशी दुही लए जाए इन ताए से वहिके गोरु तो रहेना है तो सगले ठाए से यहीं ताए करे जबे दूध खाए का मन करे यहीं ताए करे सब के ठाए बाल्टी लोटिया लेट आवे दुह के लए जाए कवनो मना करे कुछु कहे तो कह दयात रहा तुम्हे शर्म ना आई इन्ताये कहे मा का करो गाड़ मरा के मर जाऊ तुम्हे लाज नहीं लागति आये तुम लजात हुई हा महो का सेर सेर भर दई दया शार्या तुम घी दूध खा मै सुखी खाओ इन ताए ना होही तुम भैशी रखिये तो अवसेरी खयी इन ताए के रहे हमार अवसेरी

10. एक दा जबे वहिके शादी भे ब्राह्मण तो रहा पुराना समय था कवनो चोंदैया फटकारे कवनो दाढ़ी ओत्ते मा द्वि महरिया देख लिहिन और हसत हसत कहीं बाबा बचाए कतो तोर चुदैया या दाढ़ी ना उखड आवे तो कहिन चुदैया ना उखरी तुम आपन देख्या तो बतायीं एक जने से यार तुम्हए यहा बहुत मजाक करती है एक जने पूछिस का भा कहत है पूरी बात ब्तायिस अरे तै नेकुवा कटा लीन्हे तव फिर वा कड़ा वगैरा उतारिस और छोर के धर दिहिश और गा ताला मा कूद गा मेहरिया वहो से मजाक किहीं तो ओत्ते मा वा सारे कपड़ा उतार दिहिस नंगा हुइगा कहत है देखल्या इन्तायाये की जड़े है मजबूती कसत चोदैया उखर आयी इन ताए उई महरिया लजाये के भाग आई in ताए का रहा अवसेरी

11. पहले रसिन गाँव का जिला बाँदा लगता रहा है, जिसकी तहसील नरैनी रही है| तो पैदल जाका पडत रहा है वा जमानेमा आवागमन का कवनो खाश साधन ना रहे है| अवसेरी का तहसील मा कवनो काम रहे, तो अवसेरी मन ही मन विचार किहिस कि बयारे जाऊ तो समय से पहुच जयिहो, कचहरी खुलत के ब्यारा मा| कहे से हीठक पडत है, दूरी बहुत है, पांच-छै कोस पड़त है नरैनी| इन ताए से वा अपने घर से थोई तडकेन ही निकल गा| जब अवसेरी गा तो मेहरिया सवेरे-सवेरे नित्य कर्म के लिए जाती रही हैं| शर्म-लिहाज के कारण गाँवों में महिलाए भोर का उजाला होने से पूर्व ही जाती हैं| कहे से तब घर में शौचालय नहीं होत रहे है| यह खातिर, सब कोई खेतन मा या सड़क किनारे ही जाता रहा है| अवसेरी अपनी मस्ती में तहसील को जात रहा| इत्ते मा, जहां मनस्वा का दिखीं तो मेहरिया झट से खड़ी हुई जाती हैं| तो वा बड़ा उन्ताये का रहा तो कह दिहिस का बताऊ यार बैतड़का   से पोट देखे का मिले ना तो एक औरत बैठ रहे लबलाहक रहे तो कह दिहिस यार पोवाट दिखे रोवाट मिलत ही खाए का तो कहत है मै झूर रोवाट का करिहो थोई आगे का भी देखादया तो हमे चीनी भी मिल जई तो रोवाट और शक्कर खा लहो इन ताए के हमाये अवसेरी के कारनामा रहे है

12. एक बार अपने मेहरिया से कहिस तै छाड़ के गयी तो मै रंडी के लगे जाए लगिहो तो ताय एक दा हुइगा तो सहजाजपुर आस पास के पुरवन मा रंडी रहा करती रहे ,अवसेरी गा एक दा पैसा दिहिस उनका तो उई कहिन इत्ते मा कुछु ना होई तो कहिस भैसी गोरु तो है घी दूध होई तो कहिस हा घीव तो है कहिस वहे लए के आव तो बन जयी काम यहो चतुर होशियार रहा बढ़िया मटका लावा तरे तरे मस्त ठोस माटी भर दिहिस ऊपर से घीव डार दिहिस पौवा खाड बढ़िया भैसी का घी चक चक देखाए लाग जाड़े का घी जमगा बढ़िया तो लए के गा और दिहिस वहिका वा कहिस घीव बढ़िया है बहिनी(द्विजनिया) का मोय देत आव फिर तेजनिया के साथे अन्दर चला

गा ,यहे वहिके बहिन घी चखे लाग चखत चखत देखिस की यहिमा माटी है चिल्ला ले कहिस ओये तेजनिया ग्वाड समेट सगला घीव माटी हइगा तो कहत ही का होई ग्वाड समेटे महफिल पाटे हुईगा इन ताय एक रहा हमार अवसेरी

- **चतुर्थ चरण (संशोधन एवं परिष्कृतीकरण):** विषय विशेषज्ञ के माध्यम से प्राप्त लोक गाथाओं का विषय-वस्तु एवं शैलीगत दृष्टि से आवश्यक संशोधन कर उन्हें परिष्कृत एवं सुसंगठित स्वरूप प्रदान किया तथा प्रत्येक कहानी को उपयुक्त **शीर्षक** प्रदान किया।

1. बर्तनों का बच्चा

बहुत पुरानी बात है। रसिन (चित्रकूट) में अवसेरी नाम का एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था। उनके कोई बच्चे नहीं थे। अवसेरी एक साधारण किसान था, जिसे पहलवानी का भी शौक था। अवसेरी का स्वभाव अत्यंत खुशमिजाज एवं मिलनसार था। इसलिए गाँव के हर छोटे-बड़े कार्यक्रम में उसे बुलाया जाता था। वह भी सबके कार्यक्रम में जाकर आगे बढ़-चढ़कर काम में हाथ बंटाता था। इस प्रकार अवसेरी दंपति सबके निमंत्रण में प्रेम से जाते और खाते थे।

लोगों ने एक दिन कहा कि भाई अवसेरी, तुम सब जगह खाना खाते हो, एक दिन तुम भी तो निमंत्रण करो। पहले तो उसने टाल-मटोल की, किंतु जब बहुत उलाहने मिलने लगे तो उसने कहा, "ठीक है भैया, करूंगा।" तो ठीक है भैया, फलां दिन आप सबका निमंत्रण है। तो जैसी गांव में पद्धति रहती है कि जिस भी घर में जिस दिन खाना-पीना रहता है, तो वहां फिर गांव भर से सामान, बर्तन, भाड़े, इत्यादि सामग्री जो भी नहीं रहती है, उसको एक दूसरे के घर से मंगवा ली जाती है। लोग सब जगह से सामान लेकर पहुँचाते हैं और सब सहयोग करके खाना बनाते हैं, खाते हैं और मौज-मस्ती करते हैं। तो बढ़िया कार्यक्रम हुआ और लोगों ने खूब खाया-पिया।

तो लोगों ने कहा कि अवसेरी, तुमने तो बहुत अच्छा भोजन व्यवस्था कराया है। उसने कहा, "खाए रहा, सब तुम्हारे आए।" कुछ दिन बाद जब वह गाँव वालों के बर्तन लौटाने गया, तो जिसके यहाँ से जो लाया था, उसके बड़े बर्तन के साथ एक छोटा बर्तन लगाकर सबको दे दिया। छोटा बर्तन देखकर गाँव वाले अचरज में आ गये, वे बोले, "भैया, हमने तो ये बड़ा बर्तन भर दिया था, ये छोटा बर्तन तो दिया नहीं था।" तो अवसेरी बोला कि ये उसका बच्चा है। वो बोले, "बहुत बढ़िया।" बर्तन का बच्चा पाकर गाँव वालों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

फिर इस बात को जब कुछ एक साल गुजर गए, तो लोगों ने फिर कहना शुरू किया, "अवसेरी, बहुत दिन हो गए यार, फिर एक बार कुछ हो जाए, तुम सबहिन को फिर निमंत्रण दो। पिछली बार का निमंत्रण बहुत नीक था, आनंद ही आ गया।" "तुम्हारा बहुत मन है, तो ठीक है, हुई जइ एक बार। सब तुम्हारे पंचन का आएं।" फिर उसने कहा, "ठीक है भैया, फलां दिन आ जाए।" तब गाँव की ऐसी व्यवस्था रहती थी कि कहीं बाहर जाना नहीं पड़ता था। पिछले बार की तरह गाँव से चारपाई, बिछौना, भड़वा बर्तन, कपड़े, लत्ते, कढ़ाई वगैरा मंगा ली गई। गाँव वालों ने पिछले बर्तनों के बच्चों को याद कर एक की जगह दो-दो बर्तन अवसेरी को खुशी-खुशी दे दिए। गाँव में एक भोंदू कलार था, उसके यहाँ से ही सारी सामग्री आ जाती थी। भोंदू कलार के यहाँ गाँव वालों के बर्तन गिरवी रखकर आटा, भाटा, तेल, घी, नून, मिर्चा इत्यादि जो भी लगना था, सब मंगवा लिया और सबको प्रेम से भोजन करवाया। अवसेरी बोला भैया मजे से खायंका है, सब तुम्हार आये।

दावत हुए कई दिन बीत गये। लोगों को आशा जगी कि अब हमारा बर्तन आएगा, उसके साथ एक छोटा बर्तन भी आएगा, उसका बच्चा बन करके। तो लोग इंतज़ार करते रहे: हफ्ते, पंद्रह दिन, महीने, दो महीने, तीन महीने बीत गए। उसने लौटाया ही नहीं, तो लोग मांगने गए कि भैया... हमारे बर्तन तो लौटा दो। पिछले बार तो साथ में एक बच्चा देकर आए थे, इस बार तो तुम हमारा मूल बर्तन ही नहीं लौटा रहे हो। तो वह बोला, इस बार ऐसा रोग आया है, महतारी और बच्चा दोनों चल बसे हैं।

गाँव वाले बोले, "ऐसा कैसे हो सकता है?" तो अवसेरी बोला, "यदि बर्तन के बच्चे हो सकते हैं, तो वो मर भी सकते हैं।" अब गाँव वालों को सारा माजरा समझ में आया। उन्होंने अनुनय-विनय की, तो उसने कहा, "भैया, वो सब तुम्हारे पंचन के पेट में चला गया। अब अगर तुम पंचन का बर्तन चाहो, तो भोंदू कलार के यहाँ चले जाओ, वहाँ से छुड़वा कर ले आओ।" तो लोग बोले, "यार, इसने तो हमारे बर्तन ही बेचकर हमें खिला दिया।" फिर लोगों ने अपने-अपने बर्तन छुड़वाए और फिर कभी अवसेरी से किसी ने नहीं कहा कि हमें निमंत्रण कराओ।

2. बतासे का न्याय

रसिन ग्राम का निवासी अवसेरी विलक्षण प्रतिभा का धनी और प्रत्युत्पन्नमति था। उस जमाने में आवागमन के लिए साधन, सवारी के रूप में घोड़ा-घोड़ी रखते थे। अवसेरी के पास एक देसी घोड़ी 'ग्वेद' थी। सुबह का समय था, अवसेरी गाँव के बाहर अपनी घोड़ी के लिए घास छील रहा था। उसी समय गाँव से एक बाहरी स्त्री-पुरुष का गुजरना हुआ।

पुरुष आगे था, महिला पीछे थी, और उसकी गोद में बच्चा था। रास्ते में पुरुष अपनी मेहरिया से बोला, "सुनो फलनिया, यहाँ के बारे में तो सब कोई कहते हैं कि रसिन गाँव के लोग बहुत मजाकिया हैं। यहाँ तो किसी ने हमसे मजाक ही नहीं किया। पूरा गाँव निकरा जात है।" तो यह बात कहीं से अवसेरी के कान में पड़ गई। उसने मन ही मन कहा, "ठीक है, अच्छा, चलो चलकर देखते हैं।" उसने घास छीलना बंद किया और दौड़ते-दौड़ते भोंदू कलार के यहाँ से बतासा ले लिया, और उनके पीछे-पीछे चल दिया। बच्चा पुरुष के कंधे में था, उसका मुंह भी पीछे की ओर था, तो चलते-चलते अवसेरी एक बतासा उस बच्चे को पकड़ देता, वो खा लेता, तो फिर दूसरा पकड़ देता। इस प्रकार बतासा खिलाते-खिलाते एक कोस निकल गया।

एक कोस बाद रोड के किनारे एक गाँव पड़ता है, सुदिनपुर। जैसे ही सुदिनपुर गाँव का मध्य आया, तो अवसेरी ने आगे होकर चिल्लाना शुरू किया, "भैया, देखो-देखो, मेरी मेहरिया को ये भगाए लिए जा रहा है।" यह सुनकर वहाँ गाँव जमा हो गया। गाँव वालों ने उनको घेर लिया और देखते ही देखते मजमा लग गया। पंचायत बुलाई गई। पञ्च उस पुरुष से बोले, "ऐसा कैसे कर सकते हो तुम?" वह बोला, "अरे नहीं साहब, ये मेरी पत्नी है, ये झूठ बोल रहा है। मेरी पत्नी से पूछ लो।" स्त्री से पूछा गया, "तुम किसकी पत्नी हो?" उसने पुरुष की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं इनकी पत्नी हूँ, इन्हीं के साथ हूँ।" यह सुनकर अवसेरी बोला, "अरे प्रियतमे! यह तुम क्या कह रही हो? मनमुटाव, किस पति-पत्नी के बीच नहीं होता?

लेकिन इसका यह अर्थ तो नहीं कि तुम किसी अन्य पुरुष के साथ चल दो।" फिर अवसेरी पंचों की ओर देखते हुए बोला कि "ये झूठ बोल रही है, ढोंग कर रही है, ये मेरी ही पत्नी है। पञ्च परमेश्वर, अब आप ही न्याय करो। मैं तो बर्बाद हो गया।" ऐसा कहकर अवसेरी दहाड़ मारकर रोने लगा।

यह देख पञ्च भी बड़े अचरज में पड़ गए और किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके। अंत में यह हुआ कि अब यह साफ-साफ कैसे पता चले कि असली पति-पत्नी कौन हैं, तो पंचों ने कहा कि "भाई, देखो, व्यक्ति झूठ बोल सकता है लेकिन बच्चा झूठ नहीं बोल सकता।" तो बालक के ऊपर ही निर्णय छोड़ देते हैं। तो एक तरफ उस सज्जन को बैठा दिया, जिसका बच्चा था और दूसरी दिशा की तरफ अवसेरी को।

फिर बच्चे को उन दोनों के बीच में छोड़ दिया गया और फिर कहा गया कि जिसका बच्चा होगा, उसी के पास चला जाएगा। फिर अवसेरी ने धीरे से बतासा दिखा दिया, तो बच्चा झट से दौड़ कर अवसेरी के पास जाकर लिपट गया और निर्णय हो गया कि बच्चा किसका है। पंचायत समाप्त हुई।

अब वो पति-पत्नी गोहार मार रहे थे कि भैया, ये क्या अनर्थ हो रहा है और अवसेरी से बड़ी अनुनय-विनय कर रहे थे कि ऐसा न करो। ऐसा काहे कर रहे हो?

तो उसने कहा कि ठीक है, अब जाओ, लेकिन फिर कभी जीवन में ये मत कहना कि रसिन गांव में मजाक नहीं होता। ले जाओ अपना लाल और अपनी जिंदगी जियो मौज से।

3. मजाक की भारी कीमत

अवसेरी बड़ा मजाकिया व्यक्ति था, पूरा गाँव उसकी चतुराई का कायल था। केवल अपने ही गाँव में नहीं, वरन दूर-दूर तक उसकी लोकप्रियता थी। एक बार अवसेरी की पत्नी बोली, "आप सबसे मजाक करते हैं, मुझसे कभी मजाक नहीं किया।" पहले तो अवसेरी ने टाल-मटोल किया, किंतु जब पत्नी ने कई बार जोर देकर कहा, तो अवसेरी बोला, "चलो ठीक है, फिर कभी देखेंगे।"

कुछ समय बाद, अवसेरी का साला अपनी बहन को लिवाने के लिए आया, तब तक पत्नी को उनकी मजाक वाली बात भूल गई। उनके भाई का बड़ा स्वागत-सत्कार हुआ, जैसा होता ही है, एक भाई का अपनी बहन के घर में। अब स्वागत-सत्कार और भोजन-वोजन करके सब मस्त थे।

अब अवसेरी उसके भाई को अपने साथ ले गया, साले ने पूछा "जीजा, इत्ते सुखान-सुखान कहे हौ?" अवसेरी बतायिस "एक चुड़ैल है जो रोज रात के टैम मोहिका परेशान करत है|" अपने संग सोये खातिर कहत है, मैं खूब मना करयों, मगर मानत निहाय| वहिका सार कहिस, "इन तान है तो मैं देखिहों आज, मोर पहलवानी कबे काम आई?"

रात होने पर अवसेरी ने साले साहब को अपने पलंग पर लेटा दिया, और कहा कि "तुम सो जाओ, वरना देर रात को आओगे, तब तुम वहिका समझोगे।" "ठीक है, फिर मैं चलता हूँ," यह कहकर चुपचाप अवसेरी खुद उस पलंग के तरफ छुप गया।

और जैसी कि गांव में प्रथा होती है, घर में सबको खिलाने-पिलाने के बाद अंत में खुद खा-पीकर, चौका-बर्तन सब साफ करके उसकी पत्नी देर रात को सोने आई। क्योंकि अगले दिन सुबह ही उसे मायके जाना था, तो बाकी सारे काम-धाम निपटाने में थक गई थी। तब तक उसका भाई भी अवसेरी की जगह चद्दर ओढ़कर सो गया था। तब वह आई और जैसी कि ग्रामीण संस्कृति होती है, सोने के पूर्व पति के पैर दबाई, सेवा की और बगल में लेट गई।

उसकी पत्नी पलंग पर अभी लेटी ही थी कि तभी अवसेरी पलंग के नीचे से निकल खड़ा हुआ। वह इसी पल के ताक में था और जोर-जोर चिल्लाने लगा, "घोर कलयुग आ गया है, मैं बर्बाद हो गया, बहिनी भाई संग लेटी है।" शोर सुनकर दोनों ने चद्दर हटाया तो अवाक रह गए। ऐसा कैसे हो गया?

दोनों को हैरान परेशान देखकर अवसेरी बोला, "तुम्हारी बहिनी ही कहत रही है कि सब गाँव वालों से मजाक करत हो, मोय संग तो कभी मजाक नहीं कीन्हो।"

अब दोनों को माजरा समझ आया। अवसेरी ने उन्हें विस्तार से बताया कि ऐसा किस प्रकार हुआ। फिर अवसेरी का साला दूसरे कमरे में सोने चला गया। अवसेरी की पत्नी बोली, "भला ऐसा मजाक भी कोई करता है क्या?" किन्तु वह बहुत ज्यादा कुछ उससे कह न सकी, क्योंकि मजाक करने को कहा तो उसने ही था। इस मजाक के बाद से वह अपने भाई, पति और यहाँ तक कि खुद से भी आँख नहीं मिला पा रही थी। वह अन्दर ही अन्दर घुलती जा रही थी। उसकी अंतरात्मा बहुत दुखी हो गई। वह इस मजाक को सह न सकी और मौका देखकर घर के बाहर स्थित कुएं में धम्म से कूदकर अपनी जान दे दी।

4. मंदिर की छत पर ऊँट

एक समय की बात है। एक रजवाड़ी गाँव था, जहाँ एक पुरानी स्टेट थी। उस गाँव के ज़मींदार साहब (धतुरहा) के यहाँ एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में नृत्य का भी आयोजन किया गया था। पास के छोटे से पुरवा, फैजाबादपुर से नर्तकियों को बुलाया गया।

रात को महफ़िल सजी। नृत्य शुरू हुआ और पूरे गाँव के लोग उसे देखने के लिए इकट्ठा हो गए। उस भीड़ में 'अवसेरी' भी था। दिन भर काम-धंधा करके, वही मैले-कुचैले कपड़े पहनकर, साधारण रूप में वहाँ जाकर बैठ गया।

गाँव की परंपरा के अनुसार, जब किसी को नृत्य अच्छा लगता, तो वह नर्तकी को इनाम स्वरूप पैसे दिखाता, और नर्तकी उसके पास जाकर नृत्य करते हुए पैसे ले लेती थी।

अवसेरी ने भी नृत्य से खुश होकर उसे पैसे दिखाए, लेकिन उसके मैले-कुचैले कपड़े और साधारण रूप को देखकर नर्तकी ने उसे नजरअंदाज कर दिया। यह बात अवसेरी को बहुत खल गयी| उसने मन ही मन कहा "रहि जये ससुरी अबे तै मोय पाछे-पाछे फिरहिये।"

उस समय आने-जाने के प्रमुख साधन हाथी, घोड़ा और ऊँट हुआ करते थे। नर्तकियाँ ऊँट पर आई थीं। अवसेरी ने सोचा कि नर्तकी को उसकी गलती का एहसास कराया जाए।

रात में वह चुपचाप वहाँ से निकला और कुछ लोगों की मदद से गाँव के बाहर मंदिर के पास रखे पयार के गट्ठरों को इकट्ठा कर एक ढलान बना दी। फिर उसने ऊँट को उस ढलान के सहारे मंदिर की छत पर चढ़ा दिया और बाद में सारे गट्ठर हटा दिए।

सुबह जब नृत्य समाप्त हुआ, तो नर्तकी ने अपने साथी से ऊँट लाने को कहा। लेकिन ऊँट तो वहाँ था ही नहीं। खोजबीन शुरू हुई। अंततः लोगों ने देखा कि ऊँट तो मंदिर की छत पर खड़ा है!

पूरा गाँव इकट्ठा हो गया। सभी आश्चर्यचकित थे कि ऊँट वहाँ कैसे पहुँचा। तभी एक बुजुर्ग ने कहा कि यह काम अवसेरी का ही हो सकता है। अवसेरी को बुलाया गया। अवसेरी ने नर्तकी द्वारा ऐंठ के मारे इनाम के रूपए न लेने के बारे में बताया। नर्तकी से पूछा गया, तो उसने स्वीकार किया। इस पर गाँव वालों ने अवसेरी का ही पक्ष लिया।

अवसेरी बोला, "एक दिन-एक रात मोय साथ अगर या पतुरिया रही, तब ही मैं ऊँट देहूं।" नर्तकी ने ऐसा ही किया और अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी। तब अवसेरी ने फिर से प्यार के गट्ठर लगवाकर ढलान बनाई और ऊँट को सुरक्षित नीचे उतारा। इसके बाद नर्तकी अपने घर चली गई और फिर कभी उसने महफिल में किसी को नीचा नहीं दिखाया।

इस प्रकार अवसेरी अपनी विलक्षण बुद्धि और चतुराई के लिए प्रसिद्ध था।

5. सबके पेट होते हैं

एक बार की बात है। रसिन गाँव में ज़मींदार की बेटी का विवाह था। गाँव की परंपरा के अनुसार विवाह के दिन पूरे गाँव को निमंत्रण दिया जाता था। इस निमंत्रण पत्र को 'तदगरा' कहा जाता था, जिसमें सभी लोगों के नाम लिखे जाते थे। पंडित जी घर-घर जाकर लोगों को निमंत्रण देते और सूची में लगाते जाते थे।

लेकिन इस बार गलती से 'अवसेरी' का नाम तदगरा में नहीं लिखा गया, इसलिए उसे निमंत्रण नहीं मिला। इससे वह बहुत नाराज़ हुआ और उसने मन ही मन ज़मींदार को सबक सिखाने की सोची।

शाम को जब बारात आने वाली थी, अवसेरी घोड़ी पर बैठकर गाँव के बाहर बान गंगा नदी के किनारे पहुँचा और वहाँ अपनी घोड़ी के लिए घास छीलने लगा। जैसा कि उस समय प्रथा थी, बारात नदी किनारे रुकती थी। लोग वहाँ नहाते-धोते, कपड़े बदलते और फिर विवाह स्थल की ओर जाते थे। जब बराती बान गंगा के किनारे पहुँचे, तो अवसेरी ने उनसे बातचीत शुरू की। उसने पूछा, "कहाँ जा रहे हो?"

बरातियों ने बताया, “फलाँ ज़मींदार के यहाँ शादी में जा रहे हैं।” तब अवसेरी ने चालाकी से कहा, “अच्छा, वही लड़की जिसकी शादी हो रही है, जिसके पेट में है?” यह सुनकर बराती चौंक गए। बात फैल गई और सब लोग शंका में पड़ गए। उन्होंने सोचा कि अगर यह बात सच हुई तो बड़ी बदनामी होगी। इसी डर से पूरी बरात वापस लौटने लगी।

जब यह खबर ज़मींदार तक पहुँची, तो वह बहुत घबरा गए। गाँव के बुजुर्ग और समझदार लोग तुरंत बरात के पीछे गए और उन्हें रोककर लौटने का कारण पूछा। कोई कुछ बताने को तैयार ही न था। बहुत कुरेदने पर बरातियों ने ‘लड़की के पेट’ होने की बात बताई। जब उन्होंने पूछा कि यह किसने कहा, तो बरातियों ने घास छील रहे अवसेरी की ओर इशारा कर दिया।

तब लोगों को समझ में आया कि यह अवसेरी की शरारत है, क्योंकि शायद उसका नाम तदगरा में छूट गया था। उसे तुरंत बुलाया गया और नाम छूट जाने के लिए क्षमा मांगी। जमीदार ने अवसेरी से अनुनय-विनय की कि गाँव की इज्जत-मर्यादा का प्रश्न है। गाँव की बिटिया, सबकी बिटिया होती है। यह रायता तुमने ही फैलाया है, तुम्हीं समेटो। कुछ ऐसा करो कि बिगड़ी बात बन जाए। फिर अवसेरी को नहलाया-धुलाया गया, नए कपड़े पहनाए गए और सम्मान के साथ बरात के पास भेजा गया। वहाँ पहुँचकर उसने बड़ी चतुराई से कहा: “काहे बारात लवटाये लिए जाते हो ?” बराती बोले “क्यों, तुम्हीं ने तो कहा था कि लड़की के पेट है?”

अवसेरी बोला “भाइयों! ज़रा सोचिए—क्या कोई ऐसा है जिसके पेट न हो? सबके पेट होते हैं, तो इसमें गलत क्या है?”

उसकी बात सुनकर बराती हँसते-हँसते लोट -पोट हो गये | वे अपनी गलती समझ गए। उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने बात को गलत अर्थ में ले लिया। उन्होंने ज़मींदार से माफी माँगी और बारात फिर से जमींदार की चौखट पर आ गयी। इसके बाद विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस प्रकार अवसेरी ने अपनी चतुराई और सूझ-बूझ से बिगड़ी बात बना दी, जिसके लिए वह प्रसिद्ध था।

6. आस्था की जीत

एक समय की बात है, रसिन गाँव में यह चर्चा फैल गई—“चलो, तीर्थ करने चलते हैं।” यह सुनकर अवसेरी नामक गरीब ब्राह्मण के मन में भी तीर्थ यात्रा का विचार आया। वह अपने गाँव वालों के साथ यात्रा पर निकल पड़ा।

रास्ते में कई कठिनाइयाँ आईं। अभी वे रौली गाँव ही पहुँचे थे कि अवसेरी की तबियत ख़राब हो गयी| गाँव वाले बोले “अवसेरी भाई, अभी हम गाँव से थोड़ी दूर ही आये हैं, अभी तो हमें बहुत दूर जाना है| तुम्हारी तबियत ठीक नहीं हैं| ऐसा करो, तुम गाँव लौट जाओ| जब पूरी तरह ठीक हो जाओ, फिर कभी तीर्थयात्रा का विचार बनाना|”

अवसेरी बोला “मैं तीर्थयात्रा के लिए निकला हूँ, अब वापस नहीं जाउगां, चाहे मेरे प्राण ही क्यों न निकल जाए| ऐसा करो मुझको खटोली-खटोली लिवा चलो, बहुत पुण्य होगा| अगर ऐसा नहीं करोगे तो भगवान् तुमसे क्रोधित हो जायेंगे।“ गाँव वालों ने विचार-विमर्श किया और आगे की यात्रा के लिए उसे खटोली में बैठाकर ले जाया जाने लगा। इस तरह यात्रा पुनः शुरू हुई और धीरे-धीरे सभी लोग बदल-बदल कर उसे खटोली पर ही बैठाकर केदारनाथ तक ले गए।

केदारनाथ पहुँचकर सबने भगवान के विधिवत दर्शन पाए और पूजा-अर्चना की| किंतु एक बड़ी आश्चर्यजनक बात यह हुई कि सभी को तो भगवान के दर्शन प्राप्त हुए, किंतु अवसेरी को न हुए, वह विलाप करने लगा।

अवसेरी भगवान के प्रति अत्यंत आस्थावान था। उसे विश्वास था कि इतनी कठिन यात्रा के बाद भगवान उसे अवश्य दर्शन देंगे। वह मंदिर के पास बैठकर दिन-रात प्रार्थना करता—"हे भगवान! मैंने इतनी दूर से कष्ट उठाकर आपकी शरण ली है, मुझे दर्शन दीजिए।"

कई दिन बीत गए, लेकिन उसे दर्शन नहीं हुए। वह निराश होकर भी, वहीं भगवान की चौखट पर पड़ा रहा। लगभग पंद्रह-बीस दिन बीत गए, पर उसने हार नहीं मानी। वह बार-बार भगवान से विनती करता रहा।

उसने भगवान से कहा "आदमी, समाज में दुनिया-भर के गलत काम करत है, उनका तो तुम तुरतै दर्शन देत हौ| मोर काज नहीं होत रहा, तौ मैं एक नीच जाति में शादी का कर लीन्हो, मुहि दर्शन नही देत हो| यह कहाँ का न्याय है? तुम्हारी नजर में तो सब बराबर हैं। तुम तो पापियों का भी उद्धार करत हो। जब तक मोहि दर्शन ना मिलेंगे। मैं यहां से ना हिलहों। या चौखट मा ही प्राण त्याग देहों।" ऐसा कहते हुए वह वहीं चौखट में अचेत हो गया| उसी रात मंदिर के पुजारी को स्वप्न आया। स्वप्न में भगवान ने कहा—"वह जो गरीब भक्त बाहर चौखट पर पड़ा है, उसे अंदर ले आओ। वह सच्चा भक्त है, बिना दर्शन के नहीं जाएगा।"

पुजारी ने भगवान के आदेश का पालन किया। मंदिर के पट बंद चुके थे| पुजारी ने देखा कि मंदिर के बाहर एक दीन-हीन व्यक्ति अचेत पड़ा हैं| पुजारी ने उसके मुख पर पानी के छीटे मारे| उसके होश में आने पर पुजारी बोला कि "तुम बहुत भाग्यशाली हो, भगवान ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है, दर्शन के लिए तैयार हो जाओ|" फिर अवसेरी को स्नान कराकर, साफ वस्त्र पहनाकर मंदिर के अंदर ले जाया गया। वहां उसे अलग से भगवान के साक्षात दर्शन कराए गए।

दर्शन पाकर अवसेरी निहाल हो गया, उसकी प्रसन्नता का कोई पार ना था। उसकी सारी थकान और पीड़ा मिट गयी। सभी गाँव वालें भी बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि अन्यथा अवसेरी को खटोली में लादकर लाने की सारी मेहनत व्यर्थ दिखाई दे रही थी|

कुछ दिन बाद उसे पुनः उसी खटोली में बैठाकर रसिन गाँव वापस ले आया गया। गाँव पहुँचकर अवसेरी ने सबको अपनी कथा सुनाई| सबने कहा "भाई अवसेरी, तुम सच्चे भक्त हो| तुमने गाँव का नाम ऊचां कर दिया| सच्ची श्रद्धा और धैर्य रखने वालों को भगवान अवश्य दर्शन देते हैं।"

7. न हींग लगी न फिटकरी

एक औछवाला गाँव मा पीढ़िया (ब्राह्मण) रहत रहे। उनका अच्छा-खासा पड़वा रहै। अवसेरी उनसे कहिस—"दाद्दू, मोय गाय-बछवा निहाय, मोहिका आपन पड़वा दै दया, मैं राखे रहियो। जबै मोल होई जई, तौ तुम्हार हिस्सा दे देहूँ।"

पीढ़िया मान गा अउर पड़वा अवसेरी का दै दिहिस। अवसेरी बिहान भये (साँझ) वही बेच दिहिस—बीस आना मा।

पंद्रह-बीस दिन बाद पीढ़िया पूछे आय—
"अरे अवसेरी दाद्दू, पड़वा मजे मा है? हट्टा-कट्टा भवा कि नाहीं?"

अवसेरी कहिस—
"घंटा ठीक है! मुसलमान लैइगे, खा लिहिन, हग डारिन! ससुर,

अब तुम आपन रूपया-पैसा लै लीन्हा।"

पीढ़िया पूछिस—
"केतना मा बेचे?" अवसेरी कहिस—

“बीस आना मा बेच दीन्हो। बिहान भये बेच दीन्हे रहे हों। का भरोसा, कबे मर जात! तौ सोचेन कि रखे से अच्छा बेच दीन्हो।”

फिर अवसेरी दस आना पैसा पकड़ाय दिहिस।
पीढ़िया कहिस—
“यार, ई का? एके रात मा आधा?”

अवसेरी हँस के कहिस—
“अरे दादा, हमार-तुम्हार करार भा रहा—बटाई के हिसाब से! तौ आधा-आधा होई गा!”

इस प्रकार बिना कोई पैसा लगाये, दुसरे का पड़वा बेच के, एक दिन में ही बातों की चतुराई से आधी रकम अपनी बना ली, और पीढ़िया ताकत रह गया|

न हींग लगी न फिटकरी, ई हाल रहा अवसेरी का|

8. अवसेरी का 'कुआँ' संदेश

एक दा की बात आय। अवसेरी एक बैल गाँव मा खारीद के लावा। बैल बहुत नीक अउर सुन्दर रहा। अवसेरी जउने गाँव मा लइके जात, उहैं के लोग पूछत—
“भइया, केतना का लावा हौ?”

उ हर बार कहत—
“भइया, एक सौ दस का लावा हउँ।”

दूसर आदमी पूछत, तौ उन्है जवाब देत—
“एक सौ दस का लावा हउँ।”

इन ताए से दस-पंद्रह जने रोज पूछत रहा, अउर अवसेरी सबका अलग-अलग बतावत रहा।

एक दिन व खौरिआ गा । गाँव मा हनुमान जी क लगे जउन 'कुआँ' रहा, वहिमा जा के कूदगा। जब सबय सुनेन कि अवसेरी 'कुआँ' मा कूद गा, तौ सब दौरत-भागत उहैं पहुँचे अउर कहै लाग —
“अरे, भाई अवसेरी बहुत नीक आदमी रहा!”

'कुआँ' मा पहिले से जंजीर पड़ि रही। अवसेरी वहै जंजीर पकड़ के लटकत रहा।

लोग पूछिन—
“का भा अवसेरी? काहे कूद गयौ?”
“जिंदा हौ कि नाहीं?”

तब अवसेरी कहिस—“हां, जिंदा हउ!”

तब अवसेरी कहिस—
“सुनो सब जने! मैं एक सौ दस का लावा हउँ! रोज-रोज सब अलग-अलग पूछत हउ, तौ आज सोचे हउँ कि एके बार सबका बता देहू!”

या सुनतय ही सब लोग हँस पड़े।

इन ताय से रहा हमारअवसेरी का 'कुआँ' संदेश।

9. चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना

रसिन गाँव में शुक्ला जी का बहुत बड़ा घर रहा, उनके द्वि-चार गाय-भैंसी रहीं। जब भी मौका लगे, चुप्पा से अवसेरी गाय-भैंसी दुह के ले जाए। कारण कि अवसेरी के कवनों गोरु-बछेरू तो रहे ना, तो सगले ठाए से यहीं ताए करै। जब भी दूध खाए-पिए का मन करै, घर से बाल्टी-लोटिया लेत आवे, और कवनो की गाय-भैंसी दुह के लिए जाए।

कवनो मना करे, कुछु कहे तो कहि देत रहा, "तोहिका लाज ना आई, इन्तान कहत हा। मैं का करों, सुखा के-हड्डी हुई के मर जाव। तुम्हें लाज नहीं लागति आय, तुम लजात ना हुईहा। तुम पंचे महूँ का सेर-सेर भर दूध दई देत्या, सारया तुम दूध-घी खा, मैं सूखी-सूखी खावं। इन ताए ना होइ। तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी।

इन ताए के रहे, हमार अवसेरी। जबरई लोगन के घर से दूध-घी खात रहे, और कवनों बुरा भी ना मानत रहा।

10. अवसेरी का ब्याह और निराला स्नान

एक बार की बात है। पुरन का जमाना रहा। एक गाँव में अवसेरी नाम का ब्राह्मण रहता था। जब उसका बियाह हुआ, तो गाँव-घर में बड़ा हँसी-ठट्ठा होता रहा।

कवनो उसका चोंटिया फटकार देता, कवनो दाढ़ी खींच देता। ओही बखत दुई मेहरिया उहिका देखिन और हँसते-हँसते कहिन—"बाबा, बचाय के राखा, नाहीं तौ तोहार चोंटिया या दाढ़ी उखड़ि जइहै!" अवसेरी भी कम न रहा। हँस के कहिस—"मोर चोंटिया का कछु न होई, तुम आपन चुटिया का बचावा!"

ई सुन के सबे हँसै लागिन। एक जने कहिस—"यार, तुम्हरे हियाँ तौ बड़ा मजाक होत है!"

इसी प्रकार गप्पे-बाज़ी चलती रही और सब कोई अवसेरी को छेड़ता रहा। बिचारे अवसेरी का ब्याह जो हो रहा था। गांव की यह रीति ही है कि जिसका ब्याह होता है, उसे लोग-बाग खूब तंग करते हैं और मजाक करते हैं।

पुराने समय में गांव में सब कोई नहाने के लिए नदियों-तालाब में ही जाता था। अवसेरी भी शादी वाले दिन गांव में नहाने के लिए तालाब में गया। अवसेरी अपने कड़ा-वड़ा उतारकर किनारे धर दिया, और सीधा तालाब में कूद गया।

मेहरिया वहाँ भी अवसेरी से मजाक करने लगीं। "चुटिया बचाया, बह न जाए, उखर न जाए।" तो अवसेरी जिद में आ गया। उसने वहीं पर अपने सब कपड़े उतार दिए, और निवस्त्र हो गया और कहा —"देखा, इन्ताय (जड़) कितनी मजबूत है! कैसे चोंटिया उखर पाए?"

ई सुनते ही मेहरिया लजा गई, अउर उहँवा से भाग गई।

गाँव भर मा ई किस्सा फैल गया, अउर लोग कहने लगे—"अवसेरी तौ बड़ा ही निराला निकल गया!"

11.अवसेरी और भोर का संवाद

पहले रसिन गाँव का जिला बाँदा लगता रहा है, जिसकी तहसील नरैनी रही है| तो पैदल जाका पडत रहा है वा जमाने मा आवागमन का कवनो खाश साधन ना रहे है| अवसेरी का तहसील मा कवनो काम रहे, तो अवसेरी मन ही मन विचार किहिस कि बयारे जाऊ तो समय से पहुच जयिहो, कचहरी खुलत के ब्यारा मा| कहे से हीठक पडत है, दूरी बहुत है, पांच-छै कोस पड़त है नरैनी| इन ताए से वा अपने घर से थोई तडकेन ही निकल गा|

जब अवसेरी गा तो मेहरिया सवेरे-सवेरे नित्य-कर्म के लिए जाती रही हैं| शर्म-लिहाज के कारण गाँवों में महिलाए भोर का उजाला होने से पूर्व ही जाती हैं| कहे से तब घर में शौचालय नहीं होत रहे है| यह खातिर, सब कोई खेतन मा या सड़क किनारे ही जाता रहा है|

अवसेरी अपनी मस्ती में तहसील को जात रहा| रास्ते में सड़क के किनारे दोनों ओर महिलाए नित्य-कर्म के लिए बैठी रही| इत्ते मा, जहां मनस्वा का दिखीं तो मेहरिया झट से खड़ी हुई जाती हैं| तो वा बड़ा उन्ताये का रहा और बडबडाते हुवे कह दिहिस "क्या बताऊ फूटी किस्मत हैं, इतने सवेरे भी किसी के पिछवाड़े (पुट्ठे) के दर्शन तक को तरस गये|" यह बात एक औरत के कान पर पड़ी, वह भी नित्य-कर्म के लिए बैठी थी| वह भी अवसरी से कम ना रही| तो पिछवाड़े दिखाते हुए कह दिहिस "ले देखले, पिछवाड़े (पुट्ठे) देखे से क्या रोवाट (तंदूरी रोटी) मिलत है? खाए का है?"

इस पर अवसेरी तपाक से बोला "मैं अकेले रोवाट (तंदूरी रोटी) का, क्या करिहो? तनिके आगे का भी देखाय दे तो हमें साथ में चीनी भी मिल जाई, तो रोवाट और शक्कर दोनों संग में खा लइहो|" ऐसा सुनते ही वह लजा कर भाग गयी और जीवन में दुबारा किसी के मुहं न लगी|

12. मटकी का रहस्य

एक बार की बात है, अवसेरी का अपनी मेहरिया से झगड़ा हो गया| उसकी पत्नी मायके चली गयी और अवसेरी खिसिया कर गणिका के यहाँ चला गया|

उस समय सहजाजपुर के आस पास के पुरवो में गणिका रहा करती थीं| आस-पास के गावों से सब कोई मन बहलाने के लिए वहीं जाता था | अवसेरी जब गणिका के पास पहुँचा और अपने हिसाब से कुछ पैसा दिहिस,कहे से वा जमाने में पैसे की बहुत कीमत रही है| पर गणिका इतने में नही मानी और उई कहिन "इत्ते मा कुछु ना होई, तोय लगे भैसी गोरु तो हैं हीं, घी-दूध होई कि ना होई?" तो अवसेरी कहिस "हाँ, दूध-घी तो कुल्ल है|"

गणिका बोली "ठीक है, तुम एक मटकी घी ले आओ, तो बात बन जायी|" यह सुनकर अवसेरी घी लाने के खातिर दौड़ा-दौड़ा अपने गाँव आया| अवसेरी चतुर होशियार रहा| एक बढ़िया मटकी लावा| तरे-तरे मस्त ठोस माटी भर दिहिस और ऊपर से पाव भर बढ़िया भैसी का घी डार दिहिस| घी चका-चक देखाए लाग| जाड़े का समय था, घी अच्छे से जम गया| और खूब महक ने लगा| घर के चूल्हे का बढ़िया पका घी जो था| अवसेरी घी की मटकी लेकर गणिका के पास गया और कहिस "देख लों, खूब बढ़िया घी है| तुम्हारे मन का है कि नहीं?" गणिका बोली "हाँ, घी तो नीक ही देखात है| ऐसा कर, इसे ले जाकर अन्दर द्विजनिया (बहिनी) का देत आव| अवसेरी घी देकर वापस आया और तेजनिया (गणिका) के साथ अन्दर चला गया| घी में बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी| द्विजनिया से रहा ना गया, वह मटकी खोल कर घी चखने लगी| चखत-चखत द्विजनिया देखिस कि यहिमा माटी है, तो चिल्ला के कहिस, "ओय तेजनिया, जल्दी से ग्वाड समेट| जल्दी आ | सगला घी माटी हुइगा| हमारे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ हैं | मटकी में तो माटी ही माटी भरी है | ऊपर-अपर दिखाने के लिए घी की एक परत भर रही है |

तेजनिया बोली "अरी द्विजनिया, हाय दैय्या, अब का होई ग्वाड समेटे? खेल तो हुइगा, महफिल पाटे हुईगे|"

- **पंचम चरण (अनुवाद):** विषय विशेषज्ञ के निर्देशन में संशोधित एवं परिष्कृत लोकगाथाओं का विषय-वस्तु एवं शैलीगत दृष्टि से निम्न लिखित भाषाओं में विषय विशेषज्ञ एवं जैमिनी (AI) की सहायता से सचित्र प्रामाणिक अनुवाद तैयार किया गया-
  - **बुन्देली/बघेली भाषा** (अध्याय चतुर्थ)
  - **English Language** (परिशिष्ट-स)
  - **हिन्दी साहित्यिक भाषा** (परिशिष्ट-ब)

3.6 आंकड़ों का विश्लेषण

चूँकि आंकड़े गुणात्मक हैं, इसलिए इनका विश्लेषण '**विषय-वस्तु विश्लेषण**' **(Content Analysis)** और '**थीमैटिक कोडिंग**' **(Thematic Coding)** विधि द्वारा किया:

- संकलित की गई कहानियों को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर देखा गया कि उनमें कौन-सा शैक्षिक मूल्य छिपा है।
- इन मूल्यों की तुलना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के 'लाइफ-स्किल्स' (Life Skills) के ढाँचे से की गयी ताकि उनकी वर्तमान उपयोगिता सिद्ध की जा सके।

अध्याय चतुर्थ- अवसेरी की गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

अध्याय चतुर्थ

अवसेरी की गाथाओं में निहित शैक्षिक मूल्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता

4.1 बर्तन के बच्चे

चित्रकूट के लगे **रसिन** गाँव में एक **अवसेरी** नाम को मनई अपनी लुगाई के संगे रहत हतो। बिचारे के कौनों लइका-बच्चा नहीं हते। अवसेरी एक सीधा-सादा किसान हतो, पै ओ खा पहलवानी को भारी शौक हतो। अवसेरी को सुभाव ऐसो हँसमुख और मिलनसार हतो कि गाँव में कौनों भी छोटो-बड़ो काम होवे, ओ खा न्योतो जरूर दओ जात हतो। वोऊ हर काऊ के काम में खूब बढ़-चढ़ के हाथ बँटात हतो। ई चक्कर में अवसेरी और ओ की लुगाई हर काऊ के जेवनार (दावत) में प्रेम से खात-पीत हते।

एक दिन गाँव के लोगन ने कहो, "अरे भाई अवसेरी! तुम सब जघा को जीमत (खात) फिरत हो, कभूँ हमेंऊ तो न्योतो खवाओ।" पहले तो वो टाल-मटोल करत रओ, पै जब लोगन ने जादा उलाहना दओ तो वो बोलो, "ठीक है भैया, खवा देहूँ।" उसने एक दिन पक्का कर दओ और सब खा न्योतो दे दओ।

गाँव की रीत के हिसाब से, जिस के घरे कार्यक्रम होत हतो, ओ खा गाँव भर से बर्तन-भाँड़े और सामन मिल जात हतो। लोगन ने खुशी-खुशी अपने बर्तन और सामन अवसेरी के घरे पहुँचा दओ। सबने मिल-जुल के राँधो-खायो और खूब मौज करी।

जब लोगन ने भोजन की तारीफ करी, तो अवसेरी हँस के बोलो, "**खाये रओ, सब तुम्हारई आय।"**

कछू दिन बाद जब वो बर्तन लौटावे गओ, तो उसने हर बड़े बर्तन के संगे एक छोटो सो बर्तन (कटोरी या लुटिया) लगा के दे दओ। लोग अचंभे में पड़ गये और बोले, "भैया अवसेरी, हमने तो तुखा बड़ो बर्तन दओ हतो, जो छोटो सो कहाँ से आ गओ?"

अवसेरी बड़ी गम्भीरता से बोलो, "**भैया, जे तुम्हारे बर्तन को बच्चा आय।"**

गाँव के लोग बड़े राजी भये। बर्तन को बच्चा पा के उन खा बड़ी खुशी भई।

कछू साल गुजर गये। लोगन के मन में फिर लालच जागी, बोले, "अवसेरी भाई! एक बार फिर वैसी ई जेवनार हो जाय। पिछली बार को जीमबो बहुत नीक हतो।" अवसेरी बोलो, "जब तुम्हारी इतनी ई इच्छा है, तो हुई जाय एक बार। सब तुम्हारे पंचन को आय।"

फिर दिन तय भओ। गाँव वालों ने पिछले 'बर्तन के बच्चों' खा याद करके, एक की जघा दो-दो बर्तन अवसेरी खा दे दये। गाँव में एक **भोंदू कलार** हतो, ओ के पास बहुत सो सामन रहत हतो। अवसेरी ने का करो कि गाँव वालों के सब बर्तन भोंदू कलार के पास गिरवी धर दये और ओ के बदले आटा, भाँटा (भँटा), तेल, घी, नून-मर्चा सब ले आयो।

गाँव भर ने छक के भोजन करो। अवसेरी फिर ओई बात बोलो, "**मजे से खायो भैया, सब तुम्हारई आय।"**

दावत के कई दिन बीत गये। लोग बाट जोत रहे हते कि अब बर्तन आयेंगे और संगे 'बच्चा' भी अइहै। हफ्ता बीते, महीना बीते, पै बर्तन नहीं आये। जब लोग तंग आके अवसेरी के घरे पहुँचे और बोले, "भैया! हमारे बर्तन तो लौटा दो। पिछली बार तो बच्चा दओ हतो, ई बार तो तुम असल बर्तनई दबा के बैठ गये हो।"

अवसेरी मुँह लटका के बोलो, "**का बतायें भैया, ई बार ऐसो रोग (बिमारी) अई कि महतारी और बच्चा (बड़ो बर्तन और छोटो बर्तन) दोनों ई चल बसे!**"

गाँव वाले चकरा गये, बोले, "अरे! बर्तन कभूँ मरत हैं का?"

तब अवसेरी ने पते की बात कही, "**भैया, अगर बर्तन बच्चा जन सकत हैं, तो वे मरऊ तो सकत हैं!**"

अब गाँव वालों खा सारा माजरा समझ में आ गओ। जब उनने बहुत बिनती करी तो अवसेरी हँस के बोलो, "**भैया, वो सब**



सामान तो तुम्हारे पंचन के पेट में चला गओ। अब अगर बर्तन चाने होयें, तो भोंदू कलार के पास जाओ और रुपया भर के अपने-अपने बर्तन छुड़ा लाओ।"

गाँव के लोग सर पकड़ के रह गये, बोले, "**दद्दा! इसने तो हमारे ई बर्तन बेच के हमें खवा दओ!**"

वा दिन के बाद से, रसिन गाँव में कभूँ काऊ ने अवसेरी से न्योतो नहीं माँगो।

शैक्षिक मूल्य

- **लोभ का दुष्परिणाम:** मुफ्त की चीज़ों के पीछे भागने का अंत हमेशा नुकसानदेह होता है।
- **समान तार्किक मापदंड:** यदि आप किसी नियम से लाभ उठा रहे हैं, तो उसी नियम से होने वाली हानि के लिए भी आपको तैयार रहना चाहिए।

वर्तमान प्रासंगिकता

आज का समाज तकनीकी रूप से भले ही आगे बढ़ गया हो, लेकिन इंसानी लालच सदियों पुराना है। यह कहानी आज के दौर में होने वाले **फाइनेंशियल फ्रॉड, पोंजी स्कीम्स (जैसे '२५ दिन में पैसा डबल') और क्रिप्टो-करेंसी स्कैम्स** का सटीक आईना है।

- **आधुनिक 'अवसेरी' (स्कैमर्स):** आज के साइबर ठग शुरुआत में लोगों को थोड़ा सा असली मुनाफा या कैशबैक देते हैं (जो अवसेरी का 'बर्तन का बच्चा' था)।
- **आधुनिक 'ग्रामीण' (पीड़ित):** जब आम इंसान का लालच जाग जाता है, तो वह अपनी जिंदगी भर की गाढ़ी कमाई (मूल बर्तन) उन ठगों को सौंप देता है। अंत में जब ऐप बंद हो जाती है या ठग भाग जाते हैं, तो पीड़ित

को समझ आता है कि उसका मूल धन भी डूब चुका है। यह कहानी आज के उपभोक्ताओं को सचेत करती है कि "**दुनिया में कुछ भी मुफ़्त नहीं मिलता।"**

4.2 बतासे का न्याय

चित्रकूट के **रसिन** गाँव के **अवसेरी** दद्दा बड़े विलक्षण बुद्धि के मनई हते। उनकी अकल इतनी तेज चलती हती कि सामने वारो चकरा जाय। उन दिना आज के जैसे मोटर-गाड़ी तो हती नहीं, सो लोग घोड़ा-घोड़ी पालत हते। अवसेरी के पासऊ एक देशी घोड़ी हती, जेखा वे प्यार से **'ग्वेद'** कहत हते।

एक दिन सबरे-सबरे को बखत हतो। अवसेरी गाँव के बाहर अपनी घोड़ी के लाने घास छील रहे हते। ओई बखत गाँव से एक परदेसी जोड़ा (स्त्री-पुरुष) निकरो। पुरुष आगे-आगे चल रहा हतो और मेहरिया (पत्नी) पीछे-पीछे, जिसकी कोरा (गोद) में एक छोटो सो लइका हतो।

रस्ते में वो पुरुष अपनी लुगाई से बोलो, "**सुनो ओ फलनिया! सब कहत हते कि रसिन गाँव के लोग बड़े ठिठोलिया (मजाकिया) होत हैं। हम तो पूरो गाँव निकर आये, पै काऊ ने हमसे कछू मजाक ई नहीं करो।"**

पास में घास छीलत अवसेरी के कान में जा बात पड़ गई। वे मनई मन मुस्कराये और बोले, "**हओ भैया! अभी बतात हैं तुम्हें रसिन को मजाक।"**

अवसेरी ने तुरंत घास छीलवो बंद करो और दौड़ के **भोंदू कलार** की दुकान से मुट्ठी भर **बतासे** खरीदे और उन लोगन के पीछे हो लिये। लइका अपने बाप के कँधे पे हतो और ओको मुँह पीछे की ओरी हतो। अवसेरी ने चुपके से एक बतासा लइका के हाथ में थमा दओ, लइका गप से खा गओ।

फिर दूसरो दओ, फिर तीसरो। ऐंसे ई बतासा खवाते-खवाते एक कोस को रस्तो कट गओ।

जैसे ई **सुदिनपुर** गाँव आयो, अवसेरी ने पैंतरा बदलो और जोर-जोर से चिल्लावे लगो, "**अरे दौड़ो रे भैया! देखो जे मुआ मेरी मेहरिया और लइका खा भगाये लिये जा रहा है!"**

सुनत ई सुदिनपुर के लोगन ने उनखा घेर लओ। मजमा लग गओ और पंचायत बैठ गई। पंच बोले, "**अरे ओ मुसाफिर! जे का अनर्थ कर रहे हो?**"

वो बिचारो हक्का-बक्का रह गओ, बोलो, "**अरे नहीं सरकार! जे मेरी अपनी लुगाई है, जे मनई झूठ बोल रहा है। आप ई मोरी मेहरिया से पूछ लो।"**

पंचन ने मेहरिया से पूँछो, "तुम को की लुगाई हो?" वा बोली, "सरकार! मैं इन्हीं की पत्नी हूँ और इन्हीं के संगे जा रही हूँ।"

जा सुन के अवसेरी दहाड़ मार के रोवे लगो और बोलो, "**अरे ओ प्रिये! जे का कह रही हो? अरे थोरि-बहुत अनबन तो हर पति-पत्नी में होत है, पै ऐंसे पराये मनई के संगे भागबो कहाँ को न्याय है? पंच परमेश्वर! देखो जे मोरी लुगाई कैसी ढोंग कर रही है, मैं तो लुट गओ, बर्बाद हो गओ!"**

अवसेरी को रोबो देख के पंचऊ सोच में पड़ गये। कोई फैसला नहीं हो पा रहा हतो। आखिर में पंचन ने कहो, "**देखो भाई! मनई तो झूठ बोल सकत है, पै छोटो लइका कभूँ झूठ नहीं बोलत। जे लइका जेके पास जैहे, जीत ओई की होई।"**

एक ओरी उस मुसाफिर खा बैठा दओ और दूसरी ओरी अवसेरी खा। बीच में लइका खा छोड़ दओ। जैसे ई लइका छोड़ो गओ, अवसेरी ने धीरे से हाथ में **बतासा** दिखा दओ। लइका तो बतासे को चस्का लगो ई हतो, वो झट से दौड़ के अवसेरी की कोरा में जा बैठो और चिपट गओ।



पंचन ने फैसला सुना दओ— "**लइका अवसेरी को आय, सो लुगाई भी अवसेरी की भई।"**

अब तो वो परदेसी जोड़ा रोवे-गिड़गिड़ावे लगो, "दद्दा! जे का गजब कर रहे हो? राम की सौंह जे मोई परिवार है।"

जब अवसेरी ने देख लओ कि उनखा अपनी गलती को अहसास हो गओ है, तो हँस के बोले, "**जाओ भैया! अपना लइका लो और अपनी लुगाई। पै अब आगे से कभूँ जे मत कहियो कि रसिन के लोग मजाक नहीं जानत! जे तो बतासे को न्याय हतो।"**

सब लोग अवसेरी की चतुराई देख के दंग रह गये और वो जोड़ा कान पकड़ के अपनी राह लगो।

शैक्षिक मूल्य

- **मनोविज्ञान की समझ:** बच्चों का मन निश्छल होता है, लेकिन वे तात्कालिक लाभ या लोभ (बतासे) की ओर जल्दी आकर्षित होते हैं।
- **चुनौती का रचनात्मक उत्तर:** किसी के अहंकार का उत्तर हिंसा से नहीं, बल्कि अपनी मेधा और बुद्धि-चातुर्य से देना चाहिए।

वर्तमान प्रासंगिकता

आज के दौर में यह कहानी दो प्रमुख क्षेत्रों में प्रासंगिक है— **विज्ञापनों की दुनिया (Marketing)** और **मुफ़्तखोरी की राजनीति (Freebie Politics)**।

- **मार्केटिंग और सोशल मीडिया:** आज की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और इन्फ्लुएंसर्स जनता को छोटे-छोटे ऑफर्स, कूपन्स या मुफ़्त सर्विस (बतासे) दिखाकर अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जनता (अबोध बालक) उस तात्कालिक लाभ के पीछे भागती है और अपनी प्राइवेसी या डेटा (जो उसकी असली संपत्ति है) उन कंपनियों के हवाले कर देती है।
- **राजनीति का परिप्रेक्ष्य:** चुनावों के समय लोक-लुभावन वादे या मुफ़्त की चीज़ें (बतासे) बांटकर जनता का वोट हासिल कर लिया जाता है। बाद में जनता को अहसास होता है कि इस 'बतासे' के न्याय के चक्कर में उन्होंने अपनी वास्तविक लोकतांत्रिक शक्ति खो दी है।

4.3 मजाक की भारी कीमत

रसिन गाँव के अवसेरी के किस्से तो दूर-दूर तक मशहूर हते। उनकी चतुराई और हाजिरजवाबी को हर कौई कायल हतो। एक दिन अवसेरी की लुगाई (पत्नी) बोली, "देखो दद्दा, तुम दुनिया भर से तो ठिठोली करत फिरत हो, पै हमसे कभूँ मजाक नहीं करो। हमेंऊ तो कभूँ अपनी चतुराई चखाओ।"

अवसेरी ने पहले तो बात टारी, पै जब लुगाई पीछे ई पड़ गई, तो बोले, "हओ! ठीक है, कभूँ देखिहैं।"

कछू दिन बीते, अवसेरी को सारो (साला) अपनी बहिन खा लिवावे (विदा कराने) गाँव आयो। लुगाई तो मजाक वाली बात भूल-भाल गई हती। भैया को खूब आदर-सत्कार भओ, नीक जेवनार भई।

सब काम से निपट के अवसेरी अपने सारे खा बाहर ले गओ। सारो देख के बोलो, "जीजा, तुम इत्ते सुखान-सुखान (दुबले) काहे लगत हो? का बात है?"

अवसेरी मुँह बना के बोले, "का बतायें भैया, एक चुड़ैल है जो रोज रात के हमें तंग करत है। हमारे संगे सोबे खा आफत मचात है। हम बहुतै मना करत, पै वो मानतई नइयाँ।"

सारो पहलवानी के जोश में बोलो, "अरे जीजा! ऐसी कैसी चुड़ैल? आज हमें देखन दओ, हमारी पहलवानी कबे काम अइहै? आज रात हम सम्हार लेहैं।"

रात भई, तो अवसेरी ने अपनी जघा अपने सारे खा पलंग पे लिटा दओ और बोले, "तुम ओढ़-पैर के सो जाओ, जब वो चुड़ैल अइहै, तब तुम ओखा मजा चखा दइयो।" सारो चादर तान के सो गओ और अवसेरी चुपचाप अंधेरे में छुप के बैठ गओ।

गाँव की रीत के हिसाब से, अवसेरी की लुगाई घर को सब काम-धाम निपटा के, चौका-बर्तन माँज के देर रात सोने अई।



बिचारी थकी-हारी हती, अगले दिन मायके जानो हतो। अंधेरे में ओखा का पता कि चादर के भीतर पति है कि भाई।

उसने जा के अपने पति के (जो असल में भाई हतो) पैर दबावे शुरू करे, सेवा करी और थक के बगल में लेट गई।

जैसेई वो लेटी, अवसेरी अंधेरे से कूद के बाहर निकरो और जो-जो से चिल्लावे लगो, "**अरे गजब हो गओ! घोर कलयुग आ गओ! देखो रे देखो, बहिन अपने भाई के संगे लेटी है! मैं तो बर्बाद हो गओ!**"

शोर सुन के दोनों ने चादर हटाई और जब एक-दूसरे खा देखो, तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। दोनों अवाक रह गये।

तब अवसेरी हँस के बोलो, "**अरी भाग्यवान! तुमी तो कहत रई कि हमसे कभूँ मजाक नईं करत, सो आज कर लओ मजाक!"**

जब अवसेरी ने पूरी बात बताई, तब जाकर मामला समझ में आयो। सारो तो लज्जा के मारे दूसरे कमरे में चलो गओ। लुगाई के मन में भारी चोट पहुँची। वो बोली, "भला ऐसो भी कौनों मजाक होत है का?" पै वो जादा कछू कह नईं पाई, काये से मजाक की मांग ओई ने करी हती।

पै वा रात के बाद सब कछू बदल गओ। अवसेरी की लुगाई अपने भाई और पति से आँख मिलाबे लायक नईं बची। लोक-लाज और सरम के मारे वो भीतर ई भीतर घुटन लगी। ओ की अंतरात्मा ई बात खा सह नईं पाई। एक दिन मौका देख के, वो घर के बाहर बने कुआँ में कूद गई और अपनी जान दे दई।

हँसी-मजाक में दओ गओ घाव, कभूँ-कभूँ हत्या से भी जादा गहरा होत है।

शैक्षिक मूल्य

- **मर्यादा का महत्व:** रिश्तों की एक गरिमा होती है, मनोरंजन के नाम पर उसे दांव पर नहीं लगाया जा सकता।
- **संवेदनशीलता:** किसी भी कृत्य को करने से पहले उसके संभावित मानसिक और सामाजिक प्रभाव का आकलन करना आवश्यक है।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के **डिजिटल प्रैंक कल्चर (Prank Videos)** और **इंटरनेट ट्रोलिंग** के दौर में सबसे ज़्यादा प्रासंगिक और डराने वाली है।

- **क्रूर मनोरंजन:** आज यूट्यूब और इंस्टाग्राम रील्स पर लोग केवल व्यूज, लाइक्स और पैसों के लिए अपने दोस्तों, परिवार या अजनबियों के साथ ऐसे प्रैंक (मजाक) करते हैं जो उनकी गरिमा को ठेस पहुँचाते हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य पर आघात:** अक्सर सोशल मीडिया पर किसी की निजी ज़िंदगी का मज़ाक उड़ाया जाता है या मीम्स बनाए जाते हैं। इस 'क्रूर मज़ाक' के कारण पीड़ित व्यक्ति समाज में किसी से आँख मिलाने के काबिल नहीं रहता और गंभीर अवसाद (Depression) का शिकार होकर आत्महत्या जैसा आत्मघाती कदम उठा लेता है। यह कहानी आज के कंटेंट क्रिएटर्स और युवाओं को चेतावनी देती है कि **मनोरंजन और मानसिक क्रूरता के बीच की बारीक रेखा को कभी न लांघें।**

4.4 ऊँट मंदिर की छत पर!

एक समई की बात आय, एक रजवाड़ी गाँव हतो जहाँ पुरानी स्टेट हती। उते के ज़मींदार साहब (जिन्हें सब **धतुरहा** कहत हते) के घरे एक भौत बड़ो जलसा हतो। जलसा में नाच-गाने को भी इंतजाम करो गओ हतो। पासई के एक छोटे से पुरवा, फैजाबादपुर से नर्तकियाँ (नचनियाँ) बुलाई गई हतीं।

रात खा महफ़िल सजी। नाच शुरू भओ तो गाँव भर के लोग टुट पड़े। भीड़ में हमाये **अवसेरी** दद्दा भी हते। दिन भर खेती-पाती को काम करके थके-हारे, वैसेई मैले-कुचैले कपड़ा पहने वे भीड़ में जाके बैठ गये।

गाँव की रीत हती कि जेखा नाच नीक लग जात हतो, वो नचनिया खा ईनाम के पइसा दिखाउत हतो। नचनिया नाचत-नाचत पास आके वे पइसा उठा लेत हती। अवसेरी खा नाच भौत पसंद आयो, सो उनने भी पइसा दिखाए। पै नचनिया हती थोड़ी ऐंठ वाली; अवसेरी के गंदे कपड़ा और साधारण रूप देख के वा अनदेखो कर गई और पइसा लेवे नहीं अई।

जा बात अवसेरी खा भीतर तक चुभ गई। उनने मन-ही-मन कहो, "**रहि जाये ससुरी! अबे तू मोरे पाछे-पाछे फिरिहै, देख तो जा।"**

वा जवाने में आवे-जावे खा हाथी, घोड़ा और ऊँटई चलत हते। वे नचनियाँ ऊँट पर चढ़ के आई हतीं। अवसेरी ने सोची कि ई नचनिया को घमंड तो चूर करनेई पड़े। रात खा जब सब सो गये, तब अवसेरी चुपचाप उठे और कछू लोगन की मदद से गाँव के बाहर मंदिर के पास **पयार (पुआल)** के भौत सारे गट्ठर इकट्ठे करे। उनने पयार लगा-लगा के मंदिर की छत तक एक ढलान (रैंप) बना दई। फिर का हतो, ऊँट खा पुचकार के वा ढलान के सहारे मंदिर की छत पर चढ़ा दओ और बाद में सब पयार हटा दई।

सबेरे जब नाच-गानों निपटा, तो नचनिया ने अपने आदमी से कहो, "भैया, ऊँट ले आओ, अब घरै चलने।" पै ऊँट उते होवे तब तो मिले! खोजबीन शुरू भई तो सब टकटकी लगा के देखत रह गये—**ऊँट तो मंदिर की ऊँची छत पर ठाढ़ो हतो**!

पूरो गाँव इकट्ठा हो गओ। सब चकरा गये कि ऊँट उते पहुँचो कैसे? तभी एक सयाने (बुजुर्ग) बोले, "जा कारस्तानी तो सिर्फ़ अवसेरी की ई हो सकत है।"

अवसेरी खा बुलवाओ गओ। अवसेरी ने पूरी बात बताई कि कैसे वा नचनिया ने अपनी ऐंठ के मारे ईनाम के पइसा नहीं लये हते। जब नचनिया से पूछो गओ, तो वा ने अपनी गलती मान लई। गाँव वाले भी अवसेरी की तरफ हो गये।

अवसेरी डंके की चोट पे बोलो, "**अगर जा पतुरिया एक दिन और एक रात मोरे संगे रहे, तबई मैं ऊँट नीचे उतारहूँ।"**

नचनिया खा हार माननी पड़ी। वा रुकी और अपनी गलती की माफी माँगी। तब जाके अवसेरी ने फिर से पयार के गट्ठर लगवा के ढलान बनाई और ऊँट खा सुरक्षित नीचे उतारो।

वा दिन के बाद से वा नचनिया ने कभूँ महफ़िल में काऊ गरीब को नीचा नहीं दिखाओ।

ऐसो हतो हमाओ अवसेरी—बुद्धि को तेज और स्वाभिमान को पक्को!



शैक्षिक मूल्य

- **समानता और सम्मान:** किसी भी व्यक्ति के वस्त्र या उसका पेशा देखकर उसका अनादर नहीं करना चाहिए।

- **बुद्धि की श्रेष्ठता:** भौतिक साधन (जैसे नर्तकी का ऊँट या धन) बुद्धिबल के सामने बौने साबित होते हैं।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के समाज में गहरे तक पैठे '**वीआईपी कल्चर**' **(VIP Culture)**, '**क्लासिज्म**' **(वर्गभेद)** और **दिखावे की संस्कृति** पर कड़ा प्रहार है।

- **बाहरी चमक बनाम आंतरिक मूल्य:** आज के समय में यदि कोई व्यक्ति साधारण या मैले-कुचैले कपड़ों में किसी बड़े शोरूम, रेस्टोरेंट या कॉर्पोरेट ऑफिस में चला जाए, तो वहां का स्टाफ या सुरक्षाकर्मी उसे हीन भावना से देखते हैं (जैसा नर्तकी ने अवसेरी के साथ किया था)। समाज केवल ब्रांडेड कपड़ों और महँगी गाड़ियों को देखकर सम्मान देता है।
- **आम आदमी का पलटवार:** यह कहानी याद दिलाती है कि किसी की सादगी को उसकी कमजोरी नहीं समझना चाहिए। आज जब कोई आम इंसान या शोषित वर्ग का व्यक्ति प्रशासनिक सेवा (IAS/IPS), राजनीति या अपनी मेधा के बल पर ऊंचे पद पर पहुँचता है, तो वह उन घमंडी रसूखदारों के अहंकार को 'मंदिर के शिखर' की तरह अधर में लटका देता है।

4.5 सबके पेट होत हैं!

एक बेर की बात आय, रसिन गाँव के ज़मींदार साहब की बिटिया को ब्याह हतो। गाँव की रीत के हिसाब से सबरे गाँव खा न्योतो दओ जानो हतो। उन दिना न्योता की एक चिट्ठी बनत हती, जिख़ा **'तदगरा'** कहो जात हतो। ओमें गाँव के हर मनई को नाम लिखो जात हतो। पंडित जी घर-घर जाके नाम पुकारत हते और न्योतो देत जात हते।

पै ई बेर का भओ कि गलती से **'अवसेरी'** को नाम तदगरा में लिखबे से छूट गओ। जब अवसेरी खा न्योतो नहीं मिलो, तो वो भारी खिसिया गओ। उसने मनई-मन ठान लई कि आज तो ज़मींदार खा सबक सिखानेई है।

बान गंगा पे 'रायता'

साँझ के टेम जब बरात आबे वाली हती, अवसेरी अपनी घोड़ी पे चढ़के गाँव के बाहरे **बान गंगा नदी** के किनारे पहुँच गओ और उते अपनी घोड़ी खा घास छीलने लगो। उन दिना जा प्रथा हती कि बरात नदी किनारे रुकके हाथ-मुँह धोत हती, कपड़े बदलत हती और फिर जनवासे की ओर बढ़त हती।

जैसेई बरात नदी किनारे पहुँची, अवसेरी ने बरातियों से गप्प-सप्प शुरू कर दई। वो पूछन लगो, "कहाँ जा रये हो भैया?" बराती बोले, "अमुक ज़मींदार के उते बिटिया को ब्याह है, उतेई जा रये।"

तब अवसेरी ने तिरछी मुस्कान के संगे चाल चली और बोलो, **"अच्छा! ओई बिटिया के ब्याह में जा रये, जेके पेट में है?"**

इतनी बात सुनतई बरातियों के तो कान खड़े हो गये। बात हवा की तान फैल गई और सबरे शंका में पड़ गये। सबने सोची कि अगर जा बात सच निकरी, तो हमारी तो हँसाई हो जै। बस, बदनामी के डर से पूरी बरात उते सेई वापस लौटे लगी।

ज़मींदार की घबराहट और पंचैती

जब खबर ज़मींदार तक पहुँची कि बरात उलटे पाँव लौट रई है, तो उनके तो हाथ-पाँव फूल गये। गाँव के सयाने और बुजुर्ग लोग तुरंत बरात के पाछे भागे और उन्हें रोक के पूछन लगे कि भइया, का बात हो गई जो पाछे जा रये हो?

पहले तो कोऊ कछू बतावे खा तैयार नहीं हतो, पै जब जादा कुरेदी गई, तो बरातियों ने दबी जबान से बताई, "हमें पता चलो है कि बिटिया के पेट है।" गाँव वालों ने अचरज से पूछो, "जा बात तुमा खा कोनो ने बताई?" बरातियों ने उतेई घास छील रहे अवसेरी की ओर इशारा कर दओ।

अब गाँव वालों खा माजरा समझ में आ गओ। वे समझ गये कि जे सब अवसेरी की करामात आय, काहे से ओको नाम तदगरा में नहीं हतो। ज़मींदार ने तुरंत अवसेरी खा बुलवाओ और हाथ जोड़ के माफ़ी माँगी, "भैया अवसेरी, गलती हो गई जो नाम छूट गओ, पै जा गाँव की नाक को सवाल है। गाँव की बिटिया सबरी गाँव की बिटिया होत है। जे रायता तुमेंई फैलाओ है, अब तुमेंई समेटने है। कछू ऐसो करो कि बिगड़ी बात बन जाय।"

अवसेरी को 'न्याय'

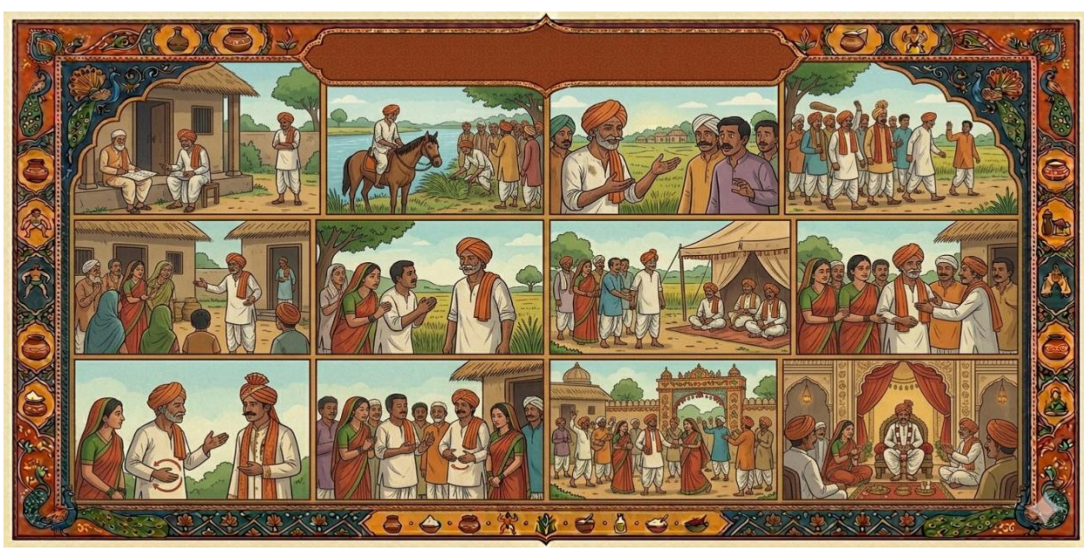
अवसेरी खा तुरंत नहलाओ-धुलाओ गओ, नये कपड़े पहनाये गये और बड़े मान-सम्मान के संगे बरात के पास भेजो गओ। उते पहुँच के अवसेरी बड़े भोले बनके बोलो, "**अरे भैया! काहे बरात लौटाये लिये जा रये हो?**"

बराती तुनक के बोले, "क्यों, तुमेंई ने तो कहो हतो कि बिटिया के पेट है?"

तब अवसेरी खिलखिला के हँसो और बड़ी चतुराई से बोलो, "**अरे मोर भोरे भइया! तनक सोचो तो—का दुनिया में कोऊ ऐसो मनई है जेके पेट न होवे? सबके पेट होत हैं, बिना पेट के कोऊ जनमत है का? फिर ओमें गलत का कह दओ हमने?**"

इतनी बात सुनतई बराती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। उन्हें अपनी गलती को अहसास भओ कि उनने अवसेरी की बात को गलत मतलब निकाल लओ हतो। बरातियों ने ज़मींदार से माफ़ी माँगी और धूमधाम से बरात ज़मींदार की ड्योढ़ी पे चढ़ी।

वा दिन अवसेरी ने अपनी बुद्धि से बिटिया को घर बसवा दओ और अपनी चतुराई को डंका पूरे चित्रकूट में बजा दओ।



सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "बोलत के थरिया बिक जात हैं, और न बोलत के गेंहूँऊ नहीं बिकत।" यानी बात बनाने की कला आनी चाहने!*

शैक्षिक मूल्य

- **अधूरी जानकारी का खतरा:** बिना सोचे-समझे या बिना जांच किए किसी भी बात पर विश्वास करने से समाज में अशांति फैलती है।
- **समावेशिता (Inclusivity):** किसी भी सामाजिक आयोजन में हर नागरिक का सम्मान और समावेश जरूरी है, उपेक्षा प्रतिशोध को जन्म देती है।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज की '**फेक न्यूज़**' **(Fake News),** '**क्लिकबेट**' **(Clickbait Headlines)** और '**मीडिया ट्रायल**' के दौर का सबसे बेहतरीन उदाहरण है।

- **संदर्भ काटकर अफवाह फैलाना:** अवसेरी ने 'लड़की के पेट है' (जो कि एक जैविक सत्य है) कहकर बात का संदर्भ इस तरह बदला कि पूरी बारात में हड़कंप मच गया। आज के समय में भी सोशल मीडिया और कुछ न्यूज़ चैनल किसी व्यक्ति के बयान का एक छोटा सा हिस्सा (Context Cutting) काटकर उसे वायरल कर देते हैं।
- **सामाजिक प्रभाव:** बिना पूरी सच्चाई जाने समाज उस व्यक्ति का चरित्र हनन (Character Assassination) करने लगता है, शादियाँ टूट जाती हैं, और दंगे तक भड़क जाते हैं। यह कहानी आज के इंटरनेट यूज़र्स को सिखाती है कि किसी भी सनसनीखेज खबर पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय उसकी गहराई और सत्यता की जांच (Fact-Check) अवश्य करें।

4.6 खटोली से केदारनाथ: सच्ची आस्था

एक बेर की बात आय, **रसिन** गाँव में चर्चा फैल गई कि सब जने मिलके तीरथ करबे चलें। जब जा बात **अवसेरी** ने सुनी, तो ओके मन मेंऊ हिलोरे उठने लगीं। बिचारो गरीब ब्राह्मण हतो, पै ओको भगवान पे अटूट भरोसा हतो। सो, वोऊ गाँव वालों के संगे तीरथ यात्रा पे निकर पड़ो।

खटोली की यात्रा

अभी यात्रा शुरूई भई हती और सब जने **रौली** गाँव पहुँचे हते कि अवसेरी की तबियत अचानक बिगड़ गई। गाँव के लोग बोले, "अरे अवसेरी भाई, अभी तो हम गाँव से तनकऊ दूर आये हैं और मंज़िल बहुत दूर है। तुमारी देह साथ नहीं दे रई, सो तुम उलटे पाँव गाँव लौट जाओ। जब नीके हो जइयो, तब कभूँ देख लीहे।"

पै अवसेरी तो धुन को पक्को हतो। वो बोलो, "**मैं तीरथ के लाने निकरो हूँ, अब पाछे पाँव नहीं धरहूँ, चाहे मोर प्रानई काहे न निकर जांय। तुम सब मोखा खटोली (पालकी) में धके लिवा चलो, तुमा खा भारी पुन (पुण्य) हुई। और जे तुम मोखा छोड़ दइहो, तो भगवान तुमा पे भारी खिसिहैं।**"

गाँव वालों ने आपस में राय करी और फिर बारी-बारी से कंधा बदल-बदल के अवसेरी खा खटोली पे बिठाके **केदारनाथ** तक ले गये।

दर्शन की तड़प

केदारनाथ पहुँच के सबने विधि-विधान से पूजा करी और भगवान के दर्शन पाये। पै अचंभे की बात जा भई कि सब खा तो दर्शन भये, पै अवसेरी खा कछू नहीं दीखो। वो बिचारो मंदिर की चौखट पे बैठके दहाड़ें मार-मार के रोवे लगो।

सब गाँव वाले दर्शन करके चले गये, पै अवसेरी उतेई डटो रओ। वो दिन-रात विनती करे— "हे प्रभु! मैं इतनी दूर से कष्ट सहके तुमारी सरन आयो हूँ, मोखा दर्शन काहे नहीं दे रये?"

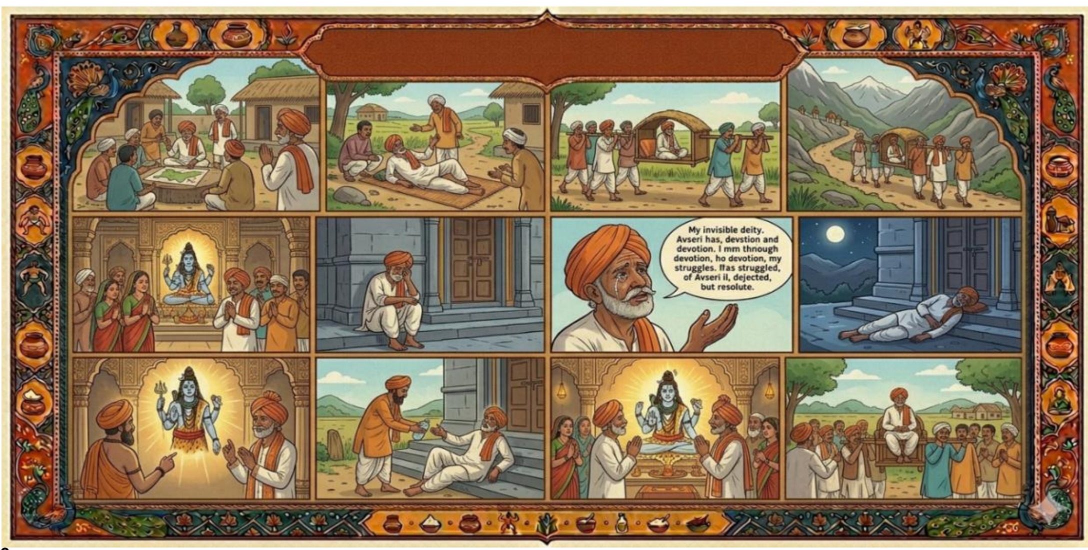
पंद्रह-बीस दिन बीत गये। अवसेरी भूखा-प्यासा चौखट पे डटो रओ। एक दिन वो रोत-रोत भगवान से उलाहना देके बोलो— "**हे महाराज! जो दुनिया भर के ऊँचे-नीचे काम करत हैं, तुम उन खा तो तुरतै दर्शन दे देत हो। मोसे का ऐसी खता हो गई? का मैंने एक नीच जाति की कन्या से व्याह कर लओ, जेके लाने तुम मोसे रुष्ट हो? तुमारी नज़र में तो सब एक बराबर हैं। जब तक मोखा साक्षात दर्शन नहीं मिलिहैं, मैं इते से एक अंगुर नहीं खिसकहूँ। या तो दर्शन दओ, नहीं तो ई चौखट पे मोर प्रान निकर जैहें।**"

इतना कहत-कहत अवसेरी उतेई अचेत (बेहोश) होके गिर पड़ो।

ओई रात मंदिर के पुजारी खा सुपना (स्वप्न) आयो। साक्षात भगवान बोले— "**पुजारी! वो जो गरीब भक्त बाहरे चौखट पे परो है, ओखा आदर से भीतर ले आओ। वो मोर सच्चा भक्त आय, बिना दर्शन के वो इते से नहीं जैहे।**"

पुजारी की आँख खुली, मंदिर के पट बंद हते। उसने बाहरे जाके देखो तो अवसेरी बेहोश परो हतो। पुजारी ने ओके मुँह पे ठंडे पानी के छींटे मारे। जब अवसेरी खा होश आयो, तो पुजारी बोलो, "भैया, तुम बड़े भागसाली हो। साक्षात महादेव ने तुमारी पुकार सुन लई है। चलो, दर्शन के लाने तैयार हो जाओ।"

अवसेरी खा बढ़िया नहलाओ-धुलाओ गओ, नये कपड़े पहनाये गये और बंद मंदिर के भीतर ले जाके भगवान के **साक्षात साफ़ दर्शन** कराये गये। दर्शन पाके अवसेरी निहाल हो गओ। ओकी देह की सब पीर-पीड़ा (दर्द) और थकान छूमंतर



हो गई।

गाँव वापसी

गाँव वालेऊ जा देखके भारी राजी भये कि उनकी खटोली ढोवे की मेहनत सफल हो गई। कछू दिन बाद अवसेरी खा फिर से खटोली पे बिठाके ससम्मान रसिन गाँव वापस ल्याओ गओ। गाँव पहुँच के जब अवसेरी ने अपनी आपबीती सुनाई, तो सबरे गाँव के लोग ओके पाँव छुवे लगे।

सब बोले— "**धन्य हो अवसेरी भाई! तुमने तो रसिन गाँव को नाम ऊँचो कर दओ। सांची श्रद्धा और धीरज होवे, तो भगवान खा पसीजनेई पड़त है।**"

सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "जेके मन में खोट नहीं, ओखा भगवानऊ दूर नहीं।"*

शैक्षिक मूल्य

- **दृढ़ संकल्प (Determination):** विपरीत परिस्थितियों और शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद अपने लक्ष्य से पीछे नहीं हटना चाहिए।
- **समतावादी दृष्टिकोण:** ईश्वर की दृष्टि में जाति, वर्ग या सामाजिक स्तर का कोई महत्व नहीं है; केवल आंतरिक पवित्रता मायने रखती है।

वर्तमान प्रासंगिकता

आज की आधुनिक जीवनशैली में यह कहानी '**मानसिक दृढ़ता**' **(Mental Toughness)** और '**स्ट्रेस मैनेजमेंट**' के लिए एक गाइडिंग लाइट (मार्गदर्शक) है।

- **जल्दी हार मानने वाली पीढ़ी:** आज के प्रतिस्पर्धी (Competitive) युग में युवा बहुत जल्दी धैर्य खो देते हैं। नौकरी न मिलना, स्टार्टअप का फेल होना या परीक्षाओं में असफल होने पर लोग डिप्रेशन में आ जाते हैं।
- **दृढ़ता का संदेश:** अवसेरी का शरीर बीमार था, मार्ग दुर्गम था, और केदारनाथ पहुँचने के बाद भी उसे दर्शन नहीं मिले; लेकिन उसका संकल्प अडिग था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कहानी सिखाती है कि यदि आपके पास अपने लक्ष्य के प्रति 'अडिग विश्वास' और 'धैर्य' है, तो अंततः कठिन से कठिन परिस्थितियाँ (और यहाँ तक कि पूरी कायनात) आपके सामने झुकने पर मजबूर हो जाएगी।

4.7 न हींग लगी न फिटकरी

एक बेर की बात आय, एक **औछवाला** गाँव में **पीढ़िया** नाम के एक पंडित जी (ब्राह्मण) रहत हते। उनके पास एक बढ़िया हट्टो-कट्टो **पड़वा** (भैंस को बच्चा) हतो। अवसेरी की नज़र वा पड़वा पे पड़ गई, सो वो पंडित जी के पास पहुँचो और बोलो—

"दादू! हमारे पास गाय-बछिया कछू नइयाँ। जो तुमारो पड़वा है, सो मोखा दे-दओ। मैं ओखा नीक जघा रखहूँ, ओकी सेवा करहूँ और जब वो बिकबे लायक हो जै, तब ओखा बेच के जोऊ कछू मुनाफा हुई है, ओमें आधो-आधो बाँट लेहूँ।"

पीढ़िया दादू सीधे मनई हते, सो वे अवसेरी की बातन में आ गये और पड़वा ओखा सौंप दओ। अवसेरी ने का करो कि



पड़वा लेतई खने, ओई दिन साँझ के ओखा **बीस आना** में ठिकाने लगा दओ (बेच दओ)।

पंद्रह-बीस दिन निकल गये। पीढ़िया दादू के मन में आई कि चलें देख के आयें कि पड़वा कतनो बढ़ गओ। वे अवसेरी के द्वारे पहुँचे और पूछे—

"अरे अवसेरी दादू! पड़वा मजे में है? कछू हट्टो-कट्टो भओ कि नइयाँ?"

अवसेरी मुँह बिचका के बोलो— "अरे का हट्टो-कट्टो हुई! ओखा तो कसाई (मुसलमान) ले गये, सो उनने ओखा खा-पी के हगऊ डारो! ससुरे, अब तुम अपनी रकम ले लो।"

पीढ़िया दादू हक्का-बक्का रह गये, बोले— "अरे! केतने में बेच दओ?"

अवसेरी बड़ी शांति से बोलो— "बीस आना में बेच दओ। हमनें सोची कि का भरोसा कब मर-खप जाय, सो ओई दिन साँझ खा ठिकाने लगा दओ।"

इतनी बात कह के अवसेरी ने अपनी जेब से **दस आना** निकाले और पीढ़िया दादू के हाथ पे धर दये।

पीढ़िया दादू चिल्लाने लगे— "अरे यार! जे का अनर्थ है? एकई रात में आधो रुपया कम कर दओ?"

तब अवसेरी हँस के बड़ी चतुराई से बोलो— **"अरे दादा! अपनी बात का भई हती? जे तय भओ हतो कि जोऊ मोल हुई है, ओमें बटाई हुई (आधो-आधो)। सो बीस आना में से दस तुम्हारे और दस हमारे। हिसाब बिलकुल साफ़ है!"**

बिचारे पीढ़िया दादू मुँह देखते रह गये और अवसेरी ने बिना एक कौड़ी लगाये, दूसरे को पड़वा बेच के दस आना अपनी जेब में धर लये।

सच कई गई है— **"न हींग लगी न फिटकरी, और रंग चोखोई-चोखो।"** अवसेरी के ठाठ ई तान हते!

शैक्षिक मूल्य

- **अनुबंधों की स्पष्टता:** किसी के साथ भी मौखिक या लिखित समझौता करते समय शर्तों का स्पष्ट होना बहुत जरूरी है।
- **अति-सरलता से बचाव:** समाज में किसी पर भी आंख मूंदकर भरोसा नहीं करना चाहिए, व्यावहारिक दुनिया में चतुर लोग सीधेपन का फायदा उठाते हैं।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के **कॉर्पोरेट जगत के भ्रामक विज्ञापनों, बैंकों के लोन सिस्टम और इंश्योरेंस कंपनियों की नीतियों** पर बिल्कुल सटीक बैठती है।

- **नियम और शर्तों का जाल (Terms & Conditions):** आज जब हम कोई ऐप डाउनलोड करते हैं या बैंक से लोन लेते हैं, तो अंत में एक लंबा 'Terms and Conditions' का पेज होता है, जिसे हम बिना पढ़े 'Accept' कर देते हैं। कंपनियाँ बारीक अक्षरों में ऐसे लूपहोल्स (कमजोरियाँ) छुपाकर रखती हैं, जिससे ग्राहक को नुकसान होने पर भी कंपनी का मुनाफा सुरक्षित रहता है (जैसा अवसेरी ने 'बटाई' के अनुबंध का फायदा उठाया)। यह कहानी आज के नागरिकों को वित्तीय और कानूनी मामलों में '**अति-सरलता' छोड़कर 'जागरूक और सतर्क' बनने का संदेश** देती है।

4.8 अवसेरी का 'कुआँ संदेश'

एक बेर की बात आय, अवसेरी कछू दूसरे गाँव से एक बैल मोल (खरीद) के ल्याओ। बैल देखबे में बहुतई सुघर और हट्टो-कट्टो हतो। अवसेरी ओखा लइके जैसेई अपने गाँव की डगर पे बढ़ो, जोऊ देखत उहैं पूछन लगत—

"**अरे भैया अवसेरी! बड़ी नीक जोड़ी को बैल है, केतने को ल्याये?**"

अवसेरी हँस के बोलत— "**भैया, एक सौ दस को ल्याये हैं।**"

तनक आगे बढ़ो तो दूसरो मनई मिल गओ, वोऊ पूछन लगो— "अरे दद्दा, बैल तो भारी सुंदर है, केतने को दओ?" अवसेरी फिर बोलो— "**भैया, एक सौ दस को ल्याये हैं।**"

अब भओ जा कि रस्ता भर जेइ चकर चलत रओ। गाँव पहुँचत-पहुँचत दस-पंद्रह जने वही सवाल पूछ चुके हते और



अवसेरी ऊब गओ हतो।

कुआँ में छलांग

अगले दिन अवसेरी खौरिया (गाँव का एक हिस्सा) गओ। उते हनुमान जी के मंदिर के लगे एक पुरानो कुआँ हतो। अवसेरी ने का करो कि अचानक कुआँ में छलांग लगा दई! जैसेई खबर फैली कि अवसेरी कुआँ में कूद गओ है, पूरे गाँव में हड़कंप मच गओ।

लोग दौड़त-भागत कुआँ के पास पहुँचे और रोवे-पीटने लगे— "**अरे मोर बाप! अवसेरी भैया तो बड़ो नेक मनई हतो, ई खा का हो गओ!**"

कुआँ में एक पुरानी जंजीर लटक रही हती, अवसेरी ओई जंजीर खा पकड़ के बीचई में लटक गओ हतो। लोग ऊपर से चिल्लाये— "**अरे अवसेरी! जिंदा हो कि मर गये? काहे कूद गये भैया?**"

कुआँ के भीतर से गुंजायमान आवाज आई— "**हाँ भैया! हमाओ मरो निहाय, हम तो जिंदा हैं!**"

असली संदेश

गाँव वाले अचंभे में पड़ गये, बोले— "तो फिर भीतर का कर रये हो? बाहर आओ!"

तब अवसेरी ने कुआँ के भीतर से चिल्ला के कहो— "**सब जने कान खोल के सुन लो! हम बैल 'एक सौ दस' को ल्याये हैं! रोज-रोज सब अलग-अलग पूछत फिरत हते, तो हमने सोची कि आज कुआँ में कूद के गाँव भर खा एकई बार में बता दें, ताकि फिर कोऊ न पूछे!**"

इतनी बात सुनतई, ऊपर खड़े सबरे गाँव वाले हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। सब समझ गये कि अवसेरी ने बैल की कीमत बतावे को जे अनोखो और मज़ेदार तरीको निकालो हतो।

यौ हतो हमार अवसेरी को '**कुआँ संदेश**'।

सीख: *बात एकई हती, पै बतावे को अंदाज़ अवसेरी जैसो हतो!*

शैक्षिक मूल्य

- **समय और ऊर्जा का प्रबंधन:** अपनी ऊर्जा को व्यर्थ के सवालों का उत्तर देने में नष्ट करने के बजाय कोई प्रभावी तरीका खोजना चाहिए।
- **हास्य द्वारा संदेश:** गंभीर या झुंझलाहट भरी बात को भी हास्य के पुट के साथ सार्वजनिक संदेश में बदला जा सकता है।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के डिजिटल युग में **समय प्रबंधन (Time Management)** और **मास कम्युनिकेशन (Mass Communication)** की तकनीक को दर्शाती है।

- **अनावश्यक जिज्ञासा और समय की बर्बादी:** आज के दौर में यदि कोई सेलिब्रिटी, नेता या प्रभावित व्यक्ति (Influencer) कोई नया काम शुरू करता है या कोई गाड़ी खरीदता है, तो सोशल मीडिया पर लाखों लोग उससे एक ही जैसे सवाल बार-बार पूछते हैं। इससे उस व्यक्ति की दिनचर्या और उत्पादकता (Productivity) बाधित होती है।
- **आधुनिक समाधान:** जैसे अवसेरी ने एक बार में सबको जवाब देने के लिए कुएँ का सहारा लिया, वैसे ही आज की आधुनिक कंपनियाँ अपनी वेबसाइट्स पर **'FAQ' (Frequently Asked Questions)** का सेक्शन बनाती हैं या सोशल मीडिया पर एक 'Clarification Video' या प्रेस रिलीज जारी कर देती हैं, ताकि एक ही समय में बड़े जनसमूह को संदेश मिल सके और समय की बर्बादी रुके।

4.9 चुप्पा से दुहबो, ठाठ से खाबो

रसिन गाँव में **शुक्ला जी** को बहुत बड़ो घर हतो। उनके दुआरे पे दो-चार नीकी गाय-भैंसें बँधी रहत हती। **अवसेरी** का करत हतो कि जबई ओखा मौका मिलत, वो चुप्पा से शुक्ला जी के खोर में घुस जात और गैया-भैंसिया दुह के ले आत।

अब बात जा हती कि अवसेरी के पास तो कौनों गोरु-बछेरू (पशु) हते नईं, सो वो ई जुगाड़ में रहत हतो। जबई ओको मन दूध पिये को होत, घर से बाल्टी या लोटिया उठात और काऊ की भी गैया दुह के अपनी प्यास बुझा लेत।

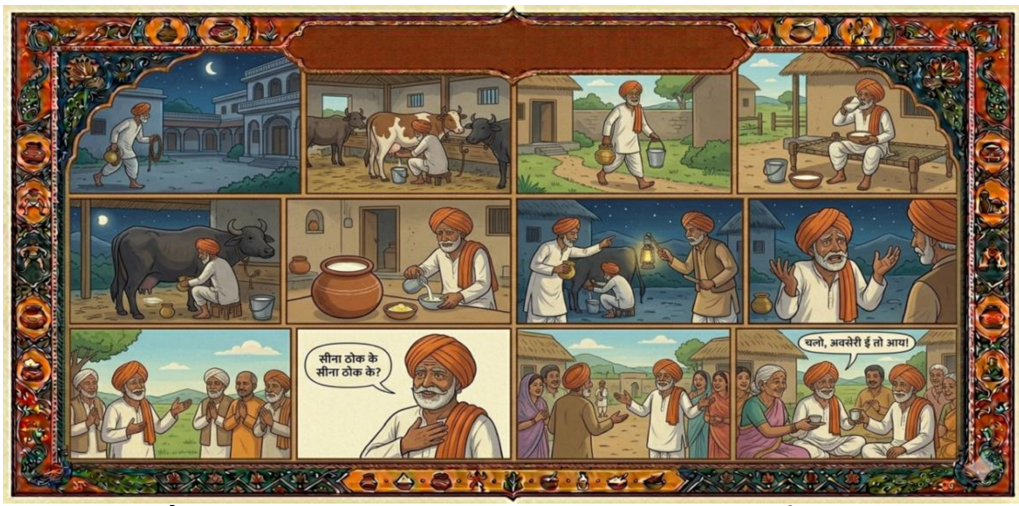
एक दिन काऊ ने देख लओ और टोको, "अरे अवसेरी भाई! जे का कर रये हो? बिना पूछे दूध दुह रये!"

तब अवसेरी लजाने के जघा उलटे ओई पे चढ़ बैठो और बोलो, "**अरे! तुखा लाज-सरम नईं आउत जो ऐसो कह रये? का मैं**

भूखो-पियासो सूख के हड्डी हो जाऊँ और मर जाऊँ? तुखा दया नईं आउत? अरे, तुम पंचन खा तो चाहने हतो कि मोखा सेर-सेर भर दूध अपने मन से दे दइयो, पै तुम सब तो दूध-घी उड़ा रये और मैं सूखी रोटी खाऊँ? ऐसो नईं हो सकत!"

वो सीना ठोक के कहत हतो, "**अगर तुम गाँव में गाय-भैंस रखिहो, तो अवसेरी भी दूध-घी खइहै। हमाओ हक़ है!"**

ऐसे हते हमाये अवसेरी दद्दा! वे जबरई लोगन के घरे दूध-घी खात-पीत हते, पै उनके सुभाव के मारे कोऊ बुरा नईं मानत हतो। सब हँस के टाल देत हते कि "चलो, अवसेरी ई तो आय!"



सीख: *बुन्देली में कहत हैं— "लाज ओखा जेके हाथ में खुरपा," अवसेरी के पास तो चतुरई की लाठी हती!*

शैक्षिक मूल्य

- **निर्भीकता और हाजिरजवाबी:** अपनी कमियों या अभावों को छुपाने के बजाय उन्हें समाज के सामने बेबाकी से रखना।
- **सहअस्तित्व की भावना:** समाज के संपन्न वर्ग को अपने संसाधनों में अभावग्रस्तों को भी (चाहे अनचाहे) भागीदार बनने देना चाहिए।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आधुनिक युग के **समाजवाद (Socialism), कम्युनिटी शेयरिंग (Community Sharing)** और **पूंजीवाद (Capitalism) के बीच के संतुलन** को रेखांकित करती है।

- **संसाधनों का असमान वितरण:** आज दुनिया के अमीर लोग और अमीर होते जा रहे हैं, जबकि गरीब बुनियादी चीज़ों के लिए तरस रहे हैं। अवसेरी का शुक्ल जी की गाय का दूध चुपचाप दुहना और यह तर्क देना कि "यदि गाँव में पशु रखोगे, तो अवसेरी भी दूध चखेगा," आज के दौर के '**रॉबिन हुड' माइंडसेट** को दिखाता है।
- **व्यावहारिक संदेश:** वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कहानी अमीर या संपन्न वर्ग को यह संदेश देती है कि यदि वे अपने संसाधनों (जैसे कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी - CSR या दान) के माध्यम से समाज के वंचित वर्ग की मदद नहीं करेंगे, तो समाज में असंतोष बढ़ेगा और लोग अपने हक के लिए नियमों को तोड़ने पर मजबूर हो जाएंगे।

4.10 दूल्हा राजा का निराला स्नान

एक बेर की बात आय, पुरानो जमानो हतो। रसिन गाँव में अवसेरी नाम को एक ब्राह्मण रहत हतो। जब ओको ब्याह पक्को भओ और रस्में शुरू भईं, तो गाँव-घर में भारी हँसी-ठट्ठा और मखौल होन लगो।

जेको ब्याह होत है, गाँव की रीत के हिसाब से लोग-बाग ओखा खूब तंग करत हैं। कोऊ अवसेरी की चुटिया (चोंटिया) पकड़ के हिला देत, तो कोऊ ओकी दाढ़ी खोंच लेत। ओई बखत उते खड़ी दुई मेहरिया (लुगाइयाँ) ओखा देख के हँसन लगीं और मजे लेत बोलीं— "**अरे ओ बाबा! तनक सम्हाल के राखा, नहीं तो जे लोग तुम्हारी चोंटिया और दाढ़ी उखेड़ के हाथ में धर दइहैं!**"

अवसेरी कउनो कम हतो का? वो तुरंत हँस के बोलो— "**अरे तुम हमारी फिकर न करो, मोरी चोंटिया खा कछू नहीं होन वालो, तुम तो अपनी चुटिया सम्हाल के राखा!**" जा बात सुन के सब जने ठहाका मार के हँस पड़े। एक मनई बोलो, "भइया! तुम्हारे हियाँ तो गजब को मजाक होत है!"

तालाब पे 'निरालो' कारनामा

उन दिना गाँव में आज के तान नल-टोंटी तो हते नहीं, सब कोई नहवे-धोवे खा तालाब या नदी पे जात हते। ब्याह के दिन



अवसेरी भी गाँव के तालाब पे नहवे गओ। उसने अपने हाथ के कड़ा-वड़ा उतारे, किनारे धरे और सीधा पानी में कूद गओ।

उते घाट पे पानी भर रईं मेहरिया फिर अवसेरी से ठिठोली करन लगीं— "**अरे दूल्हा राजा! अपनी चुटिया सम्हाले रहियो, कहीं पानी में बह न जाय या उखड़ न जाय।**"

अब अवसेरी जिद पे आ गओ। उसने सोची कि आज तो इनखा ऐसो जवाब देहूँ कि जे बोलबे लायक न बचें। उसने उतेई आव देखा न ताव, अपने सब कपड़े उतार दये और एकदम निर्वस्त्र (नंग-धड़ंग) हो गओ। मेहरियान की ओर देख के ललकार के बोलो— "**लो देख लो! देख लो जड़ें कितनी मजबूत हैं! अब बताओ कैसे उखड़ जैहै चोंटिया?**"

अवसेरी को जे निरालो रूप और ओकी ढिठाई देख के मेहरिया शर्म के मारे लाल हो गईं और मुँह छिपा के उते से सरपट भाग खड़ी भईं।

थोरी ई देर में पूरे गाँव में जा बात फैल गई कि अवसेरी ने तो हदई कर दई! लोग कहन लगे— "**भइया! मान गये, अवसेरी तो बड़ो निरालो और अल्हड़ मनई निकरो!**"

बुन्देली कहावत: *"हँसबे में डंडा बाज गो!"* (हँसी-मजाक में बात बढ़ गई, पै अवसेरी ने अपनेई अंदाज़ में सबको मुँह बंद कर दओ।)

शैक्षिक मूल्य

- **ढोंग और दिखावे का विरोध:** सत्य को उसकी नग्न और वास्तविक अवस्था में स्वीकार करने का साहस होना चाहिए।
- **अति-उत्पीड़न का प्रतिकार:** यदि कोई आपको लगातार नीचा दिखाने का प्रयास करे, तो कभी-कभी लीक से हटकर अप्रत्याशित कदम उठाना ही उसका सही उत्तर होता है।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के वैश्विक मुद्दे **'बॉडी शेमिंग' (Body Shaming - किसी के मोटापे, दुबलेपन, रंग या शारीरिक बनावट का मज़ाक उड़ाना)** के खिलाफ एक बुलंद आवाज़ है।

- **मानसिक प्रताड़ना का शिकार:** आज स्कूल, कॉलेज या ऑफिसों में किसी के गंजेपन, चश्मे या लुक को लेकर लगातार फब्तियां कसी जाती हैं, जिससे लोग हीन भावना (Inferiority Complex) के शिकार हो जाते हैं।
- **आधुनिक 'बॉडी पॉजिटिविटी':** अवसेरी ने बार-बार अपनी चुटिया का मज़ाक उड़ाए जाने पर अपने सारे कपड़े त्याग दिए और अपनी 'जड़ों' (वास्तविकता) को गर्व से स्वीकार किया। यह प्रसंग आज के युवाओं को सिखाता है कि दिखावे के मुखौटों को उतारकर अपनी वास्तविकता को इतनी निर्भीकता और आत्मविश्वास के साथ स्वीकार करो कि मज़ाक उड़ाने वाले लोग (ट्रोलर्स) खुद लज्जित होकर भाग जाएं।

4.11 सूखी रोटी और सक्कर को सुवाद

ई उज्जर ज़माने की बात आय जब इतिहासी गाम रसिन, बाँदा जिला की नरैनी तहसील के भीतर आवत तो। ऊ दिना आवै-जावै के आधुनक साधन तौ हते नईं, ऐसें दूर-दराज की गौनें (यात्राएँ) जाँकर पइदर ई तय करने परत थीं। एक बेर अवसेरी खाँ नरैनी तहसील की कचहरी में कौनों जरूरी काम लग गओ। रसिन से नरैनी की दूरी कोई पाँच-छह कोस (लगभग १५-१८ किलोमीटर) हती। अवसेरी ने मनई मन बिचार करो कि जे कूँ ओईं भिनसारै (तड़के) निकर लैं, तौ कचहरी खुलत-खुलत टेम पे पहुँच जैहैं। ईं सोंच के ऊ भौतई सँबरे, जब चारों मूँधो-अँधियारो हतो, अपने घर से निकर पड़े।

भोर की वेला और सामाजिक यथार्थ (भिनसारो और गाम की रीत)

ऊ बखत गाम-गंवार में घरन के भीतर लैट्रीन-शौचालय की व्यवस्था तौ होत नईं हती। ईसें गाम की मेहरिया (महिलाएँ) लोक-लाज और संकोच के मारे सूरज निकरबे से पैलें, भिनसारै के अँधेरे ई में सौँच-पानी (नित्य-कर्म) के लाने खेतन डैं या सड़क के किनारों डैं जाती थीं। मर्यादा को नियम जो हतो कि जे कूँ गैल (रास्ते) से कौनों मरद निकरत दीखे, तौ मेहरिया लाज के मारे तुरत ओट में होबै की कोसिस करती थीं या ठाड़ी हो जाती थीं।

अवसेरी अपनी ई धुन और मस्ती में पगडंडी पे आगू बढ़ो जा रओ तो। गैल के दोनों कूँ कछू मेहरिया बैठी थीं, जो दूर से कौनों मरद की आहट पा के लोक-लाज के मारे झटपट ठाड़ी होबै लगीं। अवसेरी सुभाव से चंचल और बड़े मसखरे (विनोदप्रिय) हते। ई स्तिथि खाँ देख के ऊ जानबूझ के ज़ोर से बड़बड़ान लगो:

"कैसी फूटी करम है रे! इत्ती कड़कड़ाती सुबेरे में इत्ती दूर पइदर चल रए, पै गैल ऐसी सूनी और रूखी डरी है कि सँबरे-सँबरे कौनों सुभ चीज़ या नीके (सुंदर) मोहरा के दरसन तक नईं भये!"

तुरत-जवाब की हद

रास्ता के कूँ बैठी मेहरियन में से एक बड़ी निडर और हाजिरजवाब हती। अवसेरी की जे तानेबाज़ी (व्यंग्य) ओईं के कानन में पड़ी, तौ ऊने भी आव देखो न ताव और अवसेरी खाँ ओईं की औकात (मर्यादा) चेताने के लाने पलट के तीखे सुर में कही:

"अरे गैल चलते बटोही (राहगीर)! जे कूँ गैल में तुम्हें कौनों को दीदार (दरसन) हो भी गओ, तौ का ओईं से तुमाई भूख बुझ जैहै? का नीको मोहरा देख लेबे भर से तुम्हें सोंधी-सोंधी रोटियाँ मिल जैहें? ईं-ऊँ की फालतू बातन करने के बजाय अपनी गैलें-गैल सीधे काए नईं चले जाँव?"

अवसेरी तौ अपनी प्रत्युत्पन्नमति (तुरत सटीक जवाब देबे की कला) के लाने पूरे इलाका में परसिद्ध हते। ऊने तनिकऊ टेम खराब नईं करो, और बड़ेई सुंत (शांत) पै चतराई भरे नाटकीय अंदाज में उत्तर दओ:

"देवी जू! तुम तौ उलटोई समझ बैठीं। मरो मतलब सिरिफ रूखी रोटियन से नईं तो। मैं तौ जे कह रओ तो कि जे कूँ सुबेरे-सुबेरे दरसन के संगै-संगै तुमाई मीठी बानी की मिठास (सक्कर) भी मिल जाए, तौ ई कड़े और लंबे रास्ता को अनंद दुगनो हो जाए। सूखी रोटी के संगै जे कूँ सक्कर को सुवाद मिल जाए, तौ दिन बन जात है!"

नचोड़

अवसेरी को जो बिन-सूँचो, चतराई से भरो और दो-अर्थी (द्विअर्थी) जवाब सुन के ऊ मेहरिया बिल्कुल निरुत्तर हो गई (मुँह ताकती रह गई)। ओईं खाँ समझ में आ गई कि बातन की लड़ाई में ई अनोखे मानुस खाँ हराइबो असम्भव है। ऊ बौतई लजा के तुरत उहाँ से ओट में (छिप) हो गई और आगू खाँ कभूँ कौनों अनपछान बटोही से ऐसें बहस करने की हिम्मत नईं करी।



जो प्रसंग ई बात को जीतो-जागतो प्रमान है कि अवसेरी सिरिफ सीधे सुभाव केई नईं हते, बल्कि उलटी और लाज-संकोच की बिरथा में भी अपनी चतुर गोठ (शब्दावली) से सामने वाले को घमंड पल भर में चूर-चूर करने की गजब की ताकत राखत हते।

शैक्षिक मूल्य

- **शब्दावली का कौशल (Communication Skills):** शब्दों के सही चयन से किसी भी तीखी या विवादित स्थिति को पल भर में शांत और मधुर बनाया जा सकता है।

- **स्त्री-पुरुष संवाद में शालीनता:** किसी भी वाद-विवाद में अभद्र होने के बजाय बौद्धिक रूप से सामने वाले को निरुत्तर करना श्रेष्ठ कला है।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के **कंज्यूमर मार्केट (Consumer Market), मिलावटखोरी (Adulteration)** और **भ्रामक पैकेजिंग** की कड़वी सच्चाई को उजागर करती है।

- **ऊपर घी, नीचे मिट्टी:** आज बाज़ार में मिलने वाले कई खाद्य पदार्थ, सौंदर्य उत्पाद (Beauty Products) या गैजेट्स विज्ञापन और पैकेजिंग में बहुत शानदार (ऊपर जमे घी की तरह) दिखाई देते हैं, लेकिन जब उपभोक्ता उनका इस्तेमाल करता है, तो वे अंदर से बेकार (मिट्टी के समान) निकलते हैं।
- **लालच का अंत:** गणिका ने अवसेरी के सीधेपन का फायदा उठाकर उससे महँगा घी वसूलना चाहा था, लेकिन वह खुद ठगी गई। यह कहानी आज के उपभोक्ता को '**जागो ग्राहक जागो**' का संदेश देती है कि केवल बाहरी चमक, ब्रांड या सुगंध पर भरोसा न करें, बल्कि उत्पाद की असल गुणवत्ता की जांच ज़रूर करें।

4.12 ऊपर घी, नीचे माटी: तेजनिया खाँ चाटी

ई उई बखत की बात आय जब गाम-गंवार के जीवन में मियां-बीबी की लड़ाई और हंसी-मजाक के गजबे रंग देखन को मिलत थे। एक बेर कोऊ घरै की बात पे अवसेरी को अपनी लुगाई से भयंकर झगड़ा हो गओ। गुस्सा और खिसियाहट में आके उनकी औरत अपने मायके चली गई। लुगाई के चले जान से दुखी और अकेलेपन से अकुलाए अवसेरी ने मन बहलावे काजें उई समै की सामाजिक व्यवस्था के हिसाब से क्षेत्र की एक नामी गनिका (नर्तकी) के डेरा की तरफ डगर पकड़ लई। उई जुग में सहजाजपुर के आस-पास के पुरवन (मज रन) में कलावंत और गनिकाएं रहत थीं, जिते आस-पास के गामन के रसिक मानुस अपना मनोरंजन करन जात थे।

गनिका की मांग और अवसेरी की जुगत

जब अवसेरी उई गनिका (जाको नाम तेजनिया तो) के पास पहुँचे, तो उन्हेंने अपनी हैसियत के हिसाब से कछू टका-पैसा ओई के आगू रख दए। चूंकि उई दौर में रुपिया-पैसा की कीमत बहुत हती, सो अवसेरी को लगो कि इतनो बहुत है। पै तेजनिया उन थोड़े से सिक्कन से राजी नई भई। उसने अवसेरी को गामी भेष देखके ताना मारो:

"अरे भले मानस! इन दुई-चार सिक्कन से कछू नई होन वालो। तुम तौ देहाती हो, तुम्हारे पास गाय-भैंस जैसे पसुन की का कमी? घर में खूब दूध-घी होत हुईये!"

अवसेरी ने तुरंते हां में हां मिलाई और बोले, "हौ, दूध-घी की कौनों कमी नईं है।"

तेजनिया ने अपनी सरत रख दई, "ठीक है, फिर जे तुम मोरे काजें एक मटकिया भरके सुध देसी घी ले आओ, तो महफ़िल को आनंद लओ जाए।"

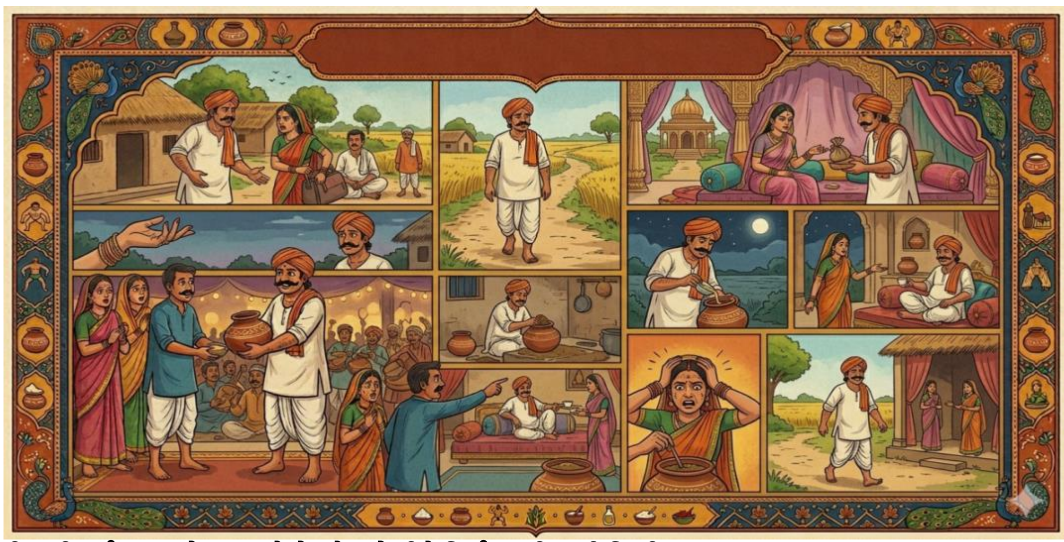
इतनो सुनतई अवसेरी तुरत घी को जुगाड़ करन अपने गाम की ओर दौरे। वे सुभाव से बड़े चतुर और तेज बुद्धि के सयान थे। उन्हेंने घर आके एक बढ़िया मटकिया लई। मटकिया के नीचे और बीच के हिस्सा में ठोस और साफ मटकी की माटी भर दई और उई के ठीक ऊपर पाव भर भैंस को सुध घी उढ़ेल दओ। मटकिया ऊपर से पूरी चकाचक और सुध घी से भरी दिखन लगी। जाड़े के दिन होने के कारन वो घी मटकिया के मूंड़ पे अछी तरह से जम गओ। चूंकि वो घर के चूल्हा पे तपाओ भओ सुध घी तो, सो उकी महक चारों तरफ फैल गई।

महक को जादू और भेद खुलबौ

अवसेरी वो मटकिया लेके फिर से तेजनिया के पास पहुँचे और गरब से बोले, "जे देखो, तुम्हारी इच्छा के हिसाब से साक्षात अमृत जैसो सुध घी ले आयो हूँ। उकी सुगंदई उकी सुधता को प्रमान है।"

तेजनिया मटकिया देखके और उकी महक सूंघके बड़ी राजी भई। उने कही, "वाह! घी तो सचमुच उत्तम दीखत है। तुम ऐसो करो, इसे भीतर ले जाके मोरी बैन (द्विजनिया) को दे आओ।"

अवसेरी ने मटकिया भीतर रख दई और तेजनिया के संग महफ़िल को आनंद लेवन लगे। इते भीतर बैठी द्विजनिया से घी की सोंधी महक के कारन रहौ न गओ। उने उताउली होयके मटकिया को ढक्कन खोलो और घी चाखन लगी। जैसेई उने



ऊपर की जमी भई परत को कछू खोंदो, तो उसे नीचे सिर्फ सूखी माटी दिखी।

धोखा समझतई वो भीतर से चीख उठी, "अरी तेजनिया! बेगी आओ और सब कछू समेटो! अपने संग बड़ों छल हो गओ। ई मटकिया में तो सिर्फ माटी भरी है! ऊपर-ऊपर दिखावे काजें घी की एक पतली परत लगाई गई हती!"

उकी बात सुनके तेजनिया हक्की-बक्की रह गई और सिर पकड़के रोउत भई बोली, "हाय दैया! अब सब कछू समेटे से का फायदा? जो खेल होन तो, वो तो हो गओ। महफ़िल पूरी हो गई और हमारो मेहमान तो अपनी चतुरई दिखाके चलो गओ!"

तब तक अवसेरी अपनी तेज बुद्धि के बल पे अपनो काम निकालके उहां से मुसकुरात भए निकस चुके थे और चतुर कहावे वाली गनिकाएं हाथ मलत रह गईं।

उपसंहार

जे किस्सो जे साबित करत है कि अवसेरी को अपनी चतुर जुगतन से कोऊ को भी भरम में डारबे में महारत हासिल हती। उन्हेंने बिना कोऊ खरचा-पानी के अपनी इच्छा भी पूरी कर लई और अपनी हाजिरजवाबी से सामने वाले के लालच को करारों जबाब भी दे दओ।

शैक्षिक मूल्य

- **दिखावे की संस्कृति से सावधान:** जो चीज़ ऊपर से जितनी चकाचक और सुगंधित दिखाई देती है, जरूरी नहीं कि वह अंदर से भी उतनी ही मूल्यवान हो।

- **शोषण का प्रतिकार:** यदि कोई आपकी परिस्थिति या सीधेपन का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करे, तो उसे उसकी की भाषा में सबक सिखाना चाहिए।

वर्तमान प्रासंगिकता

यह कहानी आज के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स (जैसे X/Twitter, Facebook, Instagram) पर होने वाली **बहस और वैचारिक मतभेदों की शालीनता** के संदर्भ में सबसे ज़्यादा प्रासंगिक है।

- **अभद्रता का दौर:** आज इंटरनेट पर यदि दो लोगों के बीच किसी बात पर असहमति हो जाए, या कोई किसी को टोक दे, तो लोग तुरंत गाली-गलौज, अश्लील भाषा और व्यक्तिगत हमलों (Personal Attacks) पर उतर आते हैं।
- **सभ्य संवाद की कला (Art of Conversation):** जब महिला ने अवसेरी को डांटा और मर्यादा याद दिलाई, तो अवसेरी ने गुस्सा होने या गाली देने के बजाय अपनी बात में 'वाणी की मिठास' (शक्कर) का ऐसा तड़का लगाया कि पूरी स्थिति का तनाव खत्म हो गया और महिला भी शांत हो गई। यह प्रसंग आज की पीढ़ी को सिखाता है कि **कटुता का उत्तर कटुता से देने के बजाय, अपने वाक-चातुर्य और शालीनता से सामने वाले के गुस्से को शांत करना ही सच्ची बौद्धिक श्रेष्ठता है।**

पंचम अध्याय
अवसेरी की गाथाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता

5.1 आधुनिक परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली बनाम अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण

5.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' के संदर्भ में उपयोगिता

5.3 अवसेरी की कहानियों को प्राथमिक/माध्यमिक स्तर पर 'शैक्षणिक उपकरण' के रूप में ढालने की संभावनाएं

5.4 भावी पाठ्यक्रम के लिए व्यावहारिक सुझाव और मॉडल

पंचम अध्याय

अवसेरी की गाथाओं का वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता

5.1 आधुनिक परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली बनाम अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से **'मेमोरी-बेस्ड' (रटने पर आधारित)** और परीक्षा-केंद्रित हो चुकी है, जहाँ किसी छात्र की योग्यता का पैमाना उसके द्वारा प्राप्त अंक या डिग्रियाँ होती हैं। इसके विपरीत, रसिन (चित्रकूट) के लोक-नायक अवसेरी का दृष्टिकोण **'एक्सपीरिएंशियल लर्निंग' (अनुभवात्मक अधिगम)** और **'स्ट्रीट स्मार्टनेस' (व्यावहारिक सूझबूझ)** पर आधारित है।

इन दोनों दृष्टिकोणों के अंतर और टकराव को हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से गहराई से समझ सकते हैं:

1. रटंत ज्ञान बनाम प्रत्युत्पन्नमति

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:** आज स्कूल-कॉलेजों में बच्चों को पहले से बने-बनाए नियम, सूत्र और परिभाषाएं रटवाई जाती हैं। यदि परीक्षा में कोई ऐसी समस्या आ जाए जो आउट-ऑफ-सिलेबस (पाठ्यक्रम से बाहर) हो, तो छात्र असहाय महसूस करते हैं।
- **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** अवसेरी के पास कोई औपचारिक डिग्री नहीं थी, लेकिन उनके पास 'प्रत्युत्पन्नमति' (तुरंत निर्णय लेने की क्षमता) थी। **'बतासे का न्याय'** कहानी इसका सटीक उदाहरण है। जब पंच यह तय नहीं कर पा रहे थे कि बच्चा किसका है, तब अवसेरी ने किसी स्थापित कानूनी किताब को पढ़ने के बजाय बाल-मनोविज्ञान का व्यावहारिक उपयोग किया। उन्होंने बच्चे को बतासा दिखाया और बच्चे के व्यवहार से पल भर में सच साबित कर दिया। यह दर्शाता है कि वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान किताबों में नहीं, तात्कालिक बुद्धि में होता है।

2. किताबी नियम बनाम 'प्रॉब्लम सॉल्विंग' और संकट प्रबंधन

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:** वर्तमान शिक्षा व्यवस्था छात्रों को एक नियंत्रित और सुरक्षित माहौल में सोचना सिखाती है। यह संकट के समय व्यावहारिक रूप से हाथ-पांव फूलने से नहीं रोक पाती।
- **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** अवसेरी संकट को एक अवसर में बदलने के उस्ताद थे। **'सबके पेट होते हैं'** कहानी में जब निमंत्रण न मिलने के कारण उन्होंने बारात वापस लौटा दी, तो पूरे गाँव की इज्जत दांव पर लग गई। ज़मींदार के अनुनय-विनय करने पर उन्होंने बिना किसी विवाद के, सिर्फ शब्दों के हेर-फेर ("सबके पेट होते हैं, तो लड़की के पेट होने में गलत क्या है") से पूरी बारात को हँसाकर वापस लौटा लिया। आधुनिक शिक्षा जहाँ

तनाव पैदा करती है, वहीं अवसेरी का दृष्टिकोण सिखाता है कि हास्य और तार्किक चातुर्य से बड़े से बड़े सामाजिक संकट को कैसे टाला जा सकता है।

3. रसोइया और संसाधन प्रबंधन

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:** आज 'रिसोर्स मैनेजमेंट' (संसाधन प्रबंधन) को बड़े-बड़े बिजनेस स्कूलों (MBA) में मोटी-मोटी किताबों के जरिए पढ़ाया जाता है, जिसमें भारी निवेश और इंफ्रास्ट्रक्चर की बात होती है।
- **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** अवसेरी का जीवन '**मितव्ययी नवाचार**' **(Frugal Innovation या जुगाड़ तकनीक)** का अनूठा उदाहरण है। '**बर्तनों का बच्चा**' और '**चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना**' जैसी कहानियाँ उनके इस दर्शन को दिखाती हैं। बिना किसी मवेशी (गाय-भैंस) के भी पूरे गाँव का दूध-घी खाना और उस पर ऐसा सामाजिक तर्क देना कि लोग बुरा भी न मानें ("तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी"), यह साबित करता है कि न्यूनतम संसाधनों में अपनी आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जाए। '**मटकी का रहस्य**' में भी उन्होंने चालाक गणिका के लालच का उत्तर आधी मटकी मिट्टी और ऊपर घी की परत जमाकर दिया, जो बिना किसी आर्थिक नुकसान के अपना काम निकालने की व्यावहारिक कला को दर्शाता है।

4. रूढ़िवादिता और सामाजिक कंडीशनिंग को चुनौती देना

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:** वर्तमान व्यवस्था अक्सर छात्रों को स्थापित सामाजिक ढांचों और नियमों को बिना सवाल किए स्वीकार करना सिखाती है।
- **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** अवसेरी एक 'क्रिटिकल थिंकर' (आलोचनात्मक विचारक) थे। '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' कहानी में जब लोग उनसे रोज एक ही सवाल ("बैल कितने का लाया") बार-बार पूछकर तंग करते थे, तो उन्होंने कुएँ में कूदने का स्वांग रचाकर पूरे गाँव को एक साथ बुला लिया और एक ही बार में संदेश दे दिया। यह स्थापित ढर्रे से अलग हटकर सोचने (**Out of the Box Thinking**) की कला है, जो आज के इनोवेटर्स और उद्यमियों (Entrepreneurs) के लिए बहुत जरूरी है।

5. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लोक-व्यवहार

- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:** आज की शिक्षा केवल बुद्धि-लब्धि (IQ) को मापती है, जिससे छात्र तकनीकी रूप से तो सक्षम हो जाते हैं, लेकिन उनमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) और लोगों से जुड़ने की कला की कमी रह जाती है।
- **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** अवसेरी अत्यंत मिलनसार और खुशमिजाज थे। भले ही वे लोगों के साथ मजाक करते थे, बर्तनों को गिरवी रखकर गाँव को खाना खिला देते थे, लेकिन उनका लोक-व्यवहार इतना मजबूत था कि लोग उनसे नाराज नहीं हो पाते थे। '**आस्था की जीत**' कहानी में भी उनकी इसी छवि और जिद के कारण गाँव वाले उन्हें अस्वस्थ होने पर भी खटोली में लादकर केदारनाथ तक ले गए।

तुलनात्मक तालिका

आयाम (Dimensions)	आधुनिक परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली	अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण
मूल्यांकन का आधार	अंक, डिग्रियाँ और लिखित परीक्षा।	तात्कालिक परिणाम और समस्या का समाधान।
सीखने की विधि	क्लासरूम, किताबें और रटना (Rote Learning)।	समाज, अनुभव और अवलोकन (Observation)।
विपरीत परिस्थितियाँ	छात्र जल्दी तनाव (Stress) और अवसाद में आ जाते हैं।	हास्य और व्यंग्य के माध्यम से तनाव प्रबंधन।
सोच का दायरा	पाठ्यक्रम (Syllabus) के दायरे में सोचना।	लीक से हटकर (Out of the Box) सोचना।
भाषा और संवाद	औपचारिक और कभी-कभी व्यावहारिक जीवन से कटी हुई।	ठेठ, मारक, हाजिरजवाब और लोक-संस्कृति से जुड़ी।

निष्कर्ष

'**मजाक की भारी कीमत**' जैसी कहानी हमें यह भी सचेत करती है कि अवसेरी का दृष्टिकोण व्यावहारिक होने के साथ-साथ कभी-कभी अपनी सीमाओं को लांघ जाता था (जिसके कारण उनकी पत्नी को जान गंवानी पड़ी)। यह प्रसंग वर्तमान शिक्षा नीति के लिए एक मूल्यवान सबक है कि **चातुर्य और व्यावहारिक बुद्धि के साथ 'नैतिक संवेदनशीलता' (Moral Sensitivity) का होना भी उतना ही अनिवार्य है।**

अतः, यह निष्कर्ष निकालता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली को यदि सफल होना है, तो उसे केवल किताबी कीड़े पैदा करने के बजाय अवसेरी के इस 'देसी प्रबंधन' और व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपने लाइफ-स्किल्स (Life Skills) के पाठ्यक्रम में समाहित करना होगा।

5.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' के संदर्भ में उपयोगिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के पैरा 4.11 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जहाँ तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक (और बेहतर हो कि कक्षा 8 तक) शिक्षा का माध्यम **मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा** होना चाहिए। नीति का मानना है कि बच्चे अपनी घरेलू भाषा में अमूर्त अवधारणाओं (Abstract Concepts) को अधिक तेजी से सीखते हैं।

इस संदर्भ में, अवसेरी की बुंदेली लोकगाथाओं की उपयोगिता को निम्नलिखित व्यापक बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. भाषाई सोंधापन और प्रारंभिक भाषाई विकास

- **नीति का दृष्टिकोण**: प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को ऐसी भाषा में सिखाया जाना चाहिए जो उनके परिवेश से कटी हुई न हो। रटने के बजाय भाषा की स्वाभाविक समझ विकसित होनी चाहिए।
- **अवसेरी गाथाओं की उपयोगिता**: अवसेरी की कहानियों में प्रयुक्त शब्द जैसे—**'गोरु-बछेरू'** (मवेशी), **'पड़वा'** (भैंस का बच्चा), **'बिहान भरे'** (सुबह-सुबह), **'तदगरा'** (निमंत्रण पत्र) और **'चुप्पा से'** (चुपके से)—बुंदेलखंड के बच्चों के दैनिक जीवन के शब्द हैं। जब इन शब्दों के माध्यम से कहानियाँ प्राथमिक कक्षाओं में सुनाई जाएँगी, तो बच्चों का भाषाई जुड़ाव गहरा होगा। वे स्कूल को अपने घर का ही एक हिस्सा मानेंगे, जिससे प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने की दर (Drop-out Rate) में कमी आएगी।

2. संज्ञानात्मक विकास और तार्किक क्षमता

- **नीति का दृष्टिकोण**: मातृभाषा में शिक्षा देने से बच्चों की 'क्रिटिकल थिंकिंग' (आलोचनात्मक सोच) और सोचने की क्षमता का विकास होता है, क्योंकि उन्हें भाषा अनुवाद करने में मानसिक ऊर्जा नहीं गंवानी पड़ती।
- **अवसेरी गाथाओं की उपयोगिता**: अवसेरी की कहानियाँ केवल भाषा नहीं सिखातीं, बल्कि मातृभाषा के माध्यम से तर्क करना सिखाती हैं।
    - '**बर्तनों का बच्चा**' कहानी में जब अवसेरी कहते हैं, *"यदि बर्तन के बच्चे हो सकते हैं, तो वो मर भी सकते हैं,"* तो बच्चा बुंदेली भाषा के मुहावरों के साथ-साथ 'कार्य-कारण संबंध' (Cause and Effect) और 'तर्कशास्त्र' (Logic) को बेहद सहजता से समझ जाता है।
    - '**भोर का संवाद**' में जिस तरह वे महिला की तीखी बात का जवाब अपनी चतुर दलील से देते हैं, वह बच्चों को मातृभाषा में शब्दों के सही चयन और 'कम्युनिकेशन स्किल्स' (संवाद कला) का व्यावहारिक पाठ पढ़ाता है।

3. सांस्कृतिक अस्मिता और हीनभावना से मुक्ति

- **नीति का दृष्टिकोण:** आधुनिक शिक्षा के कारण अक्सर ग्रामीण अंचल के बच्चों में अपनी मातृभाषा या बोली को लेकर एक हीनभावना (Inferiority Complex) आ जाती है। NEP 2020 इस हीनभावना को मिटाकर 'भारतीय होने के गौरव' को पुनर्स्थापित करना चाहती है।
- **अवसेरी गाथाओं की उपयोगिता:** अवसेरी का चरित्र बुंदेली समाज में एक 'हीरो' (लोक-नायक) की तरह है। जब पाठ्यपुस्तकों में अकबर-बीरबल या तेनालीराम के साथ-साथ '**बुंदेलखंड के बीरबल अवसेरी**' को स्थान मिलेगा, तो बुंदेली क्षेत्र के बच्चों में अपनी बोली, अपने रसिन गाँव और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व की भावना जागेगी। वे अपनी भाषा को 'गंवारू' समझने के बजाय सम्मान की दृष्टि से देखना शुरू करेंगे।

4. बहुभाषिकता के लिए एक सेतु का कार्य

- **नीति का दृष्टिकोण:** एनईपी 2020 'बहुभाषावाद' को बढ़ावा देती है। इसका उद्देश्य बच्चों को मातृभाषा के माध्यम से मानक भाषा (जैसे मानक हिंदी या अंग्रेज़ी) की ओर ले जाना है।
- **अवसेरी गाथाओं की उपयोगिता:** अवसेरी की कहानियों का ढांचा ऐसा है जिसे त्रि-भाषा सूत्र (Three-Language Formula) में आसानी से पिरोया जा सकता है। कक्षा में कहानी को मूल बुंदेली में सुनाकर, फिर उसके मानक हिंदी रूपांतरण (जैसे 'पड़वा' को 'भैंस का बछड़ा' और 'तदगरा' को 'निमंत्रण पत्र') और फिर अंग्रेज़ी अनुवाद (जैसे 'Calf' और 'Invitation') के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है। यह विधि 'कोड-स्विचिंग' (एक भाषा से दूसरी भाषा में जाना) को बहुत आसान और मनोरंजक बना देती है।

5. कहानी कहने की कला का क्रियान्वयन

- **नीति का दृष्टिकोण:** एनईपी 2020 शिक्षा को आनंददायक (Joyful Learning) बनाने के लिए खिलौना-आधारित (Toy-based) और कहानी-आधारित (Storytelling-based) शिक्षण विधियों की वकालत करती है।
- **अवसेरी गाथाओं की उपयोगिता:** अवसेरी के किस्से जैसे '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' या '**मटकी का रहस्य**' में गजब का कौतुक, सस्पेंस और हास्य है। शिक्षक इन कहानियों का उपयोग करके कक्षा में 'नाट्य रूपांतरण' (Role Play) करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चा अवसेरी और दूसरा पीढ़िया बनकर 'बीस आने के पड़वे' वाली कहानी का अभिनय कर सकता है। इससे बच्चों में मातृभाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति की क्षमता का असाधारण विकास होगा।

शैक्षणिक अनुप्रयोग मॉडल

नीचे दी गई तालिका दर्शाती है कि अवसेरी की कहानियों को एनईपी 2020 के 'मातृभाषा शिक्षण' के उद्देश्यों के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है:

अवसेरी की कहानी	**मूल बुंदेली तत्व/शब्द**	**एनईपी 2020 का भाषाई व शैक्षिक उद्देश्य**
1. **बर्तनों का बच्चा**	भड़वा बर्तन, निमंत्रण, भोंदू कलार, चल बसे।	**शब्दकोश निर्माण:** स्थानीय बर्तनों और सामाजिक प्रथाओं के नामों से परिचय।
2. **सबके पेट होते हैं**	तदगरा, बान गंगा, बारात लवटाये।	**संवाद एवं अभिव्यक्ति:** मुहावरों और दोहरे अर्थ वाले संवादों से भाषा की गहराई समझना।
3. **बतासे का न्याय**	ग्वेद (घोड़ी), मेहरिया, पञ्च परमेश्वर।	**मूल्यपरक शिक्षा:** लोक-न्याय, बाल-मनोविज्ञान और पंचों की भूमिका को मातृभाषा में समझना।

निष्कर्ष

इसका निष्कर्ष यह है कि रसिन के अवसेरी की लोकगाथाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' के सिद्धांतों को केवल कागजों से निकालकर कक्षाओं तक पहुँचाने का सबसे सजीव और व्यावहारिक साधन हैं। ये कहानियाँ यह सिद्ध करती हैं कि ज्ञान जब अपनी माटी की बोली में परोसा जाता है, तो वह बच्चे के दिमाग में सीधे उतर जाता है। अवसेरी का यह बुंदेली रंग आधुनिक प्राथमिक शिक्षा को अधिक समावेशी, आनंददायक और जड़े जमाए हुए (Rooted) बनाने में मील का पत्थर साबित होगा।

5.3 अवसेरी की कहानियों को प्राथमिक/माध्यमिक स्तर पर 'शैक्षणिक उपकरण' के रूप में ढालने की संभावनाएं

एनईपी 2020 और आधुनिक बाल-मनोविज्ञान इस बात पर सहमत हैं कि बच्चे अमूर्त (Abstract) टेक्स्ट को रटने के बजाय **दृश्य-श्रव्य माध्यमों (Visual and Auditory Media)** से ४०% अधिक तेज़ी से सीखते हैं। अवसेरी की कहानियों में गजब का दृश्यात्मक पुट (Visual Appeal), कौतुक, और नाट्य रूपांतरण की क्षमता है, जो इन्हें एक आदर्श शैक्षणिक उपकरण बनाती हैं।

इनकी प्रमुख संभावनाओं को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

1. कॉमिक्स और ग्राफिक उपन्यासों का निर्माण

- **संभावना:** अवसेरी की कहानियाँ 'अकबर-बीरबल' या 'अमर चित्र कथा' की तर्ज पर मनोरंजक कॉमिक्स श्रृंखला में ढाली जा सकती हैं।
- **कहानियों का अनुप्रयोग:** * '**बर्तनों का बच्चा**' कहानी को रंग-बिरंगे चित्रों के माध्यम से कॉमिक्स स्ट्रिप में दिखाया जा सकता है, जहाँ पहले दृश्य में अवसेरी बड़े बर्तन के साथ छोटा लोटा दे रहे हैं और गाँव वाले खुश हो रहे हैं; और दूसरे दृश्य में वे उदास मुँह बनाकर कह रहे हैं कि "महतारी-बच्चा दोनों चल बसे।"
    - '**मंदिर की छत पर ऊँट**' कहानी का दृश्य (ऊँट का मंदिर की छत पर खड़ा होना और नीचे गाँव वालों का चकित होना) बच्चों में गजब का कौतुक और रुचि पैदा करेगा, जिससे उनकी पठन-अभिरुचि (Reading Habit) बढ़ेगी।

2. चित्र-कथाओं द्वारा संज्ञानात्मक एवं तार्किक विकास

- **संभावना:** प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5) के बच्चों के लिए बिना शब्दों या कम शब्दों वाली चित्र-कथाओं का उपयोग किया जा सकता है, जहाँ बच्चे चित्रों को देखकर खुद कहानी बुनते हैं।
- **कहानियों का अनुप्रयोग:** '**बतासे का न्याय**' कहानी को 4 से 5 चित्रों के एक 'स्टोरीबोर्ड' में बदला जा सकता है।
    - चित्र 1: अवसेरी बच्चे को चुपके से बतासा दे रहे हैं।
    - चित्र 2: पंचायत बैठी है और सब परेशान हैं।
    - चित्र 3: अवसेरी हाथ में बतासा छिपाकर बच्चे को इशारा कर रहे हैं।
    - चित्र 4: बच्चा दौड़कर अवसेरी से लिपट जाता है।
    - बच्चों से पूछा जा सकता है कि "बताओ, अवसेरी ने क्या तरकीब लगाई?" इससे बच्चों की '**क्रिटिकल थिंकिंग**' **(आलोचनात्मक सोच)** और निर्णय क्षमता का विकास होगा।

3. कक्षा-कक्ष में नाट्य रूपांतरण और रोल-प्ले

- **संभावना:** माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 8) के छात्रों के लिए अवसेरी के किस्सों को लघु-नाटकों (Skits) के रूप में ढालकर मंचन कराया जा सकता है।
- **कहानियों का अनुप्रयोग:** '**सबके पेट होते हैं**' कहानी कक्षा में नाटक के लिए सर्वोत्तम है। एक छात्र ज़मींदार बन सकता है, कुछ बाराती, और एक छात्र अवसेरी बनकर बान गंगा नदी के किनारे घास छीलने का अभिनय कर सकता है। जब संवाद बोले जाएँगे—*"क्या कोई ऐसा है जिसके पेट न हो? सबके पेट होते हैं!"*—तो पूरी कक्षा हँसते हुए यह सीखेगी कि शब्दों के गलत चयन से कैसे 'गलतफहमी' (Miscommunication) पैदा होती है और सूझबूझ से उसे कैसे सुधारा जाता है।

4. डिजिटल और एनिमेटेड शॉर्ट्स

- **संभावना:** 'दीक्षा' (DIKSHA) पोर्टल या 'यू-ट्यूब' जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के लिए अवसेरी की कहानियों के 2-3 मिनट के 2D एनिमेटेड वीडियो तैयार किए जा सकती हैं।
- **कहानियों का अनुप्रयोग:** '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' कहानी का एनिमेशन बच्चों को बेहद आकर्षित करेगा। जब एनिमेटेड अवसेरी कुएँ की जंजीर पकड़कर लटका होगा और ऊपर पूरा गाँव परेशान खड़ा होगा, और फिर अवसेरी चिल्लाकर कहेगा—*"सुनो सब जने! मैं बैल एक सौ दस का लावा हउँ!"*—यह दृश्य बच्चों के दिमाग में हमेशा के लिए बैठ जाएगा। यह 'जॉयफुल लर्निंग' (आनंददायक अधिगम) का बेहतरीन उदाहरण बनेगा।

5. नैतिक और केस-स्टडी आधारित शिक्षण

- **संभावना:** माध्यमिक स्तर पर अवसेरी की कुछ कहानियों का उपयोग '**केस स्टडी**' के रूप में करके बच्चों को नैतिक सीमाओं और मानवीय व्यवहार का पाठ पढ़ाया जा सकता है।
- **कहानियों का अनुप्रयोग:** '**मजाक की भारी कीमत**' कहानी एक अत्यंत संवेदनशील और विचारोत्तेजक शैक्षणिक उपकरण बन सकती है। कक्षा में इस पर चर्चा (Group Discussion) कराई जा सकती है कि:
    - *"क्या मजाक की कोई सीमा होनी चाहिए?"*
    - *"अवसेरी के किस व्यवहार के कारण यह दुर्घटना हुई?"*
    - यह कहानी बच्चों को '**भावनात्मक बुद्धिमत्ता' (Emotional Intelligence)**, दूसरों की भावनाओं का आदर करना और 'मजाक बनाम गरिमा' के अंतर को समझने में मदद करेगी।

शैक्षणिक उपकरण ग्रिड

कहानी का नाम	**प्रस्तावित शैक्षणिक उपकरण**	**लक्षित कक्षा**	**विकसित होने वाले कौशल (Skills Developed)**
बर्तनों का बच्चा	कॉमिक्स/ इलस्ट्रेटेड बुक	कक्षा 1 - 3	कार्य-कारण संबंध, तार्किक चातुर्य, हास्यबोध।
बतासे का न्याय	चित्र-कथा/ स्टोरीबोर्ड	कक्षा 3 - 5	बाल-मनोविज्ञान, साक्ष्य-आधारित सोच, समस्या समाधान।

कहानी का नाम	**प्रस्तावित शैक्षणिक उपकरण**	**लक्षित कक्षा**	**विकसित होने वाले कौशल (Skills Developed)**
सबके पेट होते हैं	रोल-प्ले / लघु नाटक	कक्षा 6 - 8	कम्युनिकेशन स्किल्स, टीम वर्क, सामाजिक सौहार्द।
मटकी का रहस्य	एनिमेटेड वीडियो	कक्षा 4 - 6	लालच का दुष्परिणाम, त्वरित बुद्धि (Street Smartness)।
मजाक की भारी कीमत	केस-स्टडी / समूह चर्चा	कक्षा 7 - 8	नैतिक संवेदनशीलता, सहानुभूति (Empathy), सीमा निर्धारण।

निष्कर्ष

इस अध्याय का निष्कर्ष यह है कि रसिन के अवसेरी की लोकगाथाओं में एक अत्यंत समृद्ध '**दृश्य और व्यावहारिक पाठ्यक्रम**' **(Visual and Practical Curriculum)** बनने की पूरी क्षमता है। इन्हें कॉमिक्स, चित्र-कथाओं और नाटकों के रूप में ढालकर हम न केवल बुंदेली संस्कृति को जीवित रख सकते हैं, बल्कि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के छात्रों को एक ऐसा जीवंत शैक्षणिक उपकरण दे सकते हैं जो उन्हें 'रटने वाले तोते' बनाने के बजाय '**व्यावहारिक और संवेदनशील इंसान**' बनने में मदद करेगा।

5.4 भावी पाठ्यक्रम के लिए व्यावहारिक सुझाव और मॉडल

एक आदर्श और आधुनिक पाठ्यक्रम वही है जो ज्ञान को केवल सूचनाओं का पुलिंदा न बनाकर उसे '**कौशल-आधारित**' **(Skill-based)** और '**मूल्य-परक**' **(Value-based)** बनाए। अवसेरी की कहानियाँ इस कसौटी पर पूरी तरह खरी उतरती हैं। इन्हें पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के लिए निम्नलिखित व्यावहारिक सुझाव और मॉडल प्रस्तावित किए जा रहे हैं:

1. पाठ्यक्रम एकीकरण के लिए व्यावहारिक सुझाव

- **पूरक पठन (Supplementary Reader) के रूप में:** कक्षा 3 से 8 तक की भाषा (हिंदी/बुंदेली) की पाठ्यपुस्तकों के साथ एक पतली पूरक पुस्तिका जोड़ी जाए, जिसका

नाम '**बुंदेलखंड के बीरबल: अवसेरी की चतुर कहानियाँ**' हो। इसमें प्रत्येक कक्षा के स्तर के अनुसार 2-2 कहानियाँ शामिल हों।

- **त्रि-भाषीय शब्दकोश (Tri-lingual Dictionary):** पाठ्यक्रम में प्रत्येक कहानी के अंत में एक विशेष 'शब्द-सिंधु' (Glossary) खंड हो, जहाँ कहानी के ठेठ बुंदेली शब्दों के मानक हिंदी और अंग्रेज़ी पर्याय दिए जाएँ (जैसे- *पड़वा = भैंस का बछड़ा = Buffalo Calf*; *तदगरा = निमंत्रण पत्र = Invitation Letter*)। इससे बच्चों का बहुभाषिक विकास होगा।
- **शनिवार की 'नो-बैग डे' गतिविधि:** उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के परिषदीय विद्यालयों में शनिवार को 'नो-बैग डे' (No-Bag Day) मनाया जाता है। इस दिन अवसेरी की कहानियों पर आधारित 'किस्सागोई प्रतियोगिता' (Storytelling), मूक-अभिनय (Pantomime) या 'चित्रकला कार्यशाला' (जहां बच्चे '**मंदिर की छत पर ऊँट**' या '**कुआँ संदेश**' का चित्र बनाएं) आयोजित की जाए।

2. अवसेरी-आधारित पाठ्यक्रम मॉडल

इस शोध के अंतर्गत '**हेड्स, हार्ट्स एंड हैंड्स**' **(3Hs - Head, Heart, Hand)** के सिद्धांत पर आधारित एक त्रि-आयामी पाठ्यक्रम मॉडल प्रस्तावित किया गया है:

[अवसेरी पाठ्यक्रम मॉडल (3Hs)]

1. संज्ञानात्मक (Head) (Cognitive Domain)	2. भावनात्मक (Heart) (Affective Domain)	3. क्रियात्मक (Hand) (Psychomotor Domain)
• समस्या निवारण	• नैतिक संवेदनशीलता	• रोल-प्ले और नाटक
• त्वरित निर्णय क्षमता	• सहानुभूति (Empathy)	• कॉमिक्स/चित्र निर्माण
• वाक-चातुर्य	• लोक-संस्कृति से जुड़ाव	• क्षेत्रीय भाषा संवर्धन

A. संज्ञानात्मक आयाम:

- **लक्ष्य:** मानसिक कौशल, तर्क और समस्या समाधान का विकास।
- **पाठ्यक्रम अनुप्रयोग:** '**बतासे का न्याय**' और '**बर्तनों का बच्चा**' जैसी कहानियों को गणितीय तर्क और 'कॉज एंड इफेक्ट' (कार्य-कारण संबंध) समझाने के लिए केस-स्टडी के रूप में रखा जाए। बच्चों से प्रश्न पूछे जाएँ कि "यदि आप पंच होते, तो बिना डीएनए टेस्ट के बच्चे के असली माता-पिता का पता कैसे लगाते?"

B. भावनात्मक आयाम:

- **लक्ष्य:** मूल्य, संवेदनशीलता, और सामाजिक सौहार्द का विकास।
- **पाठ्यक्रम अनुप्रयोग:** '**सबके पेट होते हैं**' कहानी के माध्यम से बच्चों को यह सिखाया जाए कि समाज में सबकी अपनी गरिमा है। किसी का नाम निमंत्रण सूची से छूट जाने पर

कैसा महसूस होता है (सहानुभूति) और गाँव की बेटी की शादी बचाकर अवसेरी ने कैसे 'सामाजिक उत्तरदायित्व' निभाया। वहीं, '**मजाक की भारी कीमत**' से उन्हें यह सिखाया जाए कि किसी भी मजाक की एक नैतिक सीमा होनी चाहिए ताकि किसी की भावनाएं आहत न हों।

C. क्रियात्मक आयाम:

- **लक्ष्य:** करके सीखना, कला समेकित शिक्षा (Art-Integrated Learning)।
- **पाठ्यक्रम अनुप्रयोग:** इसके अंतर्गत छात्रों को '**मटकी का रहस्य**' या '**चुप्पा से दुहना**' जैसी कहानियों का नाट्य रूपांतरण करने, संवाद लिखने और स्थानीय मिट्टी से 'घी-माटी की मटकी' जैसे खिलौने (Toy-based pedagogy) बनाने के लिए प्रेरित किया जाए।

3. कक्षा-वार पाठ्यक्रम वितरण ग्रिड (Class-wise Curriculum Distribution Grid)

स्तर (Level)	**लक्षित कक्षा**	**चयनित कहानी**	**मुख्य शैक्षणिक उद्देश्य (Syllabus Objective)**
प्रारंभिक (Foundational)	कक्षा 1 - 2	**1. बर्तनों का बच्चा** **2. अवसेरी का 'कुआँ' संदेश**	• हास्यबोध का विकास। • बुनियादी संख्यात्मकता (एक बर्तन, दो बर्तन) और स्थानीय शब्दों से परिचय।
पुनर्प्रिपेरेटरी (Preparatory)	कक्षा 3 - 5	**3. बतासे का न्याय** **4. मटकी का रहस्य** **5. चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना**	• बाल-मनोविज्ञान और साक्ष्य-आधारित सोच। • लालच के दुष्परिणाम और 'रिसोर्स मैनेजमेंट' का बुनियादी लोक-ज्ञान।
मध्यम (Middle)	कक्षा 6 - 8	**6. सबके पेट होते हैं** **7. मंदिर की**	• 'कम्युनिकेशन स्किल्स' और दोहरे अर्थ वाले संवादों का विश्लेषण। • लैंगिक संवेदनशीलता (Gender

स्तर (Level)	**लक्षित कक्षा**	**चयनित कहानी**	**मुख्य शैक्षणिक उद्देश्य (Syllabus Objective)**
		छत पर ऊँट **8. मजाक की भारी कीमत**	Sensitivity) और मजाक की नैतिक सीमाएं (Ethical Boundaries)।

4. नवीन मूल्यांकन पद्धति

अवसेरी की कहानियों का मूल्यांकन पारंपरिक पेन-कागज परीक्षा (Rote-testing) से नहीं हो सकता। इसके लिए निम्नलिखित '**सतत एवं व्यापक मूल्यांकन**' **(CCE)** प्रविधियाँ सुझाई गई हैं:

- '**सिचुएशनल जजमेंट टेस्ट**' **(SJT):** छात्रों को परीक्षा में अवसेरी जैसी ही कोई काल्पनिक कठिन परिस्थिति दी जाए और पूछा जाए, *"यदि आप इस संकट में होते, तो अवसेरी की तरह अपनी बुद्धि से इसका क्या शांतिपूर्ण और चतुर समाधान निकालते?"*
- **पोर्टफोलियो और पीयर एसेसमेंट (Peer Assessment):** छात्रों द्वारा किए गए नाटक, उनके द्वारा बनाई गई चित्र-कथाओं और उनके बुंदेली-हिंदी संवाद लेखन के आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाए।

निष्कर्ष

यह अध्याय यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि रसिन के अवसेरी पर आधारित यह पाठ्यक्रम मॉडल एनईपी 2020 के सपनों को साकार करने की दिशा में एक व्यावहारिक कदम है। यह मॉडल बच्चों को केवल परीक्षा पास करने की मशीन नहीं बनाता, बल्कि उन्हें '**लोक-जीवन के अनुभवों**' से सींचकर एक चतुर, हाज़िरजवाब, संकटों से न घबराने वाला और नैतिक रूप से संवेदनशील नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

षष्ठ अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 कहानियों से संबंधित निष्कर्ष

6.2 शोध के परिणाम एवं विवेचना

6.3 परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं प्रमाणीकरण

6.4 कक्षा-कक्ष अनुप्रयोग एवं व्यावहारिक सुझाव

6.5 आगामी शोध के लिए अनुशंसित दिशाएँ

षष्ठ अध्याय
निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 कहानियों से संबंधित निष्कर्ष

6.1.1 बर्तनों का बच्चा

यह कहानी दर्शाती है कि अत्यधिक लोभ मनुष्य की तार्किक क्षमता को नष्ट कर देता है। अवसेरी ने पहली बार ग्रामीणों के लालच को जगाने के लिए एक छोटा बर्तन 'बच्चे' के रूप में मुफ्त दिया। जब ग्रामीणों का लालच बढ़ गया, तो उसने उसी लालच को हथियार बनाकर उनके मूल बर्तनों को ही गायब कर दिया और तर्क की उसी कसौटी से उन्हें परास्त किया।

6.1.2 बतासे का न्याय

यह कहानी अवसेरी की तीव्र 'प्रत्युत्पन्नमति' (Quick Wit) और मानव व्यवहार को भांपने की कला को उजागर करती है। अवसेरी ने एक अनजान राहगीर के अहंकार और चुनौती को तोड़ने के लिए बच्चे के बाल-सुलभ लोभ का सहारा लिया और पंचायत के सामने ऐसा माहौल बनाया कि सच और झूठ का अंतर धुंधला हो गया।

6.1.3 मजाक की भारी कीमत

यह इस संग्रह की सबसे गंभीर और मार्मिक कहानी है। यह निष्कर्ष देती है कि परिहास (हंसी-मजाक) की भी एक सामाजिक और नैतिक 'लक्ष्मण रेखा' होती है। जब मजाक मर्यादा की परिधि को लांघकर किसी के पवित्र सामाजिक रिश्तों और आत्मसम्मान पर कीचड़ उछालता है, तो उसका अंत विनाशकारी (आत्महत्या या मृत्यु) होता है।

6.1.4 मंदिर की छत पर ऊँट

यह कहानी स्वाभिमान की रक्षा और अहंकार के पतन को रेखांकित करती है। नर्तकी ने अवसेरी के मैले कपड़ों को देखकर उसकी आर्थिक स्थिति का उपहास उड़ाया था। अवसेरी ने अपनी असाधारण बुद्धि से ऊँट को मंदिर की छत पर चढ़ाकर यह सिद्ध कर दिया कि किसी का बाहरी रूप उसकी आंतरिक क्षमता का पैमाना नहीं हो सकता।

6.1.5 सबके पेट होते हैं

यह कहानी शब्दों के दोहरे अर्थ, उनके प्रभाव और सामाजिक समझ को दर्शाती है। अवसेरी ने निमंत्रण न मिलने पर 'लड़की के पेट है' जैसी सामान्य शारीरिक सत्य वाली बात को इस तरह से प्रस्तुत किया कि समाज ने उसका अनर्थ निकाल लिया। अंत में उसने उसी शब्द का सीधा अर्थ समझाकर बिगड़ी बात को बना दिया।

6.1.6 आस्था की जीत

यह कहानी सिद्ध करती है कि ईश्वर या किसी ऊंचे लक्ष्य की प्राप्ति में शारीरिक बल या चालाकी काम नहीं आती, बल्कि वहां केवल और केवल अडिग संकल्प, धैर्य और निष्कपट श्रद्धा ही काम आती है। अवसेरी की हठमयी भक्ति ने अंततः साक्षात दैवीय कृपा को आकर्षित किया।

6.1.7 न हींग लगी न फिटकरी

यह कहानी शुद्ध व्यावहारिक कुतर्क और कागजी या मौखिक अनुबंधों की कमियों को उजागर करती है। अवसेरी ने बिना कोई श्रम या पूंजी लगाए, केवल 'साझा व्यापार' (बटाई) के शब्दों का लूपहोल (कमजोरी) ढूंढकर पड़ोसी के पशु को बेच दिया और आधा मुनाफा भी कमा लिया।

6.1.8 अवसेरी का 'कुआँ' संदेश

यह कहानी अनावश्यक सामाजिक कौतूहल और एक ही अनुत्पादक प्रश्न की बार-बार पुनरावृत्ति से उत्पन्न मानसिक झुंझलाहट का एक विनोदी समाधान प्रस्तुत करती है। अवसेरी ने खुद को संकट में दिखाकर पूरे गाँव को इकट्ठा किया ताकि सामूहिक रूप से एक ही बार में सबका उत्तर दिया जा सके।

6.1.9 चुप्पा सेदुहना और ठाठ से खाना

यह कहानी अवसेरी के 'बेपरवाह दार्शनिक' (Carefree Philosopher) रूप को दिखाती है। वह सामाजिक संसाधनों पर किसी एक के आधिपत्य को चुनौती देता है। उसकी इस चोरी या जबरदस्ती में कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी, बल्कि एक प्रकार का ग्रामीण अपनत्व और सामाजिक समानता का उसका अपना अनोखा तर्क था।

6.1.10 अवसेरी का ब्याह और निराला स्नान

यह कहानी लोक-लाज, संकोच और उपहास के बीच के द्वंद्व को दर्शाती है। जब स्त्रियों ने विवाह के पारंपरिक परिहास की सीमा को लांघकर अवसेरी की शारीरिक बनावट (चुटिया) का बार-बार उपहास उड़ाया, तो उसने अपनी 'जड़ें' (सत्य और निर्भीकता) दिखाने के लिए लोक-लाज का पूरी तरह परित्याग कर दिया और सामने वाले को लज्जित होने पर विवश कर दिया।

6.1.11 अवसेरी और भोर का संवाद

यह कहानी वाक-चातुर्य (Eloquence) और तात्कालिक सामाजिक मर्यादाओं के बीच के संतुलन को दर्शाती है। अवसेरी ने भोर के धुंधलके में एक सामान्य विनोदपूर्ण टिप्पणी की, जिसे महिला ने मर्यादा का उल्लंघन माना। लेकिन अवसेरी ने बिना किसी विवाद या अभद्रता के, अपने शब्दों में 'मिठास' (शक्कर) घोलकर स्थिति को अत्यंत गरिमापूर्ण और हास्यास्पद मोड़ दे दिया।

6.1.12 मटकी का रहस्य

यह कहानी दिखाती है कि लालच और वासना के वशीभूत होकर चतुर से चतुर व्यक्ति भी धोखा खा जाता है। गणिका (तेजनिया) ने अवसेरी को ग्रामीण समझकर उसकी आर्थिक स्थिति का दोहन करना चाहा और घी की मांग की। अवसेरी ने उसकी इस व्यावसायिक चालाकी का उत्तर 'दिखावटी मटकी' (ऊपर घी, नीचे मिट्टी) से देकर उसका लालच उसी पर भारी कर दिया।

कहानियों का समग्र निष्कर्ष

अवसेरी का चरित्र कोई साधारण धूर्त या चालाक व्यक्ति का नहीं है, बल्कि वह एक '**लोक-दार्शनिक**' **(Folk Philosopher)** है। निष्कर्षतः ये कहानियाँ दिखाती हैं कि:

- **मानव स्वभाव का अध्ययन:** अवसेरी इंसानी फितरत, लालच, अहंकार और लोक-लाज की कमियों को बहुत गहराई से समझता था।
- **तर्क की शक्ति:** वह हथियारों या ताकत से नहीं, बल्कि 'शब्दों के जाल' और 'कुतर्क को तर्क' बनाकर अपनी बात मनवाता था।
- **मर्यादा का उल्लंघन विनाशकारी है:** जहाँ 'बतासे का न्याय' या 'बर्तनों का बच्चा' जैसी कहानियाँ केवल बुद्धि-चातुर्य दिखाती हैं, वहीं 'मजाक की भारी कीमत' जैसी कहानी यह निष्कर्ष देती है कि विनोद (हंसी-मजाक) की भी एक लक्ष्मण रेखा होती है। जिसे लांघने पर हंसता-खेलता परिवार तबाह हो सकता है।

6.2 शोध के परिणाम एवं विवेचना

1. बौद्धिक चातुर्य और प्रत्युत्पन्नमति का लोक-प्रतिमान

शोध का सबसे पहला और प्रमुख निष्कर्ष यह है कि अवसेरी का चरित्र किताबी ज्ञान से मुक्त, व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (Street Smartness) का एक आदर्श प्रतिमान है।

- '**बतासे का न्याय**' कहानी से निष्कर्ष निकलता है कि जटिल सामाजिक विवादों में जहाँ स्थापित नियम और कानून (पंच लोग) असहाय हो जाते हैं, वहाँ अवसेरी बाल-मनोविज्ञान और त्वरित सूझबूझ से सत्य को उजागर कर देते हैं।
- '**मटकी का रहस्य**' यह साबित करता है कि अवसेरी चतुर और लालची गणिकाओं को उनकी ही भाषा में भ्रमित करने की कला जानते थे, जो यह दर्शाता है कि व्यावहारिक बुद्धि किसी भी औपचारिक डिग्री की मोहताज नहीं होती।

2. न्यूनतम संसाधनों में इष्टतम प्रबंधन

अध्ययन से यह एक बेहद रोचक निष्कर्ष निकलकर आता है कि अवसेरी समकालीन दौर के 'मितव्ययी नवाचार' (जुगाड़ तकनीक) और कुशल प्रबंधन के ज्ञाता थे।

- '**बर्तनों का बच्चा**' तथा '**चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना**' कहानियों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि उनके पास स्वयं का कोई मवेशी या प्रचुर साधन नहीं थे। इसके बावजूद, उन्होंने सामाजिक ताने-बाने और चतुर तर्कों ("तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी") के बल पर अपने लिए संसाधनों की निरंतरता सुनिश्चित की। यह आज के 'शेयरिंग इकोनॉमी' (Sharing Economy) के लोक-सिद्धांत को पुष्ट करता है।

3. सामंतशाही के विरुद्ध अहिंसक और बौद्धिक प्रतिरोध

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से शोध का निष्कर्ष यह है कि तत्कालीन बुंदेली समाज में व्याप्त ज़मींदारी प्रथा, वर्ग-भेद और शक्ति-असंतुलन के खिलाफ अवसेरी का चरित्र शोषित वर्ग के लिए एक 'सुरक्षा वॉल्व' (Safety Valve) था।

- '**सबके पेट होते हैं**' और '**मंदिर की छत पर ऊँट**' कहानियों से स्पष्ट होता है कि अवसेरी ने अभिजात वर्ग (ज़मींदार और घमंडी नर्तकियों) के अहंकार को तोड़ने के लिए कभी लाठी या हिंसा का सहारा नहीं लिया। उन्होंने केवल शब्दों के हेर-फेर और चतुर युक्तियों से उन्हें झुकाया, जिससे समाज के दबे-कुचले लोगों को एक मानसिक संबल और 'लोक-न्याय' (Folk Justice) प्राप्त होता था।

4. तनाव प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य में लोक-हास्य की भूमिका

शोध का एक मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष यह है कि अवसेरी का 'मस्तमौला अंदाज़' और 'बुंदेली हास्य' आज के अत्यधिक तनावपूर्ण जीवन के लिए एक बेहतरीन उपचार (Therapy) है।

- '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' और '**अवसेरी का ब्याह और निराला स्नान**' जैसी कहानियाँ यह निष्कर्ष देती हैं कि अवसेरी विपरीत या असहज करने वाली परिस्थितियों (जैसे लोगों द्वारा बार-बार एक ही सवाल पूछकर तंग करना या ब्याह में सताना) में भी घबराने या क्रोधित होने के बजाय आत्म-व्यंग्य और हास्य पैदा करके स्थिति को पूरी तरह अपने नियंत्रण में ले लेते थे।

5. नैतिक सीमाओं और संवेदनशीलता का पाठ

यह शोध केवल अवसेरी की तारीफों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक गंभीर निष्कर्ष यह भी है कि व्यावहारिक चतुरता और बेलगाम मजाक के बीच एक बहुत महीन नैतिक रेखा होती है।

- '**मजाक की भारी कीमत**' कहानी का गहरा विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जब व्यावहारिक बुद्धि में 'नैतिक संवेदनशीलता' (Moral Sensitivity) और दूसरों की आंतरिक गरिमा के प्रति आदर का अभाव हो जाता है, तो उसके परिणाम आत्मघाती (पत्नी की आत्महत्या के रूप में) हो सकते हैं। यह निष्कर्ष आधुनिक शिक्षा के लिए एक बहुत बड़ा सबक है कि चालाकी के साथ-साथ 'सहानुभूति' (Empathy) का होना अनिवार्य है।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में अकादमिक उपयोगिता

भाषाई और शैक्षणिक निष्कर्ष यह है कि अवसेरी की कहानियों में प्रयुक्त ठेठ बुंदेली शब्दावली (जैसे तदगरा, पड़वा, गोरु-बछेरू, चुप्पा से) में प्रारंभिक वर्षों के बच्चों के भाषाई विकास को गति देने की अद्भुत क्षमता है। यह नीति निर्माताओं को एक ठोस धरातल प्रदान करता है कि पंचतंत्र या अकबर-बीरबल की तर्ज पर इन आंचलिक कथाओं को कॉमिक्स, चित्र-कथाओं और रोल-प्ले के माध्यम से स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए, जिससे बच्चों में अपनी जड़ों के प्रति हीनभावना समाप्त हो और भाषाई गौरव का विकास हो।

निष्कर्षों का संक्षिप्त ग्रिड

कहानी	**शोध का मुख्य निष्कर्ष (Core Finding)**	**आधुनिक शैक्षणिक / सामाजिक मूल्य**
बर्तनों का बच्चा / मटकी का रहस्य	चालाकी और लालच का उत्तर तार्किक चातुर्य से देना।	संकट प्रबंधन और व्यावहारिक सोच।
बतासे का न्याय	किताबी नियमों से ऊपर बाल-मनोविज्ञान की जीत।	साक्ष्य-आधारित निर्णय क्षमता (Decision Making)।
सबके पेट होते हैं / मंदिर की छत पर ऊँट	शब्दों और युक्तियों से शक्तिशाली का अहंकार तोड़ना।	अहिंसक प्रतिरोध और संचार कौशल (Communication)।
मजाक की भारी कीमत	अत्यधिक और असंवेदनशील मजाक का दुखद अंत।	नैतिक संवेदनशीलता और सहानुभूति (Empathy)।
आस्था की जीत	अटूट श्रद्धा और धैर्य से असंभव को संभव करना।	मानसिक सुदृढ़ता और सांस्कृतिक जुड़ाव।

संक्षेप में, इस शोध के निष्कर्ष यह स्थापित करते हैं कि चित्रकूट (रसिन) के अवसेरी केवल गुजरे जमाने के एक मनोरंजक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे **एक लोक-दार्शनिक और चतुर जीवन-प्रबंधक** हैं। उनकी कहानियों का सारांश आधुनिक समाज को तनाव से मुक्त रहने, न्यूनतम साधनों में जीने, बौद्धिक रूप से सतर्क रहने और नैतिक सीमाओं के भीतर रहकर मुस्कुराते हुए जीवन की हर जंग जीतने का कालजयी संदेश देता है।

6.3 परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं प्रमाणीकरण

1. प्रथम परिकल्पना का परीक्षण: लोक-संस्कृति और मौखिक इतिहास का संरक्षण

- **पूर्व परिकल्पना:** अवसेरी की गाथाएँ केवल मौखिक परंपरा में जीवित हैं और प्रलेखन के अभाव में लुप्त होने की कगार पर हैं।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** क्षेत्र-कार्य के दौरान पाया गया कि चित्रकूट के रसिन और आस-पास के गाँवों के बुजुर्गों (60+ आयु) को तो ये कहानियाँ (जैसे *बर्तनों का बच्चा, बतासे का न्याय*) याद हैं, लेकिन नई पीढ़ी इनसे पूरी तरह अनजान है। कहानियों के मौखिक रूप में 'तदगरा', 'पड़वा', 'गोरु-बछेरू' जैसे शब्द लुप्त हो रहे हैं।
- **प्रमाणीकरण (Validation): यह परिकल्पना पूर्णतः सत्य और प्रमाणित सिद्ध होती है।** शोध के माध्यम से इन 12 कहानियों का लिखित व डिजिटल प्रलेखन इस अनमोल धरोहर को विलुप्त होने से बचाने के लिए अनिवार्य कदम है।

2. द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण: व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और लाइफ-स्किल्स का विकास

- **पूर्व परिकल्पना:** अवसेरी की कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संकट प्रबंधन (Crisis Management) और व्यावहारिक बुद्धि के व्यावहारिक पाठ हैं।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** '**बतासे का न्याय**' कहानी में अवसेरी ने किसी पारंपरिक अदालती नियम के बजाय बच्चे के मनोविज्ञान (बतासे का लालच) का उपयोग करके विवाद सुलझाया। '**मटकी का रहस्य**' में उन्होंने गणिका के लालच का उत्तर आधी मटकी मिट्टी और ऊपर घी की परत जमाकर दिया।
- **प्रमाणीकरण (Validation): यह परिकल्पना पूर्णतः प्रमाणित होती है।** ये कहानियाँ सिद्ध करती हैं कि वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए किताबी ज्ञान से ऊपर 'प्रत्युत्पन्नमति' (Fluid Intelligence) की आवश्यकता होती है।

3. तृतीय परिकल्पना का परीक्षण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों के साथ अनुकूलता

- **पूर्व परिकल्पना:** इन कथाओं में प्रयुक्त ठेठ बुंदेली बोली और संदर्भ, एनईपी 2020 के 'मातृभाषा आधारित शिक्षण' के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम हैं।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** कहानियों का भाषाई विश्लेषण करने पर पाया गया कि इनमें प्रयुक्त आंचलिक शब्द बच्चों के घरेलू परिवेश से सीधे जुड़े हैं। '**सबके पेट होते हैं**' और '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' जैसी कहानियों में संवाद कला का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है।

- **प्रमाणीकरण (Validation): यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।** इन कहानियों को प्राथमिक स्तर पर कॉमिक्स या चित्र-कथाओं के रूप में ढालकर मातृभाषा आधारित जॉयफुल लर्निंग (आनंददायक अधिगम) का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

4. चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण: सामाजिक न्याय और अनौपचारिक प्रतिरोध का माध्यम

- **पूर्व परिकल्पना:** अवसेरी का चरित्र तत्कालीन सामंतवादी व्यवस्था और ज़मींदारी शोषण के विरुद्ध समाज के 'बौद्धिक और अहिंसक प्रतिरोध' का प्रतीक है।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** '**सबके पेट होते हैं**' कहानी में निमंत्रण सूची (तदगरा) से नाम छूटने पर अवसेरी ने सीधे झगड़ा करने के बजाय चतुर शब्दों से बारात लौटाकर ज़मींदार का अहंकार तोड़ा और उसे झुकने पर मजबूर किया। '**मंदिर की छत पर ऊँट**' में उन्होंने घमंडी नर्तकी को सबक सिखाया। दोनों ही स्थितियों में हिंसा का प्रयोग नहीं हुआ।
- **प्रमाणीकरण (Validation): यह परिकल्पना पूरी तरह प्रमाणित होती है।** अवसेरी की युक्तियाँ शोषित वर्ग के लिए एक प्रकार के 'लोक-न्याय' (Folk Justice) का कार्य करती थीं।

5. पंचम परिकल्पना का परीक्षण: मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन में प्रासंगिकता

- **पूर्व परिकल्पना:** अवसेरी की कहानियों में निहित 'बुंदेली हास्य' आधुनिक जीवन के मानसिक तनाव और अवसाद को कम करने में सहायक है।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** '**अवसेरी का कुआँ संदेश**' में जब लोग बार-बार एक ही सवाल पूछकर उन्हें तंग करते थे, तो उन्होंने कुएँ में कूदने का स्वांग रचाकर पूरे गाँव को एक साथ बुलाकर हँसा दिया। मुसीबत में भी उनका मस्तमौला अंदाज़ और आत्म-व्यंग्य (Self-deprecating humor) स्थिति को हल्का कर देता है।
- **प्रमाणीकरण: यह परिकल्पना प्रमाणित होती है।** विपरीत परिस्थितियों में घबराने के बजाय मुस्कुराते हुए रास्ता निकालना युवाओं को मानसिक रूप से सुदृढ़ (Resilient) बनाने में एक बेहतरीन मनोवैज्ञानिक उपकरण है।

6. षष्ठ परिकल्पना का परीक्षण: कम संसाधनों में बेहतर प्रबंधन का लोक-सिद्धांत

- **पूर्व परिकल्पना:** "तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी" का दर्शन आज के 'रिसोर्स ऑप्टिमाइज़ेशन' और जुगाड़ तकनीक के लोक-सिद्धांतों को प्रमाणित करता है।
- **परीक्षण एवं साक्ष्य:** '**चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना**' तथा '**न हींग लगी न फिटकरी**' (बीस आने में पड़वा बेचना और बिना कुछ लगाए आधा हिस्सा पाना) कहानियों से साफ है कि स्वयं के पास कोई पशु-धन न होने पर भी अवसेरी ने अपनी तार्किक क्षमता से समाज के संसाधनों में अपना हक सुनिश्चित किया।
- **प्रमाणीकरण (Validation): यह परिकल्पना आंशिक रूप से व्यावहारिक और मुख्य रूप से तार्किक स्तर पर प्रमाणित होती है।** यह समकालीन 'शेयरिंग इकोनॉमी' (Sharing Economy) के शुरुआती ग्रामीण रूप को दर्शाती है।

परिकल्पना परीक्षण का संक्षिप्त सारांश

परिकल्पना संख्या	परिकल्पना का विषय	परीक्षण का आधार (साक्ष्य)	परिणाम (Status)
H1	लोक-साहित्य का संरक्षण	युवा पीढ़ी में विस्मृति, ठेठ शब्दों का लोप।	**पूर्णतः प्रमाणित**
H2	व्यावहारिक बुद्धिमत्ता	बतासे का न्याय, मटकी का रहस्य।	**पूर्णतः प्रमाणित**
H3	एनईपी 2020 अनुकूलता	बुंदेली शब्दावली, संवादों का भाषाई सोंधापन।	**पूर्णतः प्रमाणित**
H4	सामंतवाद का अहिंसक विरोध	सबके पेट होते हैं, मंदिर की छत पर ऊँट।	**पूर्णतः प्रमाणित**
H5	तनाव प्रबंधन (हास्य)	अवसेरी का कुआँ संदेश, निराला स्नान।	**प्रमाणित**
H6	संसाधन प्रबंधन	चुप्पा से दुहना, बिना लागत बटाई पर पड़वा।	**प्रमाणित**

विशिष्ट शोध अंतर्दृष्टि

परिकल्पनाओं के परीक्षण के दौरान '**मजाक की भारी कीमत**' कहानी के रूप में एक अपवाद भी सामने आया, जिसने यह सिद्ध किया कि जब व्यावहारिक बुद्धि (H2) अपनी नैतिक सीमाओं को लांघ जाती है, तो उसके परिणाम दुखद होते हैं। अतः शोध का अंतिम प्रमाणीकरण यह स्थापित

करता है कि **अवसेरी का व्यावहारिक दृष्टिकोण तभी तक अनुकरणीय है जब तक वह नैतिक संवेदनशीलता (Moral Sensitivity) के दायरे में काम करता है।**

6.4 कक्षा-कक्ष अनुप्रयोग एवं व्यावहारिक सुझाव

6.4.1 विद्यार्थियों के लिए सुझाव

अवसेरी का चरित्र एक छात्र को किताबी ज्ञान (Academic Knowledge) से परे **'जीवन कौशल' (Life Skills)** और व्यावहारिक समझ सिखाता है। विद्यार्थियों के लिए मुख्य सुझाव निम्नलिखित हैं:

1. 'क्रिटिकल थिंकिंग' और व्यावहारिक बुद्धि का विकास करें

- **सुझाव:** केवल परीक्षाओं के लिए रटने की आदत से बचें। जीवन में जब भी कोई समस्या आए, तो अवसेरी की तरह अपनी 'प्रत्युत्पन्नमति' (Quick Wit) का उपयोग करें।
- **कहानियों से सीख:** जैसे अवसेरी ने *'बतासे का न्याय'* या *'कुआँ संदेश'* में बिना किसी विवाद के सूझ-बूझ से परिस्थिति को संभाला, वैसे ही आपको भी लीक से हटकर (Out of the box) सोचना सीखना चाहिए।

2. मुफ्तखोरी के जाल और अत्यधिक लालच से दूर रहें

- **सुझाव:** अपने छात्र जीवन में शॉर्टकट या बिना मेहनत के मिलने वाले परिणामों (जैसे परीक्षा में नकल, सट्टेबाज़ी या ऑनलाइन गेमिंग ऐप से तुरंत पैसा कमाना) के पीछे न भागें।
- **कहानियों से सीख:** *'बर्तनों का बच्चा'* कहानी याद रखें; जो चीज़ बिना मेहनत या मुफ़्त में मिलती दिख रही है, वह अंत में आपकी मूल संपत्ति (समय, पैसा या करियर) भी छीन सकती है।

3. 'बॉडी शेमिंग' और सोशल मीडिया पर किसी का मज़ाक उड़ाने से बचें

- **सुझाव:** स्कूल या कॉलेज में किसी सहपाठी के रंग, रूप, आर्थिक स्थिति, कमज़ोर अंग्रेजी या कपड़ों का उपहास कभी न उड़ाएँ।
- **कहानियों से सीख:** *'मजाक की भारी कीमत'* यह सिखाती है कि हमारी एक असंवेदनशील टिप्पणी किसी को गहरे अवसाद में धकेल सकती है। साथ ही, *'मंदिर की छत पर ऊँट'* यह याद दिलाती है कि साधारण दिखने वाले व्यक्ति के भीतर भी असाधारण मेधा हो सकती है, इसलिए हर सहपाठी का सम्मान करें।

4. संवाद में शालीनता और तर्क की शक्ति अपनाएं

- **सुझाव:** यदि कोई आपकी बात से असहमत हो या आपको डांटे, तो गुस्सा करने या अभद्र भाषा का प्रयोग करने के बजाय शांत रहकर अपनी बात तर्कों के साथ रखें।

- **कहानियों से सीख:** *'अवसेरी और भोर का संवाद'* की तरह अपनी भाषा में 'मिठास' (शक्कर) घोलना सीखें। कटुता का उत्तर बौद्धिक शालीनता से देना ही एक अच्छे विद्यार्थी की पहचान है।

5. लक्ष्य के प्रति अडिग संकल्प (Resilience) रखें

- **सुझाव:** करियर या पढ़ाई में आने वाली शुरुआती असफलताओं (कम अंक आना, प्रोजेक्ट फेल होना) से घबराकर हिम्मत न हारें। मानसिक रूप से मजबूत बनें।
- **कहानियों से सीख:** *'आस्था की जीत'* प्रसंग से प्रेरणा लें। यदि आपका संकल्प दृढ़ है, तो विपरीत परिस्थितियाँ भी आपको आपके लक्ष्य (सफलता) तक पहुँचने से नहीं रोक सकतीं।

6.4.2 शिक्षकों के लिए सुझाव

शिक्षकों के लिए ये कहानियाँ पारंपरिक 'चॉक और टॉक' (Chalk and Talk) पद्धति से हटकर **'अनुभवात्मक शिक्षण' (Experiential Learning)** को बढ़ावा देने का बेहतरीन टूल हैं। शिक्षकों के लिए विस्तृत सुझाव निम्नलिखित हैं:

1. 'स्टोरीटेलिंग' (Storytelling Method) को शिक्षण का माध्यम बनाएं

- **सुझाव:** कक्षाओं को उबाऊ बनाने के बजाय नैतिक मूल्यों, गणितीय तर्कों या सामाजिक विज्ञान को समझाने के लिए अवसेरी जैसी क्षेत्रीय लोक-कथाओं का उपयोग करें।
- **प्रयोग:** जब बच्चों को लालच या धोखाधड़ी के बारे में पढ़ाना हो, तो *'बर्तनों का बच्चा'* या *'न हींग लगी न फिटकरी'* कहानी सुनाकर उनसे खुद निष्कर्ष निकालने को कहें। इससे बच्चों की सुनने और समझने की क्षमता बढ़ेगी।

2. कक्षा में 'मूल्य-आधारित शिक्षा' (Value Education) पर ज़ोर दें

- **सुझाव:** आज के तकनीकी युग में जहाँ बच्चे सोशल मीडिया पर 'प्रैंक वीडियो' देखकर गुमराह हो रहे हैं, वहाँ शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि वे उन्हें 'मनोरंजन की लक्ष्मण रेखा' समझाएँ।
- **प्रयोग:** *'मजाक की भारी कीमत'* कहानी के माध्यम से कक्षा में **'साइबर बुलिंग' (Cyber Bullying) और 'सहानुभूति' (Empathy)** पर ग्रुप डिस्कशन (Group Discussion) आयोजित करें। बच्चों को समझाएँ कि किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाना मज़ाक नहीं, मानसिक क्रूरता है।

3. 'केस स्टडी' (Case Study) के रूप में तार्किक क्षमता बढ़ाएं

- **सुझाव:** परीक्षाओं में केवल सीधे प्रश्न पूछने के बजाय, अवसेरी की कहानियों जैसी व्यावहारिक परिस्थितियाँ (Scenarios) बच्चों के सामने रखें और उनसे पूछें कि "अगर आप यहाँ होते, तो क्या निर्णय लेते?"

- **प्रयोग**: *'सबके पेट होते हैं'* कहानी सुनाकर बच्चों को समझाएँ कि '**अफवाहें**' **(Fake News)** समाज को कैसे नुकसान पहुँचाती हैं और एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में उन्हें किसी भी बात का 'फैक्ट-चेक' (सत्यता की जांच) कैसे करना चाहिए।

4. हर छात्र को समान दृष्टि से देखें (Inclusivity)

- **सुझाव**: अक्सर शिक्षक अनजाने में केवल साफ-सुथरे, कुशाग्र या समृद्ध पृष्ठभूमि के बच्चों (Frontbenchers) पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, जिससे अंतर्मुखी या साधारण पृष्ठभूमि के बच्चे उपेक्षित महसूस करते हैं।
- **कहानियों से सीख**: *'मंदिर की छत पर ऊँट'* और *'सबके पेट होते हैं'* कहानियाँ याद रखें। किसी भी छात्र की बाहरी वेशभूषा या सादगी से उसकी बुद्धि का आकलन न करें। कक्षा में समावेशी (Inclusive) माहौल बनाएं ताकि कोई भी बच्चा 'अवसेरी' की तरह उपेक्षित महसूस न करे।

5. भाषा शिक्षण में 'व्यंग्य' और 'दोहरे अर्थ' का भाषाई ज्ञान दें

- **सुझाव**: हिंदी या क्षेत्रीय भाषा पढ़ाते समय मुहावरों, लोकोक्तियों और शब्दों के विभिन्न अर्थों (शब्दाशक्तियों - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) को समझाने के लिए इन प्रसंगों का लाइव उदाहरण दें।
- **प्रयोग**: *'सबके पेट होते हैं'* प्रसंग का उदाहरण देकर बच्चों को समझाएँ कि एक ही वाक्य के अलग-अलग संदर्भों में कैसे अलग अर्थ (Double Meaning) निकल सकते हैं और भाषा का सही इस्तेमाल कितना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

यदि **विद्यार्थी** अवसेरी के चरित्र से *व्यावहारिक चतुरता, स्वाभिमान और मानसिक दृढ़ता* सीखें, और **शिक्षक** इन प्रसंगों को एक *शिक्षण उपकरण (Teaching Tool)* के रूप में इस्तेमाल करें, तो शिक्षा केवल डिग्रियां बांटने का साधन नहीं रहेगी, बल्कि विद्यार्थियों को एक जागरूक, संवेदनशील और चतुर नागरिक बनाने का माध्यम बनेगी।

1. शिक्षा बोर्डों के लिए सुझाव

- **1.1 पूरक पाठ्यपुस्तक का निर्माण**: एनसीईआरटी (NCERT) और उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (UPMSP) को प्राथमिक एवं उच्च-प्राथमिक स्तर (कक्षा 3 से 8) के लिए 'बुंदेलखंड के बीरबल: अवसेरी के किस्से' नाम से एक पूरक पुस्तिका तैयार करनी चाहिए। यह एनईपी 2020 के स्थानीयकरण के लक्ष्य को पूरा करेगी।
- **1.2 भाषा और कौशल समेकित अध्याय**: भाषा (हिंदी) की मुख्य पुस्तकों में '**बतासे का न्याय**' और '**सबके पेट होते हैं**' जैसी कहानियों को 'संवाद कौशल' और 'तार्किक सोच' विकसित करने के लिए स्वतंत्र अध्याय के रूप में शामिल किया जाए।
- **1.3 खेल-आधारित मूल्यांकन विधि**: परीक्षा प्रणालियों में केवल रटने वाले प्रश्नों के स्थान पर अवसेरी की कहानियों पर आधारित 'सिचुएशनल जजमेंट प्रश्न' (जैसे: यदि आप अवसेरी

की जगह होते तो उस संकट का क्या हल निकालते?) पूछे जाएँ, ताकि बच्चों की वास्तविक बुद्धि का आकलन हो सके।

2. संस्कृति मंत्रालय के लिए सुझाव

- **2.1 डिजिटल मौखिक इतिहास आर्काइव (Digital Oral History Archive):** संस्कृति मंत्रालय (केंद्रीय एवं राज्य स्तर) को रसिन गाँव के बुजुर्गों और पारंपरिक किस्सागो के माध्यम से अवसेरी की इन सभी मौखिक विधाओं को ऑडियो-वीडियो प्रारूप में रिकॉर्ड करके 'राष्ट्रीय डिजिटल सांस्कृतिक कोष' में हमेशा के लिए सुरक्षित करना चाहिए।
- **2.2 बुंदेली लोक-कलाकार फैलोशिप:** जो स्थानीय कलाकार अवसेरी की हास्य-व्यंग्य शैलियों को अपनी वाचिक परंपरा में जीवित रखे हुए हैं, उन्हें संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्तीय सहायता, मासिक पेंशन या 'अवसेरी लोक-मेधा फैलोशिप' दी जाए ताकि यह कला अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित हो सके।
- **2.3 क्षेत्रीय अवसेरी महोत्सव:** चित्रकूट के रसिन गाँव को केंद्र बनाकर प्रतिवर्ष एक 'आंचलिक लोक-हास्य एवं विट महोत्सव' आयोजित किया जाए, जहाँ स्कूली बच्चों और लोक-कलाकारों के बीच अवसेरी के नाट्य रूपांतरण की प्रतियोगिताएं आयोजित हों।

3. नीति-निर्माताओं और पाठ्यक्रम डिजाइनरों के लिए सुझाव

- **3.1 'लाइफ-स्किल्स' (Life Skills) पाठ्यक्रम में समावेशन:** एससीईआरटी (SCERT) के नीति-निर्माताओं को स्कूल शिक्षा के 'लाइफ स्किल्स' मॉड्यूल में अवसेरी के दृष्टिकोण को स्थान देना चाहिए। '**बर्तनों का बच्चा**' और '**मटकी का रहस्य**' जैसी कहानियों का उपयोग 'क्राइसिस मैनेजमेंट' और कम साधनों में जीने की कला (Resource Optimization) सिखाने के लिए केस-स्टडी के रूप में किया जाए।
- **3.2 बाल-मनोविज्ञान और नैतिक संवेदनशीलता का संतुलन:** नीति-निर्माता जब भी इस पाठ्यक्रम को डिजाइन करें, वे '**मजाक की भारी कीमत**' कहानी को शिक्षक-प्रशिक्षण (Teacher Training Modules) का हिस्सा बनाएँ। यह कहानी शिक्षकों को यह सिखाने के लिए एक टूल बनेगी कि चतुरता और मजाक के साथ-साथ बच्चों में 'सहानुभूति' (Empathy) और नैतिक सीमाओं का विकास करना कितना अनिवार्य है।
- **3.3 कला और खिलौना आधारित शिक्षा (Art & Toy-based Pedagogy):** बाल भवन और राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थानों (SIET) के माध्यम से अवसेरी के प्रसंगों पर आधारित रंग-बिरंगी कॉमिक्स, चित्र-कथाएं और कठपुतली (Puppet Shows) के किट तैयार किए जाएं, ताकि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के बच्चे खेल-खेल में इस देसी प्रबंधन कला को सीख सकें।

6.5 आगामी शोध के लिए अनुशंसित दिशाएँ

1. अन्य आंचलिक लोक-चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

- आगामी शोधकर्ता चित्रकूट के अवसेरी के चरित्र की तुलना बुंदेलखंड के अन्य उपेक्षित या प्रसिद्ध लोक-चरित्रों (जैसे ईसुरी, घाघ और भड्डुरी, या आल्हा-ऊदल) से कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, वैश्विक या राष्ट्रीय स्तर पर अवसेरी के वाक-चातुर्य की तुलना 'अकबर-बीरबल', 'तेनालीराम', या 'मुल्ला नसीरुद्दीन' के किस्सों के साथ करके एक वृहद् तुलनात्मक सांस्कृतिक शोध ग्रंथ तैयार किया जा सकता है।

2. डिजिटल नृवंशविज्ञान और वाचिक परंपरा का प्रलेखन

- चूँकि लोक-साहित्य का एक बड़ा हिस्सा आज भी मौखिक (वाचिक) रूप में बुजुर्गों की स्मृतियों में ही सुरक्षित है, इसलिए भविष्य के शोधार्थियों को आधुनिक 'डिजिटल नृवंशविज्ञान' (Digital Ethnography) पद्धतियों का उपयोग करना चाहिए। वे चित्रकूट के अन्य सुदूर गाँवों का दौरा करके ऑडियो-विजुअल रिकॉर्डिंग, डॉक्यूमेंट्री निर्माण और 'डिजिटल आर्काइविंग' के माध्यम से इस लुप्तप्राय ज्ञान को हमेशा के लिए सहेजने पर स्वतंत्र काम कर सकते हैं।

3. लोक-साहित्य का विधागत एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण

- भविष्य के शोधार्थी बुंदेली लोक-कथाओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गहरा विश्लेषण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, '**सबके पेट होते हैं**' और '**मटकी का रहस्य**' जैसी कहानियों के आधार पर तत्कालीन समाज में व्याप्त 'जातिगत समीकरण', 'सामंतशाही व्यवस्था', और 'लैंगिक विमर्श' (Gender Discourse) जैसे गंभीर विषयों पर काम करने की प्रचुर संभावनाएं हैं, जो लोक-साहित्य के चश्मे से इतिहास को समझने में मदद करेंगी।

4. बाल-मनोविज्ञान और भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में व्यावहारिक शोध

- शिक्षाशास्त्र (Education) और मनोविज्ञान के शोधार्थी इस दिशा में प्रयोगात्मक शोध (Experimental Research) कर सकते हैं। वे दो अलग-अलग छात्र समूहों (Control and Experimental Groups) को चुनकर यह देख सकते हैं कि अवसेरी की कहानियों को कॉमिक्स या नाटकों के माध्यम से पढ़ाने पर बच्चों के भाषाई विकास (Language Acquisition) और संज्ञानात्मक क्षमता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह 'साइकोलिंग्विस्टिक्स' के क्षेत्र में एक नया आयाम जोड़ेगा।

5. बुंदेली मुहावरों, लोकोक्तियों और विट (Wit) का भाषाई विश्लेषण

- भाषा-विज्ञान (Linguistics) के शोधार्थी अवसेरी के किस्सों में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट भाषाई पैटर्न्स, 'दोहरे अर्थ वाले संवादों' (Double Entendre) और 'वाक-वैदग्ध्य' (Wit and Humor) पर तकनीकी शोध कर सकते हैं। बुंदेली बोली की वाक्य-संरचना और हाज़िरजवाबी के व्याकरण को समझने के लिए अवसेरी के संवाद (जैसे— *"तुम गाय-भैंसी रखिहा, तो अवसेरी भी खायी"* या *"सूट के साथ शक्कर का स्वाद"*) एक बेहतरीन डेटाबेस का काम कर सकते हैं।

6. लोक-साहित्य का व्यावसायिक और रचनात्मक रूपांतरण

- मास-कम्युनिकेशन, एनिमेशन और थियेटर/रचनात्मक लेखन के शोधार्थियों के लिए यह क्षेत्र बेहद समृद्ध है। आगामी शोधार्थी अवसेरी के इन ११ किस्सों (जैसे *मंदिर की छत पर ऊँट, बर्तनों का बच्चा*) को आधुनिक वेब-सीरीज, पॉडकास्ट, एनिमेटेड फिल्मों, या बाल-नाटकों की स्क्रिप्ट में बदलने की संभावनाओं और उसकी व्यावसायिक स्वीकार्यता पर प्रोजेक्ट-आधारित शोध कर सकते हैं।

निष्कर्ष

भावी शोधकर्ताओं के लिए अंतिम संदेश यह है कि बुंदेली लोक-साहित्य केवल अतीत की जुगाली नहीं है, बल्कि यह भविष्य की समस्याओं का 'देशी समाधान' है। अवसेरी का चरित्र इस बात का गवाह है कि हमारी लोक-परंपराओं में ज्ञान का असीमित भंडार है, जिसे आधुनिक अनुसंधान पद्धतियों (Modern Research Methodologies) के माध्यम से वैश्विक पटल पर लाना आज के शोधार्थियों का परम दायित्व है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

Dhiman, H. (2011). *Poetics and politics of popular Indian tales: A study of the Panchatantra, Akbar, Birbal and Tenali Raman* [Doctoral dissertation, Punjab University]. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/82563

Dutta, T. (2020). *German folktales and fairy tales versus Indian lok kathas and rup kathas: A feminist study with special reference to Brothers Grimm and Dakshinaranjan Mitra Majumdar* [Doctoral dissertation, Raiganj University]. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/336886

Hevavitanagmage, U. R. (2004). *Baudh Jatak kathao tatha Hindi lok katha ka tulnatmak adhyayan* [Doctoral dissertation, Jawaharlal Nehru University]. Shodhganga. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/19375

Agnihotri, M. (2018). *Mulla Nasruddin in cinema. International Journal of Creative Research Thoughts, 6*(2), 733–735. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT1812322.pdf

Marak, L. R. (2012). *Myth and archetypes in Garo folk narratives: A select Study* [Doctoral dissertation, North-Eastern Hill University]. Shodhganga. http://hdl.handle.net/10603/194771

कुमारी, कृष्णा। (2019)। *बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा का रचना-कर्म: एक समालोचनात्मक अध्ययन* [पी-एच.डी. शोध प्रबंध, कोटा विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। https://share.google/7acV3VtaX6lPcPNKrf

ठाकुर, सरोज कुमार। (2015)। *मैथिली लोक कथा में सांस्कृतिक जीवन* [पी-एच.डी. शोध प्रबंध, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/419078

मीना, धनेश कुमार। (2025)। *विदेशी, भारतीय और पश्चिम राजस्थानी लोक साहित्य: एक तुलनात्मक अध्ययन। International Journal of Creative Research Thoughts, 13*(3), 782–803। https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2503328.pdf

यादव, देवेन्द्र कुमार। (2021)। *प्रमुख संस्कृत रूपकों में विदूषक: एक परिशीलन* [पी-एच.डी. शोध प्रबंध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/437195

शर्मा, नीति। (2001)। *राजा बीरबल – एक मूल्यांकन* [पी-एच.डी. शोध प्रबंध, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/361856

सिंह, अजीत कुमार। (2022)। *केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन* [एम.एड. लघु शोध-प्रबंध, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा (उ. प्र.)]।

परिशिष्ट अ. प्रतिदर्श में चयनित व्यक्ति



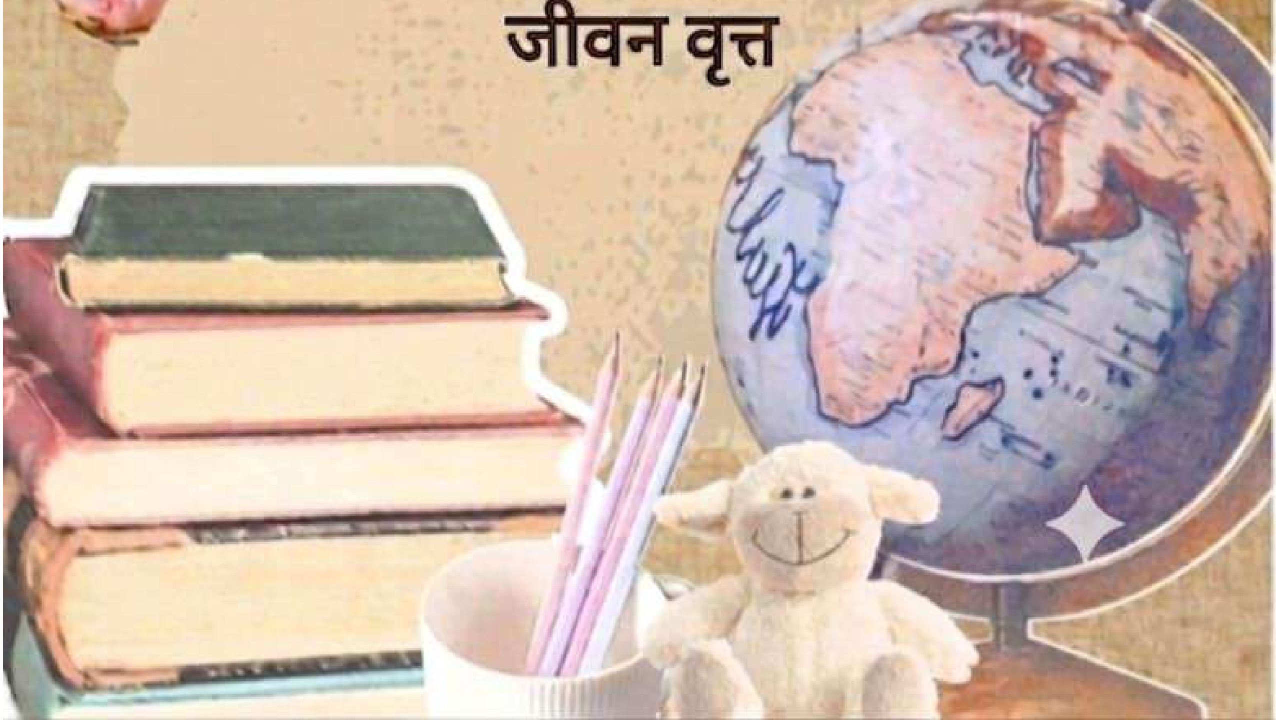
परिशिष्ट

परिशिष्ट-अ
प्रतिदर्श में चयनित व्यक्ति

परिशिष्ट-स
THE TALES OF AVSERI

परिशिष्ट-ब
रसिन (चित्रकूट) के बीरबल
'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ

परिशिष्ट-द
जीवन वृत्त



परिशिष्ट स. THE TALES OF AVSERI

THE TALES OF AVSERI

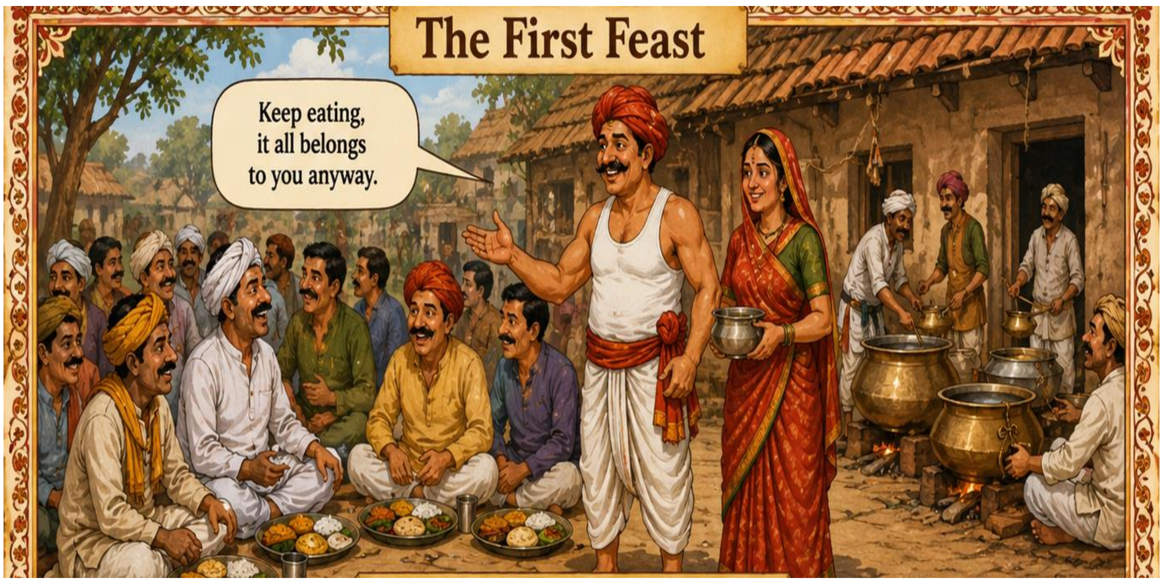


INDEX

1. The Child of the Vessels

A long time ago, in the village of **Rasin** (Chitrakoot), there lived a man named **Avaseri** with his wife. They were a childless couple. Avaseri was a simple farmer who had a deep passion for wrestling (*pahalwani*). He was extremely cheerful and social by nature, which made him a favorite in the village. Whether the occasion was big or small, he was always invited, and he would always go out of his way to help with the work. In this way, the couple enjoyed many feasts at the invitations of their fellow villagers.

One day, the villagers said, "Brother Avaseri, you enjoy feasts everywhere, but you never host one yourself!" Initially, he tried to avoid it, but after constant teasing, he agreed, saying, "Fine, brothers, I will host a feast on such-and-such a day."



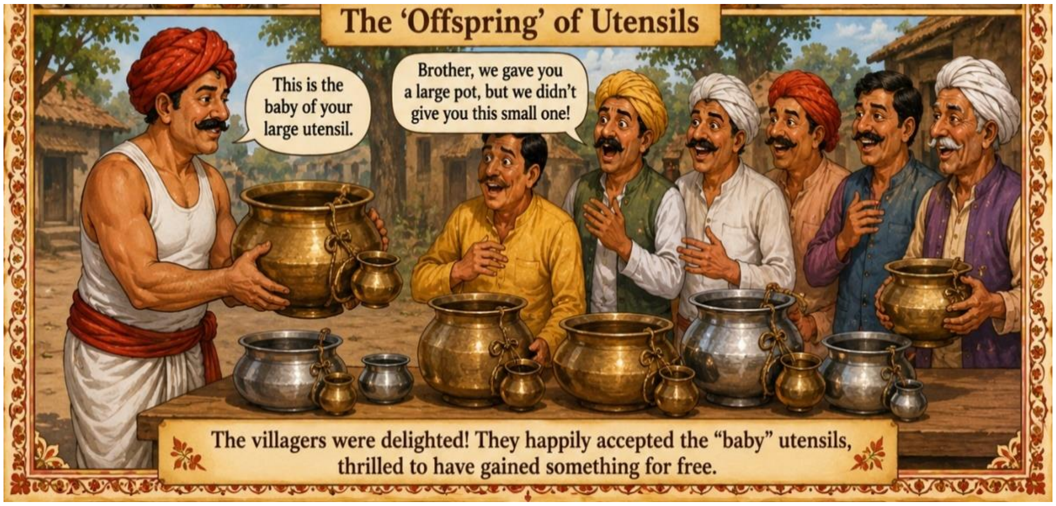
As per the village custom, whenever someone hosted an event, the entire village contributed by lending their supplies, utensils, and furniture. People brought everything to his house, helped cook, and had a grand time. The food was excellent. When the guests praised him, Avaseri humbly said, **"Keep eating, it all belongs to you anyway."**

A few days later, when he went to return the utensils, he did something peculiar. Along with every large vessel he had borrowed, he attached a tiny little utensil. The villagers were astonished. They said, "Brother, we gave you a large pot, but we didn't give you this small one."

Avaseri replied calmly, **"This is the baby of your large utensil."** The villagers were delighted!

They happily accepted the "baby" utensils, thrilled to have gained something for free.

A year or so passed, and the villagers, remembering the previous feast (and the free gifts), began pestering him again. "Avaseri, it's been a long time! Host another feast. The last one was



wonderful!" Avaseri replied, "If you insist, then so be it. You are all invited."

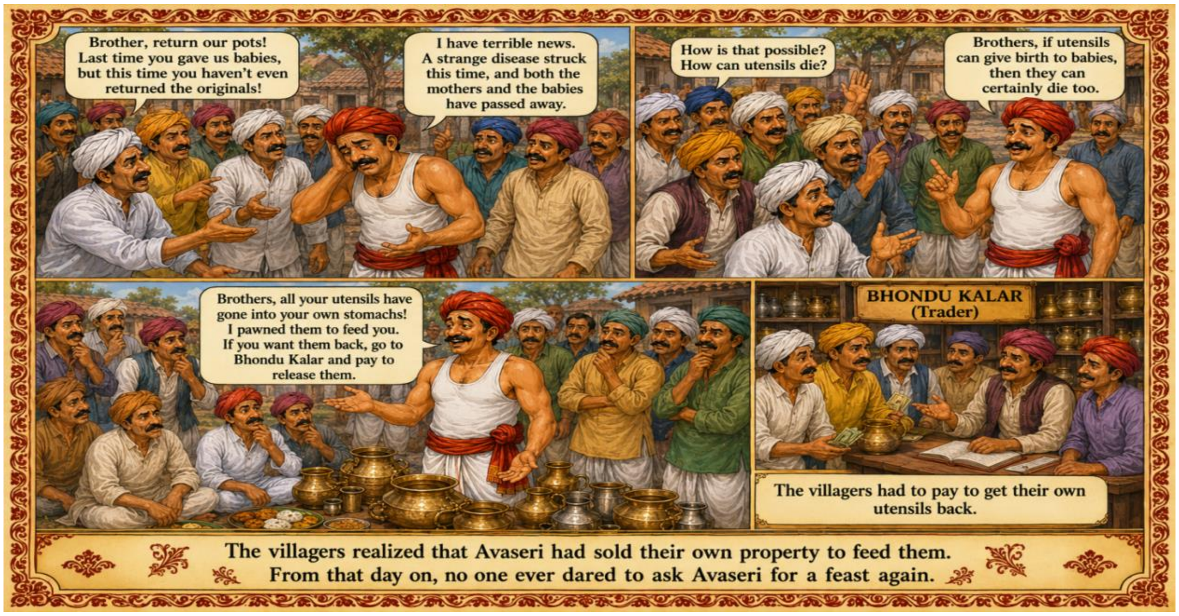
This time, expecting more "babies," the villagers enthusiastically gave him even more supplies—beds, linens, large cauldrons, and expensive utensils. There was a local trader named **Bhondu Kalar** who dealt in various goods. Avaseri took all the borrowed utensils, pawned them to Bhondu Kalar, and used the money to buy flour, vegetables, oil, ghee, and spices. He hosted a magnificent feast for everyone. Again, he said,

"Eat to your heart's content, brothers. It all belongs to you." Days turned into weeks, and weeks into months, but Avaseri did not return the utensils. Eventually, the villagers went to his house and demanded, "Brother, return our pots! Last time you gave us babies, but this time you



haven't even returned the originals!"

Avaseri put on a mournful face and said, **"I have terrible news. A strange disease struck this**



time, and both the mothers (large pots) and the babies (small pots) have passed away."

The villagers were outraged. "How is that possible? How can utensils die?"

Avaseri replied logically, **"Brothers, if utensils can give birth to babies, then they can certainly die too."**

The villagers finally realized they had been tricked. When they begged him for their belongings, he told them the truth: **"Brothers, all your utensils have gone into your own stomachs! I pawned them to feed you. If you want them back, go to Bhondu Kalar and pay to release them."**

The villagers realized that Avaseri had sold their own property to feed them. They had to pay to get their own utensils back, and from that day on, no one ever dared to ask Avaseri for a feast again.

2. The Justice of the Sugar-Drop

In the village of **Rasin** (Chitrakoot), there lived a man named **Avaseri**, a person of extraordinary talent, sharp wit, and a brilliant presence of mind. In those days, people kept horses as a primary means of transport; Avaseri owned a sturdy local mare named ‘Gved.’

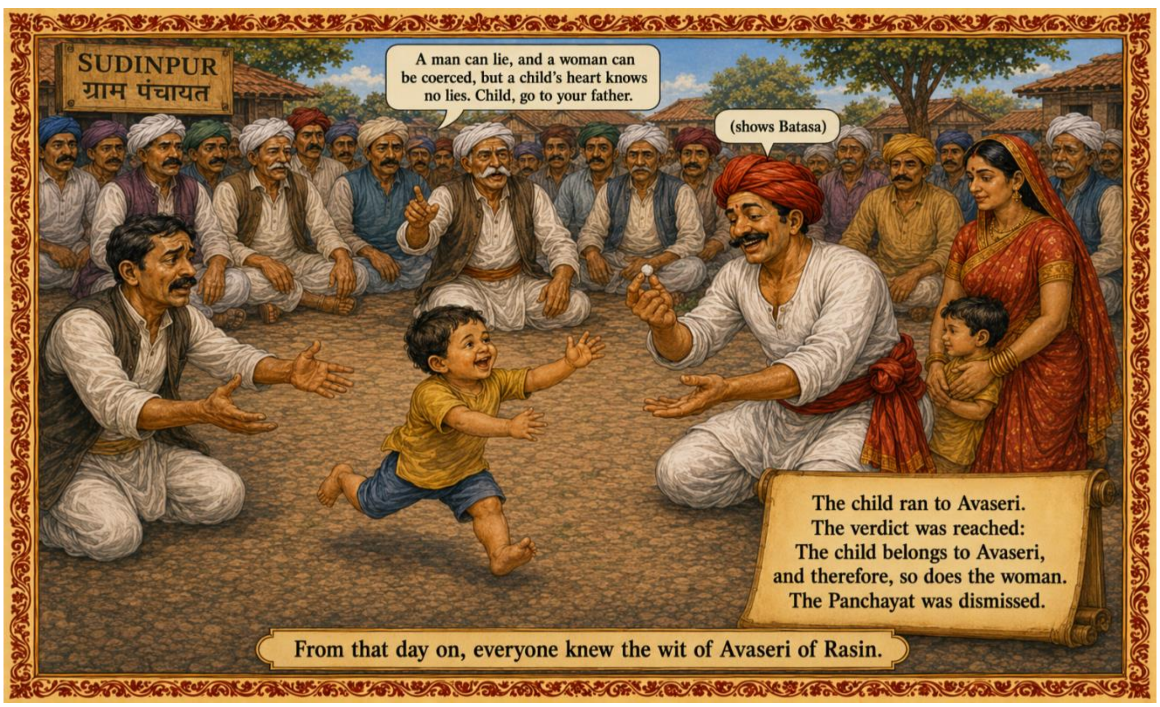
One morning, while Avaseri was outside the village cutting grass for his mare, a couple from outside the region passed by. The man walked ahead, followed by his wife, who carried a small child in her arms.

As they walked, the man remarked to his wife, *"Listen, everyone says the people of Rasin are great jokers and tricksters. But look at us—we are halfway through the village and not a single person has played a prank on us. It seems the rumors were false."*

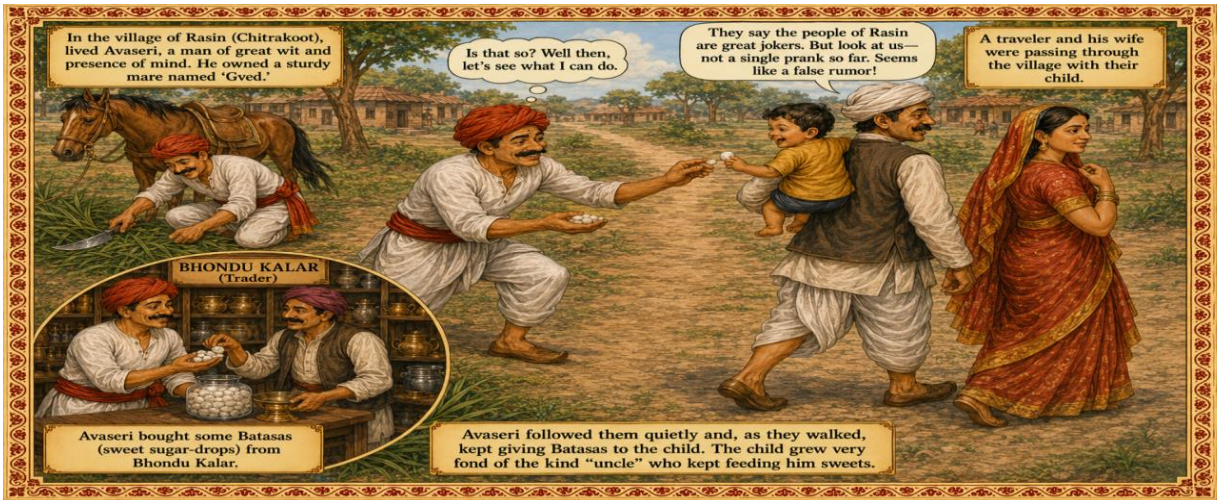
Avaseri's sharp ears caught this conversation. He smiled to himself and thought, *"Is that so? Well then, let's see what I can do."*

He immediately stopped his work, rushed to the shop of **Bhondu Kalar**, bought a handful of *Batasas* (sweet sugar-drops), and began following the couple stealthily. The child was resting on the father's shoulder, facing backward. As they walked, Avaseri would quietly hand a sugar-drop to the child. The child would eat it, and Avaseri would offer another. By the time they had covered a distance of two miles, the child had grown quite fond of this mysterious "uncle" who kept feeding him sweets.

They eventually reached the center of a neighboring village called **Sudinpur**. Suddenly, Avaseri ran ahead and began wailing loudly, *"Help! Help, brothers! Look at this man—he is running away with my wife!"*Hearing his cries, a massive crowd gathered. The villagers surrounded the couple, and soon, a formal village council (*Panchayat*) was convened. The elders asked the traveler, *"How dare you take another man's wife?"*



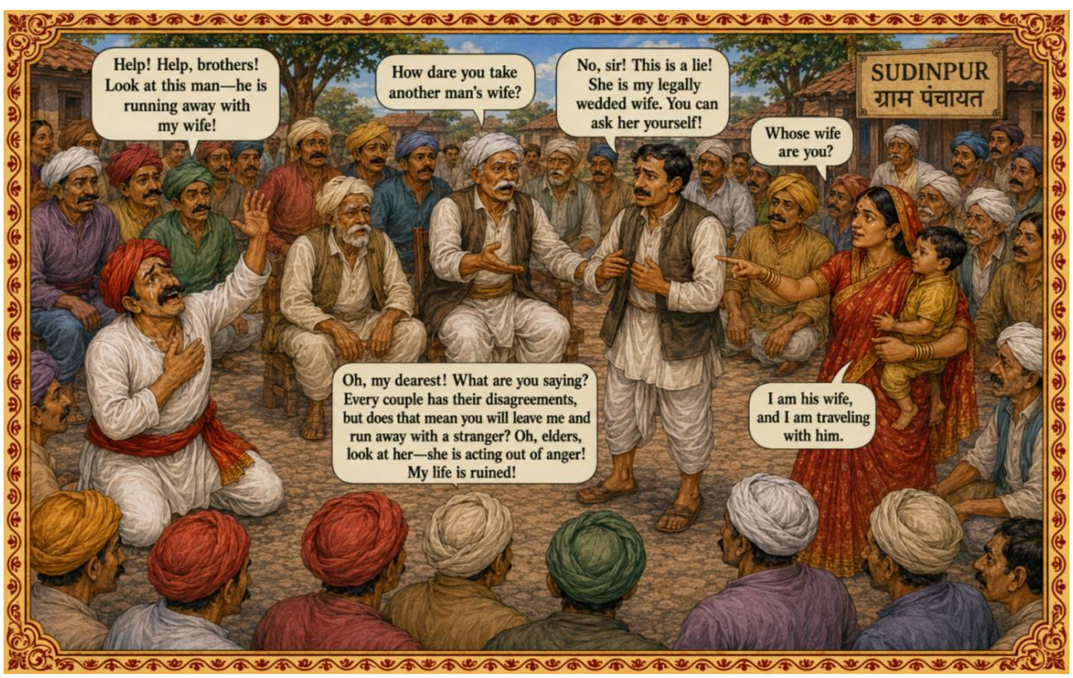
The man was terrified. *"No, sir! This is a lie! She is my legally wedded wife. You can ask her*



yourself!"

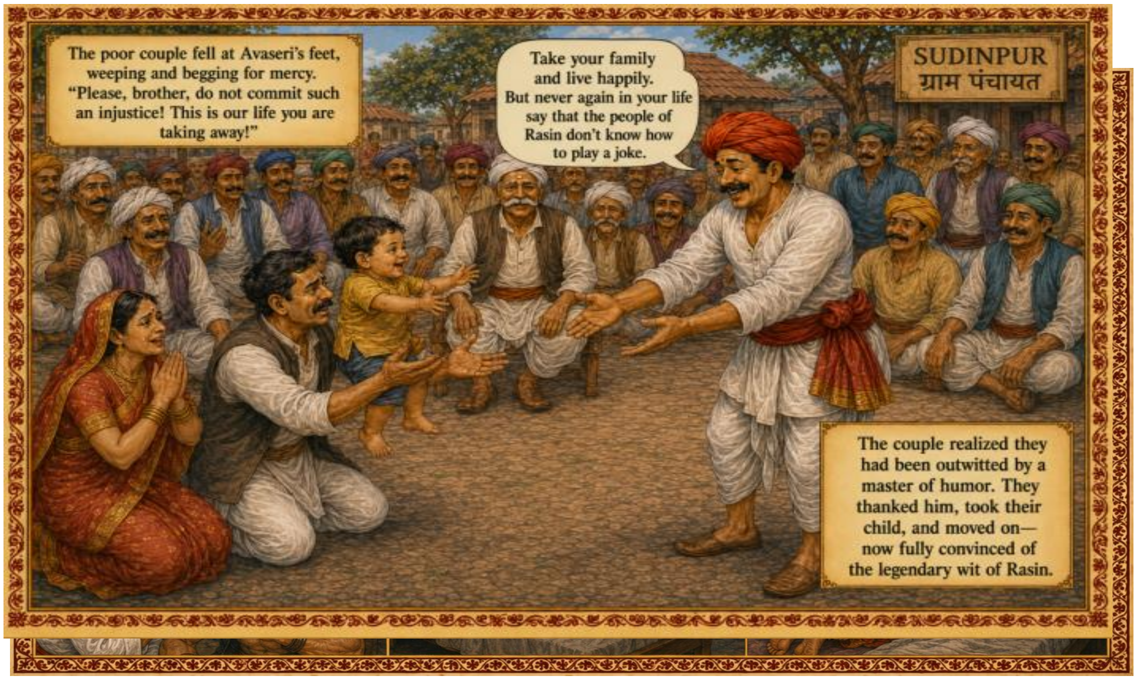
The elders turned to the woman. *"Whose wife are you?"* she pointed to the traveler and said, *"I am his wife, and I am traveling with him."*

Avaseri immediately broke into a theatrical sob. *"Oh, my dearest! What are you saying? Every couple has their disagreements, but does that mean you will leave me and run away with a stranger? Oh, elders, look at her—she is acting out of anger! My life is ruined!"* He began to weep



so convincingly that the elders were utterly confused.

Unable to reach a conclusion based on the adults' testimony, the elders came up with a final test. *"A man can lie, and a woman can be coerced,"* they reasoned, *"but a child's heart knows no lies. We shall let the child decide who his father is."*



They sat the traveler on one side and Avaseri on the other. The child was placed in the middle. The elders commanded, *"Child, go to your father."*

The traveler reached out his arms, pleading with his eyes. However, Avaseri subtly reached into his pocket and showed the child a *Batasa*. Recognizing the source of the sweets he had been enjoying for the last two miles, the child squealed with joy and ran straight into Avaseri's arms, hugging him tightly. The verdict was reached: The child belongs to Avaseri, and therefore, so does the woman. The Panchayat was dismissed.

The poor couple fell at Avaseri's feet, weeping and begging for mercy. *"Please, brother, do not commit such an injustice! This is our life you are taking away!"* Avaseri stopped his act, smiled warmly, and handed the child back to them. He looked at the man and said:

"Take your family and live happily. But never again in your life say that the people of Rasin don't know how to play a joke."

The couple realized they had been outwitted by a master of humor. They thanked him, took their child, and moved on—now fully convinced of the legendary wit of Rasin.

<u>3. The Heavy Price of a Prank</u>

Avseri was a man of legendary wit; the entire village was in awe of his cleverness. His popularity extended far beyond the borders of Rasin. One day, his wife said to him, "You play pranks on everyone in the world, but you have never played a joke on me." At first, Avaseri brushed it off,

but when she persisted and insisted several times, he finally said, "Fine, we shall see when the time comes."

Some time passed, and the wife eventually forgot about her request. One day, her brother (Avaseri's brother-in-law) arrived at their home to take his sister back to her parental home for a visit. As is the tradition, he was welcomed with great warmth and served a grand feast.

While they were relaxing after the meal, the brother-in-law noticed Avaseri looking a bit lean and asked, "Brother-in-law, why do you look so weak and haggard these days?"

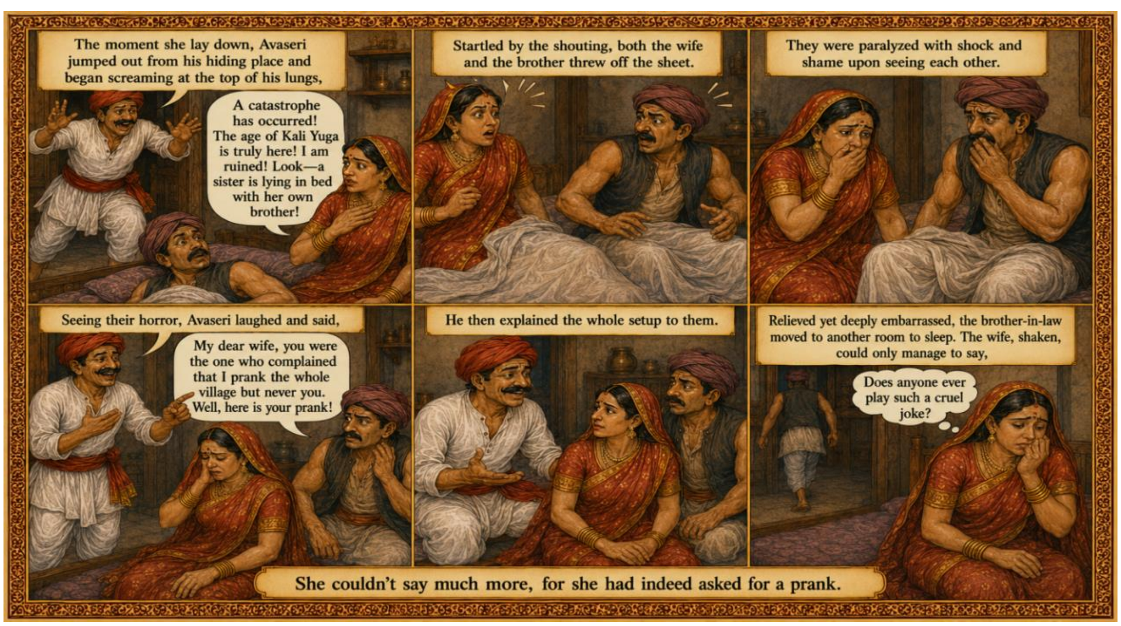
Avaseri leaned in and whispered a lie, "There is a witch who haunts me every night. She demands that I sleep with her. I refuse her constantly, but she won't listen."

The brother-in-law, a proud man who dabbled in wrestling, stood up and said, "If that’s the case, I will handle her tonight. What is the use of my strength if I cannot protect you?"

When night fell, Avaseri told his brother-in-law to lie down on his bed. "You sleep here," Avaseri instructed. "When she arrives late at night, you can deal with her. I shall go elsewhere." After the brother-in-law covered himself with a sheet and fell asleep, Avaseri quietly hid nearby to watch the drama unfold.

As per the rural custom, the wife finished feeding everyone, cleaned the hearth and the utensils, and completed her chores late into the night. Exhausted and eager to leave for her parental home early the next morning, she finally headed to the bedroom. By then, her brother was fast asleep in Avaseri’s place, completely covered by the bedsheet.

Following the cultural tradition of a devoted wife, she began pressing her "husband’s" feet as he



slept. After a few minutes of service, she lay down on the bed beside him to sleep.

The moment she lay down, Avaseri jumped out from his hiding place and began screaming at the top of his lungs, "A catastrophe has occurred! The age of *Kali Yuga* is truly here! I am ruined! Look—a sister is lying in bed with her own brother!"

Startled by the shouting, both the wife and the brother threw off the sheet. They were paralyzed with shock and shame upon seeing each other.

Seeing their horror, Avaseri laughed and said, "My dear wife, you were the one who complained that I prank the whole village but never you. Well, here is your prank!"

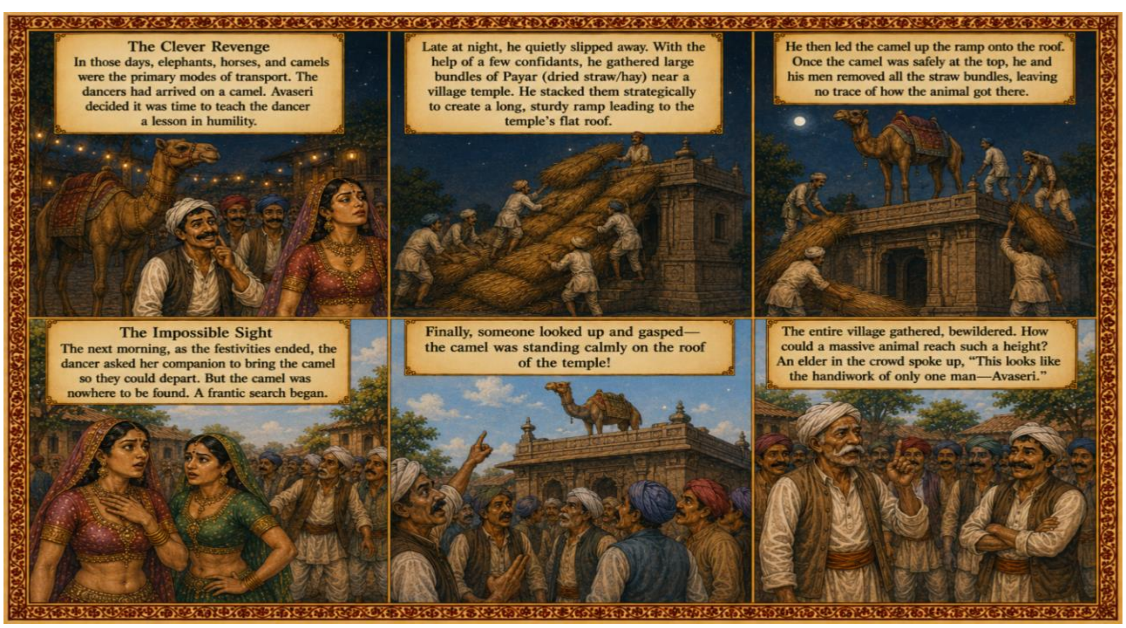
He then explained the whole setup to them. Relieved yet deeply embarrassed, the brother-in-law moved to another room to sleep. The wife, shaken, could only manage to say, "Does anyone ever play such a cruel joke?" She couldn't say much more, for she had indeed asked for a prank.

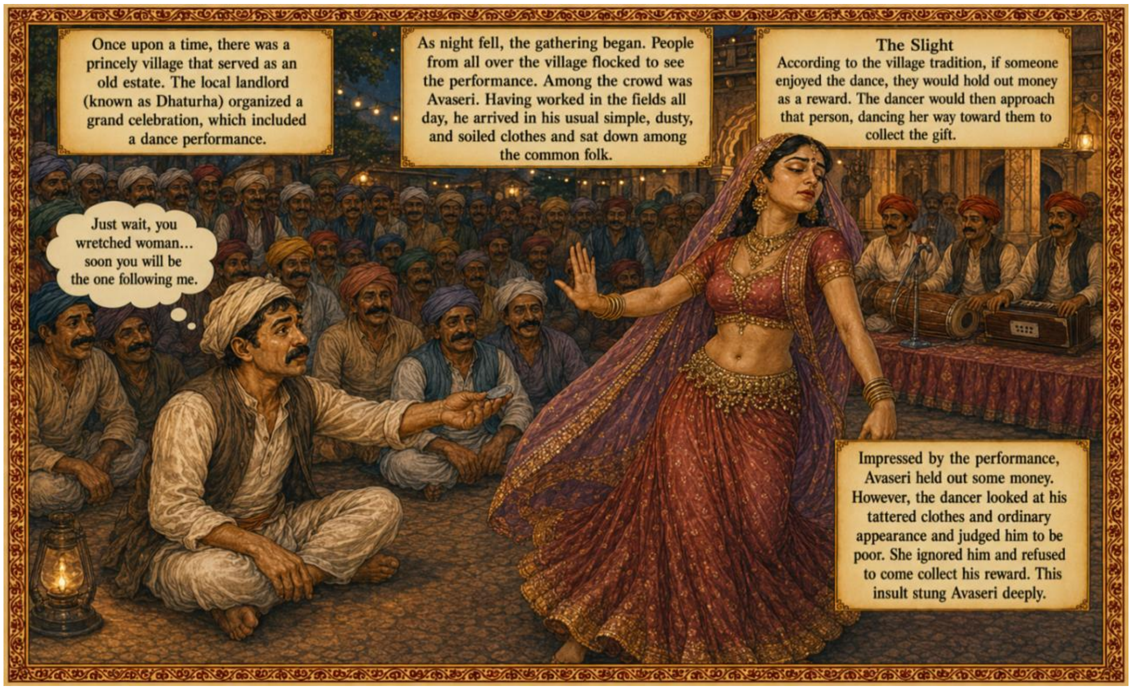
Though it was meant as a joke, the weight of the social taboo and the embarrassment was too much for her to bear. She could no longer meet the eyes of her brother, her husband, or even herself. The shame gnawed at her soul, and her conscience was shattered. Unable to live with the memory of that moment, she waited for an opportunity, went out to the well behind the house, and jumped in, ending her life. **Avaseri's wit, which had always brought laughter, ultimately led to a tragedy he could never take back.**

4. The Camel on the Temple Roof

Once upon a time, there was a princely village that served as an old estate. The local landlord (known as *Dhaturha*) organized a grand celebration, which included a dance performance. Famous dancers were invited from a nearby small hamlet called Faizabadpur.

As night fell, the gathering began. People from all over the village flocked to see the performance. Among the crowd was **Avaseri**. Having worked in the fields all day, he arrived in his usual simple, dusty, and soiled clothes and sat down among the common folk.





According to the village tradition, if someone enjoyed the dance, they would hold out money as a reward. The dancer would then approach that person, dancing her way toward them to collect the gift.

Impressed by the performance, Avaseri held out some money. However, the dancer looked at his tattered clothes and ordinary appearance and judged him to be poor. She ignored him and refused to come collect his reward. This insult stung Avaseri deeply. He muttered to himself, *"Just wait, you wretched woman... soon you will be the one following me."*

In those days, elephants, horses, and camels were the primary modes of transport. The dancers had arrived on a camel. Avaseri decided it was time to teach the dancer a lesson in humility.

Late at night, he quietly slipped away. With the help of a few confidants, he gathered large bundles of *Payar* (dried straw/hay) near a village temple. He stacked them strategically to create a



long, sturdy ramp leading to the temple's flat roof. He then led the camel up the ramp onto the roof. Once the camel was safely at the top, he and his men removed all the straw bundles, leaving no trace of how the animal got there.

The next morning, as the festivities ended, the dancer asked her companion to bring the camel so they could depart. But the camel was nowhere to be found. A frantic search began. Finally, someone looked up and gasped—the camel was standing calmly on the roof of the temple!

The entire village gathered, bewildered. How could a massive animal reach such a height? An elder in the crowd spoke up, *"This looks like the handiwork of only one man—Avaseri."*

Avaseri was summoned. He explained how the dancer had looked down upon him and refused his reward out of arrogance. When the dancer was questioned, she admitted her mistake. The villagers, valuing respect over vanity, took Avaseri’s side.

Avaseri then laid down his condition: *"I will only bring the camel down if this dancer stays with me for a day and a night (to serve as an apology)."* Having no other choice and being stranded, the dancer complied and sincerely apologized for her behavior.

True to his word, Avaseri once again had the straw bundles stacked to create a ramp. He safely guided the camel down to the ground. The dancer departed for her home, but she carried with her a life-long lesson: she never again looked down upon anyone in a gathering, no matter how simple they appeared.

Avaseri’s legendary intellect once again proved that true power lies not in fine clothes, but in a sharp mind.

5. Everyone Has a Stomach

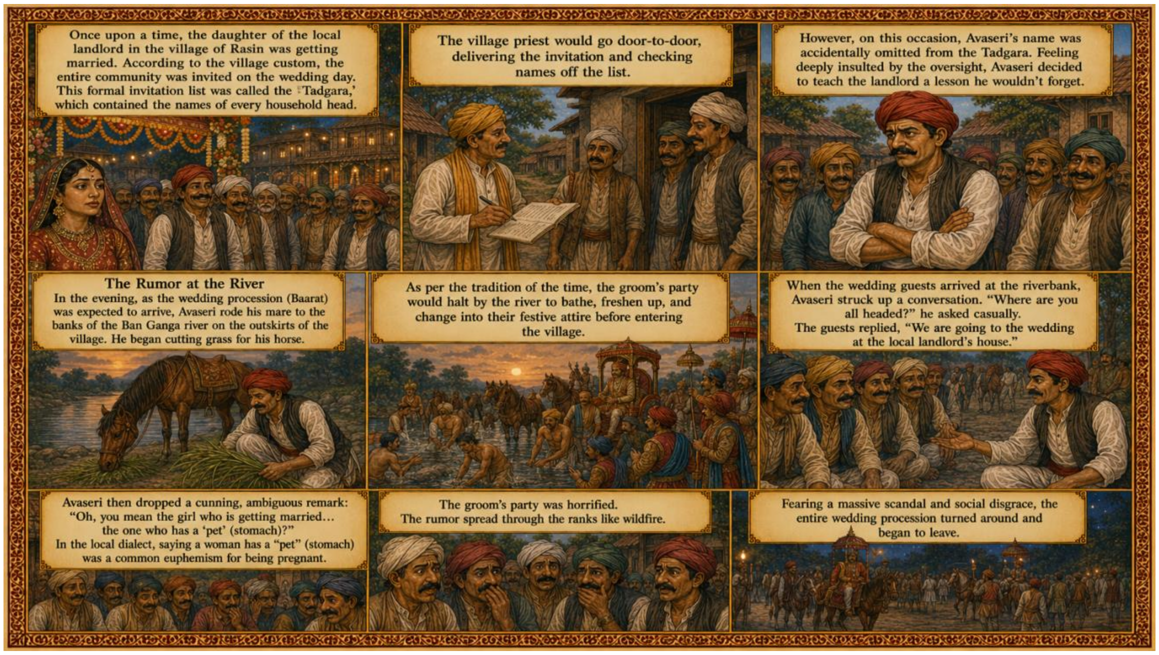
Once upon a time, the daughter of the local landlord in the village of **Rasin** was getting married. According to the village custom, the entire community was invited on the wedding day. This formal invitation list was called the **‘Tadgara,’** which contained the names of every household head. The village priest would go door-to-door, delivering the invitation and checking names off the list.

However, on this occasion, **Avaseri’s** name was accidentally omitted from the *Tadgara*. Feeling deeply insulted by the oversight, Avaseri decided to teach the landlord a lesson he wouldn't forget.

In the evening, as the wedding procession (*Baarat*) was expected to arrive, Avaseri rode his mare to the banks of the Ban Ganga river on the outskirts of the village. He began cutting grass for his horse. As per the tradition of the time, the groom's party would halt by the river to bathe, freshen up, and change into their festive attire before entering the village.

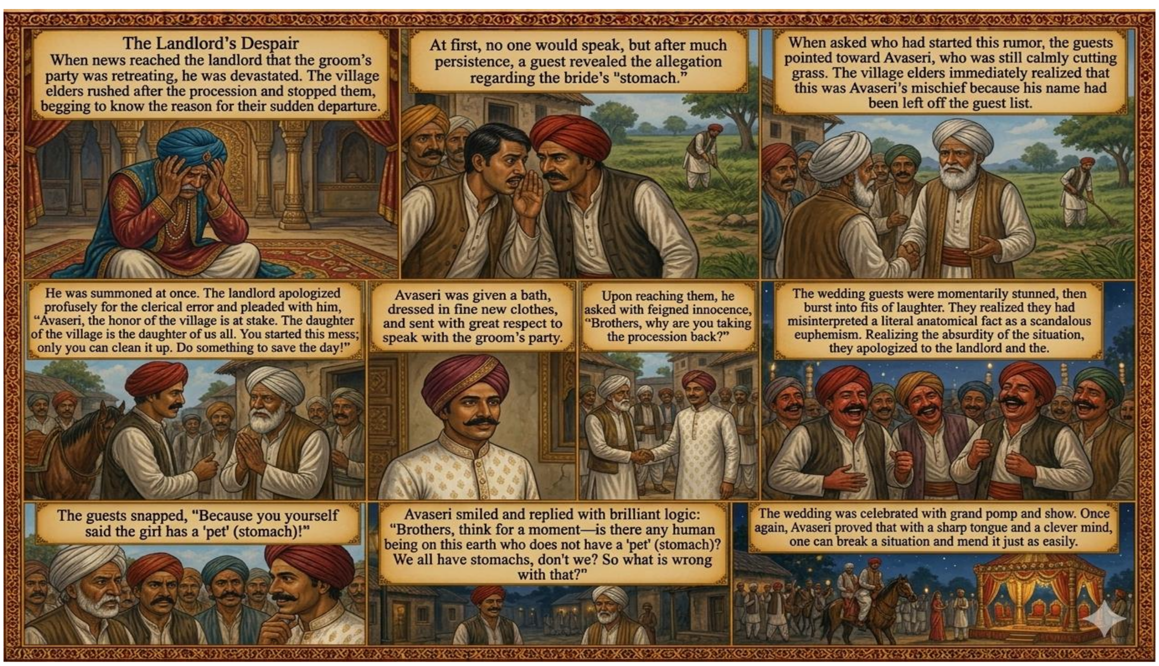
When the wedding guests arrived at the riverbank, Avaseri struck up a conversation. "Where are you all headed?" he asked casually.

The guests replied, "We are going to the wedding at the local landlord’s house."



Avaseri then dropped a cunning, ambiguous remark: **"Oh, you mean the girl who is getting married... the one who has a 'pet' (stomach)?"**

In the local dialect, saying a woman has a "pet" (stomach) was a common euphemism for being pregnant. The groom's party was horrified. The rumor spread through the ranks like wildfire. Fearing a massive scandal and social disgrace, the entire wedding procession turned around and



began to leave.

When news reached the landlord that the groom's party was retreating, he was devastated. The village elders rushed after the procession and stopped them, begging to know the reason for

their sudden departure. At first, no one would speak, but after much persistence, a guest revealed the allegation regarding the bride's "stomach." When asked who had started this rumor, the guests pointed toward Avaseri, who was still calmly cutting grass. The village elders immediately realized that this was Avaseri's mischief because his name had been left off the guest list.

He was summoned at once. The landlord apologized profusely for the clerical error and pleaded with him, "Avaseri, the honor of the village is at stake.

The daughter of the village is the daughter of us all. You started this mess; only you can clean it up. Do something to save the day!"

Avaseri was given a bath, dressed in fine new clothes, and sent with great respect to speak with the groom's party. Upon reaching them, he asked with feigned innocence, "Brothers, why are you taking the procession back?"

The guests snapped, "Because you yourself said the girl has a 'pet' (stomach)!"

Avaseri smiled and replied with brilliant logic: **"Brothers, think for a moment—is there any human being on this earth who does not have a 'pet' (stomach)? We all have stomachs, don't we? So what is wrong with that?"**

The wedding guests were momentarily stunned, then burst into fits of laughter. They realized they had misinterpreted a literal anatomical fact as a scandalous euphemism. Realizing the absurdity of the situation, they apologized to the landlord and the procession marched back to the village with great fanfare.

The wedding was celebrated with grand pomp and show. Once again, Avaseri proved that with a sharp tongue and a clever mind, one can break a situation and mend it just as easily.

6. The Victory of Faith

Once upon a time, a wave of spiritual fervor swept through the village of Rasin. People began to say, "Come, let us go on a pilgrimage!" Hearing this, **Avaseri**, despite being a poor man, felt a deep longing to visit the holy shrines. He set out on the long journey along with his fellow villagers.

The path was treacherous and full of hardships. They had only reached as far as the neighboring village of Rauli when Avaseri's health suddenly deteriorated. His companions became worried and said, "Brother Avaseri, we have only just begun our journey, and the destination is still very far. You are unwell. It is better that you return home. Once you are fully recovered, you can plan a pilgrimage some other time."

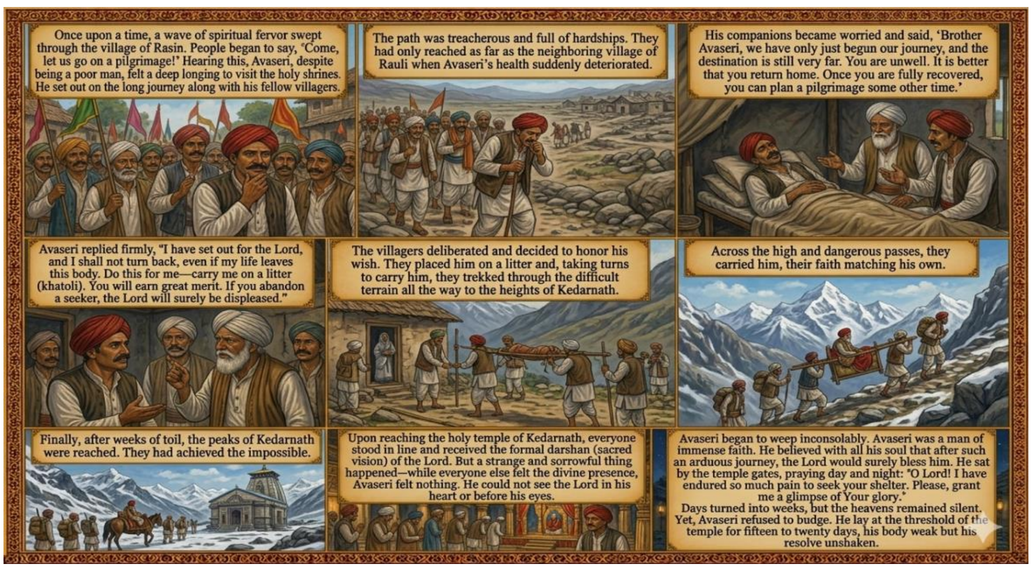
Avaseri replied firmly, "I have set out for the Lord, and I shall not turn back, even if my life leaves this body. Do this for me—carry me on a litter (*khatoli*). You will earn great merit. If you abandon a seeker, the Lord will surely be displeased."

The villagers deliberated and decided to honor his wish. They placed him on a litter and, taking turns to carry him, they trekked through the difficult terrain all the way to the heights of **Kedarnath**.

Upon reaching the holy temple of Kedarnath, everyone stood in line and received the formal *darshan* (sacred vision) of the Lord. But a strange and sorrowful thing happened—while everyone else felt the divine presence, Avaseri felt nothing. He could not see the Lord in his heart or before his eyes. He began to weep inconsolably.

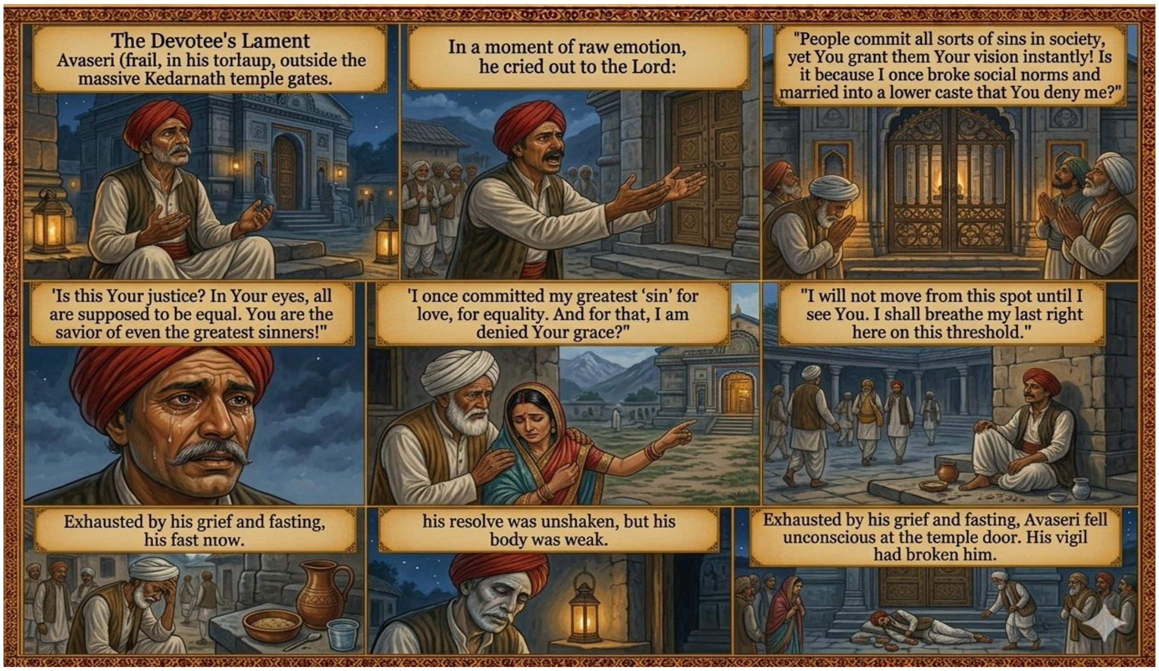
Avaseri was a man of immense faith. He believed with all his soul that after such an arduous journey, the Lord would surely bless him. He sat by the temple gates, praying day and night: "O Lord! I have endured so much pain to seek your shelter. Please, grant me a glimpse of Your glory."

Days turned into weeks, but the heavens remained silent. Yet, Avaseri refused to budge. He lay at the threshold of the temple for fifteen to twenty days, his body weak but his resolve unshaken.



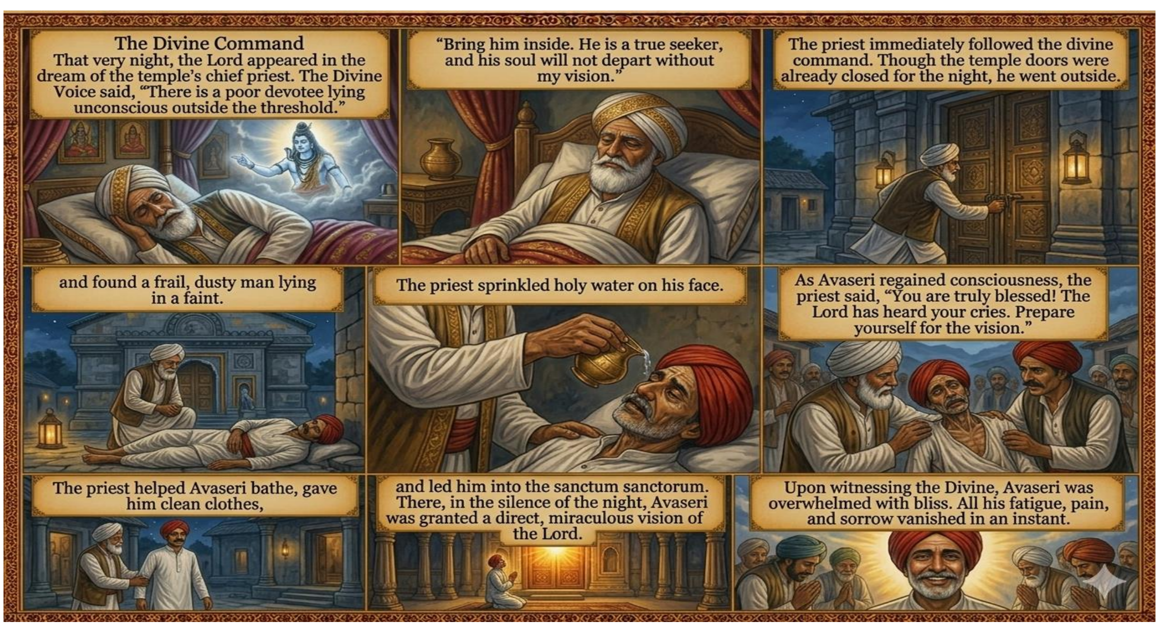
In a moment of raw emotion, he cried out to the Lord: "People commit all sorts of sins in society, yet You grant them Your vision instantly! Is it because I once broke social norms and married into a lower caste that You deny me? Is this Your justice? In Your eyes, all are supposed to be equal. You are the savior of even the greatest sinners! I will not move from this spot until I see You. I shall breathe my last right here on this threshold."

Exhausted by his grief and fasting, Avaseri fell unconscious at the temple door.



That very night, the Lord appeared in the dream of the temple's chief priest. The Divine Voice said, "There is a poor devotee lying unconscious outside the threshold. Bring him inside. He is a true seeker, and his soul will not depart without my vision."

The priest immediately followed the divine command. Though the temple doors were already closed for the night, he went outside and found a frail, dusty man lying in a faint. The priest sprinkled holy water on his face. As Avaseri regained consciousness, the priest said, "You are truly blessed! The Lord has heard your cries. Prepare yourself for the vision."



The priest helped Avaseri bathe, gave him clean clothes, and led him into the sanctum sanctorum. There, in the silence of the night, Avaseri was granted a direct, miraculous vision of the Lord.

Upon witnessing the Divine, Avaseri was overwhelmed with bliss. All his fatigue, pain, and sorrow vanished in an instant. The villagers, too, were overjoyed; they felt that their labor of carrying him on the litter had finally been sanctified.

After some time, he was carried back to Rasin in the same litter. When they reached home, Avaseri shared his miraculous experience with the entire village. Everyone bowed in respect, saying, "Brother Avaseri, you are a true devotee. You have brought honor to our village. This proves that the Lord always reveals Himself to those who possess true devotion and unwavering patience."

Through this journey, Avaseri showed the world that while wit can win over men, only pure faith can move the Divine.

7. Neither Alum nor Asafoetida

In a nearby village, there lived a Brahmin man known as Pidhiya. He owned a very fine, healthy young bull calf (*padwa*). Seeing the calf, Avaseri approached him with a clever proposition:

"Brother Pidhiya, I don’t have any cows or calves of my own. Why don't you give this calf to me? I will look after it and raise it. When it grows and we find a buyer, I’ll give you your fair share of the profit."

Pidhiya, trusting Avaseri’s words, handed over the calf. However, Avaseri had no intention of raising it. The very next evening, he went to the market and sold the calf for twenty annas.

About fifteen to twenty days later, Pidhiya came to visit Avaseri. He asked eagerly, "So, Brother Avaseri, how is my calf doing? I hope he’s becoming strong and healthy under your care!"

Avaseri made a face and replied bluntly, "Strong? Healthy? My foot! Some men came and bought him, took him away, and by now, he’s probably been digested and forgotten! Look, it’s better you just take your money now."

Confused, Pidhiya asked, "Wait, for how much did you sell him?"

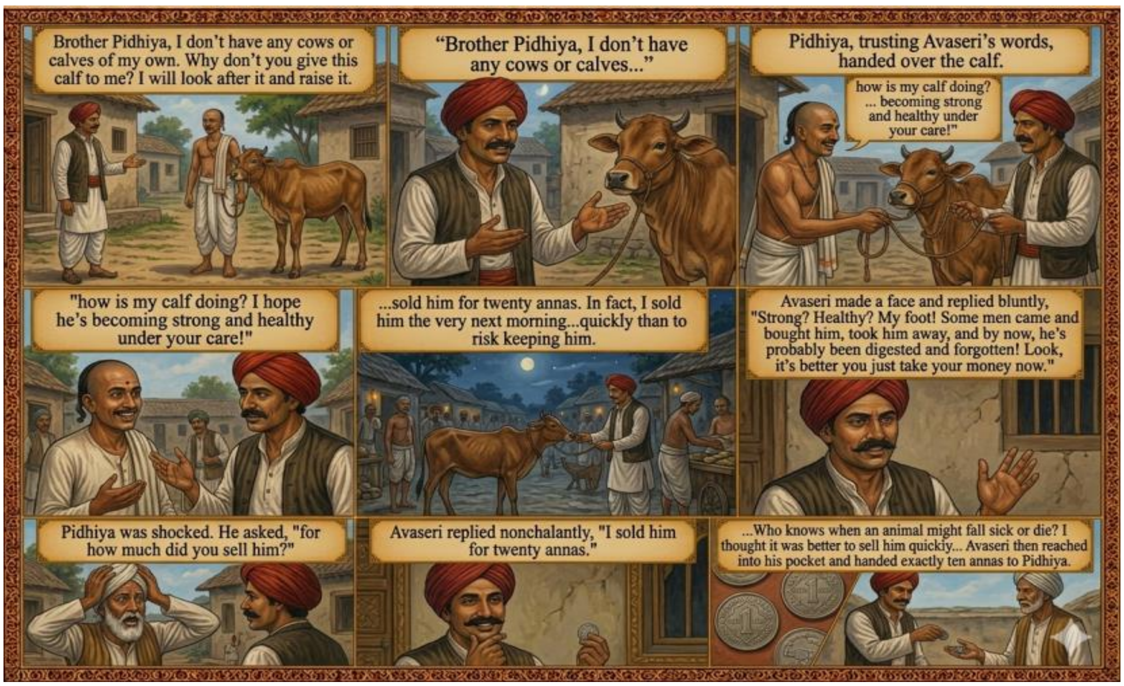
Avaseri then reached into his pocket and handed exactly **ten annas** to Pidhiya.

Pidhiya looked at the ten annas in shock and exclaimed, "My friend, what is this? You kept the calf for just one night and you're giving me only half the price?"

Avaseri laughed heartily and said, **"But brother, remember our agreement? We agreed to work on a 'sharing' basis! Since the profit was twenty annas, the half-and-half rule applies. Ten for you, and ten for me!"**

Pidhiya stood there, speechless and staring, realized he had been completely outmaneuvered. Without spending a single penny or putting in a day's work, Avaseri had pocketed half the value of the calf simply through his "partnership" talk.

As the saying goes in the village: *No expense on alum, no cost for asafoetida, yet the color turned out perfectly bright!* Such was the legendary wit of Avaseri.



8. Avaseri's Message from the Well

Once upon a time, Avaseri bought a bull from a nearby village and brought it home. The bull was exceptionally sturdy and handsome. As Avaseri led the animal through the village streets, every person he encountered would stop him and ask the same question:

"Brother, how much did you pay for this bull?"

Avaseri would patiently reply, *"Brother, I bought it for one hundred and ten rupees."*

A few steps later, another person would stop him. *"Avaseri, that's a fine bull! What was the price?"*

Again, he would answer, *"One hundred and ten rupees."*

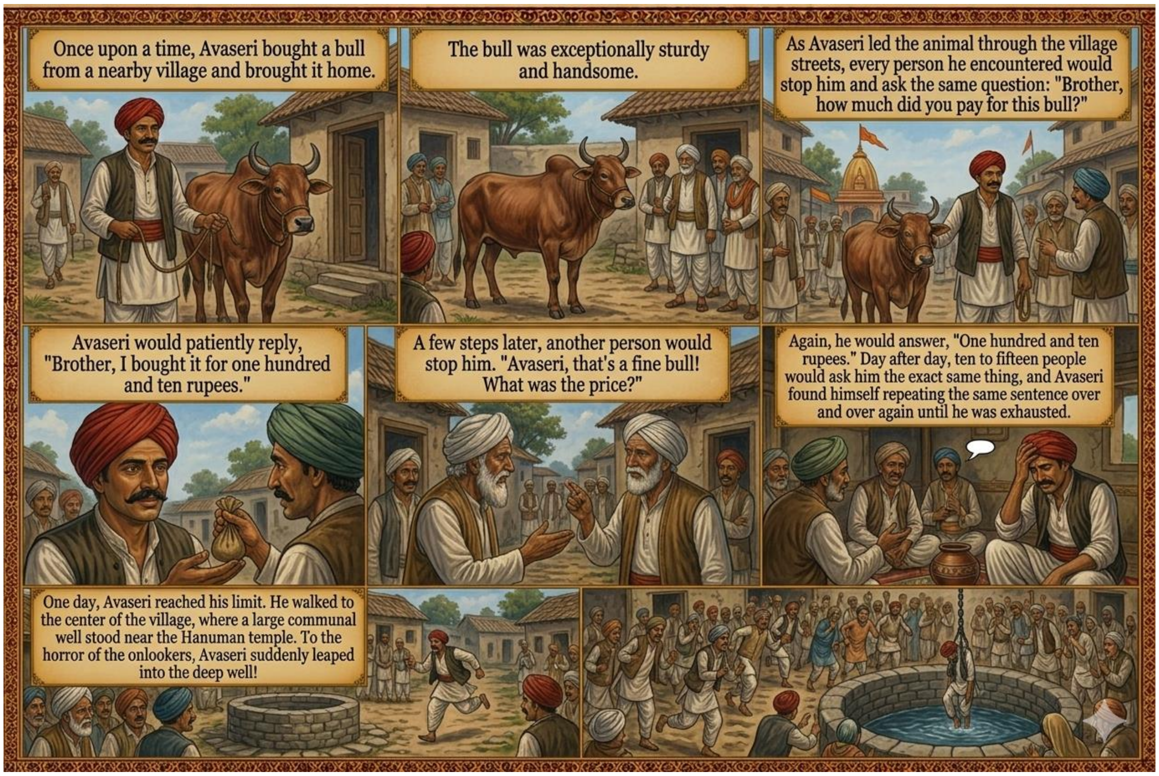
Day after day, ten to fifteen people would ask him the exact same thing, and Avaseri found himself repeating the same sentence over and over again until he was exhausted.

One day, Avaseri reached his limit. He walked to the center of the village, where a large communal well stood near the Hanuman temple. To the horror of the onlookers, Avaseri suddenly leaped into the deep well!

The news spread like wildfire: *"Avaseri has jumped into the well! Avaseri is gone!"*

The villagers came running from all directions, gathering around the mouth of the well. Some started mourning, saying, *"Oh, what a tragedy! Avaseri was such a wonderful and kind man. Why would he do this?"*

Inside the well, there was a thick iron chain hanging down. Avaseri hadn't actually drowned; he was firmly gripping the chain and dangling just above the water.



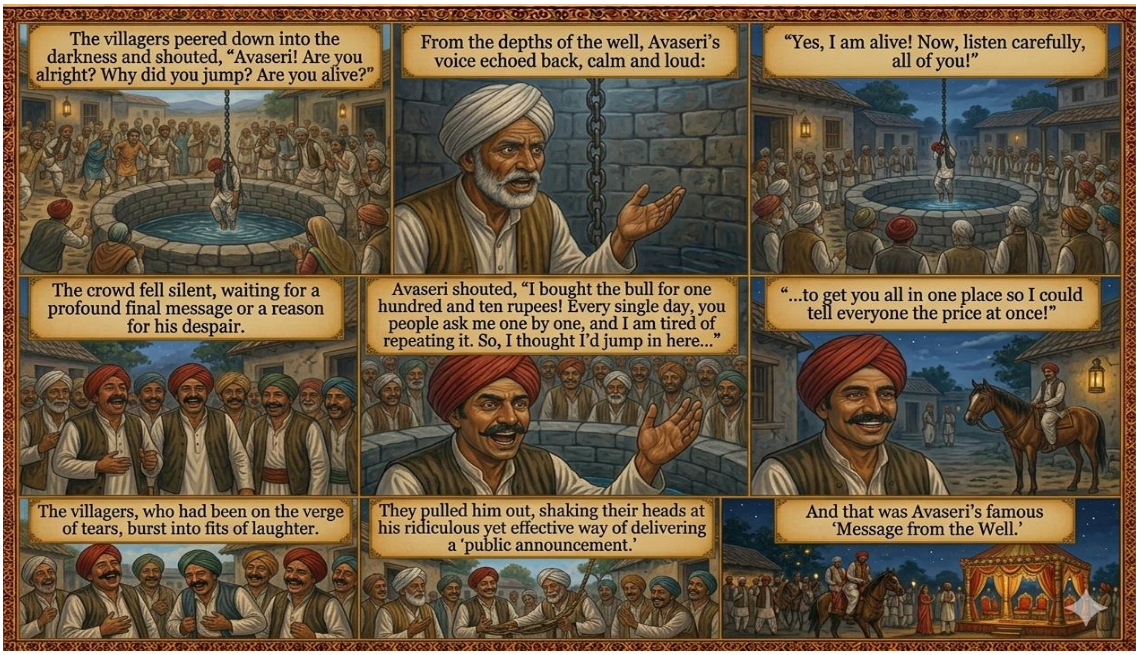
The villagers peered down into the darkness and shouted, *"Avaseri! Are you alright? Why did you jump? Are you alive?"*

From the depths of the well, Avaseri's voice echoed back, calm and loud: **"Yes, I am alive! Now, listen carefully, all of you!"**

The crowd fell silent, waiting for a profound final message or a reason for his despair.

Avaseri shouted, **"I bought the bull for one hundred and ten rupees! Every single day, you people ask me one by one, and I am tired of repeating it. So, I thought I'd jump in here to get you all in one place so I could tell everyone the price at once!"**

The villagers, who had been on the verge of tears, burst into fits of laughter. They pulled him out, shaking their heads at his ridiculous yet effective way of delivering a "public announcement."



And that was Avaseri’s famous **"Message from the Well."**

9. Stealing Silently, Eating Royally

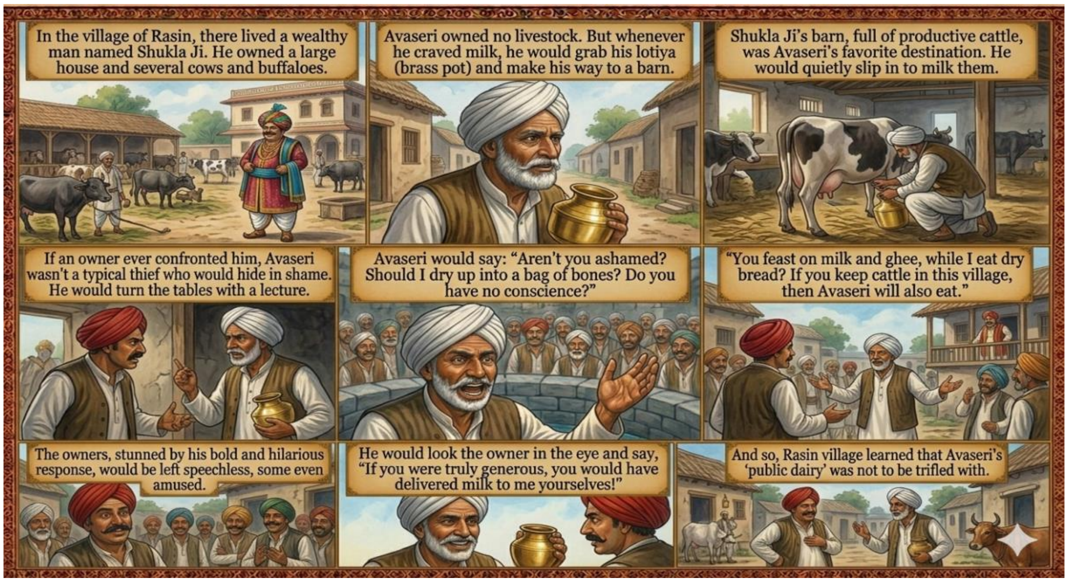
In the village of Rasin, there lived a wealthy man named Shukla Ji. He owned a large house and several cows and buffaloes that produced plenty of milk. Whenever the opportunity arose, Avaseri would quietly slip into Shukla Ji’s barn and milk the cattle for himself.

Since Avaseri owned no livestock of his own, he considered the entire village’s cattle as his personal dairy. Whenever he craved milk or curd, he would simply grab a bucket or a small brass pot (*lotiya*) from his house, walk over to someone’s barn, and milk whichever cow or buffalo he found.

Avaseri wasn't a typical thief who would hide in shame if caught. If an owner ever confronted him or told him to stop, Avaseri would turn the tables with a bold and hilarious lecture. He would say: "Aren't you ashamed to speak to me like that? Look at me! Should I just dry up and turn into a bag of bones? Do you have no conscience?

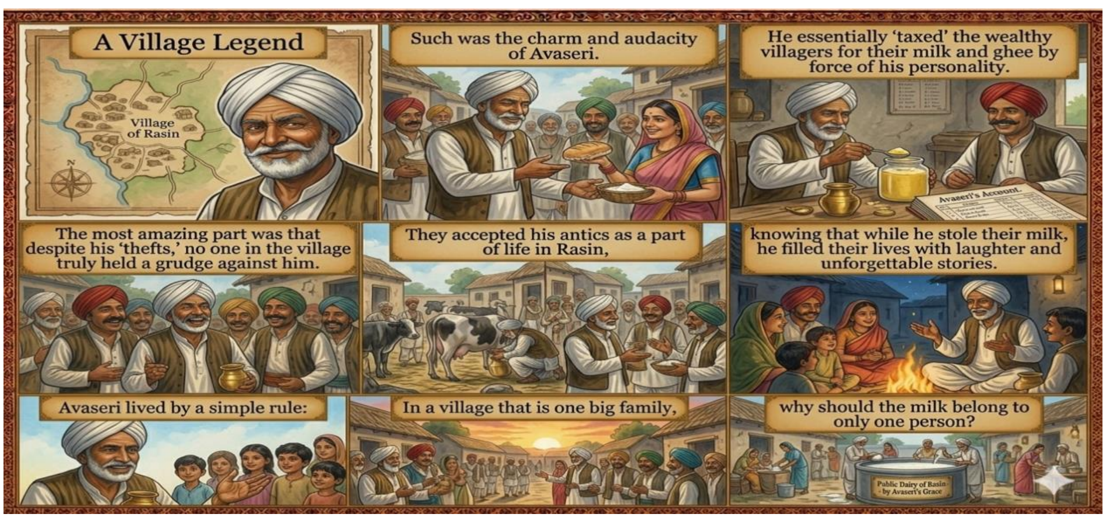
You and your family feast on milk and ghee every day, while I am expected to eat dry bread? That’s not how it works! If you keep cattle in this village, then Avaseri will also eat."

He would look the owner in the eye and add, "If you people were truly generous, you would have delivered a liter of milk to my house yourselves. But since you didn't, I have to come and serve myself!"



Such was the charm and audacity of Avaseri. He essentially "taxed" the wealthy villagers for their milk and ghee by force of his personality.

The most amazing part was that despite his "thefts," no one in the village truly held a grudge



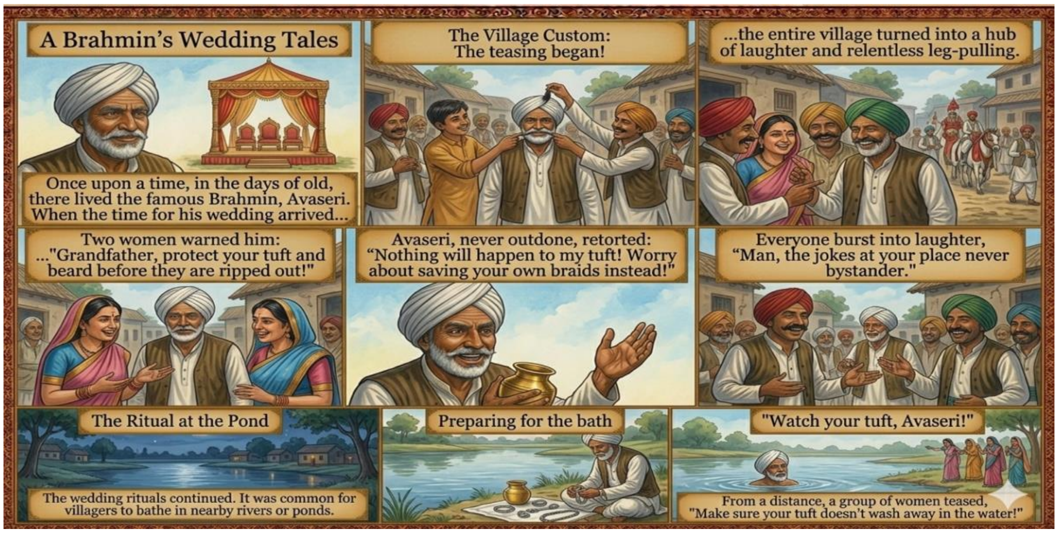
against him. They accepted his antics as a part of life in Rasin, knowing that while he stole their milk, he filled their lives with laughter and unforgettable stories.

Avaseri lived by a simple rule: In a village that is one big family, why should the milk belong to only one person?

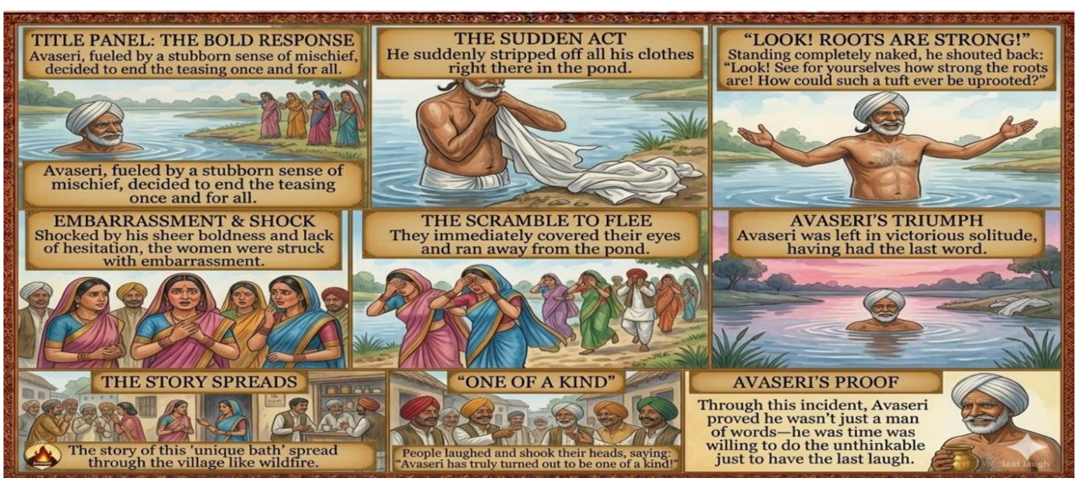
10. Avaseri's Wedding and the Unique Bath

Once upon a time, in the days of old, there lived the famous Brahmin, Avaseri. When the time for his wedding arrived, the entire village turned into a hub of laughter and relentless leg-pulling.

As per the village customs, everyone teased the groom. Someone would flick his *choti* (the traditional tuft of hair on a Brahmin's head), while another would playfuly tug at his beard. Seeing this, two village women laughed and said, "Grandfather, you better protect yourself! Otherwise, your tuft or your beard might get ripped out by these pranksters!"



Avaseri, never one to be outdone, laughed back and retorted, **"Nothing will happen to my tuft! You should worry about saving your own braids instead!"** Everyone burst into laughter, and a bystander remarked, "Man, the jokes at your place never end!"



The banter continued as the wedding rituals progressed. In those times, it was common for villagers to go to nearby rivers or ponds for their daily bath. On his wedding day, Avaseri headed to the village pond to bathe. He took off his heavy bangles (*karas*) and jewelry, placed them carefully on the bank, and jumped into the water.

A group of women nearby began teasing him again, shouting from a distance, "Watch your tuft, Avaseri! Make sure it doesn't wash away or get uprooted in the water!"

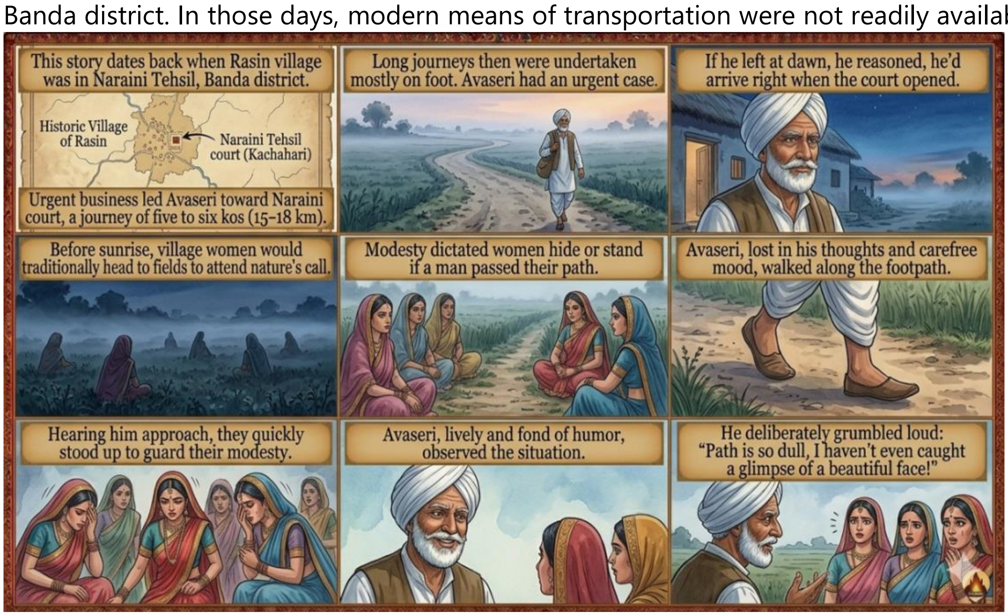
Avaseri, fueled by a stubborn sense of mischief, decided to end the teasing once and for all. He suddenly stripped off all his clothes right there in the pond. Standing completely naked, he shouted back, **"Look! See for yourselves how strong the roots are! How could such a tuft ever be uprooted?"**

Shocked by his sheer boldness and lack of hesitation, the women were struck with embarrassment. They immediately covered their eyes and ran away from the pond.

The story of this "unique bath" spread through the village like wildfire. People laughed and shook their heads, saying, **"Avaseri has truly turned out to be one of a kind!" Through this incident, Avaseri proved that he wasn't just a man of words—he was willing to do the unthinkable just to have the last laugh.**

11. A Dialogue Between Dusk and Dawn

This story dates back to the era when the historic village of Rasin was a part of the Naraini Tehsil in the Banda district. In those days, modern means of transportation were not readily available, so



long journeys usually had to be undertaken on foot. Once, Avaseri had some urgent business at the Naraini Tehsil court (*kachahari*). The distance from Rasin to Naraini was about five to six *kos* (approximately 15 to 18 kilometers). Avaseri reasoned that if he set out at the crack of dawn, he would reach the court right when it opened. With this intention, he left his house very early in the morning, while the dawn's mist still enveloped the surroundings.

During that period, rural households did not have indoor toilets. Consequently, out of traditional modesty and shyness, the village women would head toward the fields or the roadsides before sunrise, under the cover of dawn's darkness, to attend to nature's call. The unwritten rule of modesty dictated that if a man was seen passing along the path, the women would immediately try to hide or stand up out of sheer bashfulness.

Avaseri was moving along the footpath, lost in his own thoughts and carefree mood. On both sides of the path, a few women were seated. Hearing the approach of a man from a distance, they quickly began to stand up to guard their modesty. Avaseri, by nature lively and excessively fond of humor, observed the situation. He deliberately grumbled out loud:

"What terrible luck! I am walking so far on this freezing morning, yet the path is so desolate and dull that I haven't even caught a glimpse of something auspicious or a beautiful face early in the morning!"

Among the women sitting by the roadside, there was one who was exceptionally fearless and sharp-tongued. When Avaseri's sarcastic remark reached her ears, she did not hesitate for a second. To



remind Avaseri of his manners, she snapped back in a sharp tone:

"Hey traveler on the path! Even if you did catch a glimpse of someone along the way, would that appease your hunger? Will merely looking at a beautiful face fetch you delicious rotis? Instead of talking nonsense, why don't you just walk straight on your path?"

But Avaseri was renowned throughout the region for his *pratyutpannamati*—the art of immediate and precise wit. Without wasting a single moment, he replied in a calm yet cleverly dramatic tone:

"O Goddess! You have completely misunderstood me. My meaning wasn't limited to dry rotis. I was merely saying that if, along with a morning glimpse, I also received the sweetness (sugar) of your melodious voice, the joy of this difficult and long journey would double. If one gets the taste of sugar along with dry roti, it truly makes the day!"

Hearing Avaseri's unexpected, witty, and double-meaning response, the woman was left entirely speechless. She realized that it was impossible to defeat this extraordinary man in a war of words.

Completely embarrassed, she immediately retreated from view and never again dared to argue with an unfamiliar traveler in such a manner.

This anecdote is a living testament to the fact that Avaseri was not just a simple-natured man, but also possessed an amazing ability to shatter the opponent's ego in a matter of moments using his clever vocabulary, even in awkward and embarrassing situations.

12. The Mystery of the Earthen Pot

Once, over a domestic dispute, Avaseri had a fierce argument with his wife. Out of sheer resentment and immense anger, his wife left for her parents' home. Confounded by her departure and vexed by his sudden loneliness, Avaseri decided to divert his mind. In accordance with the social norms of that era, he headed toward the residence of a famous courtesan (dancer) of the region.

In those days, artists and courtesans resided in the hamlets surrounding Sahajazpur, where



connoisseurs of pleasure from nearby villages would go for entertainment.

When Avaseri reached the courtesan—whose name was Tejania—he placed a few coins before her according to his financial capacity. Since money held great value in those times, Avaseri thought the amount was sufficient. However, Tejania was not satisfied with those limited coins. Looking at Avaseri's rural background, she mocked him:

"Oh, good man! Nothing is going to happen with these few coins. You are a villager; surely you have no scarcity of livestock like cows and buffaloes? There must be plenty of milk and ghee at your home!"

Avaseri immediately agreed and said, "Yes, there is absolutely no shortage of milk and ghee."

Tejania then laid down her condition: "Alright then, if you bring me a small earthen pot (*matki*) full of pure desi ghee, only then can the pleasure of the gathering be enjoyed."

Upon hearing this, Avaseri rushed back to his village to arrange for the ghee. By nature, he was extremely clever and possessed a sharp wit.

Reaching home, he took a beautiful earthen pot. He filled the bottom and middle sections of the pot with solid, clean mud, and right on top of it, he poured about a quarter-kilogram of pure buffalo ghee. From the top, the pot looked completely full and pristine, brimming with pure ghee.

Since it was the winter season, the ghee froze solidly at the mouth of the pot. Because it was pure ghee boiled over a household hearth, its rich aroma began to waft all around.

Carrying the pot, Avaseri returned to Tejania and said proudly, "Look here, I have brought pure ghee, as heavenly as ambrosia, just as you wished. Its very aroma is proof of its purity."

Tejania was delighted to see the pot and smell its fragrance. She said, "Wow! The ghee indeed seems to be of premium quality. Do one thing, take it inside and hand it over to my sister, Dvijania."

Avaseri kept the pot inside and returned to enjoy the gathering with Tejania. Meanwhile, sitting inside, Dvijania could not resist the rich, appetizing aroma of the ghee. Out of curiosity, she opened the lid of the pot and began to taste it. But as soon as she dug slightly below the frozen top layer, she saw nothing but dry mud underneath.

Realizing she had been deceived, she shrieked from inside:

"Oh Tejania! Come quickly and wrap everything up! We have been terribly cheated. This pot is filled only with mud! A thin layer of ghee was placed on top just for show!"

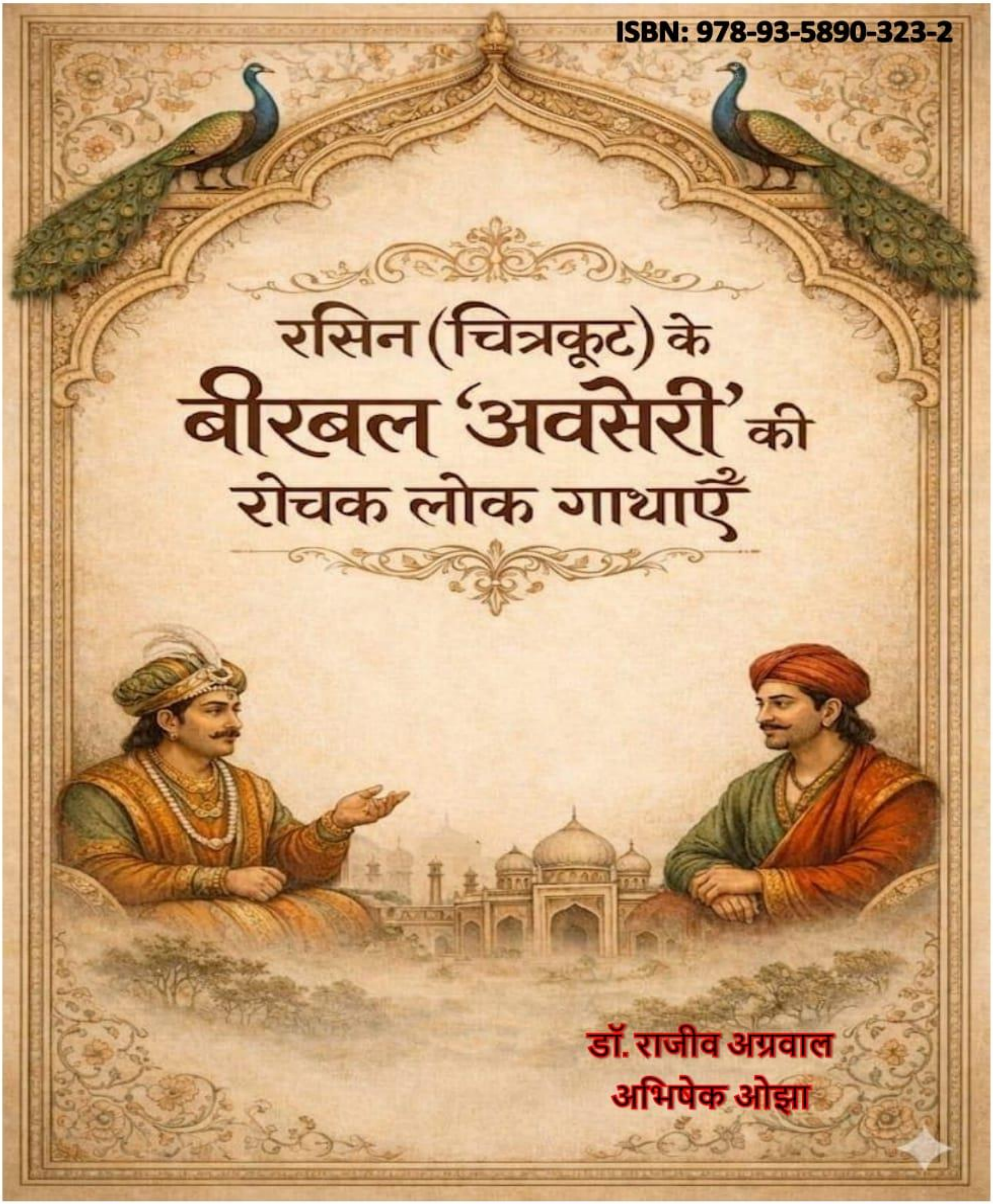
Hearing her sister's words, Tejania was stunned. Holding her head in distress, she lamented:

"Oh goodness! What is the use of wrapping everything up now? The game that was meant to happen is already over. The gathering has concluded, and our guest has already shown his clever artistry!"

By then, leveraging his extraordinary wit, Avaseri had accomplished his purpose and departed from there with a smile, leaving the courtesans—who prided themselves on their shrewdness—empty-handed and full of regret.

This anecdote proves that Avaseri possessed total mastery in confusing anyone with his clever ploys. Without suffering any financial loss, he fulfilled his immediate desire and gave a fitting reply to the other person's greed with his quick-wittedness.

परिशिष्ट ब. रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ



विषय सूची

1. बर्तनों का बच्चा

चित्रकूट की पावन धरा पर स्थित **रसिन** नामक ग्राम में **अवसेरी** नाम का एक कृषक निवास करता था। अवसेरी का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था; वह न केवल कृषि कार्य में निपुण था, बल्कि मल्लयुद्ध (पहलवानी) का भी शौकीन था। उसके घर में संतान का अभाव था, किंतु उसका हृदय इतना विशाल और स्वभाव इतना मिलनसार था कि संपूर्ण ग्राम ही उसका परिवार बन गया था। गाँव के प्रत्येक उत्सव में उसकी उपस्थिति अनिवार्य थी और वह भी निस्वार्थ भाव से सेवा कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता था।

प्रथम भोज और 'बर्तनों का वंश'

समय बीतता गया। अक्सर दूसरों के यहाँ भोजन करने के कारण गाँव वालों ने परिहास में उसे उलाहना देना प्रारंभ किया, "अवसेरी भाई! तुम सदैव दूसरों के निमंत्रण का आनंद लेते हो, कभी हमें भी अपने हाथ का स्वाद चखाओ।"

अवसेरी ने पहले तो इसे टालना चाहा, किंतु निरंतर दबाव के बाद उसने एक भव्य भोज का आयोजन किया। ग्रामीण परंपरा के अनुसार, उसने पड़ोसियों से बड़े-बड़े बर्तन और अन्य सामग्री एकत्र की। भोज अत्यंत आनंददायक रहा। परंतु, असली कौतुक तब हुआ जब अवसेरी बर्तन लौटाने गया। उसने प्रत्येक बड़े पात्र के साथ एक लघु पात्र (छोटा बर्तन) भी रख दिया।

जब चकित ग्रामीणों ने पूछा, "भाई! हमने तो तुम्हें केवल बड़ा पात्र दिया था, यह छोटा पात्र किसका है?"

तब अवसेरी ने बड़ी सहजता और मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "**भैया, यह छोटा बर्तन आपके बड़े बर्तन की संतान है। मेरे घर रहते हुए इसने जन्म लिया है, अतः इस पर आपका ही अधिकार है।"**

भोले ग्रामीणों ने प्रसन्नतापूर्वक उस तर्क को स्वीकार कर लिया और मुफ्त में मिले बर्तन पाकर अवसेरी की जय-जयकार करने लगे।



द्वितीय भोज और नियति का चक्र



कुछ वर्षों के पश्चात, ग्रामीणों की जिह्वा ने पुनः उस स्वाद की अभिलाषा की। अवसेरी ने एक बार फिर सहर्ष निमंत्रण स्वीकार किया। इस बार ग्रामीणों का लोभ जागृत हो चुका था। उन्होंने 'बर्तनों की वंश-वृद्धि' की आशा में उत्साहपूर्वक दुगुने बर्तन और बहुमूल्य सामग्री अवसेरी को सौंप दी।

अवसेरी ने गाँव के **भोंदू कलार** नामक व्यक्ति के पास उन सभी बर्तनों को गिरवी रख दिया और प्राप्त धन से घी, तेल, शर्करा एवं अन्य उत्तम सामग्रियाँ क्रय कीं। पूरे गाँव ने तृप्ति पूर्वक भोजन किया और अवसेरी की प्रबंधन क्षमता की प्रशंसा की।

महतारी और बच्चे का देहावसान



भोज समाप्त हुए सप्ताह बीते, फिर मास बीत गए, किंतु अवसेरी बर्तन लौटाने नहीं आया। अंततः, धैर्य खोकर जब ग्रामीण उसके द्वार पर पहुँचे और अपने बर्तनों की मांग की, तो अवसेरी का मुख मंडल विषाद से भर गया।

उसने लंबी आह भरते हुए कहा, "**मित्रों! बड़ा अनर्थ हो गया। इस बार गाँव में ऐसी भीषण व्याधि (रोग) आई कि आपके बर्तनों की माताएँ और उनके नवजात बच्चे, सभी अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए।**"

ग्रामीण अवाक रह गए। उन्होंने क्रोधित होकर तर्क दिया, "यह कैसे संभव है? निर्जीव बर्तन भला कैसे मर सकते हैं?"

अवसेरी ने शांत भाव से तर्क की उसी कसौटी का प्रयोग किया जो उसने पिछली बार गढ़ी थी। उसने कहा, "**भैया, यदि बर्तन संतान को जन्म दे सकते हैं, तो मृत्यु का वरण भी कर सकते हैं। जो जन्म लेता है, उसका अंत निश्चित है।**"

सत्य का उद्घाटन

ग्रामीणों को अब अपनी भूल और अवसेरी की धूर्तता का आभास हुआ। जब उन्होंने अनुनय-विनय की, तब अवसेरी ने यथार्थ से पर्दा उठाया, "सज्जनों! वह भोजन सामग्री

कहीं आकाश से नहीं आई थी। आपके बर्तन भोंदू कलार के पास सुरक्षित हैं, वे सब आपके उदर (पेट) में जा चुके हैं। यदि बर्तनों से मोह है, तो कलार के पास जाकर उन्हें मुक्त करा लीजिए।"

अंततः, ग्रामीणों को अपने ही बर्तन स्वयं मूल्य चुकाकर वापस लाने पड़े। उस दिन के पश्चात, रसिन ग्राम में कभी किसी ने अवसेरी से भोज लेने की धृष्टता नहीं की।



सीख: *अत्यधिक लोभ बुद्धि को भ्रमित कर देता है, और चालाक व्यक्ति उसी लोभ को अस्त्र बनाकर आपको परास्त कर सकता है।*

2. बतासे का न्याय

चित्रकूट जनपद के **रसिन** ग्राम का निवासी **अवसेरी** न केवल एक साधारण कृषक था, बल्कि वह अपनी तीव्र बुद्धि और हास्य-विनोद के लिए समूचे क्षेत्र में विख्यात था। वह युग संचार के आधुनिक साधनों से वंचित था; तब अश्व ही आवागमन और प्रतिष्ठा के मुख्य साधन हुआ करते थे। अवसेरी के पास भी 'ग्वेद' नाम की एक देशी घोड़ी थी।



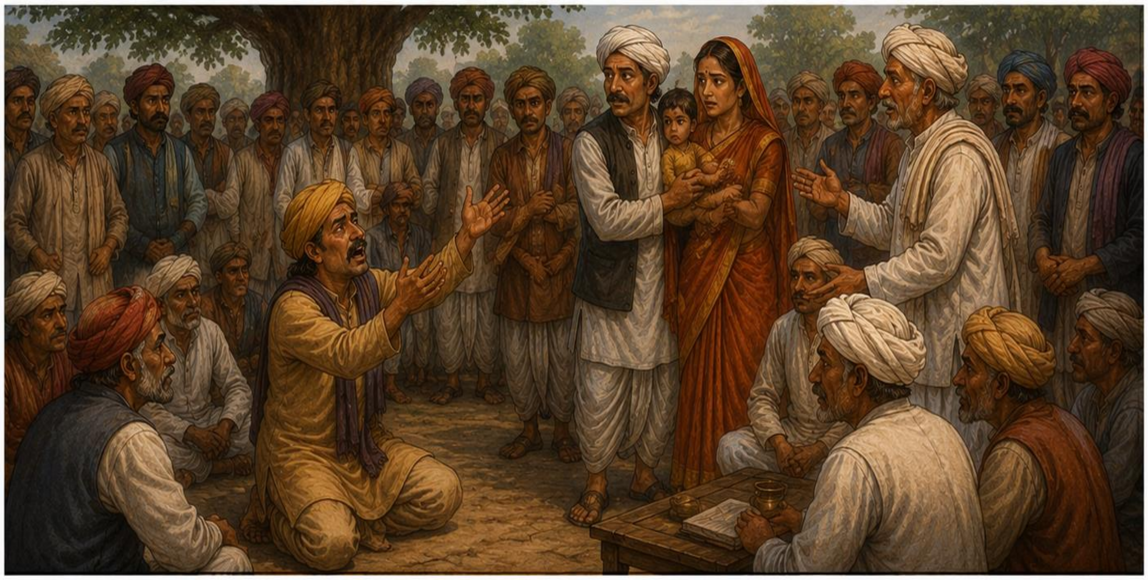
व्यंग्य और चुनौती

एक प्रभात काल में, जब अवसेरी ग्राम की सीमा पर अपनी घोड़ी के लिए घास काट रहा था, तभी वहाँ से एक प्रवासी दंपत्ति का गुजरना हुआ। पुरुष आगे चल रहा था और उसकी पत्नी गोद में बालक को लिए उसके पीछे-पीछे थी। चलते-चलते पुरुष ने उपहास के स्वर में अपनी पत्नी से कहा, *"प्रिये! लोग कहते हैं कि रसिन गाँव के निवासी बड़े परिहास प्रेमी और चतुर होते हैं, किंतु हम तो पूरा गाँव पार कर आए और किसी ने हमसे एक छोटा सा मजाक तक नहीं किया।"*

अवसेरी के कानों में जब ये शब्द पड़े, तो उसके भीतर का विनोदी स्वभाव जागृत हो उठा। उसने मन ही मन संकल्प किया कि इन पथिकों को रसिन की विनोदिता का रसास्वादन अवश्य कराया जाए।

बतासे का प्रपंच





अवसेरी ने तत्काल अपना कार्य छोड़ा और दौड़कर पास ही की एक दुकान से कुछ बतासे क्रय किए। वह चुपके से उस परिवार के पीछे हो लिया। बालक अपने पिता के कंधे पर बैठा था और उसका मुख पीछे की ओर था। अवसेरी ने अत्यंत चतुराई से एक-एक कर बालक को बतासे खिलाना प्रारंभ किया। बालक मधुर बतासों के लोभ में अवसेरी से हिल-मिल गया। इस प्रकार, बतासे खिलाते-खिलाते वे एक कोस दूर स्थित **सुदिनपुर** ग्राम जा पहुँचे।

न्याय की वेदी पर

जैसे ही वे सुदिनपुर के मध्य पहुँचे, अवसेरी ने अचानक उच्च स्वर में विलाप और शोर मचाना शुरू कर दिया, "*भाइयों देखो! अनर्थ हो गया! यह दुष्ट पुरुष मेरी पत्नी और बालक को भगाकर लिए जा रहा है!*"

क्षण भर में वहाँ जनसमूह एकत्र हो गया और पंचायत बैठ गई। पंचों ने आगंतुक पुरुष से प्रश्न किया, तो वह सकपका कर बोला, "*महानुभावों! यह स्त्री मेरी धर्मपत्नी है और यह मेरा पुत्र है। यह व्यक्ति असत्य वाचन कर रहा है।*"

स्त्री ने भी भयभीत स्वर में अपने वास्तविक पति का ही पक्ष लिया। किंतु अवसेरी ने अभिनय की पराकाष्ठा करते हुए अश्रुपूर्ण नेत्रों से कहा, "*हे प्रिये! क्षणिक मनमुटाव के कारण तुम अपने वास्तविक पति को त्याग कर इस पराये पुरुष का साथ दे रही हो? पञ्च परमेश्वर! मैं लुट गया, मेरा घर उजड़ गया, अब आप ही न्याय करें।*" अवसेरी का विलाप इतना मर्मस्पर्शी था कि पंच भी असमंजस में पड़ गए।

बालक का निर्णय



अंततः पंचों ने यह निर्णय लिया कि '**मनुष्य असत्य बोल सकता है, किंतु एक अबोध बालक कभी छल नहीं करता।**' सत्य की परीक्षा के लिए बालक को मध्य में खड़ा किया गया और दोनों पक्षों को विपरीत दिशाओं में बैठा दिया गया। आदेश हुआ कि बालक स्वयं अपने पिता का चयन करे।

अवसेरी ने अवसर देखते ही अपनी हथेली में छिपा हुआ बतासा बालक को संकेत से दिखा दिया। मधुर स्वाद की स्मृति में डूबा बालक झट से दौड़कर अवसेरी की गोद में जा बैठा। पंचों ने तत्काल अपना निर्णय सुना दिया—बालक अवसेरी का है, अतः स्त्री भी उसी की है।

सत्य का बोध

असली पति-पत्नी के पैरों तले जमीन खिसक गई। वे रुदन करने लगे और अवसेरी के समक्ष हाथ जोड़कर याचना करने लगे। जब अवसेरी ने देखा कि उन पथिकों को अपनी भूल का आभास हो गया है, तो उसने मुस्कराते हुए कहा:

"सज्जनों! व्यथित न हों। अपना बालक और अपनी पत्नी ससम्मान ले जाइए। बस भविष्य में कभी यह मत कहना कि रसिन गाँव के लोग मजाक करना नहीं जानते। यह केवल एक पाठ था ताकि आप हमारी मेधा का सम्मान करना सीखें।"

दंपत्ति अवसेरी की विलक्षण बुद्धि के कायल हो गए और रसिन की चतुराई का गुणगान करते हुए अपने मार्ग पर बढ़ गए।

सीख: *प्रत्युत्पन्नमति और चतुराई से कठिन से कठिन परिस्थिति को भी अपने पक्ष में मोड़ा जा सकता है, किंतु उसका प्रयोग केवल अहंकार को तोड़ने के लिए होना चाहिए, किसी का अहित करने के लिए नहीं।*

3. मजाक की भारी कीमत

चित्रकूट के रसिन ग्राम का निवासी **अवसेरी** अपनी प्रत्युत्पन्नमति और हास्य-विनोद के लिए विख्यात था। उसकी चतुराई के किस्से केवल गाँव तक सीमित न थे, अपितु दूर-दराज के क्षेत्रों में भी उसकी ख्याति थी। एक दिन उसकी पत्नी ने सहज भाव से एक आग्रह किया, "स्वामी, आप संपूर्ण संसार के साथ परिहास करते हैं, किंतु मेरे साथ कभी कोई ठिठोली नहीं की। क्या मैं आपके इस विनोदपूर्ण पक्ष से वंचित ही रहूँगी?"

अवसेरी ने पहले तो इसे अनसुना किया, किंतु पत्नी के बार-बार आग्रह करने पर उसने मंद मुस्कान के साथ कहा, "उचित है, अवसर आने पर तुम्हारी यह इच्छा भी पूर्ण होगी।"

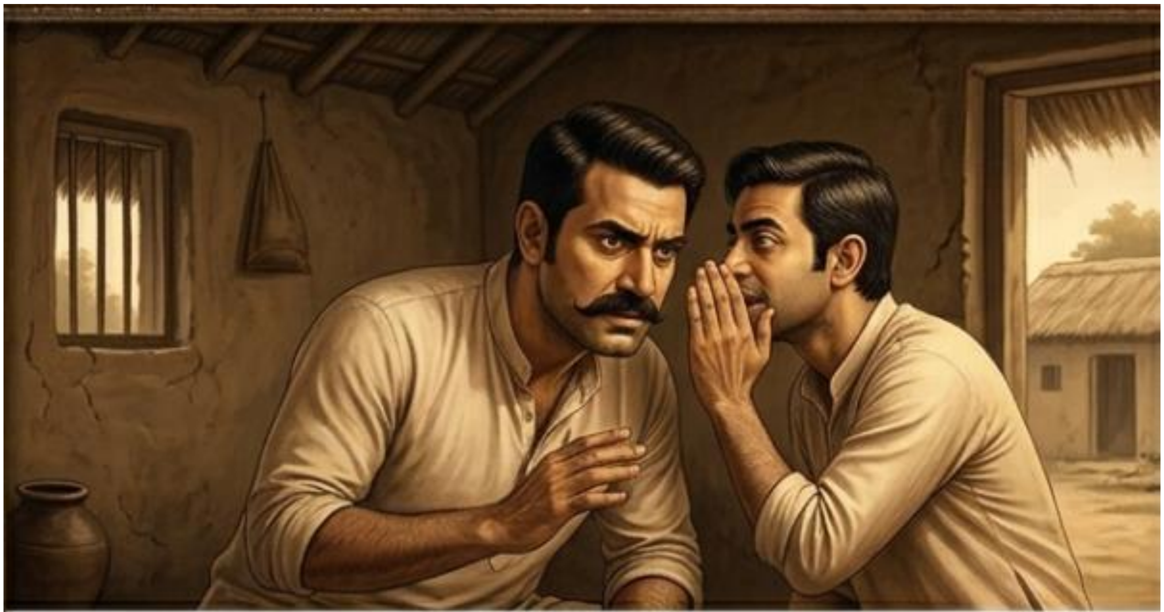
षड्यंत्र का ताना-बाना

समय का चक्र बीता और अवसेरी की पत्नी इस बात को विस्मृत कर गई। एक दिन उसका भाई (अवसेरी का साला) अपनी बहन को लिवाने (मायके ले जाने) ससुराल आया। अतिथि का भव्य स्वागत हुआ। भोजनोपरांत जब दोनों पुरुष एकांत में बैठे, तो साले ने अवसेरी की दुर्बलता पर प्रश्न किया।

अवसेरी ने अवसर ताड़ लिया और एक मिथ्या कथा गढ़ी। उसने फुसफुसाते हुए कहा, "प्रिय अनुज, क्या बताऊँ? एक अदृश्य प्रेतनी ने मेरा जीवन दूभर कर रखा है। वह प्रतिदिन रात्रि में मुझे प्रताड़ित करती है और बलात् मेरे समीप सोने का प्रयास करती है।"

वीरता के मद में चूर पहलवान साले ने आव देखा न ताव और बोला, "जीजाजी, आप चिंता न करें। आज आपकी शय्या पर मैं विश्राम करूँगा। देखूँ तो सही, वह प्रेतनी मुझसे कैसे जीतती है!"

मर्यादा का उल्लंघन



रात्रि के गहन अंधकार में अवसेरी ने अपने साले को अपनी शय्या पर सुला दिया और स्वयं ओट में छिपकर प्रतीक्षा करने लगा। ग्रामीण परिवेश में स्त्रियाँ समस्त गृह-कार्य और चौका-बर्तन निपटाने के पश्चात ही विश्राम करती हैं। अवसेरी की पत्नी भी अगले दिन मायके जाने की तैयारी और कार्यों के कारण अत्यधिक थक चुकी थी।

अर्धरात्रि के समय, वह निस्तब्धता में अपने कक्ष में प्रविष्ट हुई। उसने देखा कि शय्या पर कोई चादर ओढ़कर सोया है। अपने पति की उपस्थिति मानकर, उसने श्रद्धावश उनके चरण दबाए और थकान के कारण समीप ही लेट गई।

यही वह क्षण था जिसका अवसेरी को प्रतीक्षारत था। वह अचानक अंधकार से प्रकट हुआ और ऊँचे स्वर में विलाप करने लगा, "अधर्म! अनर्थ! यह कैसा घोर कलयुग है? सगी बहन अपने भ्राता के समीप लेटी है! मैं तो लोक-परलोक कहीं का न रहा!"

उसके शोर से दोनों चौंककर उठे। जब चादर हटी, तो भाई और बहन एक-दूसरे को सम्मुख देख पाषाणवत जड़ हो गए। लज्जा और आत्मग्लानि से उनके प्राण सूखने लगे।



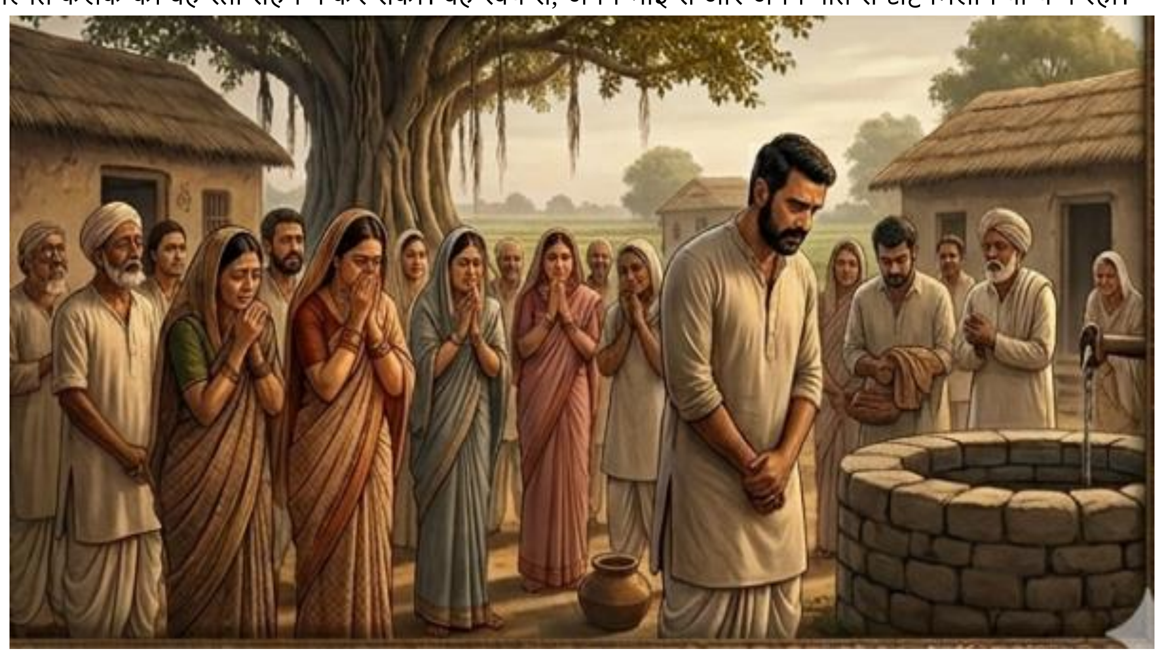
हास्य बना काल



दोनों को किंकर्तव्यविमूढ़ देखकर अवसेरी अट्टहास कर उठा और बोला, "प्रिय, तुम ही तो कहती थीं कि मैंने तुम्हारे साथ कभी मजाक नहीं किया। लो, आज मनोरंजन पूर्ण हुआ!"

सत्य का ज्ञान होने पर साला तो चुपचाप दूसरे कक्ष में चला गया, किंतु पत्नी के हृदय पर वज्रपात हो गया। उसने कातर स्वर में केवल इतना कहा, "स्वामी, क्या परिहास की सीमाएँ इतनी वीभत्स भी हो सकती हैं?"

यद्यपि यह एक मजाक था, किंतु भारतीय ग्रामीण संस्कृति और भ्राता-भगिनी के पवित्र संबंधों की मर्यादा पर लगे इस कल्पित कलंक को वह स्त्री सहन न कर सकी। वह स्वयं से, अपने भाई से और अपने पति से दृष्टि मिलाने योग्य न रही।



उस रात उसकी आत्मा गहरे अवसाद के गर्त में डूब गई। मर्यादा के भंग होने की पीड़ा ने उसे भीतर से खोखला कर दिया।

अंततः, जब संसार निद्रा में मग्न था, उस साध्वी स्त्री ने लोक-लाज और इस क्रूर उपहास के बोझ से मुक्त होने के लिए घर के बाहर स्थित कूप (कुएं) में छलांग लगा दी।

निष्कर्ष: *यह कथा एक गंभीर चेतावनी देती है कि परिहास और अपमान के बीच एक अत्यंत सूक्ष्म रेखा होती है। जब विनोद मर्यादा की परिधि लांघकर किसी के आत्मसम्मान और पवित्र संबंधों पर आघात करता है, तो वह 'मजाक' नहीं, 'मानसिक क्रूरता' बन जाता है, जिसका अंत प्रायः विनाशकारी होता है।*

4. मंदिर की छत पर ऊँट

चित्रकूट के अंचल में स्थित एक समृद्ध रजवाड़ी ग्राम था, जहाँ प्राचीन सामंती वैभव की झलक आज भी शेष थी। एक समय वहाँ के ज़मींदार साहब, जिन्हें लोकभाषा में 'धतुरहा' कहा जाता था, के प्रांगण में एक भव्य उत्सव का आयोजन हुआ। उत्सव की शोभा बढ़ाने के लिए निकटवर्ती क्षेत्र फैजाबादपुर से कुशल नर्तकियों को आमंत्रित किया गया था।

तिरस्कार की टीस

चाँदनी रात में महफ़िल सजी। घुँघरुओं की झंकार और वाद्ययंत्रों की थाप पर नृत्य आरंभ हुआ। संपूर्ण ग्राम इस कलात्मक आयोजन का साक्षी बनने हेतु उमड़ पड़ा। उन्हीं दर्शकों के बीच **अवसेरी** भी उपस्थित था। दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात वह अपने साधारण और मलिन वस्त्रों में ही महफ़िल के एक कोने में जाकर बैठ गया।



गाँव की परंपरा के अनुसार, जब कोई दर्शक नर्तकी की कला से मुग्ध होता, तो वह मुद्राएँ (पैसे) दिखाकर उसे अपने समीप बुलाता था। अवसेरी ने भी प्रसन्न होकर नर्तकी को पुरस्कार देना चाहा। किंतु, नर्तकी ने जब अवसेरी के साधारण रूप और मैले वस्त्रों को देखा, तो अहंकारवश उसे निर्धन समझकर उपेक्षित कर दिया। वह अन्य धनवानों के पास तो गई, पर अवसेरी के पास नहीं।

अवसेरी के स्वाभिमान पर यह गहरी चोट थी। उसने मन ही मन संकल्प लिया— *"हे अभिमानी! तूने आज मेरी साधारणता का उपहास किया है, शीघ्र ही तू मेरे पीछे-पीछे चलने पर विवश होगी।"*

विलक्षण युक्ति और मंदिर का शिखर



उस युग में आवागमन के लिए गज, अश्व और उष्ट्र (ऊँट) ही प्रमुख साधन थे। नर्तकियाँ

ऊँटों पर सवार होकर आई थीं। प्रतिशोध की भावना से ओतप्रोत अवसेरी ने अपनी

बुद्धि का पासा फेंका। मध्यरात्रि में जब महफ़िल अपने अवसान पर थी, अवसेरी ने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर ग्राम के बाह्य छोर पर स्थित एक मंदिर के समीप 'पयार' (धान का पुआल) के भारी गट्ठरों का अंबार लगा दिया।

उसने चतुराई से उन गट्ठरों के माध्यम से मंदिर की छत तक एक कृत्रिम ढलान (Ramp) निर्मित की। फिर, बड़ी कुशलता



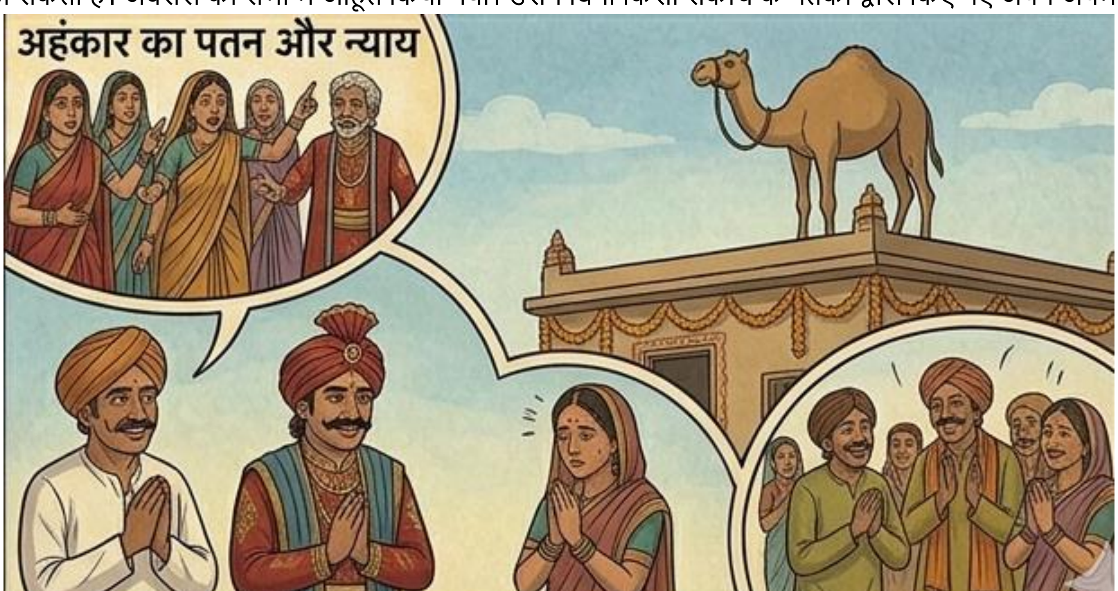


से नर्तकी के ऊँट को उस ढलान के सहारे मंदिर की ऊँची छत पर चढ़ा दिया। कार्य पूर्ण होते ही उसने पयार के सारे गट्ठर हटा दिए। अब ऊँट बिना किसी मार्ग के आकाश छूते मंदिर के शिखर पर खड़ा था।

अहंकार का पतन और न्याय

प्रातःकाल जब उत्सव समाप्त हुआ, तो नर्तकी ने प्रस्थान हेतु अपने अनुचर से ऊँट लाने को कहा। ऊँट अपने स्थान से लुप्त था। जब खोजबीन हुई, तो दृश्य देखकर संपूर्ण ग्राम स्तब्ध रह गया— ऊँट मंदिर की निर्जन छत पर खड़ा था!

गाँव के वृद्धों ने तुरंत भाँप लिया कि यह असाधारण कृत्य केवल अवसेरी की प्रत्युत्पन्नमति (Quick wit) का ही परिणाम हो सकता है। अवसेरी को सभा में आहूत किया गया। उसने बिना किसी संकोच के नर्तकी द्वारा किए गए अपने अपमान



की व्यथा सुनाई। जब नर्तकी से सत्य पूछा गया, तो उसने लज्जित होकर अपना दोष स्वीकार किया।

न्यायप्रिय ग्रामीणों ने अवसेरी के स्वाभिमान का पक्ष लिया। अवसेरी ने अपनी शर्त रखी, जिसे नर्तकी को स्वीकार करना पड़ा। उसने नर्तकी को यह बोध कराया कि कला किसी के वस्त्रों की उज्ज्वलता की नहीं, बल्कि हृदय की उदारता की ऋणी होती है। अंततः, अवसेरी ने पुनः उसी विधि से ढलान तैयार की और ऊँट को सुरक्षित नीचे उतारा।

नर्तकी अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गई, किंतु उसका अहंकार उस मंदिर की छत पर ही छूट गया था। उस दिन के पश्चात उसने पुनः कभी किसी साधारण व्यक्ति का अनादर नहीं किया।

निष्कर्ष: *अवसेरी की यह कथा हमें स्मरण कराती है कि साधारण दिखने वाले व्यक्ति के भीतर भी असाधारण मेधा और आत्मसम्मान छिपा होता है, जिसे चुनौती देना घातक सिद्ध हो सकता है।*

5. सबके पेट होते हैं

चित्रकूट के ऐतिहासिक ग्राम **रसिन** में एक समय उल्लास का वातावरण था। ग्राम के प्रतिष्ठित ज़मींदार की पुत्री का शुभ विवाह निश्चित हुआ था। क्षेत्रीय परंपरा के अनुसार, संपूर्ण ग्राम को सामूहिक निमंत्रण दिया जाना था, जिसे स्थानीय भाषा में **'तदगरा'** कहा जाता था। पंडित जी सूची लेकर द्वार-द्वार अक्षत और निमंत्रण बाँट रहे थे, किंतु नियति की विडंबना देखिए कि उस सूची में ग्राम के सबसे विलक्षण व्यक्ति, **अवसेरी** का नाम अंकित होने से रह गया।

स्वाभिमानी अवसेरी को जब ज्ञात हुआ कि उसे इस मांगलिक उत्सव से वंचित रखा गया है, तो उसके आत्मसम्मान को गहरी चोट पहुँची। उसने निश्चय किया कि वह अपनी उपेक्षा का उत्तर अपनी बुद्धि के कौशल से देगा।



संकट के बीज और शब्दों का मायाजाल

विवाह की संध्या को जब बारात का आगमन होने वाला था, अवसेरी अपनी घोड़ी पर सवार होकर ग्राम की सीमा पर स्थित **बान गंगा** नदी के तट पर जा पहुँचा। वह वहाँ बैठकर शांति से घास छीलने का स्वांग करने लगा। नियमानुसार बारात नदी के तट पर विश्राम, स्नान और वस्त्रादि परिवर्तन के लिए रुकी।

जिज्ञासु बारातियों ने जब अवसेरी से परिचय पूछा, तो अवसेरी ने अत्यंत सहजता से प्रश्न किया, "सज्जनों, आप किसका आतिथ्य स्वीकार करने जा रहे हैं?"

बारातियों ने गर्व से ज़मींदार का नाम लिया। अवसेरी ने एक लंबी श्वास ली और कुटिल मुस्कान के साथ कहा, "**अच्छा! तो आप उसी कन्या के विवाह में जा रहे हैं, जिसके पेट है?**"



इतना सुनते ही बारातियों के मध्य सन्नाटा पसर गया। उस युग में 'पेट होना' एक अत्यंत गंभीर लांछन और अमर्यादित संकेत माना जाता था। देखते ही देखते यह कानाफूसी पूरी बारात में दावानल की भाँति फैल गई। लोक-लज्जा और कुल की प्रतिष्ठा के भय से भयभीत होकर बारातियों ने विवाह स्थल की ओर जाने के बजाए वापस लौटने का निर्णय ले लिया।

कुल की मर्यादा और अवसेरी का आह्वान



जब ज़मींदार को ज्ञात हुआ कि बारात द्वार से वापस लौट रही है, तो उनके पैरों तले धरती खिसक गई। ग्राम के प्रबुद्ध जन तुरंत बारात को मनाने पहुँचे। बड़ी अनुनय-विनय के पश्चात बारातियों ने उस कथित 'कलंक' का रहस्य खोला।



जब इस दुष्प्रचार के स्रोत की खोज हुई, तो उँगली सीधे घास छील रहे अवसेरी की ओर उठी।

ज़मींदार और ग्रामीण तुरंत समझ गए कि यह अवसेरी का प्रतिशोध है। उसे तत्काल सादर बुलाया गया। ज़मींदार ने अपनी त्रुटि स्वीकार करते हुए क्षमा याचना की और कहा, **"अवसेरी भाई, ग्राम की कन्या सबकी मर्यादा होती है। यह संकट तुम्हारी वाणी से जन्मा है, अब तुम्हारी बुद्धि ही इस कुल की प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकती है।"**

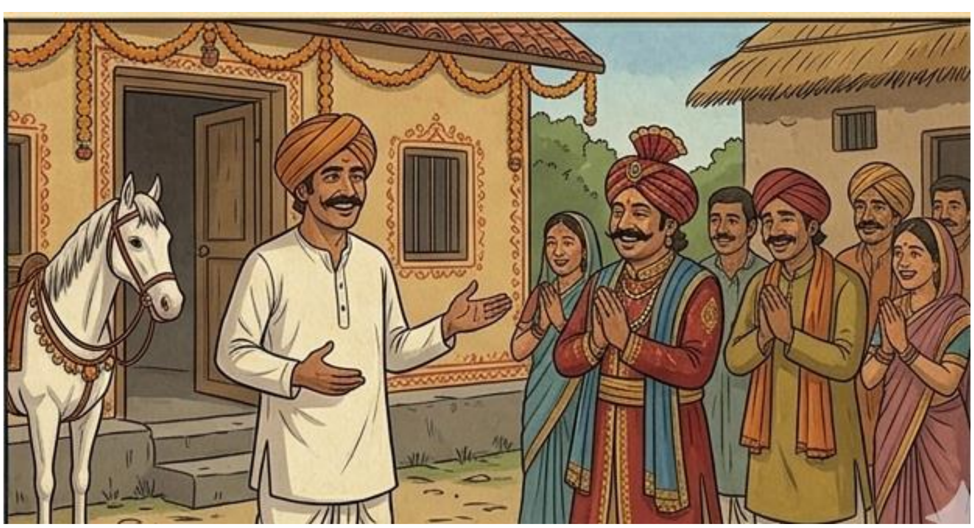
चतुराई से समाधान

अवसेरी को नवीन वस्त्र पहनाकर पूर्ण सम्मान के साथ बारात के समक्ष ले जाया गया। वहाँ पहुँचकर उसने अत्यंत विस्मय



के साथ पूछा, "मान्यवरों! आप इस मांगलिक उत्सव को बीच में छोड़कर क्यों लौट रहे हैं?"

बाराती क्रोधित होकर बोले, "तुमने ही तो कहा था कि कन्या के पेट है!"



अवसेरी खिलखिलाकर हँसा और बड़ी सादगी से बोला, "**हे श्रेष्ठ जनों! आप इतने विद्वान होकर भी सत्य को समझ न सके? भला इस संसार में ऐसा कौन सा जीव है जिसके 'पेट' (उदर) न हो? यदि कन्या के पेट न होता, तो वह जीवित कैसे रहती? हम सभी के उदर हैं, और उसी की क्षुधा शांत करने के लिए तो यह भोज आयोजित है!**"

अवसेरी के इस वाक्चातुर्य और शब्दों के दोहरे अर्थ को सुनकर बाराती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। उन्हें अपनी संकीर्ण सोच पर लज्जा आई और वे समझ गए कि अवसेरी ने केवल उनके साथ परिहास किया था। संदेह के बादल छँट गए और बारात पुनः गाजे-बाजे के साथ ज़मींदार की चौखट पर पहुँची।

उपसंहार: अवसेरी ने न केवल अपना सम्मान वापस पाया, बल्कि अपनी बुद्धि के बल पर एक परिवार को घोर अपमान से भी बचा लिया। रसिन ग्राम के इतिहास में यह घटना आज भी इस सीख के साथ दोहराई जाती है कि **शब्द शस्त्र भी हैं और औषधि भी**, यह चलाने वाले की कला पर निर्भर करता है।

6. आस्था की जीत

चित्रकूट के ऐतिहासिक ग्राम **रसिन** में एक समय तीर्थाटन की लहर उठी। ग्रामवासियों ने सामूहिक रूप से देवभूमि की यात्रा का संकल्प लिया। निर्धन किंतु धर्मपरायण ब्राह्मण **अवसेरी** के अंतर्मन में भी देवाधिदेव महादेव के दर्शन की तीव्र अभिलाषा जागृत हुई और वह भी इस पावन जत्थे के साथ निकल पड़ा।



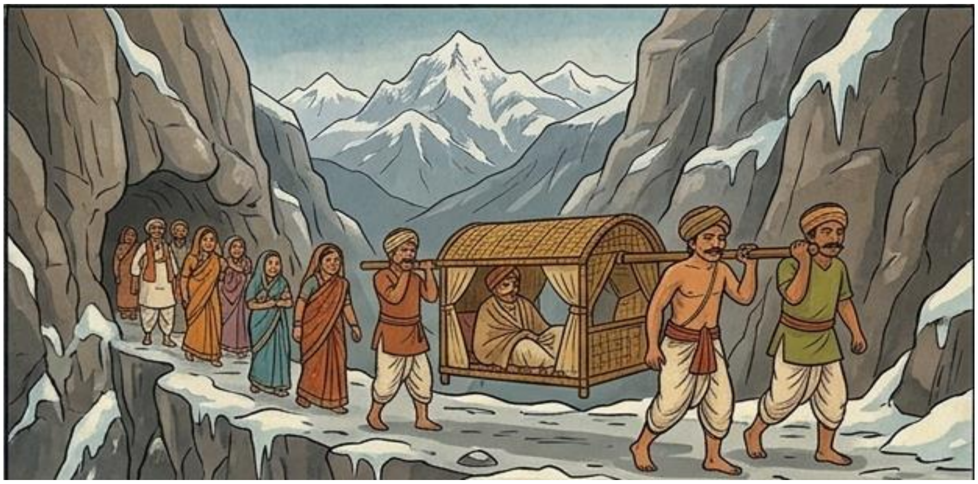
संकल्प और शारीरिक बाधा

यात्रा के प्रारंभिक चरण में ही नियति ने अवसेरी की परीक्षा ली। अभी वे **रौली** ग्राम तक ही पहुँचे थे कि अवसेरी का शरीर व्याधि (बीमारी) से ग्रस्त हो गया। संगी-साथियों ने उसकी जर्जर अवस्था देख परामर्श दिया, "मित्र! मार्ग अत्यंत दुर्गम है और तुम्हारी काया साथ नहीं दे रही। उचित यही है कि तुम ग्राम लौट जाओ और स्वस्थ होने पर पुनः प्रयास करना।"

किंतु अवसेरी का संकल्प वज्र के समान अडिग था। उसने आर्द्र स्वर में, किंतु दृढ़तापूर्वक कहा, "मैने महादेव की शरण ले ली है, अब यहाँ से पग पीछे नहीं हटेंगे। यदि साक्षात मृत्यु भी आ जाए, तो वह इसी पथ पर आए। आप मुझे खटोली (पालकी) में ले चलें, इसका पुण्य आपको प्राप्त होगा। स्मरण रहे, भक्त को मार्ग में छोड़ना शिव को अप्रसन्न करना होगा।"

अवसेरी की श्रद्धा और तर्क के सम्मुख ग्रामवासी नतशिर हो गए। पूरी यात्रा के दौरान श्रद्धावश वे बारी-बारी से उसे अपने कंधों पर उठाकर दुर्गम पहाड़ियों, हिमखंडों और संकरे मार्गों से होते हुए **केदारनाथ** के पावन धाम तक ले गए।

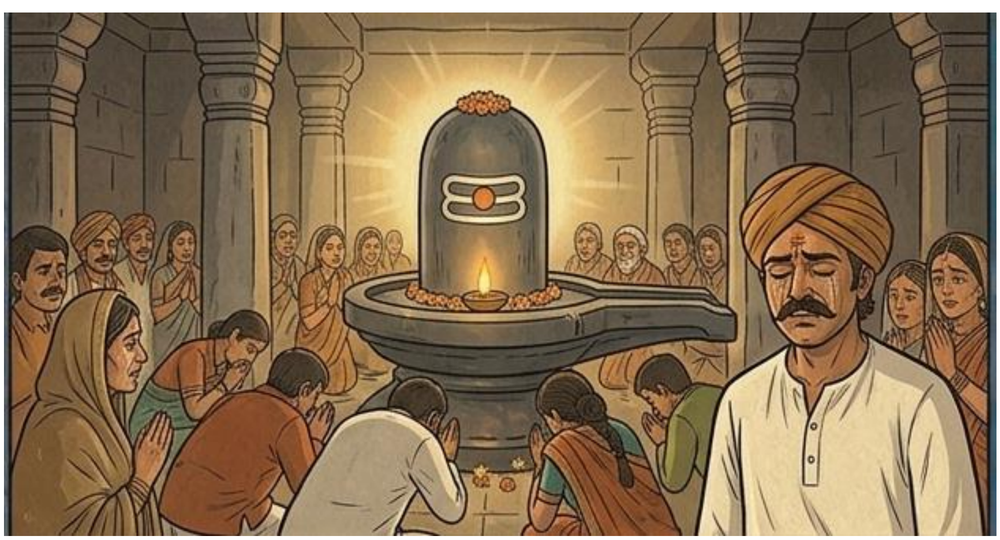
प्रतीक्षा और आत्म-ग्लानि



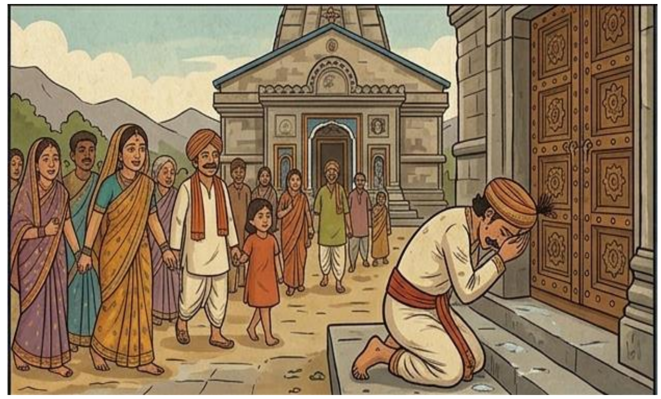
हिमालय की गोद में स्थित केदारनाथ पहुँचकर सभी यात्रियों ने विधिवत पूजन किया और ज्योतिर्लिंग के दर्शन पाकर स्वयं को धन्य माना। किंतु विडंबना देखिए, जिस अवसेरी ने प्राणों की बाजी लगा दी थी, उसे महादेव के साक्षात दर्शन का अनुभव प्राप्त न हुआ। उसका मन विषाद से भर गया। वह मंदिर की देहरी पर सिर रखकर विलाप करने लगा। पंद्रह-बीस दिवस व्यतीत हो गए। ग्रामवासी वापसी की तैयारी करने लगे, किंतु अवसेरी वहीं चौखट पर पड़ा रहा। उसकी प्रार्थना में अब उपालंभ और तार्किकता का पुट था। वह रुदन करते हुए बोला, *"हे नीलकंठ! संसार के समस्त पापी और प्रपंची जनों को आप सहज ही दर्शन दे देते हैं, किंतु मुझ अकिंचन ने यदि सामाजिक लोकलाज तजकर प्रेमवश निम्न कुल की कन्या का वरण कर लिया, तो क्या आप मुझे त्याज्य मानेंगे? आपकी दृष्टि में तो संपूर्ण सृष्टि एकाकार है। जब तक आप साक्षात दर्शन नहीं देंगे, मैं इस देहरी से नहीं उठूँगा। मेरे प्राण इसी चौखट पर विसर्जित होंगे।"*

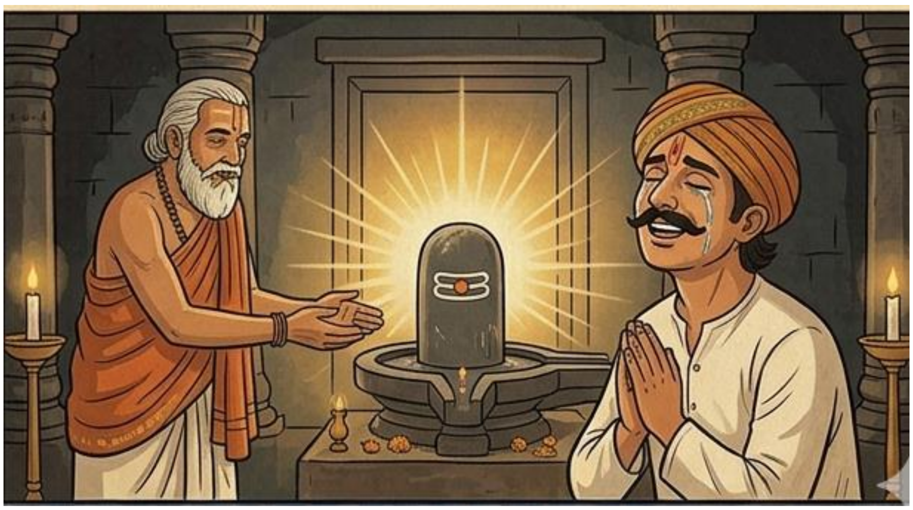
दैवीय साक्षात्कार

अवसेरी की निश्छल और हठमयी भक्ति ने अंततः महादेव के सिंहासन को डोलने पर विवश कर दिया। उसी रात्रि मुख्य पुजारी को स्वप्न में महादेव ने दर्शन दिए और आदेश दिया— *"द्वार पर मेरा एक अनन्य भक्त अपनी सुध-बुध खोकर पड़ा है। उसकी अंतरात्मा की पुकार ने मुझे बांध लिया है। उसे ससम्मान अंतर्गृह में लाओ और दर्शन कराओ।"*



निशीथ काल में, जब मंदिर के पट बंद थे, पुजारी बाहर आए और उस अचेत भक्त के मुख पर शीतल जल के छींटे मारे। चेतना लौटते ही पुजारी ने हर्षित स्वर में कहा, "हे विप्रवर! आप परम सौभाग्यशाली हैं। स्वयं महादेव ने आपकी प्रतीक्षा का अंत किया है।"



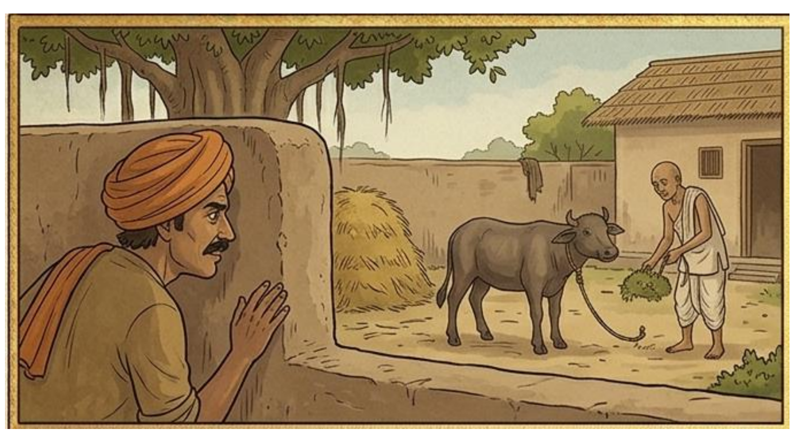


उपसंहार

जब अवसेरी उसी खटोली में पुनः रसिन पहुँचा, तो उसकी मुखाकृति पर एक अपूर्व तेज था। उसकी कथा सुनकर संपूर्ण ग्राम श्रद्धा से भर उठा। लोगों ने स्वीकार किया कि बुद्धि की चतुराई अपनी जगह है, किंतु ईश्वर के द्वार पर केवल **धैर्य** और **अडिग विश्वास** की ही विजय होती है। अवसेरी ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची आस्था के समक्ष पहाड़ भी झुक जाते हैं और स्वयं ईश्वर को भी भक्त की पुकार सुननी पड़ती है।

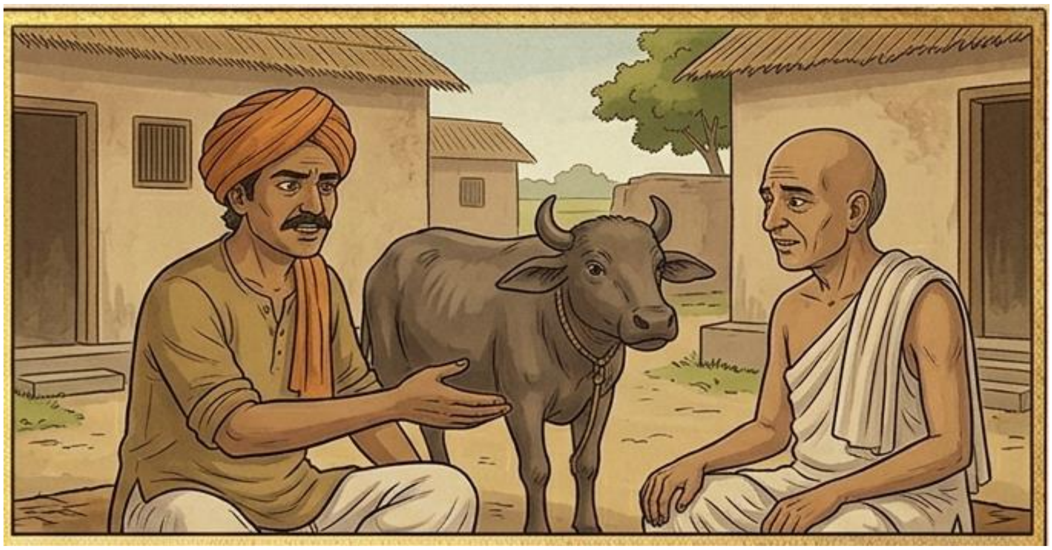
7. न हींग लगी न फिटकरी

चित्रकूट के आंचलिक परिवेश में अवसेरी की चतुराई के किस्से आज भी जीवंत हैं। एक बार की बात है, अवसेरी के पड़ोसी गाँव 'औछवाला' में **पीढ़िया** नामक एक ब्राह्मण रहते थे, जिनके पास एक पुष्ट और आकर्षक **पड़वा** (भैंस का बच्चा) था। अवसेरी की पैनी दृष्टि उस पड़वे पर थी।



प्रस्ताव और अनुबंध

एक दिन अवसेरी पीढ़िया के पास गया और बड़ी आत्मीयता से बोला, "दादा, मेरे पास गाय-बछड़ों का अभाव है। यदि आप अपना यह पड़वा मुझे सौंप दें, तो मैं इसका पालन-पोषण करूँगा। जब यह पूर्ण रूप से विक्रय योग्य हो जाएगा, तब इसे बेचकर



हम होने वाले लाभ को आपस में बाँट लेंगे।"

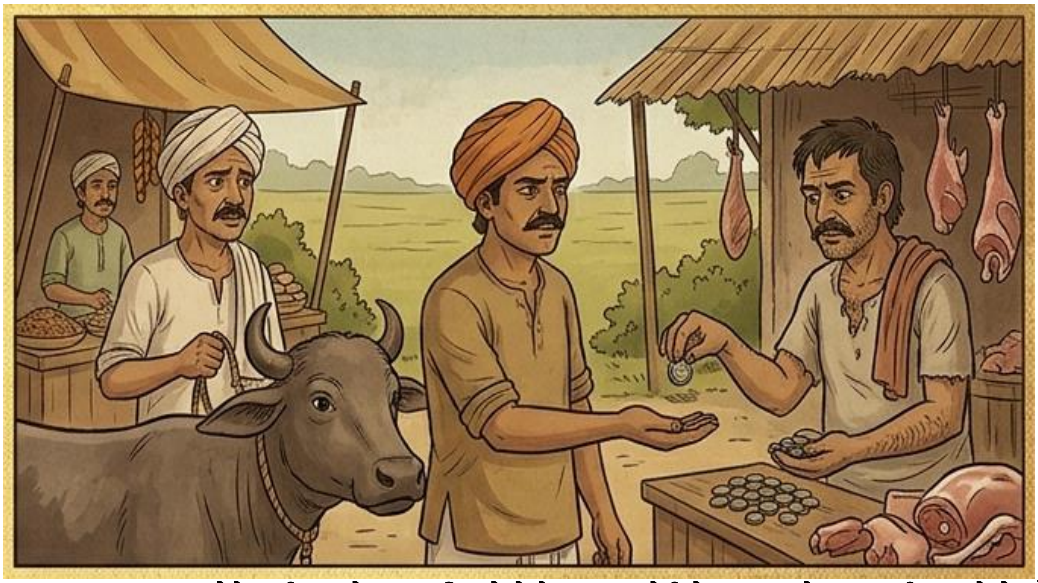
सरल स्वभाव के पीढ़िया अवसेरी की बातों में आ गए और विश्वास करके अपना पशु उसे सौंप दिया। किंतु अवसेरी की योजना कुछ और ही थी। उसने पड़वे को पालने के बजाय अगले ही दिन उसे **बीस आने** में बेच दिया।

तर्क और परिणाम



लगभग पखवाड़े भर बाद, पीढ़िया उत्सुकता वश अवसेरी के पास पहुँचे और पूछा, "कहो अवसेरी भाई! हमारा पड़वा कैसा है? कुछ हट्टा-कट्टा हुआ या नहीं?"

अवसेरी ने बड़े ही रूखे और नाटकीय लहजे में उत्तर दिया, "अरे दादा! क्या खाक ठीक होगा? उसे तो कसाई ले गए और मारकर खा भी गए। अब जो हो गया सो हो गया, आप अपना धन लीजिए।"



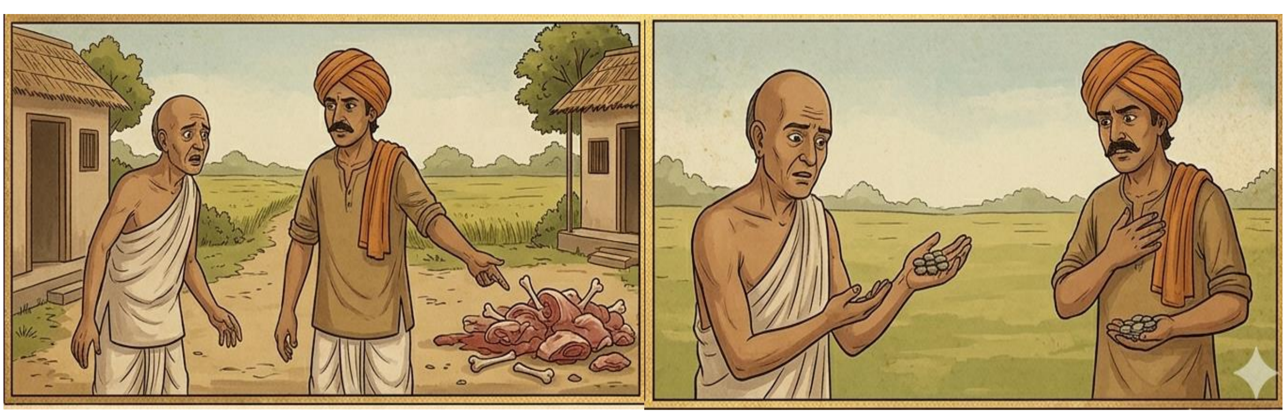
पीढ़िया हतप्रभ रह गए। उन्होंने भारी मन से पूछा, "कितने में बेचा?" अवसेरी ने सहजता से कहा, "बीस आने में। मैंने तो उसे आपके यहाँ से लाने के अगले ही दिन बेच दिया था। पशु का क्या भरोसा, कब बीमार पड़ जाए या मर जाए? हानि उठाने से बेहतर मैंने उसे बेचना ही उचित समझा।"

इसके बाद अवसेरी ने **दस आने** निकालकर पीढ़िया के हाथ पर रख दिए।

चतुराई की पराकाष्ठा

पीढ़िया सिक्कों को देखकर चकित रह गए और बोले, "यह क्या अवसेरी? मात्र एक रात्रि मेरे घर से दूर रहने का मूल्य आधा हो गया? कल तक जो पड़वा मेरा था, आज उसके मूल्य का आधा हिस्सा तुम किस आधार पर रख रहे हो?"

अवसेरी ने कुटिलतापूर्वक हँसते हुए कहा, "**दादा! भूल गए? हमारे बीच 'बटाई' (आधा-आधा साझा) का अनुबंध हुआ था। अनुबंध के अनुसार विक्रय से प्राप्त राशि पर हम दोनों का समान अधिकार है। अतः आधा आपका और आधा मेरा!**"



बेचारे पीढ़िया अवाक रह गए। उनके पास अवसेरी के इस कुतर्क का कोई उत्तर न था। बिना एक भी पैसा लगाए और बिना किसी श्रम के, अवसेरी ने केवल अपनी बातों के जाल से एक ही दिन में लाभ का आधा हिस्सा अपना बना लिया।

लोकोक्ति: *"न हींग लगी न फिटकरी और रंग भी चोखा आ गया।"* अवसेरी ने इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया कि चतुर बुद्धि के लिए धन से अधिक तर्क की शक्ति मूल्यवान होती है।

8. अवसेरी का 'कुआँ' संदेश

चित्रकूट के जनमानस में रचे-बसे **अवसेरी** की चपलता और हास्य-बोध के किस्से आज भी जीवंत हैं। एक समय की बात है, अवसेरी ने एक अत्यंत हृष्ट-पुष्ट और आकर्षक बैल क्रय किया। वह बैल अपनी सुंदरता के कारण आकर्षण का केंद्र बन गया था। अवसेरी उसे लेकर जहाँ कहीं भी जाता, राह चलते लोग कौतूहलवश उससे एक ही प्रश्न पूछते—

"भैया, यह अनुपम बैल कितने में खरीदा है?"

अवसेरी धैर्यपूर्वक उत्तर देता— *"भ्राता, यह एक सौ दस रुपये का है।"*

किंतु जिज्ञासा का यह क्रम थमने का नाम नहीं ले रहा था। गाँव के चौक से लेकर खेत की पगडंडियों तक, दिन भर में कम से कम दस-पंद्रह व्यक्ति उससे वही प्रश्न दोहराते।



प्रत्येक व्यक्ति को बार-बार एक ही उत्तर देते-देते अवसेरी मानसिक रूप से थक चुका था। अंततः, इस पुनरावृत्ति से मुक्ति पाने के लिए उसने एक विलक्षण युक्ति सोची।



कुएँ से 'आकाशवाणी'



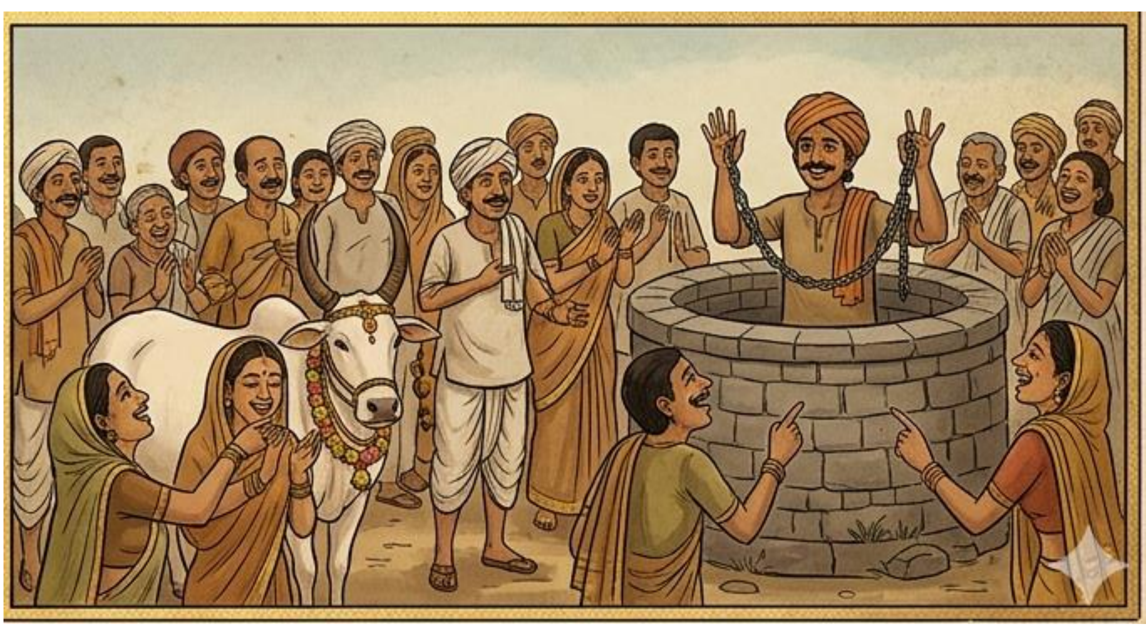
एक दिन वह गाँव के मंदिर के समीप स्थित प्राचीन कुएँ के पास पहुँचा। बिना किसी को बताए, वह कुएँ में कूद गया। सौभाग्य से कुएँ में पहले से ही एक सुदृढ़ जंजीर लटक रही थी, जिसे पकड़कर वह बीच में ही सुरक्षित लटक गया।

जैसे ही गाँव में यह समाचार दावानल की तरह फैला कि *"अवसेरी कुएँ में कूद गया है"*, संपूर्ण ग्रामवासी चिंतामग्न होकर कुएँ की ओर दौड़ पड़े। हर मुख पर एक ही चर्चा थी— *"हाय! अवसेरी जैसा परोपकारी और मिलनसार व्यक्ति अब इस संसार में नहीं रहा!"*

कुएँ के जगत पर भीड़ एकत्र हो गई। लोग नीचे झाँककर व्याकुलता से चिल्लाने लगे— *"अवसेरी भाई! क्या तुम जीवित हो? तुमने यह आत्मघाती कदम क्यों उठाया?"*

सार्वजनिक घोषणा

भीड़ की व्याकुलता जब चरम पर पहुँच गई, तब कुएँ की गहराई से अवसेरी की गूँजती हुई आवाज़ सुनाई दी— "**हाँ**



भाइयों, मैं पूर्णतः स्वस्थ और जीवित हूँ!"

हैरान-परेशान ग्रामीणों ने पूछा— *"तो फिर इस संकट में स्वयं को क्यों डाला?"*

तब अवसेरी ने बड़े शांत भाव से कुएँ के भीतर से अपनी घोषणा की— **"गाँव के समस्त बंधुगणों, ध्यानपूर्वक सुनें! मैं यह बैल 'एक सौ दस' रुपये में खरीदकर लाया हूँ। प्रतिदिन हर व्यक्ति अलग-अलग आकर मुझसे यही मूल्य पूछता है, जिससे मेरी दिनचर्या बाधित होती है। अतः मैंने सोचा कि आज एक साथ सबको इस कुएँ के माध्यम से 'कूप-संदेश' दे दूँ, ताकि अब किसी के मन में कोई जिज्ञासा शेष न रहे!"**

अवसेरी का यह तर्क सुनते ही ग्रामीणों की चिंता ठहाकों में बदल गई। सब समझ गए कि यह अवसेरी का अपनी अनूठी शैली में लोगों को उनकी अनावश्यक जिज्ञासा का बोध कराने का तरीका था।

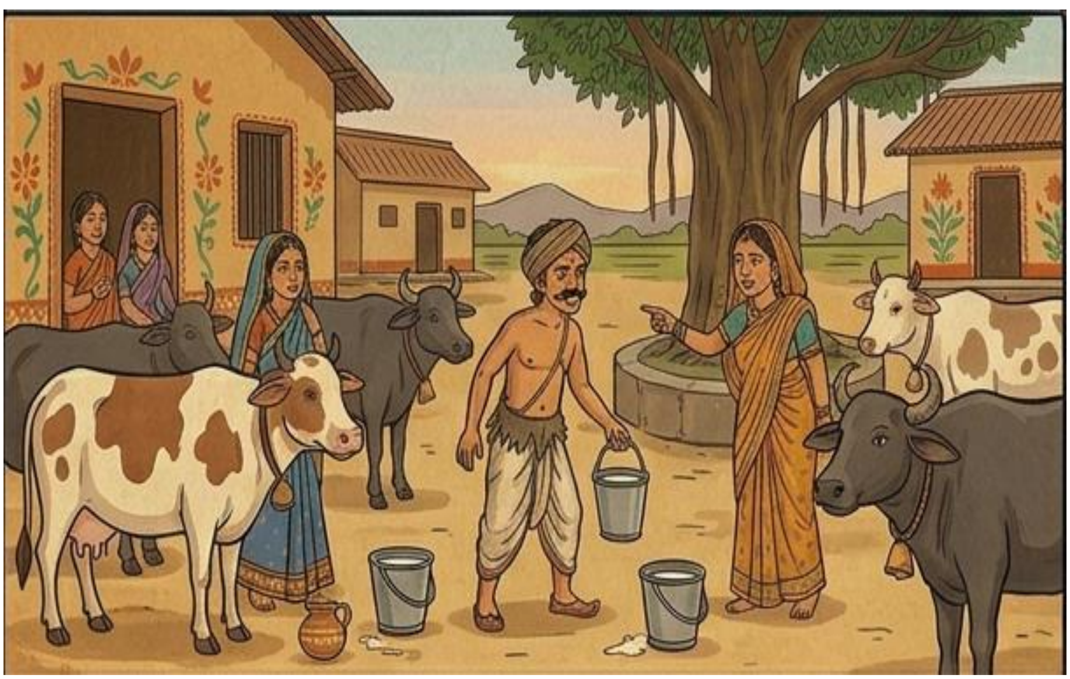
सीख: *बुद्धिमान व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान भी मनोरंजन और हास्य के साथ ढूंढ लेता है।*

9. चुप्पा से दुहना और ठाठ से खाना

चित्रकूट के **रसिन** ग्राम में शुक्ल जी का एक समृद्ध परिवार निवास करता था, जिनके आंगन में अनेक दुधारू गायें और भैंसें बँधी रहती थीं। चूँकि अवसेरी के पास स्वयं का कोई पशु-धन नहीं था, इसलिए जब भी उसकी जिह्वा को दुग्ध-पान की लालसा होती, वह चुपचाप शुक्ल जी के बाड़े में प्रविष्ट हो जाता। वह अपने घर से लोटा या बाल्टी लाता और बड़ी सहजता से किसी भी गाय या भैंस का दूध दुहकर ले जाता।

तर्कपूर्ण निर्लज्जता

एक दिन जब उसे ऐसा करते हुए पकड़ा गया और टोका गया, तो अवसेरी लज्जित होने के स्थान पर उल्टे प्रश्नकर्ता पर ही बरस पड़ा। उसने बड़े अधिकार के साथ कहा:



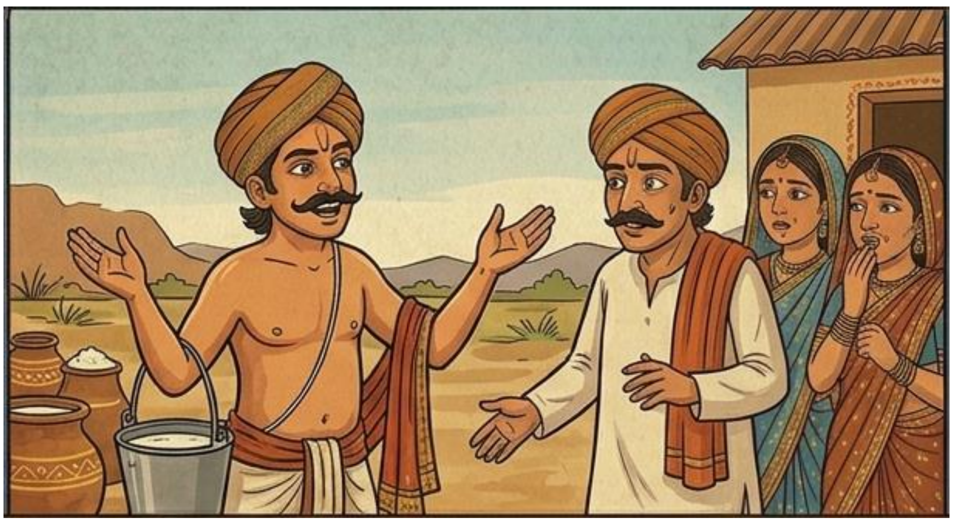
"क्या तुम्हें तनिक भी लज्जा नहीं आती जो मुझे इस प्रकार रोक रहे हो? क्या तुम यह चाहते हो कि मैं भूख और अभाव में सूखकर अस्थिपंजर हो जाऊँ और मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ?

तुम स्वयं तो दूध और घी का आनंद लो और मैं सूखी रोटियाँ चबाऊँ? यह कदापि संभव नहीं है। यदि तुम इस गाँव में पशु रखोगे, तो यह निश्चित जान लो कि अवसेरी भी उनके दूध का स्वाद चखेगा।"

स्नेहपूर्ण हठ

अवसेरी का यह तर्क इतना विचित्र किंतु निश्छल था कि टोकने वाला निरुत्तर हो जाता था। वह केवल भोजन या दूध ही नहीं चुराता था, बल्कि वह उन वस्तुओं पर अपना स्वाभाविक अधिकार समझता था। उसकी इस 'जबरदस्ती' में कोई द्वेष नहीं था, बल्कि एक प्रकार का ग्रामीण अपनत्व था।

यही कारण था कि गाँव के लोग उसकी इन हरकतों को उसकी 'विलक्षणता' मानकर अनदेखा कर देते थे। लोग बुरा मानने के बजाय उसकी हाजिरजवाबी पर मुस्कुरा देते थे। अवसेरी का मानना था कि समाज के संसाधन केवल सामर्थ्यवानों के लिए नहीं, बल्कि उन सबके लिए हैं जो उनमें सहभागी बनने का साहस रखते हैं।



निष्कर्ष: यह प्रसंग हमें बताता है कि अवसेरी केवल चतुर ही नहीं था, बल्कि वह सामाजिक समानता को अपने ही ढंग से लागू करने वाला एक बेपरवाह दार्शनिक भी था।

10. अवसेरी का विवाह और विलक्षण स्नान

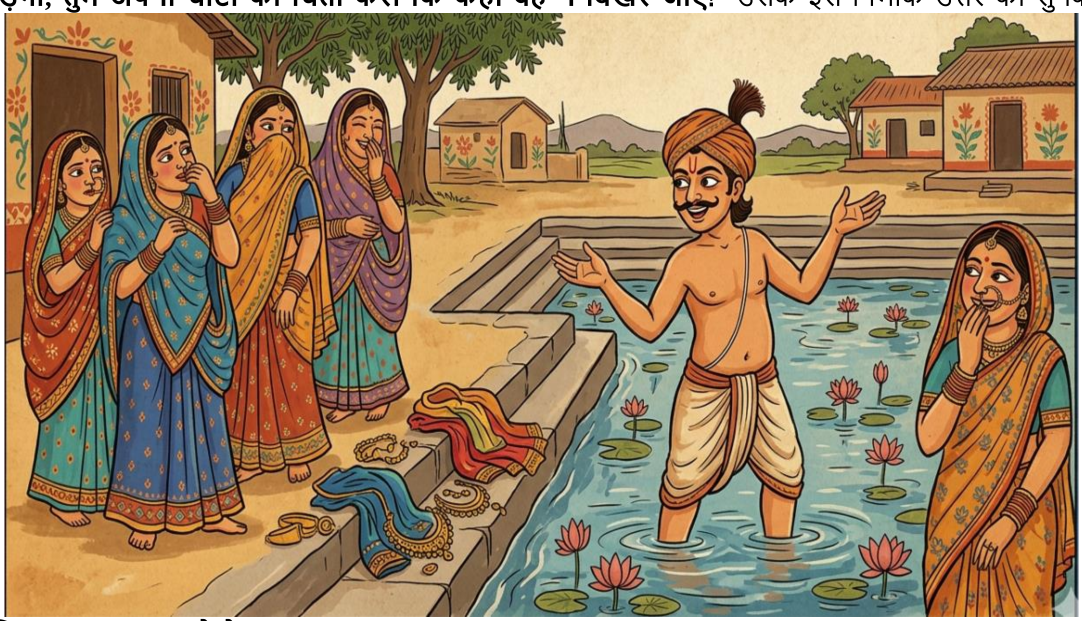
यह उस युग की बात है जब मर्यादा और लोक-विनोद ग्रामीण जीवन के अभिन्न अंग थे। चित्रकूट के रसिन ग्राम में जब चपल और प्रत्युत्पन्नमति **अवसेरी** का विवाह निश्चित हुआ, तो संपूर्ण ग्राम में हर्ष और परिहास का वातावरण निर्मित हो गया। चूँकि अवसेरी स्वयं हास्य-विनोद के लिए प्रसिद्ध था, अतः ग्रामीणों ने भी उसे छेड़ने का कोई अवसर हाथ से जाने न दिया।



परिहास की पराकाष्ठा

विवाह की रस्मों के बीच कोई उसकी शिखा (चुटिया) खींचता, तो कोई उसकी दाढ़ी सहलाते हुए व्यंग्य करता। उत्सव के उल्लास में दो ग्रामीण स्त्रियों ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "बाबा! तनिक संभलकर रहिए, कहीं ऐसा न हो कि इस छीना-झपटी में आपकी यह शिखा या दाढ़ी ही जड़ से उखड़ जाए!"

अवसेरी अपनी हाजिरजवाबी के लिए विख्यात था। उसने मुस्कराते हुए प्रत्युत्तर दिया, "**मेरी शिखा का तो कुछ न बिगड़ेगा, तुम अपनी चोटी की चिंता करो कि कहीं वह न बिखर जाए!**" उसके इस निर्भीक उत्तर को सुनकर



उपस्थित जनसमूह ठहाकों से गूंज उठा।

तालाब का वह निराला प्रसंग

विवाह के शुभ दिन, प्राचीन परंपरा के अनुसार अवसेरी स्नान के निमित्त ग्राम के सरोवर पर गया। उसने अपने आभूषण और वस्त्र तट पर रखे और जल में उतर गया। संयोगवश, वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ पुनः उसे परिहास का पात्र बनाने लगीं। वे बार-बार कहने लगीं, "संभलकर स्नान करना दूल्हे राजा! कहीं जल के प्रवाह में आपकी 'चुटिया' ही न बह जाए।"

स्त्रियों के निरंतर उपहास ने अवसेरी के स्वाभिमान को झकझोर दिया। उसने लोक-लाज का परित्याग कर एक दुस्साहसी निर्णय लिया। अपनी मति और सामर्थ्य को सिद्ध करने के लिए उसने अपनी देह के समस्त वस्त्र त्याग दिए और पूर्णतः निर्वस्त्र होकर दृढ़ता से बोला—



"अब देख लो! मेरी जड़ें कितनी सुदृढ़ और गहरी हैं। अब बताओ, भला मेरी शिखा को उखाड़ने का सामर्थ्य किसमें है?"

अवसेरी का यह दुस्साहसी और अप्रत्याशित रूप देखकर स्त्रियाँ लज्जा से नतमस्तक हो गईं और क्षण भर में ही वहाँ से पलायन कर गईं।

निष्कर्ष

शीघ्र ही यह वृत्तांत संपूर्ण ग्राम में वायु के वेग की भाँति फैल गया। जो ग्रामीण अवसेरी का उपहास कर रहे थे, वे अब उसकी निर्भीकता और अनोखे अंदाज की चर्चा करने लगे। लोग कहने लगे कि अवसेरी केवल वाकपटु ही नहीं, बल्कि सत्य को उसकी नग्न अवस्था में स्वीकार करने वाला एक 'निराला' व्यक्ति है।

उस दिन के पश्चात, अवसेरी के विवाह और उसके उस 'साहसी स्नान' की गाथा रसिन के लोक-इतिहास में सदैव के लिए अंकित हो गई।

11. अवसेरी और भोर का संवाद

वाक्चातुर्य और मर्यादा का द्वंद्व

यह उस युग की बात है जब ऐतिहासिक ग्राम रसिन, बाँदा जिले की नरैनी तहसील के अंतर्गत आता था। उन दिनों आवागमन के आधुनिक साधन सुलभ नहीं थे, इसलिए सुदूर यात्राएं प्रायः पैदल ही तय करनी पड़ती थीं। एक बार अवसेरी को नरैनी तहसील के न्यायालय (कचहरी) में कोई आवश्यक कार्य था। रसिन से नरैनी की दूरी लगभग पाँच-छह कोस (लगभग १५-१८ किलोमीटर) थी। अवसेरी ने मन ही मन विचार किया कि यदि वह भोर की वेला में ही प्रस्थान कर दे, तो कचहरी खुलने के नियत समय पर वहाँ पहुँच जाएगा। इसी उद्देश्य से वह अत्यंत तड़के, जब चारों ओर भोर का धुंधलका था, अपने घर से निकल पड़ा।

भोर की वेला और सामाजिक यथार्थ



उस कालखंड में ग्रामीण क्षेत्रों में घरों के भीतर शौचालयों की व्यवस्था नहीं होती थी। अतः ग्राम की महिलाएँ लोक-लाज और संकोच के कारण सूर्योदय से पूर्व, भोर के अंधेरे में ही नित्य-कर्म के लिए खेतों अथवा सड़क के किनारों की ओर जाती थीं। मर्यादा का नियम यह था कि यदि मार्ग से कोई पुरुष गुजरता दिखाई देता, तो महिलाएँ संकोचवश तुरंत ओट में होने का प्रयास करती थीं या खड़ी हो जाती थीं।

अवसेरी अपनी ही धुन और मस्ती में पगडंडी पर आगे बढ़ रहा था। मार्ग के दोनों ओर कुछ महिलाएँ बैठी थीं, जो दूर से किसी पुरुष की आहट पाकर लोक-लाज के कारण झटपट खड़ी होने लगीं। अवसेरी स्वभाव से चपल और अत्यधिक विनोदप्रिय था। इस स्थिति को देखकर वह जानबूझकर ज़ोर से बड़बड़ाते हुए बोला: "कैसी फूटी किस्मत है! इतनी कड़कड़ाती सुबह में इतनी दूर पैदल चल रहा हूँ, पर मार्ग ऐसा सूना और रूखा है कि सुबह-सुबह किसी शुभ चीज़ या सुंदर मुखड़े के दर्शन तक न हुए!"

हाजिरजवाबी की पराकाष्ठा

मार्ग के किनारे बैठी महिलाओं में से एक महिला अत्यंत निर्भीक और हाजिरजवाब थी। अवसेरी की यह व्यंग्यात्मक



टिप्पणी उसके कानों में पड़ी, तो उसने भी आव देखा न ताव और अवसेरी को उसकी मर्यादा याद दिलाने के लिए पलटकर तीखे स्वर में कहा: "राह चलते राहगीर! यदि राह में तुम्हें किसी का दीदार हो भी गया, तो उससे तुम्हारी

क्षुधा (भूख) शांत हो जाएगी क्या? क्या सुंदर मुखड़ा देख लेने भर से तुम्हें स्वादिष्ट रोटियाँ मिल जाएँगी? व्यर्थ की बातें करने के बजाय अपने मार्ग पर सीधे क्यों नहीं चले जाते?"

अवसेरी तो अपनी प्रत्युत्पन्नमति (तुरंत सटीक जवाब देने की कला) के लिए पूरे अंचल में विख्यात था। उसने तनिक भी समय गंवाए बिना, अत्यंत शांत किंतु चतुरतापूर्ण नाटकीय लहजे में उत्तर दिया: "देवी! आप अन्यथा समझ बैठीं। मेरा



आशय केवल रूखी रोटियों से नहीं था। मैं तो कह रहा था कि यदि सुबह-सुबह दर्शन के साथ-साथ आपकी मधुर वाणी की मिठास (शक्कर) भी मिल जाए, तो इस कठिन और लंबी यात्रा का आनंद दोगुना हो जाए। सूखी रोटी के साथ यदि शक्कर का स्वाद मिल जाए, तो दिन बन जाता है!"

अवसेरी के इस अप्रत्याशित, वाक-चातुर्य से भरे और दोहरे अर्थ वाले उत्तर को सुनकर वह महिला पूरी तरह निरुत्तर हो गई। उसे आभास हो गया कि हाजिरजवाबी के युद्ध में इस विलक्षण व्यक्ति को परास्त करना असंभव है। वह अत्यधिक लज्जित होकर तुरंत वहाँ से ओट में हो गई और भविष्य में फिर कभी किसी अपरिचित राहगीर से इस प्रकार तर्क-वितर्क करने का साहस न किया।

उपसंहार: यह प्रसंग इस बात का जीवंत प्रमाण है कि अवसेरी केवल सरल स्वभाव के ही नहीं थे, बल्कि विषम और संकोचपूर्ण स्थितियों में भी अपनी चतुर शब्दावली से सामने वाले का अहंकार पल भर में चूर करने की अद्भुत क्षमता रखते थे।

12. मटकी का रहस्य

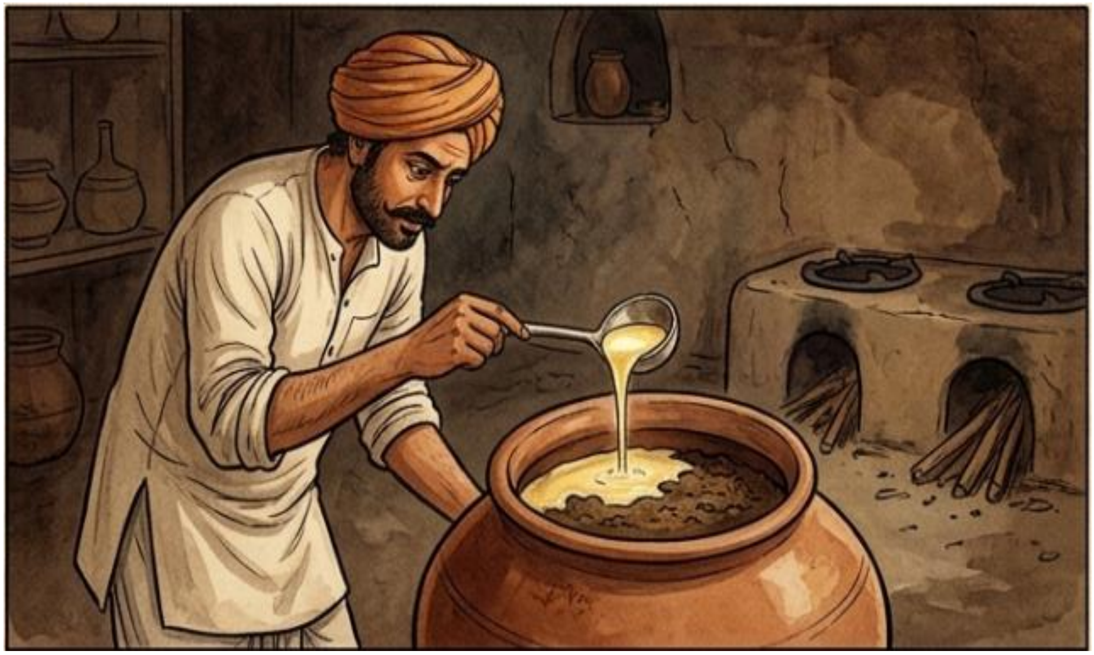
यह उस समय की बात है जब ग्रामीण जीवन में दांपत्य कलह और हास्य-विनोद के अनूठे रंग देखने को मिलते थे। एक बार किसी घरेलू बात पर अवसेरी का अपनी धर्मपत्नी से भीषण विवाद हो गया। क्षोभ और अत्यंत क्रोध में आकर उनकी पत्नी अपने मायके चली गईं। पत्नी के जाने से क्षुब्ध और अकेलेपन से खिसियाए अवसेरी ने मन बहलाने के लिए तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के अनुसार क्षेत्र की एक प्रसिद्ध गणिका (नर्तकी) के आवास की ओर रुख किया।

उस युग में सहजाजपुर के आस-पास के पुरवों (मजरों) में कलावंत और गणिकाएं निवास करती थीं, जहाँ आस-पास के गांवों के रसिक जन अपना मनोरंजन करने जाते थे।





गणिका की मांग और अवसेरी की युक्ति



जब अवसेरी उस गणिका (जिसका नाम तेजनिया था) के समीप पहुँचा, तो उसने अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ मुद्राएं उसके सम्मुख रखीं। चूँकि उस दौर में धन का मूल्य बहुत अधिक था, इसलिए अवसेरी को लगा कि यह पर्याप्त है। किंतु तेजनिया उन सीमित मुद्राओं से संतुष्ट नहीं हुई। उसने अवसेरी के ग्रामीण परिवेश को देखकर व्यंग्य किया: "अरे भले मानस! इन चंद सिक्कों से कुछ नहीं होने वाला। तुम तो ग्रामीण हो, तुम्हारे पास गाय-भैंस जैसे पशु-धन की क्या कमी? घर में पर्याप्त दूध और घी होता ही होगा!"

अवसेरी ने तुरंत हामी भरते हुए कहा, "हाँ, दूध और घी की तो कोई कमी नहीं है।"

तेजनिया ने अपनी शर्त रखते हुए कहा, "ठीक है, फिर यदि तुम मेरे लिए एक मटकी शुद्ध देसी घी ले आओ, तो महफ़िल का आनंद लिया जा सकता है।"

यह सुनते ही अवसेरी तुरंत घी का प्रबंध करने के लिए अपने गाँव की ओर दौड़ा। वह स्वभाव से अत्यंत चतुर और कुशाग्र बुद्धि का स्वामी था। उसने घर आकर एक सुंदर मटकी ली। उसने मटकी के निचले और मध्य भाग में ठोस एवं साफ़ मिट्टी भर दी और उसके ठीक ऊपर पाव भर भैंस का शुद्ध घी उड़ेल दिया। मटकी ऊपर से पूरी तरह चकाचक और शुद्ध घी से भरी दिखाई देने लगी।

शीत ऋतु का समय होने के कारण वह घी मटकी के मुख पर पूरी तरह से जम गया। चूँकि वह घर के चूल्हे पर पकाया हुआ शुद्ध घी था, इसलिए उसकी सुगंध चारों ओर फैलने लगी।

सुगंध का आकर्षण और भेद खुलना

अवसेरी वह मटकी लेकर पुनः तेजनिया के पास पहुँचा और गर्व से बोला, "यह देखो, तुम्हारी इच्छा के अनुसार साक्षात अमृत जैसा शुद्ध घी लाया हूँ। इसकी सुगंध ही इसकी शुद्धता का प्रमाण है।"

तेजनिया मटकी देखकर और उसकी सुगंध से अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने कहा, "वाह! घी तो सचमुच उत्तम प्रतीत होता है। तुम ऐसा करो, इसे अंदर ले जाकर मेरी बहन (द्विजनिया) को सौंप आओ।"

अवसेरी ने मटकी अंदर रख दी और तेजनिया के साथ महफ़िल का आनंद लेने लगा। इधर अंदर बैठी द्विजनिया से घी की सोंधी महक के कारण रहा न गया। उसने उत्सुकतावश मटकी का ढक्कन खोला और घी का स्वाद चखने लगी। जैसे ही उसने ऊपर की जमी हुई परत को थोड़ा खोदा, उसे नीचे केवल सूखी मिट्टी दिखाई दी।

धोखे का अहसास होते ही वह भीतर से चीख उठी, "अरी तेजनिया! जल्दी आओ और सब कुछ समेटो! हमारे साथ बहुत बड़ा छल हुआ है। इस मटकी में तो केवल मिट्टी भरी है! ऊपर-ऊपर दिखाने के लिए केवल घी की एक पतली परत लगाई गई थी!"

उसकी बात सुनकर तेजनिया हतप्रभ रह गई और सिर पकड़कर विलाप करते हुए बोली, "हाय दैया! अब सब कुछ समेटने से क्या लाभ? जो खेल होना था, वह तो हो चुका। महफ़िल का समापन हो गया और हमारा मेहमान तो अपनी चतुर कला दिखा चुका!"

तब तक अवसेरी अपनी विलक्षण बुद्धि के बल पर अपना काम सिद्ध करके वहाँ से मुस्कुराते हुए विदा हो चुका था और चतुर कहलाने वाली गणिकाएं हाथ मलती रह गईं।



उपसंहार: यह प्रसंग यह सिद्ध करता है कि अवसेरी को अपनी चतुर युक्तियों से किसी को भी भ्रमित करने में महारत हासिल थी। उन्होंने बिना किसी आर्थिक क्षति के अपनी तात्कालिक इच्छा भी पूर्ण की और अपनी हाजिरजवाबी से सामने वाले के लालच का करारा उत्तर भी दिया।

परिशिष्ट-द

BIO-DATA



NAME: ABHISHEK OJHA

FATHER'S NAME: MR. NARENDRA KUMAR OJHA

MOTHER'S NAME: MRS. GITANJALI OJHA

DATE OF BIRTH: 31/07/2000

PRESENT ADDRESS: NARAINI ROAD, BEHIND NAGAR PALIKA PARISHAD, ATARRA

CONTACT NO: 6306627341

E-MAIL: mr.abhiojha@gmail.com

EDUCATIONAL QUALIFICATIONS -

S.NO	QUALIFICATIONS	BOARD/UNIVERSITY	DIVISION	SCHOOL/COLLEGE	YEAR
01	HIGH SCHOOL	CBSE	FIRST	TGSSS	2015
02.1	INTERMEDIATE (MATH)	CBSE	FIRST	TGSSS	2017
02.2	INTERMEDIATE (ARTS)	UP BOARD	FIRST	GGIC, ATARRA	2023
02.3	INTERMEDIATE (BIO)	UP BOARD	FIRST	GGIC, ATARRA	2026
03	BACHELOR OF ARTS	BU JHANSI	FIRST	ATARRA P.G. COLLEGE, ATARRA	2021
04	MASTER OF ENGLISH	BU JHANSI	FIRST	PT. JLN MAHAVIDYALAYA	2025
05	BACHELOR OF EDUCATION	BU JHANSI	FIRST	PDPSP MAHAVIDYALAYA, BADAUSA	2023
06	MASTER OF EDUCATION	BU JHANSI	-----	ATARRA P.G. COLLEGE, ATARRA	-----
07	BIHAR STET P-1	-----	FIRST	-----	2024

08	**CTET** **(PAPER 1,2)**	**CBSE**	**PASSED**	**-----**	**2022** **2024**
08	**NSS + SPECIAL CAMP**	**BU JHANSI**	**-----**	**ATARRA P.G. COLLEGE, ATARRA**	**2019-21**
09	**CCC (3 MONTHS)**	**NIELIT**	**B GRADE**	**-----**	**2018**
10	**DOAP** **(12 MONTHS)**	**DR. B.R. AMBEDKAR COMPUTER S. M**	**A GRADE**	**MAHAK COMPUTER INSTITUTE**	**2017**

HOBBIES: READING FICTION NOVELS, COOKING, TRAVELLING, VOUNTEERING

PUBLISHED BOOK -

S.NO.	TOPIC	YEAR	ISBN	WEBSITE
01	**अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का शैक्षिक योगदान**	**2026**	978-93-5659-929-1	https://archive.org/details/abvp_20260126_202601
02	**रसिन (चित्रकूट) के बीरबल 'अवसेरी' की रोचक लोक गाथाएँ**	**2026**	978-93-5890-323-2	https://archive.org/details/20260613_20260613_0355
03	**THE TALES OF AVSERI**	**2026**	978-93-5967-119-2	https://archive.org/details/the-tales-of-avseri
04	**अवसेरी के किस्से: बुन्देली चटखारे**	**2026**	978-93-5917-896-7	https://archive.org/details/20260612_20260612_1542

DATE- 14/06/2026

PLACE – ATARRA (BANDA) **ABHISHEK OJHA**



स्मृतियों की खुशबू: पुरानी कहानियों का जादू

हमारी विरासत हमारी कहानी

9 978-93-5937-084-2